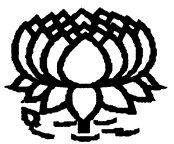
नमोडत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स

श्री कल्पसूत्रना व्याख्यानो



• प्रकाशक •
पदार्थ दर्शन ट्रस्ट
आश्रम रोड-अमदावाद.



• संपादक •
प.पू. आचार्य वि.
नरवाहनसूरि म.

पुस्तक-३६मुं

श्री कल्पसूत्रना व्याख्यानो

वीर सं. २५२५ सने : १९९९
संवत : २०५५ श्रावण वद दशम

सर्वहक्क प्रकाशकने स्वाधिन.

मुद्रक : युनीक ओफसेट
तावडी पुरा, अमदावाद.

संपादक

कर्म साहित्य निष्णात सिध्धांत महोदधि, सच्चारित्र चूडामणि स्व. आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय प्रेमसूरिश्वरजी महाराजना पट्टधर, परमशासक प्रभावक परम तारक, सूचिचक्र चक्रवर्ति, सुविशाळ गच्छाधिपति, प्रचंड पुण्य अने प्रौढ प्रतिभाना स्वामी, व्याख्यान वाचस्पति दिक्षाना दानवीर स्व. आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरिश्वरजी महाराजना परम विनेय शिष्यरत्न कर्म साहित्य ज्ञाता परम पूज्य आचार्य विजय नरवाहन सूरिश्वरजी महाराज साहेब.


आर्थिक सहयोग
एक सद्गृहस्थ
परिवार तरफथी.

पदार्थ दर्शन ट्रस्ट
C/o भरतभाइ बी.शाह
ए/सरिता दर्शन,
जयहिंद प्रेस सामे, आश्रम रोड,
अमदावाद-३८०००९.
फोन : ६५८२३३७

अश्विनभाइ एस.शाह
C/o नगीनदास छगनलाल
ठे. पांचकुवा दरवाजा बहार
अमदावाद-३८०००२.
फोन : २१४४१२१

जयंतिलाल पी.शाह
ठे. ६९६, नवादरवाजा रोड,
मयाभाइनी बारी पासे, डी-वाडीलाल
एन्ड कुं ना मेडा उपर
खाडिया चार रस्ता, अमदावाद-१,
फोन नं : २१६७८८८

सुरेशभाइ एच. वखारीया
ठे. डी/५३, सर्वोदयनगर,
५मे माळे-पांजरापोळ रोड,
मुंबइ-४००००४.
फोन : २४२३८४८.

सुनीलभाइ के. शाह
१०३, विमलविला, पहेलेमाळे,
दीपा कोम्पलेक्ष,
अडाजण रोड,
सुरत-३९५००९.

श्री कल्पसूत्र.....

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान पहेलुं

नमो अरिहंताणं. नमो सिध्धाणं. नमो आयरियाणं. नमो उवज्झायाणं. नमो लोए सव्व साहूणं. एसो पंच नमुक्कारो. सव्वपावप्पणासणो. मंगलाणंच सव्वेसिं. पढमं हवइ मंगलं ॥

श्री अरिहंत परमात्माओने नमस्कार थाओ. श्री सिध्ध भगवंतोने नमस्कार थाओ. श्री आचार्य भगवंतोने नमस्कार थाओ. श्री उपाध्याय भगवंतोने नमस्कार थाओ. लोकमां रहेला सर्व श्री साधु भगवंतोने नमस्कार थाओ. आ श्री पंच परमेष्ठिओने करेलो नमस्कार सर्व पापोनो नाश करनार छे अने सर्व मंगलोमां प्रथम एटले पहेलुं मंगल छे.

वर्तमान शासननां नायक श्री श्रमण भगवान महावीर स्वामीने तथा तेमना पट्टधर गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामीजीने तथा सर्वज्ञ भगवाननी वाणीने नमस्कार थाओ.

छेल्ला श्रुतज्ञानी संपूर्ण चौदपूर्वना धारक प्राचीन गोत्रवाला सूत्र-अर्थकार महर्षि श्री भद्र बाहुस्वामीजीने हुं नमस्कार करुं छुं कारणके जेओए महामंगलकारी आ श्री कल्पसूत्रने नवमा पूर्वमांथी उध्धरीने श्री दशाश्रुतस्कंध नामना आगममां आठमा अध्ययन तरीके प्रगट कर्युं छे.

चोमासुं रहेला साधु मंगलिकने माटे पांच दिवस श्री कल्पसूत्र वांचे.

कल्प एटले साधुनो आचार. ते दश प्रकारनो होय छे.

(१) अचेलक कल्प (२) उद्देशिक कल्प (३) शय्यातर कल्प (४) राजपिंड कल्प (५) कृति कर्म कल्प (६) व्रत कल्प (७) ज्येष्ठ कल्प (८) प्रतिक्रमण कल्प (९) मास कल्प अने (१०) पर्युषणा कल्प.

(१) अचेलक कल्प = वस्त्र रहितपणुं

तीर्थंकरोने आश्रयीने-ज्यारे तीर्थंकरो दीक्षा ले छे त्यारे इन्द्र एक देव दूष्य वस्त्र भगवंतना

डाबा खभे मूके छे. ते देव दूष्य भगवंतनी साथे होय त्यां सुधी सचेलक एटले वस्त्र सहित कहेवाय पण ज्यारे ते वस्त्र जाय त्यारे अचेलक कहेवाय.

साधुने आश्रीने अचेलक कल्प-पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ श्वेत परिमाणवाळां अने जीर्ण प्रायः वस्त्र राखे छे तेथी तेओ वस्त्र रहित होवाथी तेमने अचेलक कल्प छे. श्री अजितनाथ स्वामी आदि वचला बावीश जिननां साधुओ कोइ कोइ साधु बहु मुल्यवाळां अने भिन्न भिन्न वर्णवाळा वस्त्रो राखे छे तथा कोइ कोइ साधुओ श्वेत परिमाणवाळा वस्त्रो राखे छे तेथी तेओनो अचेलक कल्प अनिश्चित छे.

पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओ माटे अचेलक कल्प निश्चित छे. हवे कोइ शंका करे के. पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओ वस्त्र धारण करे छे तथा तेमने अचेलक केम कहेवाय ? तेनो उत्तर ए छे के तेमना वस्त्रो जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळा होय छे तेथी अचेलक कहेवाय छे कारणके तुच्छ अने जीर्ण प्राय वस्त्रो रहेतां लोकोमां अवस्त्रपणुं प्रसिध्ध छे. जेम कोइ पंचीउं पहेरीने नदी उतर्या होय तेओ कहे छे के अमे तो नग्न थइने नदी उतर्या. वळी लोको पासे वस्त्र

होय छे तो पण धोबी दरजी अथवा वणकरने कहे छे के अमोने अमारा कपडा आप अमे कपडा विनाना बेठा छीए एवी रीते पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने वस्त्रो होवा छतां अचेलकपणुं कहेलुं छे.

(२) उद्देशिक कल्प - आधाकर्मि पणुं

कोइ साधुने निमित्ते अथवा कोइ साधु समुदायने निमित्ते आहार पाणी वगेरे बनाव्युं होय ते पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने कोइने पण न कल्पे ज्यारे वचला बावीश साधुओने जे साधुने उद्देशीने अथवा जे साधु समुदायने उद्देशीने बनावेल होय तो तेओने न कल्पे पण बीजा साधुने अथवा बीजा साधु समुदायने कल्पी शके छे.

(३) शय्यात्तर एटले जे जग्याए साधु उतर्या होय ते जग्यानो जे मालिक होय तेनो आहार-पाणी-खादिम-वस्त्र-पात्र-कंबल-ओघो-सोय-अस्तरो-नेरणी अने कान खोतरणी आ बार प्रकारनो पिंड सर्व तीर्थंकरोना वारामां सर्व साधुओने कल्पे नहि. कारणके शय्यातर जो रागी थाय तो आहार वगेरेनी जोगवाइ साधु माटे राखे तेथी आहारादि अशुध्ध मले. वळी सारो

आहार मले तो साधु ते घर वगेरे न छोडे. वळी लोकोने एम ठसी जाय के साधुओने जे जग्या आपे ते आहार पाणी आपे माटे उतरवानी जग्या शुध्ध न मले इत्यादि घणां दोषोनो संभव छे माटे साधुओ शय्यातरनो पिंड न ले.

कोइ गाममां साधु गया होय त्यां श्रावकनुं एकज घर होय तो ते श्रावकने घेर साधु रातना चार पहोर जागता रहे सवारनुं प्रतिक्रमण बीजे स्थाने करे तो ते श्रावक शय्यातर कहेवाय नहीं. एटले तेना घरनुं आहारपाणी वगेरे कल्पे.

शय्यातरनी- तृण (घास)-माटीनुं ढेफुं-पेशाब करवानी कुंडी-पाटलो-पाट-पाटीयुं-शय्या-संथारो-लेप आदि वस्तु अने चारित्रनी इच्छावाळो उपधिसहित शिष्य आटली वस्तु साधुओने कल्पे छे.

(४) राजपिंड- जे राजा होय तेनो आहार-पाणी-खादिम-स्वादिम-वस्त्र-पात्र-कंबल अने रजोहरण ए आठ प्रकारनो पिंड पहेला अने छेल्ला जिनना साधुने कल्पे नहि. कारणके राजाना घरे जतां आवतां साधुने खोटी थवुं पडे स्वाध्याय-ध्यानमां व्याघात थाय. साधुने

अमंगलिक माने तो अपमान करे. शरीरे नुक्शान पण करे तथा स्वरुपवती स्त्रीओ-हाथी-घोडा वगेरे देखी साधुनुं मन चलित थाय. वळी लोकोमां निंदा थाय इत्यादि घणां दोषोनो संभव छे. ज्यारे बावीश जिनना साधुओने राजपिंड कल्पी शके छे. कारणके तेओ ऋजु = सरल अने प्राज्ञ = बुध्धिशाळी होय छे.

(५) कृति कर्म = वंदन

सर्व जिनना साधुओ दीक्षा पर्यायना क्रमथी परस्पर वंदन करे परंतु साध्वी घणां वर्षोना दीक्षा पर्याय वाळी होय तो पण आजना दीक्षित साधुने पण वंदन करे कारणके तीर्थंकर परमात्माओनुं शासन पुरुष प्रधान होय छे.

(६) व्रत = महाव्रत. पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने पांच महाव्रतो होय छे. ज्यारे वचला बावीश जिनना साधुओने चार महाव्रतो होय छे. तेओने मैथुन विरमण नामना महाव्रतनो समावेश परिग्रह परिमाण महाव्रतमां ज थइ जाय छे. तेओ ऋजु अने प्राज्ञ होवाथी जाणे छे के- स्त्री ए परिग्रहज छे.

(७) ज्येष्ठ कल्प = मोटा नानापणानो व्यवहार.

पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओनी वडी दीक्षाथी मांडीने मोटा-नानापणानो व्यवहार थाय छे. ज्यारे बावीश जिनना साधुओने अतिचार रहित पणानुं चारित्र होवाथी दीक्षाना दिवसथी मोटा नानापणानो व्यवहार थाय छे. पिता अने पुत्र-राजा अने प्रधान-शेठ अने वाणोतर-माता अने दीकरी-राणी अने दासी वगेरे साथे दीक्षा ले तो साथे ज योग वहन करे अने साथे ज वडी दीक्षा ले तो तो क्रम मुजब मोटा नाना पणे स्थापवा. पण पुत्र आदि वडी दीक्षाने योग्य होय अने पिता न होय तो तेओने समजावी हा पाडे तो पुत्र आदिने मोटा तरीके स्थापवा पण ना कहे तो तेम करवुं नहि.

(७) प्रतिक्रमण कल्प-

पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने दोष लागे के न लागे. तो पण सवार सांज बन्ने वखत प्रतिक्रमण अवश्य करवुं. बावीश जिनना साधुओने अतिचार लागे तोज प्रतिक्रमण करे बाकी नहीं. अने तेओ कारणे प्रतिक्रमण करे तो देवसि अने राइ. बे ज प्रतिक्रमण करवाना होय छे

ज्यारे पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने देवसी-राइ-पक्खी-चोमासी अने संवत्सरी प्रतिक्रमण होय छे.

(८) मास कल्प-

पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने एक स्थाने वधारेमां वधारे एक मास रहेवुं कल्पे. कारणके एथी वधारे वखत रहे तो उपाश्रयनो मोह वधे. लोकमां लघुपणुं पामे इत्यादि घणां दोषो थाय. विहार करवाथी प्राणिओने बोध थाय. घणां देशो देखे. ज्ञान-विज्ञान वृध्धि पामे इत्यादि घणो लाभ थाय. परंतु दुष्काल-अशक्ति-रोग आदिना कराणे अधिक रहेवुं पडे तो उपाश्रय बदले. उपाश्रयना खूणा बदले पण मास उपरांत ए स्थाने न रहे. बावीश जिनना साधुओ तो सरल स्वभावी होवाथी तेओने मासकल्प नियत नथी.

(१०) पर्युषण कल्प एटले साधुओए एक स्थळे चोमासुं करवुं बे प्रकारे (१) जघन्य (२) उत्कृष्ट.

संवत्सरी प्रतिक्रमणथी शरु करी कार्तिक चोमासी सुधी सीत्तेर दिवस रहेवुं ते जघन्य

कल्प. अने अषाड चोमासीथी कार्तिक चोमासी सुधी रहेवुं ए उत्कृष्ट पर्युषणा कल्प. आ बन्ने स्थविर कल्पीने होय छे. जिन कल्पीने तो उत्कृष्ट पर्युषण कल्प होय छे. आ कल्प पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओ अवश्य करे. बावीश जिनना साधुओने अनियत छे.

आ दशे कल्पो पहेला अने छेल्ला जिनना साधुओने नियत जाणवा. वचला बावीश जिनना साधुओने व्रत कल्प-शय्यातर-ज्येष्ठ अने कृति कर्म आ चार कल्प नियत अने अचेलक-उद्देशिक-प्रतिक्रमण-राजपिंड-अने पर्युषणा कल्प अनियत जाणवा. आ भेद पड्या तेमां जीव विशेष कारण छे. पहेला जिनना साधुओ सरल स्वभावी अने जड छे माटे तेमने धर्मनुं ज्ञान दुर्लभ छे. श्री महावीर स्वामीना तीर्थना जीवो वक्र अने जड होय छे तेथी तेओने धर्मनुं पाऴवुं दुष्कर होय छे. ज्यारे बावीश जिनना साधुओ सरल स्वभावी अने प्राज्ञ होय छे आथी तेओने धर्मनुं ज्ञान अने धर्मनुं पाऴवुं सहेलुं होय छे.

आ वात द्रष्टांतोथी बतावे छे.

पहेला जिनना केटलाक साधुओ बहारनी भूमिथी गुरु पासे आव्या गुरुए पुछ्युं के हे

मुनिओ ! आटलो बधो वखत तमो क्यां रोकाया हता ? त्यारे तेओए कह्युं के हे स्वामी अमे नाच करता एक नटने जोवामां रोकाया हता. गुरुए कह्युं के-एवी रीते नटने जोवुं साधुने कल्पे नहीं ! तेओए कह्युं के बहुं सारुं हवेथी नटनो खेल जोइशुं नहीं ! एम कही वात अंगीकार करी. वळी एक दिवस एज साधुओ बहारथी घणी वेळाए उपाश्रये आव्या ! गुरुए आगळनी जेम पूछवाथी तेओए कह्युं के हे स्वामी अमे नाचती एक नटीने जोवा रोकाया हता. त्यारे गुरुए कह्युं के महानुभावो ! तमोने ते दिवसे नटने जोवानी ना कही हती तेथी नटीने जोवानो तो निषेध ज जाणवो त्यारे शिष्यो ए कह्युं के हे प्रभु अमोने ते वातनुं जाणपणुं नहोतुं. हवे फरीने तेम नही करीए ! अहीं तेओ जड होवाथी एम न जाण्युं के गुरुए नटनो निषेध कर्यो तो नटीनो निषेध होय ज अने सरल होवाथी सरल उत्तर आप्यो. पहेलुं द्रष्टांत.

हवे बीजुं द्रष्टांत

कोइ कोंणक देशना वाणियाए घडपणमां दीक्षा लीधी. एक वखते इरियावहीना काउस्सगमां ते घणो काळ सुधी स्थिर रह्यो. तेणे काउस्सग पार्यो त्यारे गुरुए पूछ्युं के-तमे आटला बधा

लांबा काउसग्गमां शुं चिंतव्युं ? तेणे कह्युं के हे स्वामी ! में तेमां जीवदया चिंतवी. गुरुए पूछ्युं के तमे शी रीते जीवदाय चिंतवी ? तेणे कह्युं के पहेला ज्यारे हुं गृहवासमां हतो त्यारे में खेतरमांथी नकामा वृक्ष वगेरेने काढी नांखी सारी रीते खेडीने धान्य वाव्युं हतुं अने तेथी घणुं निपज्युं हतु. पण हवे मारा पुत्रो निश्चिंत अने प्रमादी थइने नकामा वृक्ष वेगेरने खेतरमांथी नहीं काढे तथा सारी रीते खेडशे नहीं तो धान्य नहीं नीपजवाथी ते बिचाराना शा हाल थशे ? गुरु महाराजे कह्युं के हे महानुभाव आ तमे जीवदया चिंतवी न कहेवाय पण जीव हिंसा चिंतवी कारणके वृक्षो उखेजवामां तथा खेतरने खेडवामां घणां जीवोनो नाश थाय छे तेथी तमे दुर्ध्यान कर्युं आम चिंतववुं साधुने कल्पे नहीं. आ रीते गुरु महाराजना कहेवाथी मिच्छामि दुक्कडं दीधुं. अहीं जड होवाथी ख्याल न आव्यो के आ जीवहिंसा छे अने सरल होवाथी जे चिंतव्युं ते गुरुने कह्युं आ बीजुं द्रष्टांत.

श्रमण भगवान महावीर महाराजाना शासनना साधुओनां वक्र अने जड पणाना बे द्रष्टांतो.

केटलाक साधुओ नटने नाचतो जोइने विलंबे गुरु समीपे आव्या. गुरुए पूछ्युं अने नट

जोवानो निषेध कर्यो. वळी एक दिवस नाचती नटीने जोइने विलंबथी गुरु पासे आव्या. गुरुए पूछ्य एटले पोताना वक्रस्वभावथी जूदा उत्तरो देवा लाग्या. पछी गुरुए घणुं पुछवाथी सत्य वात कही. गुरु तेमने ठपको देवा लाग्या त्यारे उल्टा तेओ गुरुने ठपको देवा लाग्या के-तमोए अमोने नट जोवानो ते दिवसे निषेध कर्यो त्यारे ज नटी जोवानो पण निषेध शा माटे कर्यो नहीं ? माटे आ दोष तमारो ज छे. अमे शुं जाणीए ? एम वक्रताथी उत्तर आप्यो. पहेलुं द्रष्टांत.

कोइ एक वेपारीनो दिकरो दुर्विनित वक्र अने जड हतो. तेना पिताए घणी वखत शिखामण आपी के मा बाप वगेरे वडीलोना सामे न बोलवुं. एक दिवसे बधा घरना माणसो बहार गया हता त्यारे तेणे विचार्युं के वारंवार शिखामण आपता पिताने आजे तो हुं बराबर शिक्षा आपुं ! एम विचार करी घरनां बारणां अंदरथी बंध करीने पोते अंदर भराइ रह्यो. पछी तेना पिता वगेरे आव्या बाद तेओए बारणुं उघाडवानुं घणुं कह्युं छतां तेणे कांइ जवाब पण आप्यो नहीं. तेम बारणां पण उघाड्या नहीं ! पछी तेनो पिता भींत ओलंघीने ज्यारे अंदर गयो त्यारे तेणे पुत्रने हसतो जोयो अने तेथी तेणे ठपको आप्यो त्यारे ते कहेवा लाग्यो के तमोए ज मने कह्युं छे के वडीलोने

सामो उत्तर न देवो.

ए प्रमाणे बीजुं द्रष्टांत.

बावीश तीर्थंकरोना साधुओना ऋजु अने प्राज्ञनां द्रष्टांतो

केटलाक साधुओ नटने जोइने घणे काळे आववाथी गुरुए पूछ्युं त्यारे तेओए जेम हतुं तेम यथास्थित कही संभळाव्युं. गुरुए नटनो नाच जोवानो निषेध कर्यो पछी एक दहाडो ज्यारे बहार गया त्यारे नटीने नाचती जोइने प्राज्ञ होवाथी विचार करवा लाग्या के रागना हेतुथी गुरुमहाराजे नट जोवानो आपणने निषेध कर्यो छे त्यारे नटीनो तो अत्यंत रागनुं कारण होवाथी सर्वथा निषेध होवो ज जोइए. एम विचारी नटीने न जोइ.

जघन्य पर्युषणा कल्प जे कह्यो ते कारणना अभावे जाणवो परंतु कोइ कारण होय तो तेनी मध्यमां पण विहार करवो कल्पे. ते आ रीते-विपत्ति होय, आहार न मली शके, राजा साधुनो द्वेषी होय, रोगनो उपद्रव होय, स्थंडिलनी जग्या न मले, स्थंडिलनी जग्या जीवांतवाळी होय, साधुने उतरवानी जग्या जीवांतवाळी होय, कुंथुआनो उपद्रव होय, अग्निनो उपद्रव होय

तथा जो सर्पनो उपद्रव होय तो चोमासानी अंदर पण विहार करवो कल्पे ! वळी कोइ कारण होय तो चोमासा उपरांत पण साधुओए रहेवुं कल्पे ! आवी रीते-वरसाद वरसतो बंध न रहे अने मार्ग कीचडथी चाली शकाय तेवो न होय तो उत्तम मुनिओ चोमासा बाद पण रहे छे !

संयमना निर्वाह माटे क्षेत्रना गुण जोवा. क्षेत्र त्रण प्रकारनुं-जघन्य-उत्कृष्ट अने मध्यम.

ज्यां जिनमंदिर नजीकमां होय, स्थंडिलनी जग्या शुध्ध जीवात विनानी अने कोइनी नजर न पडे तेवी होय, स्वाध्याय-ध्यान सुखथी थइ शके तेम होय अने भिक्षा सुलभ होय. आ चार गुण युक्त क्षेत्र जघन्य कहेवाय. तेर गुणवाळुं क्षेत्र उत्कृष्ट कहेवाय. आ रीते-

ज्यां घणो कीचड न थतो होय, घणां समुर्च्छिम प्राणीओ न थतां होय, स्थंडिलनी जग्या निर्दोष होय, उपाश्रय स्त्री संसर्ग आदिथी रहित होय, दूध-दहीं-घी वगेरे गोरस घणुं मलतुं होय, लोकोनो समुदाय मोटो अने भद्रक होय, वैद्यो भद्रक प्रकृति वाळा होय, औषध सुलभ होय, गृहस्थोनां घर कुटुंबवाळा अने धन धान्यादिथी भरेलां होय, राजा भद्रक होय, ब्राह्मण वगेरे अन्य मतवाळाओ साधुओनुं अपमान न करता होय, भिक्षा सुलभ होय अने स्वाध्याय-ध्यान

शुध्ध थइ शके तेम होय ए तेर गुणवाळुं क्षेत्र उत्कृष्ट जाणवुं.

पांच गुणथी बार गुणवाळुं क्षेत्र ए मध्यम जाणवुं. साधुओए बनी शके तो उत्कृष्ट क्षेत्रमां, न मळे तो मध्यम क्षेत्रमां अने ते न मले तो जघन्य क्षेत्रमां पर्युषणा कल्प करवो ! पण हालना समयमां गुरु महाराजे आदेश करेलां क्षेत्रमां साधुओए पर्युषण कल्प करवो.

आ दश प्रकारनो कल्प त्रीजा औषधनी पेठे हितकारी थाय छे. ते औषधनुं द्रष्टांत.

कोइ एक राजाए पोताना पुत्रनी अनागत चिकित्सा माटे-रोग न आव्ये छते आगामी काळमां रोगो न थाय ए हेतुथी त्रण वैद्योने बोलाव्या. पहेला वैद्ये कह्युं के मारुं औषध रोग होय तो ते रोगनो नाश करे छे पण जो रोग न होय तो नवो रोग उत्पन्न करे छे. राजाए कह्युं के सूतेला सिंहने जगाडवा सरखुं आ तारुं औषध कांइ कामनुं नथी. बीजा वैद्ये कह्युं के मारुं औषध रोग होय तो तेनो नाश करे छे अने रोग न होय तो गुण अथवा दोष कांइ करतुं नथी. राजाए कह्युं के राखमां घी नाखवा सरखा आ तारा औषधनी पण जरुर नथी. त्यार पछी त्रीजा वैद्ये कह्युं के मारुं औषध जो रोग होय तो तेनो नाश करे छे अने रोग न होय तो शरीरमां बळ वधारे छे. वीर्य पुष्ट

करे छे अने कांतिनी वृध्धि करे छे. राजाए कह्युं के आ औषध उत्तम छे. पछी त्रीजा वैद्यनुं औषध कराव्युं. आ त्रीजा औषधनी पेठे आ दश कल्पो पण दोष होय तो ते दोषोनो नाश करे छे अने दोष न होय तो धर्मनी पुष्टि करे छे.

चोमासुं रहेला साधु पर्युषणपर्व आवे त्यारे मंगलिकने माटे पांच दिवस श्री कल्पसूत्र वांचे ! जेम देवोमां इन्द्र शिरोमणी छे, ताराओमां चन्द्र, न्यायवान पुरुषोमां राम, रुपवंतोमां कामदेव, रुपवतीमां रंभा, हाथीओमां ऐरावण, वृक्षोमां कल्पवृक्ष, नृत्यकळामां मयूर, तेजस्वीमां सूर्य, साहसिकोमां रावण, सतीओमां राजीमती, वनमां नंदनवन, काष्ठमां चंदन, पुष्पोमां कमल, तीर्थोमां शत्रुंजय, गुणोमां विनय, धनुर्धारीओमां अर्जुन, मंत्रोमां नवकार, बुध्धिवंतोमां अभयकुमार अने औषधमां अमृत शिरोमणि पणाने धारण करे छे तेम कल्पसूत्र सघळां शास्त्रोमां शिरोमणी छे.

कह्युं छे के-

अरिंहत परमात्मा सिवाय बीजो देव नथी, मुक्तिथी बीजुं परमपद नथी, शत्रुंजयथी बीजुं

परम तीर्थ नथी अने कल्पसूत्रथी बीजुं कोइ उत्तम शास्त्र नथी.

आ कल्पसूत्र साक्षात कल्पवृक्ष ज छे. तेमां वीर प्रभुनुं चरित्र बीजरुपे छे, पार्श्वनाथ भगवाननुं चरित्र अंकुरारुपे छे, नेमिनाथ प्रभुनुं चरित्र थडरुपे छे. ऋषभदेव भगवानुं चरित्र डाळीओ रुपे छे, स्थवीरावली पुष्पो रुपे छे, सामाचारीनुं ज्ञान ए सुगंध छे अने मोक्ष प्राप्तिरुप फळ छे.

आ कल्पसूत्र वांचवाथी, चांरनारने सहाय देवाथी, कल्पसूत्रना सघळा अक्षरो सांभऴवाथी तथा विधिपूर्वक तेनुं आराधन करवाथी ते आठ भवनी अंदर मोक्षने देनारुं थाय छे. वीर भगवान श्री गौतम स्वामीने कहे छे के हे गौतम ! जे माणसो जिनशासनमां एकाग्र चित्तवाऴा थइने प्रभावना अने पूजामां तत्पर रही एकवीशवार कल्पसूत्रने सांभऴे छे तेओ आ भवरुपी समुद्रने तरी जाय छे.

एवी रीते श्री कल्पसूत्रनो महिमा सांभऴीने कष्ट अने धनना खर्चथी साधी शकाय एवा संयम, तपस्या, पूजा प्रभावना वगेरे धर्म कार्योमां आऴस न करवी जोइए. कारणके सर्व

सामग्री सहित कल्पसूत्रनुं श्रवण वांछित फळने आपनारुं छे ! जेम पाणी-वायु-ताप वगेरे सामग्री होय तोज बीज फलदायक थाय छे तेम आ कल्पसूत्र पण देव-गुरुनी पूजा, प्रभावना, साधर्मिकोनी भक्ति वगेरे सामग्री सहित करतां भवरुपी समुद्रने तरवाना फळना हेतुरुप थाय छे.

आ कल्पसूत्र श्री चौदपूर्वधर भद्रबाहुस्वामीए प्रत्याख्यान प्रवाद नामना नवमा पूर्वमांथी दशाश्रुत स्कंध उध्धर्यो तेनुं आठमुं अध्ययन आ श्री कल्पसूत्र छे.

आ श्री कल्पसूत्रनो संपूर्ण अर्थ तथा तेनुं महात्म्य कोइ कहेवाने समर्थ नथी. कह्युं छे के सर्व नदीनी रेती भेगी करीए अने सर्व समुद्रनुं पाणी भेगुं करी तेना करतां पण एक सूत्रनो अर्थ अनंतगुणो छे.

चौदपूर्वनुं मान बतावे छे.

पहेलुं पूर्व एक हाथी जेटली मसीथी लखी शकाय, बीजुं बे हाथी प्रमाण, त्रीजुं चार, चोथुं आठ, पांचमुं सोळ, छट्ठुं बत्रीश, सातमुं चोसठ, आठमुं एकसो अट्ठावीश, नवमुं बसो छप्पन, दशमुं पांचसो बार, अग्यारमुं एक हजार चोवीश, बारमुं बे हजार अडतालीश, तेरमुं चार

हजार छण्णुं अने चौदमुं पूर्व आठ हजार एकसोने बाणु प्रमाण हाथीनी मसीना ढगलाथी लखी शकाय.

चौद पूर्व सोऴ हजार त्रणसो त्र्यासी (१६३८३) हाथी प्रमाण मसीना ढगलाथी लखी शकाय.

चौद पूर्वनां अनुक्रमे नामो–

उत्पादपूर्व, अग्रायणीय पूर्व, वीर्य प्रवाद पूर्व, अस्ति प्रवाद पूर्व, ज्ञान प्रवाद पूर्व, सत्य प्रवाद पूर्व, आत्म प्रवाद पूर्व, कर्मप्रवाद पूर्व, प्रत्याख्यानप्रवाद पूर्व, विद्याप्रवाद पूर्व, कल्याणप्रवाद पूर्व, प्राणावायपूर्व, क्रियाविशाल पूर्व अने लोक बिंदूसार पूर्व.

जो मुखमां हजार जीभ होय अने हृदयमां केवलज्ञान होय तो पण मनुष्यो कल्पसूत्रनुं महात्म्य कही शके नही.

कल्पसूत्र वांचवामां योग वहन करेला साधुओ अधिकारी छे साध्वीओ सांभऴवाने अधिकारी छे पण वीर प्रभुना निर्वाण पछी नवसो एंसी वर्ष गया बाद मतांतरे नवसो त्राणुं वर्ष

गया बाद ध्रुवसेन राजानो दीकरो मरण पामवाथी शोकग्रस्त थयेला ते राजाने समाधिमां लावववा माटे आनंदपुरमां सभा समक्ष महोत्सवपूर्वक श्री कल्पसूत्र वांचवानुं शरु थयुं त्यारथी शरु करीने चतुर्विध संघ श्री कल्पसूत्र सांभऴवाने अधिकारी थयो. पण वांचवाने तो योग वहन करेल साधु ज अधिकारी छे !

आ पर्युषण पर्वमां पांच कार्यो अवश्य करवा

(१) चैत्य परिपाटी (२) समस्त साधुओने वंदन (३) सांवत्सरिक प्रतिक्रमण (४) परस्पर साधर्मिकने खमाववा (५) अट्ठमनो तप करवो.

तेमां अट्ठमनो तप महाफऴने देनारो छे. माटे मुक्तिनी संपदाने इच्छता लोकोए नागकेतूनी पेठे ते तप अवश्य करवो जोइए.

नागकेतूनी कथा.

चन्द्रकान्ता नगरीमां विजयसेन राजा हतो. तेमां श्रीकांत नामे शेठ अने तेनी श्रीसखी भार्या हती. तेओने घणां उपाये एक पुत्र जन्म्यो. तेणे नजीकमां पर्युषण पर्व आवतुं होवाथी

घरमां अट्ठमनी वातो सांभळी तेथी जातिस्मरण ज्ञान पेदा थयुं अने स्तनपान करतो बाळक छतां तेणे अट्ठम कर्यो. स्तनपान छोडी देवाथी अशक्त बनी गयेला पुत्रने स्वस्थ करवा विविध उपायो करवा छतां आहार विना ते मूर्च्छित थइ गयो अने संबंधीओए मरेलो जाणी तेने जमीनमां दाट्यो. पुत्र मरणना आघातथी श्रीकांत पण मरण पाम्यो तेथी अपुत्रियानुं धन लेवा राजाए माणसो मोकल्या. आ बाजु अट्ठम तपना प्रभावथी नागराजनुं आसन कंप्युं. अवधिज्ञानथी सघळुं जाणीने नागलोकना इन्द्रे भूमिमां रहेला ते बाळकने अमृत छांटीने स्वस्थ कर्यो अने ब्राह्मणना रुपे शेठना घेर आवी राजपुरुषोने धन लेतां अटकाव्या. तेथी राजा पोते त्यां आव्यो अने धन लेतां केम अटकाव्यां ? एम ब्राह्मणने पूछयुं. ब्राह्मणे कह्युं के शेठनो पुत्र जीवे छे. राजाए कह्युं के ते मरी गयो छे ते क्यां छे ? त्यारे ब्राह्मणे तेने निधाननी जेम भूमिमांथी काढी बताव्यो एथी सर्व लोको आश्चर्य पाम्या अने राजाए ब्राह्मणने पुछ्युं तमे कोण छो ? अने आ बाळक कोण छे ? त्यारे ब्राह्मणे कह्युं के हुं नागकुमार निकायनो अधिपति धरणेन्द्र छुं अने आ बाळके करेला अट्ठम तपना प्रभावे सहाय करवा आव्यो छुं. पूर्व जन्ममां आ बाळक एक शेठनो

पुत्र हतो. तेनी माता तेने बाळक मुकीने मरी गइ अने तेना पिता बीजी स्त्रीने परण्या ते अपरमाता आ बाळकने घणुं दु:ख देती हती. तेथी एक दिवसे तेणे पोताना मित्रने जणाव्युं मित्रे कह्युं के- पूर्व जन्ममां तप नहि करवाथी जीवने दु:खो भोगववा पडे अने तप करवाथी दु:खो टळे. ए सांभळी तेणे आगामी पर्युषणमां अट्ठमनो तप करवानो निश्चय कर्यो. पछी एकदा अट्ठमनी भावना भावतो ते आंगणामां घासनी झुंपडीमां सुतो हतो ते वखते द्वेषथी अवसर जोइने तेनी अपर माताए चूलामांथी अग्निनो कण ए झुंपडी उपर नांख्यो. एथी झुंपडी सळगी अने शुभ भावपूर्वक मरीने ते अहीं श्रीकांत शेठनो पुत्र थयो छे. तेने घरमां पर्युषणनी वातो सांभळवाथी जातिस्मरण ज्ञान थयुं छे अने पूर्व जन्ममां निधरिलो अट्ठमनो तप कर्यो छे तेथी आ महा भाग्यवंत छे. वळी आ भवमां ज ते मुक्तिमां जवानो छे. तमने पण ते घणो उपकार करशे माटे तेने सारी रीते संभाळवो वगेरे कहीने पोतानो हार बाळकना गळामां नांखी धरणेन्द्र स्वस्थाने गया. पछी स्वजनोए श्रीकांतशेठनुं मरण कार्य कर्युं अने नागकुमारनी सहायथी ते जीव्यो तेथी तेनुं नागकेतु एवुं नाम राख्युं. ते सात्विक अने परम श्रावक थयो.

एक वखत राजाए एक निरपराधीने चोर मानीने हण्यो ते मरीने व्यंतर थयो अने तेणे राजाने सिंहासनथी पटकीने लोही वमतो कर्यो. रोषथी समग्र राजधानीनो नाश करवा तेणे आकाशमां मोटी शिला विकुर्वी अने नगर उपर फेंकवा तैयार थयो. ते वखते समग्र नगरनो अने जिनमंदिरोनो विनाश थतो जोइ तेने अटकाववा माटे नागकेतुए प्रासाद उपर चढीने ते पडती शिलाने हाथथी धारण करी लीधी. तेनी आवी तप शक्तिथी भय पामेलो व्यंतर शिलाने संहरीने तेना पगमां नमी पड्यो अने राजाने पण साजो कर्यो. ते नागकेतुने एक दिवसे श्री जिनपूजा करतां पुष्पमांथी कोइ झेरी साप डस्यो छतां समाधिमां रहेवाथी उत्तम ध्याननां बळे केवलज्ञान पेदा थयुं पछी शासन देवीए आपेला मुनिवेषने धारण करी चिरकाल विचरी आठे कर्मोने खपावी मुक्तिने पाम्या आ रीते अट्ठमनो मोटो महिमा समजी शक्ति मुजब करवो जोइए.

आ कल्पसूत्रमां त्रण विषयो कहेवाना छे.

पुरिम चरिमाण कप्पो
मंगलं वध्धमाण तित्थम्मि ।

इह परिकहिआ जिण गण
हराइ थेरावली चरित्तं ॥

आ कल्पसूत्रमां श्री जिनेश्वरदेवोनां चरित्रो-गणधर वगेरेनी स्थवीरावली अने साधुओनी समाचारी आ त्रण अधिकार कहेवाना छे.

कल्पसूत्रनी शरुआत करे छे. ते काळ अने ते समयने विषे श्रमण भगवान महावीर महाराजाना पांच कल्याणको थया छे.

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रने विषे च्यव्या. उत्तरफाल्गुनी नक्षत्रने विषे जन्म्या. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रने विषे दीक्षा लीधी. उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रने विषे केवलज्ञान पाम्या अने पांचमुं स्वाति नक्षत्रनो चन्द्रनो योग प्राप्त थतां भवान निर्वाणने पाम्या.

विस्तारथी प्रभु महावीरनुं जीवन कहेवाय छे. जे ते ग्रीष्मकालनो चोथो मास आठमुं पखवाडीयुं एटले असाड सुद छट्ठनी रात्रिने विषे दशमा देवलोकथी अर्थात् अत्यंत श्रेष्ठ पुष्पोत्तर महाविमानथी च्यवीने ब्राह्मणकुंड नामना गाममां ऋषभदत्त ब्राह्मण वरंग छे तेनी देवानंदा नामे

भार्यानी कुखने विषे आवी उपन्या. ते समये देवानंदाए चौद स्वप्नो दीठा. ते स्वप्नो जोइने जाग्या अने उठीने उत्तम चाले चालतां ते स्वप्नाओना फळने पूछवा पोताना स्वामी पासे आव्या. त्यां आवी दश नख भेगा करी बे हाथे मस्तके अंजली करीने स्वप्ना जे रीते जोया हता ते प्रमाणे पोताना स्वामीने कह्या.

भगवान महावीर क्यारे च्यव्या ?

आ जंबुद्वीप नामना द्वीपमां दक्षिणार्ध भरत खंडमां पहेलो आरो चार कोडा कोडी सागरोपम-बीजो आरो त्रण कोडा कोडी सागरोपम त्रीजो आरो बे कोडा कोडी सागरोपम पूर्ण थया बाद चोथा आराना पंचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना बाकी रह्या त्यारे इक्ष्वाकुकुळमां एकवीश तीर्थंकरो अने हरिवंश कुळमां थयेला श्री मुनिसुव्रत स्वामी अने नेमनाथ एम त्रेवीश जिनेश्वरो थइ गया बाद अने छेल्ला तीर्थंकर श्री महावीर थशे एम कहेवायेला भगवान देवानंदानी कुक्षिए गर्भपणे आव्या. ते वखते भगवानने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान ए त्रण ज्ञान हता तेथी हुं च्यवीश एम जाणता हता. च्यव्यो एम पण जाण्युं पण च्यवन वेळाए जाण्युं नहि

कारणके च्यवन काळ मात्र एक समयनो होय छे ते छद्मस्थ जीवोने अवधिज्ञान थी पण जाणी शकातो नथी. ज्यारे प्रभु गर्भमां आव्या त्यारे देवानंदाए अर्धनिद्रा करतां चौद स्वप्नो जोया. ते प्रशंसनीय कल्याणना हेतु, उपद्रवने हरनारा, धन धान्यने वधारनारा, मंगल करनारा अने शोभा युक्त हता. ते स्वप्नो अनुक्रमे हाथी, वृषभ, सिंह, लक्ष्मीदेवी, पुष्पमाळा, चन्द्र, सूर्य, ध्वज, पूर्णकळश, सरोवर, क्षीर समुद्र, देव विमान, रत्नो राशि अने चौदमे निर्धूम अग्नि जोइने जाग्या. आ स्वप्नो जोवाथी आश्चर्य-संतोष-आनंद-मनमां प्रीति अने प्रसन्नता थइ. देवानंदाना शरीरमां रोमराजी विकस्वर थइ पछी पोताना स्वामी पासे जइ जय अने विजय वडे वधावीने आ महास्वप्नोनुं शुं फळ प्राप्त थशे ? ते कहो. ऋषभदत्तने पण आश्चर्य-हर्ष-आनंद थयो अने सांभळेल स्वप्नना स्मरणथी अर्थ करी देवानंदाने कह्युं के तें घणां श्रेष्ठ कल्याणकारी उत्तम स्वप्नो जोया छे. तेथी आरोग्य-संतोष-दीर्घायु-उपद्रवनो अभाव अने वांछितनी प्राप्ति करावनारा थशे. अर्थनो-भोगनो-पुत्रनो अने सुखनो लाभ थशे. वळी नवमास अने साडासात दिवस पछी उत्तम पुत्रने जन्म आपशो ते पुत्रनुं शरीर कोमळ हाथ पगना तळीयावाळुं पांचेय इन्द्रियोथी पूर्ण

तथा श्रेष्ठ लक्षणो अने उत्तम चिन्हयुक्त हशे आ लक्षणो चक्रीने अने तीर्थंकरोने एक हजार ने आठ होय बलदेव-वासुदेवने एकसो आठ तथा बीजा भाग्यवंतोने बत्रीश लक्षणो होय छे.

ते बत्रीश लक्षणो आ प्रमाणे-

अत्यंत पुण्यशाळी जीवोने-छत्र, कमल, धनुष्य, रथ, वज्र, काचबो, अंकुश, वाव, स्वस्तिक, तोरण, सरोवर, सिंह, वृक्ष, चक्र, शंख, हाथी, समुद्र, कलश, प्रासाद, मत्स्य, जव, यज्ञ, स्तंभ, चोतरो, कमंडलु, पर्वत, चामर, दर्पण, बऴद, ध्वजा, अभिषेक सहित लक्ष्मी-माला तथा मोर ए बत्रीश लक्षणो होय. बीजी रीते पण- जेना नख, हाथ-पगना तऴियां, जिव्हा, ओष्ठ, तालु अने नेत्रना खूणा ए सात राता होय ते सप्तांग राज्य पामे. हृदय डोक, नासा, नख, मुख अने कक्षा ए छ उंचा होय तेनी सर्वरीते उन्नति थाय. दांत, चामडी, केश अंगुलीना पर्वो अने नख ए पांच सूक्ष्म (बारीक) होय ते महा धनिक थाय. नेत्रो, हृदय, नासा, हडपची अने भूजाओ ए पांच दीर्ध (लांबा) होय ते दीर्धायु-धनवंत अने पराक्रमी थाय. भाल छाती अने मुख ए त्रण पहोऴा होय ते राजा थाय. डोक-जंघा अने पुरुष चिन्ह-ए त्रण टूंका होय ते पण राजा थाय अने

सत्व स्वर नाभि ए त्रण गंभीर होय ते सर्व पृथ्वीनो घणी थाय एम पण बत्रीश लक्षणो जाणवा.

वळी नेत्रो जेवुं शील-नासा जेवी सरलता-रुप प्रमाणे धन अने शील प्रमाणे गुणो होय छे.

अति नीचो, अति उंचो, अति जाडो, अति पातळो, अति काळो अने अति गौर मनुष्य सत्वशाली होय छे.

जे सारी रीते धर्मकरणी करतो होय, सारो भाग्यशाळी होय, शरीरे नीरोगी होय, जेने सारा स्वप्ना आवतां होय, जे सारी नीतिवाळो होय अने कवि होय ते पुरुष पोताना आत्माने स्वर्गमांथी आवेलो अने पाछो स्वर्गमां जवानो सूचवे छे.

जे निष्कपट होय, दयाळु होय, दानवीर होय, इन्द्रियोने काबुमां राखनार होय, डाह्यो होय अने हंमेशा सरल स्वभावी होय ते माणसने मनुष्य जन्ममांथी आवेलो जाणवो अने पाछो पण मनुष्यमां जवावाळो जाणवो. जे कपट, लोभ, क्षुधा, आळस अने घणो आहार वगेरे चेष्टावाळो होय ते पुरुष तिर्यंचमांथी आवेलो अने पाछो त्यां जवावाळा तरीके सूचवे छे.

जे रोगवाळो स्वजनो उपर द्वेष करनारो, खराब भाषा बोलनारो तथा मूर्खनो संग करनारो माणस पोतानुं नरकगतिमां गमन अने नरकगतिमांथी आववुं सूचवे छे.

मनुष्य जमणी बाजुए जमणुं आवर्त शुभ करनारुं जाणवुं-डाबी बाजुए डाबुं आवर्त निंदनीय अशुभ करनारुं जाणवुं अने बीजी दिशाओमां मध्यम जाणवुं.

जे माणसोना हाथनुं तळीयुं रेखा विनानुं होय अथवा घणी रेखावाळुं होय ते माणसो अल्प आयुष्यवाळा निर्धन अने दुःखी होय छे तेमां संशय नथी.

जेना हाथनुं तळीयुं लाल होय ते धनवान होय, लीलुं होय ते दारुडीयो होय, पीळुं होय ते परस्त्री लंपट होय अने काळुं मलीन होय ते निर्धन होय. पुरुषनो हाथ कठन होय तो सारुं पण ते कठिनता महेनत करवाथी न थयेली जोइए. स्वाभाविक होवी जोइए. स्त्रीनो हाथ सुकोमळ होय तो सारुं-पुरुषनो जमणो हाथ जोवो अने स्त्रीनो डाबो हाथ जोवो. जेना हाथनुं तळीयुं उंचुं होय ते दातार होय, उंडु होय ते निर्धन होय, वाटका जेवुं गोळ होय अने उंडुं होय तो धनवंत होय. हाथनी आंगळीओ पातळी अने सीधी होय तो सारुं ! जे पुरुषोनी अनामिका आंगळीना

वेढानी छेल्ली रेखाथी टचली आंगऴी-वधती मोटी होय तेओने धननी वृध्धि थाय अने मोसाऴ पक्ष मोटो होय.

मणिबंधथी पितानी-गोत्रनी रेखा चाले छे अने करंभ थकी धन तथा आयुष्यनी रेखा चाले छे एवी रीते ए त्रणे रेखा तर्जनी अने अंगूठानी वच्चे जाय छे ! जेओने ए त्रणे रेखा संपूर्ण तथा दोष रहित होय तेओना गोत्र धन तथा आयुष्य संपूर्ण जाणवा नहितर नहि !

आयुष्यनी रेखाथी जेटली आंगऴीओ ओऴंगाय तेटला पच्चीश पच्चीश वर्षनुं आयुष्य पंडित लोकोए जाणवुं. आयुष्य रेखाना पल्लव मणिबंधनी सन्मुख नीकऴे तो ते संपत्तिना जाणवा अने आंगऴीओनी सन्मुख नीकऴे तो विपत्तिना जाणवा ! जेणे मणिबंध थकी उध्वरिखा नीकऴी अंगुठानी सन्मुख आवे तो तेने सुख थाय-धननो लाभ थाय अने राज्यनो लाभ थाय ! ते उध्वरिखा तर्जनी सन्मुख आवे तो राजा अथवा राजा सरखो थाय ! वचली आंगऴी सन्मुख आवे तो आचार्य अथवा सेनापति थाय ! अनामिका सन्मुख आवे तो घणां धनवाऴो सार्थवाह थाय अने छेल्ली आंगऴीनी सन्मुख आवे तो लोकोमां प्रतिष्ठा पामे !

अंगूठो अने गोत्र रेखानी वच्चे भाइ बहेननी रेखा होय छे करभ अने आयुष्य रेखानी वच्चे संतानती रेखा होय छे आयुष्य रेखा अने टचली आंगऴीनी वच्चे स्त्रीनी रेखा होय छे.

अंगूठाना मध्य भागमां जो जव होय तो विद्या प्रख्याती अने समृध्धि मऴे छे. वऴी जो जमणा अंगूठामां जव होय तो शुक्ल पक्षमां जन्म गणवो.

जेनी आंखो लाल रहेती होय तेने स्त्री त्यजती नथी. सुवर्ण समान पीऴी-मांजरी आंखवाऴाने धन त्यजतुं नथी. लांबी भुजावाऴाने ठकुराइ-मोटाइ त्यजती नथी अने शरीरे रुष्ट पुष्ट होय तेने सुख त्यजतुं नथी.

आंखोमां चीकास होय तो सौभाग्य मऴे, दांतमां चीकास होय तो उत्तम भोजन मले, शरीरमां चीकास होय तो सुख मऴे अने पगमां चीकास होय तो वाहन मले !

जेनी छाती विशाल होय ते धन तथा धान्यनो भोगी थाय, जेनुं मस्तक विशाल होय ते उत्तम राजा थाय, जेनी कम्मर विशाल होय तेने घणां पुत्र तथा स्त्री होय अने जेना पग विशाल होय ते हंमेशा सुखी थाय !

शुभ लक्षणो बऴवान होय तो खराब लक्षणनुं जोर न चाले अने खराब लक्षणो बऴवान होय तो शुभ लक्षणनुं जोर न चाले !

हे देवानंदा तमारो पुत्र १००८ उत्तम लक्षणोवाऴो थशे. तेनुं शरीर मान-उन्मान अने प्रमाणथी युक्त हशे. जऴथी भरेला कुण्डामां बेसवाथी बहार नीकऴेलुं पाणी एक द्रोण जेटलुं थाय तो मानयुक्त तुलाए तोऴतां वजन अडधो भार (आशरे पोणाचार मण) थाय ए उन्मान युक्त अने जे पोताना अंगुलथी १०८ अंगुल उंचो होय ते प्रमाण युक्त पुरुष उत्तम गणाय. तेथी न्यून छन्नू आंगऴ उंचो मध्यम अने चोराशी आंगऴ उंचो हीन जाणवो. तेमां पण तीर्थंकरो तो मस्तके बार आंगऴ शिखा होवाथी १२० आंगऴ उंचा होय छे एवा पुत्रने जन्म आपशो. वऴी ते चंद्रतुल्य सौम्य-मनोहर-दर्शनीय अने अति रुपवान थशे आठ वर्षे समग्र विज्ञाननो जाण थशे यौवनवये तो धर्म शास्त्रो, इतिहास, शब्द शास्त्रो, गणित शास्त्र, भाषा शास्त्रो, अष्टांग निमित्त, छंद शास्त्र-आचार शास्त्रो-सर्वविधि शास्त्रो इत्यादि जगतनो सर्व विद्याओनो जाण थशे. माटे हे देवी तमोए उत्तम स्वप्नो जोया छे. एम कही तेनो हर्ष वधार्यो. देवानंदा पण सांभऴी हृदयमां

धारी अति हर्ष पाम्या अने कह्युं के हे स्वामिन् आपे कह्युं ते तेमज यथार्थ संदेह विनानुं इष्ट इच्छेलुं छे अने आपना मुखना बोल में तरत झील्या छे. एम विचारी सुख भोगवतां काळ निर्गमन करवा लाग्या.

ए अवसरे पहेला स्वर्गमां रहेला सौधर्म नामना इन्द्रे अवधिज्ञानथी देवानंदानी कुक्षिमां आवेला प्रभुने जोया. ए इन्द्र ते पूर्व भवे कार्तिक शेठनो जीव जाणवो ते कार्तिक शेठनो भव कहीए छीए.

तीर्च्छा लोकना अर्धा दक्षिण भागमां जेनुं स्वामित्व छे ते सौधर्म इन्द्र आ भरत क्षेत्रमां जिनेश्वरोनां कल्याणको उजववामां मुख्य अधिकारी छे. ते पहेलो देवलोकमां सुधर्मा नामनी सभामां देवो उपर राज्य करे छे. तेथी तेनुं नाम सौधर्म इन्द्र कहेवाय छे. ते शक्रनामना सिंहासनना अधिष्ठाता माटे शक्रेन्द्र छे. वज्र हाथमां छे जेने अने दैत्योना शत्रु एवा ते शतक्रतु कहेवाय छे.

पृथ्वीभूषण नगरमां प्रजापाल राजा हता. त्यां कार्तिक नामनो शेठ हतो. तेणे सो वार

श्रावकनी पडिमा वही तेथी ते शतक्रतु कहेवायो. एकवार महिनाना उपवास वाऴो गैरिक तापस त्यां आव्यो त्यारे आखुं गाम तेनुं भक्त थयुं. श्रावक होवाथी कार्तिक शेठ त्यां गया नहि तेथी तापस रोषे भरायो. एकवार राजाए तापसने पारणा माटे विनंती करी त्यारे तेणे कह्युं के जो कार्तिक मने भोजन पीरसे तो तमारे त्यां पारणुं करुं. राजाए कबूल राख्युं कार्तिकने आज्ञा करी. त्यारे शेठे कह्युं के राजन् मारा धर्मथी तापसनुं हुं सन्मान करुं नहि पण तमारा आग्रहथी भोजन पीरशीश. तापस जमवा आव्यो. शेठे भोजन पीरस्युं त्यारे अभिमानी तापसे हे धिट्ठा ! एम कही पोताना नाक उपर आंगऴीनो स्पर्श करी शेठनुं अपमान कर्युं. शेठे विचार्युं के में जो पूर्वे दीक्षा लीधी होत तो राजानी आज्ञाने वश थइ आ रीते धर्मनो पराभव सहवो पडत नहि. एम विचारी एक हजार अने आठ वेपारीना पुत्रो साथे श्री मुनिसुव्रत स्वामी पासे शेठे दीक्षा लीधी. बार अंगो भणी बार वरस दीक्षा पाऴी काऴकरी सौधर्म इन्द्र थया. तापस पण पोताना धर्मथी मरी ए इन्द्रनुं अैरावण हाथी रुपे वाहन थयो पण आ इन्द्र तो कार्तिक छे एम जाणी ते नासवा लाग्यो. तेथी इन्द्रे पकडीने तेना पर सवारी करी. इन्द्रने डरावववा बे रुप कर्या इन्द्रे पण कर्या हाथीए चार रुप

कर्या तो इन्द्रे पण कर्या बाद इन्द्रे अवधिज्ञानथी जाण्युं के आ तो गैरिकनो जीव छे एथी एवी तर्जना करी के ते सहन न थवाथी तेणे मूऴ रुप धारण कर्युं ए कार्तिक शेठनी कथा.

ते इन्द्र पांचसो मंत्रीनी आंखे शासन करतो होवाथी तेनुं नाम सहस्त्राक्ष पण छे. मोटोमेघवश होवाथी मेघवान् छे बत्रीश लाख विमाननो स्वामी छे एवा ते इन्द्रे स्वच्छ अने उज्जवऴ वस्त्र पहेर्या छे. माऴा-मुकट नवा करायेला कुंडलो पहेर्या छे. गऴामां पंचवर्णना पुष्पोनी माऴा पहेरेली छे. एवो इन्द्र शक्रसिंहासने बेसी राज्य करे छे. चोत्रीश हजार सामानिक देवो, तेत्रीशत्रायत्रिंशक देवो-सोम-यम-वरुण अने कूबेर-चार लोकपालो तथा पद्मा-शीवा आदि आठ पट्टदेवीओ छे ते प्रत्येक देवी सोऴ हजारना परिवार वाऴी छे. त्रण सभा-सात सैन्यो-सात सेनापतिओ चारे दिशामां रक्षक चोराशी हजार आत्मरक्षक देवो छे. ते देवलोकमां बीजा घणां देव देवीओ छे ते सौना वडील अने आज्ञाकार छे अने त्यां दिव्य भोगोने भोगवे छे संगीत नाटकनो दीव्य आनंद अनुभवे छे.

एकवार सौधर्म सभामां बेसीने इन्द्र चेटक जोइ रह्या हता त्यारे, अवधिज्ञाननो उपयोग

मुकीने जंबुद्वीपनुं निरीक्षण करी रह्या हता त्यारे श्रमण भगवान महावीरने देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां गर्भपणे रहेला जोयां. तेथी हर्ष पाम्या. चित्तमां आनंदित थया अने रोमराजी सघऴी विकसीत थतां अतिशय आनंद थयो. आ आनंदमां सिंहासन उपरथी उठीने नीचे उतरी पगनी मोजडीओ उतारी. ते मोजडीओ केवी छे ? मरकत-रिष्ट अने अंजन जातिनां लीला अने श्याम रत्नोथी सुंदर कारीगरे बनावी होय एवी, चन्द्रकान्ता अने कर्कत मणिओथी जडेली. ते पछी उत्तरासंग करीने बे हाथ मस्तके जोडी जे दिशामां भगवान हता ते दिशामां सात आठ पगला जइ डाबो ढींचण उभो राखी जमणो ढींचण नीचे स्थापीने त्रणवार मस्तकथी भूमिने स्पर्श कर्यो पछी बे भूजाओने वाऴी मस्तके बे हाथथी अंजलि करीने आ प्रमाणे स्तुति करवा लाग्या.

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुध्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस सीहाणं, पुरिसवर पुंडरीयाणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण दयाणं, जीव दयाणं, बोहि दयाणं, धम्मदयाणं, धम्म देसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म सारहीणं ॥

नमोडत्थुणं अरिहंताणं

अरिहंत परमात्माओने नमस्कार थाओ ! अहीं भाव नमस्कार रुपे नमस्कार कह्यो छे. शाथी ? अचिन्त्य चिंतामणि समा आ अर्हत भगवंतनो आ भाव नमस्कार प्राप्त थवो खरेखर परम दुर्लभ छे कारणके आहार-निद्रा-भय अने मैथुन आदि संज्ञाने परवश एवा जीवने सुक्ष्म निगोदथी मांडीने देव पर्यंत चारे गतिमां भ्रमण करतां आ भगवंतनुं दर्शन पण महा दुर्लभ थइ पड्युं छे !

भाव नमस्कार शा माटे कह्यो ?

तत्वधर्मपणाने लीधे अर्थात् आ भाव नमस्कार छे ते तत्वधर्म रुप = परमार्थ धर्मरुप छे.

आत्मामां तथा प्रकारनो सम्यग्दर्शनादि भावधर्म-तत्वधर्म-परमार्थ धर्म प्रगटाववा रुप छे.

आ परमात्म प्रभुनुं जेवुं जिन स्वरुप छे तेवुं ज मारा आत्मानुं निज स्वरुप छे एम भावी मारुं निज स्वरुप आ जिन स्वरुपथी अभेद भावने पामो. मने पण आ प्रगट जिन स्वरुप प्राप्त

थाओ ! इत्यादि प्रकारे रुचिरुप-भक्तिरुप भावथी-आत्मभावथी नमस्कार करवो ते भाव नमस्कार छे ! आ भाव नमस्कार बीजाधानथी साध्य होय छे एटले एवा प्रार्थना रुप नमन प्रकारथी आत्मामां धर्म बीजनुं रोपण थाय छे ते बीजाधान वडे करीने आ भाव नमस्कार सधाय छे.

भगवंताणं

अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ. तेमां भग एटले समग्र ऐश्वर्यादि लक्षणोवाळो. भग शब्दनी छ संज्ञा छे ते आ प्रमाणे.

(१) ऐश्वर्यनी (२) रुपनी (३) यशनी (४) श्रीनी (५) धर्मनी अने (६) प्रयत्नी एम छ संज्ञा छे.

भगवंत कोण छे ?

आत्मानुं अनंत ज्ञानादि अैश्वर्य जे कर्म आवरणथी तिरोभावने पामेलुं हतुं ते जेणे अपूर्व आत्म पराक्रमथी कर्म आवरणनुं विदारण करी आविर्भाव पमाड्युं अने आम सर्व विभावना

परित्यागथी आत्मानी स्वभाव भूत सकल शक्ति प्रगट करी जे सहजात्म स्वरुप स्वामीए अनंत स्वरुप संपत्तिनुं स्वामी पणुं-इश्वरपणुं प्राप्त कर्युं ते ज खरेखरा इश्वर छे ने तेज भगवंत छे.

(१) भगवंतनुं समग्र ऐश्वर्यस्य वर्णवे छे.

आ भगवंतनुं समग्र ऐश्वर्य ते इन्द्रोथी भक्तिपणे करवामां आवेल महाप्रातिहार्य विभूति रुप छे. दिव्यध्वनि-सुरपुष्प वृष्टि-चामर-छत्र-भामंडल-देव दुंदुंभि-अशोकवृक्ष अने सिंहासन ए आठ महाप्रातिहार्य परथी आ भगवंतोनुं समग्र ऐश्वर्य रुप भग स्पष्ट जणाय छे. प्रातिहार्य एटले शुं ? प्रतिहारिनो भाव ते प्रातिहार्य. राजद्वारे बेठेलो प्रतिहारी जेम राजानुं सूचन करे छे. तेम आ अष्ट महाप्रातिहार्य विभूति आ त्रिभूवन शिरताज त्रिभुवन राज राजेश्वर भगवान अत्रे बिराजमान छे. अने तेना महा महिमानी छडी पोकारे छे.

(२) भगवंतनुं अनुपम स्म स्वस्य भग दर्शावे छे.

सर्व देवताओ साथे मळीने पोतानी सुंदर रुप निर्माण करवानी समस्त शक्तिथी जो अंगूठा प्रमाण रुप विकुर्वे-विशिष्ट निर्माण करे तो पण ते जिन भगवंतना पगना अंगूठानी पासे अंगार

(कोलसा) जेम न शोभे अर्थात् सर्व देवोए निर्माण करेलुं परम सुंदर कलामय रुप पण भगवंतना पाद अंगुष्ठ पासे कोलसा जेवुं लागे ए प्रसिध्ध द्रष्टांत परथी आ भगवंतनुं रुप केवुं अतिशयवंत हशे ते स्वयं सिध्ध थाय छे.

(३) भगवंतनुं शाश्वत यशस्म भग संगीत करे छे.

जगतमां जेम प्रतिपक्षी शत्रुने जीतवामां दाखवेल पराक्रमथी यश उठे छे तेम आ भगवंतनो यश पण राग-द्वेष शत्रुने अने परीषह-उपसर्ग जीतवामां जेमणे दाखवेल अद्‌भुत पराक्रमथी उठ्यो छे.

बाह्य शत्रु संहार पराक्रम जन्य लौकिक यश क्षण जीवी होइ कांइ सर्वकाऴ स्थिति करतो नथी पण अमुक मर्यादित काऴ ज टके छे पण भगवंतोना आ आंतरशत्रु संहार पराक्रमथी उठेलो अलौकिक महायश तो आकाल प्रतिष्ठा छे. ज्यांलगी काऴनुं अस्तित्व छे त्यां लगी तेनी प्रतिष्ठा छे अर्थात् ते कोइ काऴे नाश नहि पामनार एवो शाश्वत छे.

(४) भगवंतनुं केवलश्रीस्म भग प्रदर्शित करे छे.

कर्म अन आत्माना घोर संग्राममां अपूर्व वीरत्व दाखवता आ भगवंते प्रथम तो सम्यग्दर्शन रुप सुदर्शन चक्र वडे अनंतानुबंधि चंडाऴ चोकडीथी वींटायेला दर्शनमोह नामधारी मिथ्यादर्शन सेनापतिनुं मस्तक उडावी दीधुं. एटले कर्मनी सेनामां मोटुं भंगाण पडतां चारित्र मोहे सरदारी लीधी. तेनी सामे आ भगवंते चारित्रधर्म मोह योध्धाने रणमां उतार्यो अने तेणे आत्म स्वभावमां वर्तवा रुप व्रत मुद्गर वडे ते चारित्र मोहना अप्रत्याख्यानावरण अने प्रत्याख्यानावरण ए बे पग भांगी नांखी तेने लंगडो बनावी दीधो एटले लाग जोइने अप्रमाद धनुर्धरे आत्म जागृति रुप बाण ताकीने ते मोहना मर्म स्थानमां मार्युं एटले ते मोह मूर्च्छित थइने घरती पर ढऴी पड्यो पण शत्रुनो विश्वास शो ? माटे मृतप्राय छतां संज्वलन कषायथी जराक संज्वली रहेलो आ महामोह महाशत्रु कदाचने पाछो उछऴे एम जाणी एने क्षय कर्या विना जराय रेढो न मूकवो एम सतत अप्रमत्त पणे जागता रही आ भगवंत अपूर्वकरणे-अपूर्व आत्म सामर्थ्य योगथी मोहने खतम करवा माटे क्षपकश्रेणि रुप गज पर आरुढ थया. अने तेना ८-९-१०-१२ ए गुणस्थान रुप चार पगतऴे ते मोहना संज्वलन नोकषायादि रह्या सह्या अवशेषने छूंदी नांखी आ आत्मपराक्रम वीरे मोहने

रत्नत्रयी त्रिशूलथी मारी नांख्यो. आम कर्मनो अन्नदाता अने जगत्त्रय पर एक छत्री राज चलावनारो महामोह चक्रवर्ती मरायो एटले पछी ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय अने अंतराय ए बाकीना त्रणेय घाती महारथी पण तत्क्षण ज टपोटप पड्या एटले आवा शत्रु संहारथी त्यारे जेवुं आत्मानुं आत्म स्वभाव रमणतामय चारित्रख्यात छे अथवा ज्ञानिओथी आख्यात छे तेवुं यथाख्यात चारित्र तेमने प्रगट्युं अने आम परम सुखमय आनंदघनमय आत्मस्वरुपमां प्रतपनथी आ परंतप भगवंतनुं अनुपम स्वरुप तेज प्रतापी रह्युं अने आ भगवंतना आवा अपूर्व आत्म पराक्रमथी रीझी केवलश्रीए आवी आ श्रीमद् भगवंतना कंठमां विजयमाला आरोपी अने भालमां त्रिभुवन स्वामीपणानुं तिलक कर्युं.

(५) धर्ममूर्ति भगवंतनुं परम धर्मस्य भग प्रकाशे छे.

आ भगवंतोनुं धर्मरुप भग पण समग्र छे भगवंतोनो आ धर्म (१) सम्यग्दर्शनादि रुप (२) दानशील-तप-भावमय (३) साश्रव-अनाश्रव महायोगात्मक छे.

आम साश्रव-अनाश्रव महायोग रुप ध्विविध-सम्यग्दर्शनादि रुप त्रिविध अने दानादिरुप

चतुर्विध एवो आ भगवंतोनो धर्म परमोत्तम होवाथी सर्व प्रकारे आ भगवंतोनुं धर्मरुप भग संपूर्ण छे.

(६) परम आत्म पराक्रमी भगवंतनुं अनन्य प्रयत्न स्म भग कीर्तन करे छे.

(१) परम वीर्यथी उत्पन्न थेयल (२) एक रात्रिका महाप्रतिमा भावथी (३) शैलेशी अवस्थाथी व्यक्त थतो एवो छे.

(१) आ भगवंतोनुं आत्मवीर्य परम उत्कृष्ट छे एटले आ भगवंतोनो आत्म पुरुषार्थ पण उत्कृष्ट छे. आ भगवंतोए वीर्य संचय आ प्रकारे कर्यो. मन-वचन-कायाना प्रमत्त योगथी आत्मानी वेडफाइ जती चारे कोर वेरण छेरण थती शक्तिने अटकावी अने परभाव विभावमां न जवा देतां जेम बने तेम आत्म स्वरुपमां आत्मानुं संयमन करी तेमणे आत्म वीर्यनी अत्यंत उग्र जमावट करी अने आम तीक्ष्ण आत्मोपयोगवंत रही समये समये अनंता संयम वर्धमान करतां आ अप्रमत्त भगवंतोए सामर्थ्य योगनी श्रेणीए चढी अनंत एवुं क्षायिक वीर्य प्रगटाव्युं.

(२) आम संयमना योगे जेणे अपूर्व आत्मवीर्य संचय कर्यो एवा भगवंतोए एक रात्रिकी

आदि महादुष्कर प्रतिमाओनी अनन्य साधनामां अपूर्व प्रयत्न आत्मपुरुषार्थ दाखव्यो.

(३) सामर्थ्य योगनी श्रेणिए चढी जेणे निज केवलज्ञान निधान प्रगटाव्युं एवा आ भगवंतो आयुप्रांते कर्मोना समीकरणार्थे केवली समुद्घातमां पण अनन्य प्रयत्न विशेष रुप अपूर्व आत्मवीर्य दाखव्युं अने आ समुद्घातना फळ रुप शैलेशीकरण करी परम अयोग योग साधी मेरु जेवी निष्प्रकंपअडोल-आत्म स्थिरता रुप परम योगारुढ दशा पामवामां पण आ भगवंतोए परम आत्मवीर्यनो परम अद्भुत चमत्त्कार दाखव्यो.

आइगराणं-तित्थयराणं-सयंसम्बुध्धाणं ।

आइगराणं

श्री अरिहंत भगवंतो पोत पोताना तीर्थनी अपक्षाए एटले ए तारकना आत्माओ पोत पोताना छेल्ला भवे नारकीमांथी अथवा देवलोकमांथी च्यवन पामीने मनुष्यपणाने पाम्या होय छे. तेओ पोतानुं भोगावली कर्म मोटे भागे भोग भोगवीने पूर्ण करी संयमनो स्वीकार करी घोर परिषहो अने उपसर्गोने वेठीने क्षपकश्रेणि प्राप्त करी मोहनो संपूर्ण नाश करी वीतराग दशाने

पामीने ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय अने अंतराय कर्मोने खपावीने केवलज्ञाननी प्राप्ति करे छे. ते केवलज्ञाननी प्राप्ति ज्यां जे क्षेत्रमां थाय त्यां देवताओ आवी समवसरणनी रचना करे छे ते समवसरणमां ते तारको नमो तीत्थस्स कही पूर्व दिशाथी प्रवेश करी सिंहासन उपर बीराजमान थइ देशना आपे छे ते देशनाथी आवेला गणधर भगवंतना आत्माओ उभा थइ संयमनी मांगणी करे छे. ते वखते हजारो आत्माओ संयमीत थाय छे अने जे जीवो संयमनो स्वीकार करी शके तेम न होय तेओ ते तारको पासे मांगणी करे छे के भगवन् आ मनुष्य जन्ममां लेवा जेवुं संयम ज छे पण हाल अमारी शक्ति नथी तो ते संयम लेवानी शक्ति आवे ए माटे अमारा लायक धर्म होय तो जणावो त्यारे भगवान् गृहस्थ धर्म बतावे छे. आ रीते चतुर्विध संघनी स्थापना थाय छे. ते धर्मनी आदि करनारा कहेवाय छे एवा श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ.

तीत्थयराणं = श्री तीर्थंकर परमात्माओने मारो नमस्कार थाओ.

तीर्थने करवाना स्वभाववाळा-अचिन्त्यप्रभावी महापुण्य संज्ञित पोताना तीर्थंकर नाम कर्मना उदयथी तीर्थने करनारा एवा तीर्थंकरोने मारो नमस्कार थाओ.

पोताना छेल्ला भवथी त्रीजा भवे बोधिबीजनी प्राप्ति करी अर्हत् भक्ति-प्रवचन-वात्सल्य आदि उत्तम एवा वीश स्थानकोनी अथवा वीशमांथी कोइपण एक स्थानकनी उत्तम प्रकारे सेवना करे छे. अर्थात् उत्कृष्ट आराधना करे छे अने ते वखते पोताना आत्माने ज्ञानना उपयोगमां बराबर स्थिर करी पोताना शरीर साथेना भेदज्ञानने बराबर स्थिरतापूर्वक प्राप्त करी जगतना जीवो जे रीते दुःखमां रीबाय छे ते जाणीने ते रीबामणथी बचावी शासनना रसीया बनावुं अर्थात् सद्धर्म शासन रसिक बनावुं. आ रीते सवि जीव करुं शासन रसीनी भावना भावतां भावतां तीर्थंकर नामकर्म निकाचीत करे छे अने ते महापुण्यनो उदय थतां जगज्जीवो प्रत्ये निष्कारण करुणाथी परम परोपकार करे छे.

तीर्थ एटले शुं ?

संसारने तत्वज्ञानीओ एक महासमुद्रनी उपमा आपे छे. संसाररुपी समुद्र अनंत अने अपार छे अहो लोको ! एनो पार पामवा पुरुषार्थनो उपयोग करो ! उपयोग करो ! आम एमना स्थळे स्थळे वचनो छे. संसारने समुद्रनी उपमा छाजती पण छे. समुद्रमां जेम मोजांनी छोळो

उछळ्या करे छे तेम संसारमां विषयरुपी अनेक मोजाओ उछळे छे. जळ उपरथी जेम सपाट देखाय छे तेम संसार पण सरळ देखाव दे छे. समुद्र जेम क्यांक बहु उंडो छे अने क्यांक भमरीओ खवडावे छे तेम संसार काम-विषय-प्रपंचादिकमां बहु उंडो छे ते मोहरुपी भमरीओ खवडावे छे. थोडुं जळ छतां समुद्रमां जेम उभा रहेवाथी कादवमां खुंची जइए छीए तेम संसारना लेश प्रसंगमां ते तृष्णा रुपी कादवमां घुंचवी दे छे. समुद्र जेम नाना प्रकारना खराबा अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे तेम स्त्रीओ रुपी खराबा (मोजा) अने कामरुपी तोफानथी संसार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतळ देखातो छतां वडवानळ नामना अग्निनो तेमां वास छे तेम संसारमां माया रुपी अग्नि बळ्या ज करे छे. समुद्र जेम चोमासामां वधारे जळ पामीने उंडो उतरे छे तेम पापरुपी जळ पामीने संसार उंडो उतरे छे एटले मजबूत पाया करतो जाय छे इत्यादि प्रकारे ज्ञानीओए जेने सागरनी उपमा सांगोपांग घटावी छे एवो आ संसार सागर जेना वडे करीने जीवो तरी जाय छे ते तीर्थ कहेवाय छे.

ए तीर्थने जे करनारा ए तीर्थंकर कहेवाय छे.

सयंसम्बुध्धाणं

कोइना उपदेश विना स्वयं बोध पामेला एवा श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ..

हंमेशा अनादि जगत्ने विषे जीवो बे प्रकारमां वहेंचायेला छे. के जे जीवो हजी सुधी अनादि सूक्ष्म निगोदमांथी कदी बहार नीकळ्या नथी एवा जीवोने अव्यवहार राशीवाऴा जीवो कहेवाय छे अने केटलाक जीवो सिध्धि गतिने जे पामे छे तेटला ज जीवो अनादि सूक्ष्म निगोदमांथी नीकऴीने एकेन्द्रियपणाने प्राप्त करे छे. ते जीवोने व्यवहार राशिवाऴा जीवो कहेवाय छे. ते व्यवहार राशिमां आवेला जीवो अभव्यपण होइ शके छे, भव्य पण होइ शके छे. ते भव्य जीवोमां दरेक जीवोनुं तथाभव्यत्व एक सरखुं होतुं नथी. दरेक जीवोनुं तथाभव्यत्व भिन्न भिन्न प्रकारनुं होय छे ते तथाभव्यत्ववाऴा जीवोमां पण श्रेष्ठ योग्यतावाऴुं उत्तम तथाभव्यत्व जे जीवोनुं होय छे तेज जीवो तीर्थंकर थइ शके छे. आथी तथाभव्यताना कारणे श्री अरिहंत थइने मोक्षे जनारा श्री गणधर भगवंतो थइने मोक्षे जनारा-श्री युगप्रधान आचार्य थइने मोक्षे जनारा-श्री प्रभावक आचार्य थइने मोक्षे जनारा एम जे जीवो जे जे रीते मोक्षे जनारा होय छे ते

तेओना तथाभव्यत्वना कारणे तेना विभाग पडे छे तेमां उंची कोटिना गणाता होय तो ते ज के जे जीवो श्री अरिहंत थइने मोक्षे जनारा होय. आ जीवोने तथाभव्यत्वना परिपाकथी ज्यारे समकितनी प्राप्ति थाय छे त्यारे कोइने कोइ गुरुना उपदेशथी ज सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे माटे आ जीवोनुं सौ प्रथमनुं समकित अधिगम सम्यक्त्व गणाय छे पण निसर्ग समकित गणातुं नथी छतां पण तेओने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थतां ज तेओनुं तथाभव्यत्व एवुं खीली उठेलुं होय छे के जेना कारणे तेओ स्वयं सम्यक्त्व पाम्या एम कहेवाय छे. जेम स्कुल-कोलेजमां शिक्षक भणावता होय तेमां अनेक विद्यार्थीओ होय छे छतां कोइ होंशियार विद्यार्थी होय तो शिक्षकनी वात सांभळतानी साथे ज तेने बधुं आवडी जाय छे तो ते विद्यार्थी माटे शिक्षक पण कहे छे के आ विद्यार्थीने हुं भणावतो नथी पण तेनाथी मने ज्ञान प्राप्त थाय छे एनी जेम अहीं पण स्वयं संबुध्ध रुप श्री तारकना आत्माओ माटे समकित पामता जाणवुं के जेथी तेओनुं समकित वरबोधि रुप गणाय छे. एवा श्री स्वयं संबुध्ध एटले बोध पामेला एवा श्री अरिहंत भगवंतोने मारो नमस्कार थाओ !

पुरिसुत्तमाणं. पुरिस सीहाणं. पुरिस वरपुंडरीआणं. पुरिसवर गन्धहत्थीणं ।

श्री नमुत्थुणं सूत्रमां " पुरिसुत्तमाणं " एवुं पद आवे छे : एनुं संस्कृत भाषामां थाय "पुरुषोत्तमेभ्यः" श्री नमुत्थुणं सूत्रमां श्री अरिहन्त परमात्माने ' पुरुषोत्तम ' तरीके जणावीने वर्णन करवामां आव्युं छे. परमोपकारी परमर्षि श्री हरिभद्रसूरिश्वरजी महाराजाए, श्री ललित विस्तरामां ' भगवानने पुरुषोत्तम कयी रीतिए गणाय छे.' तेनुं पण स्पष्टीकरण कर्युं छे. शरीरमां रहे ते पुरुष : एवा पुरुषो एटले के-सत्त्वो ज, तेओमां श्री जिनेश्वरदेवो उत्तम छे. शाथी ? सहज तथाभव्यत्वादि भावथी श्री जिनेश्वरदेवना आत्माओ प्रधान छे, माटे तेओ पुरुषोत्तम गणाय छे : परन्तु स्वाभाविक तथाभव्यता आदि भावथी श्री जिनेश्वरदेवना आत्माओ, बीजा आत्माओ करतां प्रधान होय छे. ए वस्तुने स्पष्ट करतां ए सुविहितशिरोमणि आचार्य भगवान् फरमावे छे के- ' ए श्री जिनेश्वरदेवना आत्माओ आकाळथी ज परार्थव्यसनी, स्वार्थने गौण करनारा, उचित क्रियावन्त, दीनभावरहित, सफलारम्भी, अपकारी उपर पण अनिबिड अनुशयवाळा कृतज्ञताना स्वामी, अनुपहत चित्तवाळां, देवगुरुना बहुमानी तथा गंभीर आशयवाळा होय छे.'

न सर्व एव 'एवंविद्या' - 'भाविभगवद्भावसत्त्वसभाः' बीजा आत्माओ तेवा होता नथी. श्री जिनेश्वरदेवना आत्माओ आवा आकाळथी ज शाथी ? स्वाभाविक तथाभव्यतादि भावथी : एटले के ज्यां ज्यां सामग्री आदिनी अनुकूळता न होय, त्यां त्यां ते आत्माओ परार्थ व्यसनी आदि न जणाय, तो पण एना मूळ कारणभूत सहज तथाभव्यत्वादि भाव होवाथी एम ज कहेवाय के-आकाळथी ज तेओ परार्थव्यसनी आदि होय छे : अने एज स्वाभाविक तथाभव्यत्वादि भावना योगे जगतना सघळा प्राणिओमां ए आत्माओ प्रधान गणाय छे.

पुरिस सीहाणं

कर्म वैरीओ प्रत्ये निर्दय होवाथी पुरुषोमां सिंह जेवा श्री अरिहंत देवोने नमस्कार थाओ आ भगवंतो पुरुष सिंहो केवा प्रकारे छे ?

तेओ सिंहो जेवा प्रधान शौर्यादि गुण भावथी प्रसिध्ध छे माटे ते पुरुषसिंह कहेवाय.

कर्मशत्रुओ साथे आत्माना सनातन युध्धमां तेओ अद्भुत शूरता दाखवे छे. कर्मरिपुओना निर्मूल नाशमां तीक्ष्ण क्रुरता बतावे छे. क्रोध-मान आदि कषायोनी हाजरी क्षणपण न सही

शके एवी उत्कट असहनता धरावे छे. राग द्वेषादि विभावोना उन्मूलनमां अपूर्व वीर्ययोग आत्मसामर्थ्य स्कुरावे छे अने तप अनुष्ठानमां अनुपम वीरता प्रदर्शावे छे आम सिंह जेम शौर्यादि गुणोथी तेओ प्रख्यात छे.

तेमज मोक्षमार्गे परम शूरवीरपणे विचरता आ अवधूत पुरुष सिंहोने गमे तेवा घोर परीषहो आवी पडे तो पण ते प्रत्ये अवज्ञा होय छे एटले के बीलकुल परवाह होती नथी. भयंकर उपसर्गो थाय तो पण परिणामनी चंचलता रुप लेश पण भय उद्‌भवतो नथी. इन्द्रिय ग्रामनी विषय प्राप्ति रुपचिंता होती नथी. आत्माना स्वरुपमां संयमी राखवा रुप संयम मार्गमां खेद थाक-कंटाळो उपजतो नथी अने आत्म स्वरुपना अनन्य एकाग्र चिन्तन रुप सद्‌ध्यानमां निष्प्रकंपता होवाथी योगनुं लेश मात्र कंपायमान पणुं होतुं नथी. आम सिंहनी जेम निर्भयता-निश्चिंतता-निष्कंपता आदि गुणोथी पण तेओनुं सिंह साथे साम्य घटे छे माटे पुरुषोमां सिंह समान श्री अरिहंत भगवन्तोने मारो नमस्कार थाओ एम कहेल छे.

पुरिसवर पुण्डरीयाणं.....

जेम पंकमां उत्पन्न थयेला जलथी वृध्धि पामेला पुंडरीको एटले कमळो ते उभयने

छोडीने वर्ते छे अने प्रकृतिथी सुंदर एवा तेओ भुवन लक्ष्मीनो निवास ने चक्षुआदि आनंदनुं आयतन (घर) होय छे प्रवर एटले श्रेष्ठ गुणयोग थकी विशिष्ट तिर्यंच अने मनुष्य तथा अमरोथी सेवाय छे. अने सुख हेतुओ होय छे.

तेम आ भगवंतो पण कर्मरुपी कादवमां जन्मेला दिव्य भोग जलथी वृध्धि पामेला एवा उभयने छोडीने वर्ते छे अने अतिशय योगथी सुंदर एवा तेओ गुण संपद्नो निवास ने दर्शनादि आनंदना हेतुओ होय छे केवल आदि गुणभावे करीने भव्य प्राणीओथी सेवाय छे अने निर्वाण निबंधन थाय छे एवा श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ.

पुरिस वर गंधहत्थीणं ।

जेम गंध गजेन्द्रोना गंधथी ज ते देशमां विहरता तुच्छ पामर गजो भागी जाय छे तेम भगवान तीर्थंकर जेवा परम पुण्यश्लोक पुरुष ज्यां ज्यां विचरे छे त्यां त्यां ते भगवनना अचिन्त्य पुण्य प्रभाव थकी परचक्र-पर राष्ट्र आक्रमण-दुर्भिक्ष-दुष्काळ-मारि-मरकी वगेरे समस्त उपद्रव रुप क्षुद्र हाथीओ भगवद् विहारना पवननी गंधथी ज भागी जाय छे एवा श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ.

लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं
लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं ।

लोगुत्तमाणं

लोक शब्दथी शुं ग्रहण करवानुं ?

अहीं लोक शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे बे प्रकारना जीवो लीधेला छे (१) अभव्य जीवो (२) भव्य जीवो. अभव्य जीवो सिध्धि गमनने अयोग्य होय छे. ज्यारे भव्य जीवो सिध्धि गमनने योग्य होय छे.

सिध्धि गमनने योग्य एवा जे भव्य जीवो होय छे ते दरेकना तथाभव्यत्व भिन्न भिन्न प्रकारना होय छे आथी सघळा भव्य जीवो एक साथे एक काळे मोक्षे जतां नथी. एवा जे भव्य जीवोने विषे तथाभव्यत्व उंचामां उंची कोटिनुं होय तो तीर्थंकर परमात्माओनुं होय छे माटे एवा तथाभव्यत्ववाळा लोकने विषे उत्तम श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ.

लोगनाहाणं

लोकने विषे नाथ एवा श्री अरिहंत भगवंतोने नमस्कार थाओ.

नाथ कोना अने कोण बनी शके ?

जे भव्य जीवोनुं तथाभव्यत्व खीली शके एवा जे लधुकर्मी भव्यात्मा जीवो होय छे तेओने बीजाधानादिने योग्य भव्य जीवो कहेवाय छे. आवा भव्य जीवोना भगवान नाथ बनी शके छे. बीजाधानादिने योग्य अपुनर्बंधक दशा आदिने पामेला जीवो आवी शके छे अथवा अपुनर्बंधक दशाने पामवानी इच्छावाळा जीवो आवी शके छे.

नाथ एटले जेओ योग अने क्षेम करनारा होय ते बनी शके छे.

योग एटले अप्राप्त एटले प्राप्त नहि करेला ज्ञानादिने प्राप्त करावनारा अर्थात् एवा ज्ञानादिनो योग करावनारा अने जे ज्ञानादिनो योग थयेल छे ए चाल्या न जाय अने वृध्धि पामता पामता संपूर्ण ज्ञानादिनी प्राप्ति थाय ए रीते ते ज्ञानादिनुं रक्षण करनारा ते क्षेम कहेवाय आवा गुणोथी युक्त एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

लोगहियाणं.....लोकनुं हित करनारा.

अहींया लोक शब्दथी जगतना सर्व जीवोनुं हित करनारा. सर्व जीवोमां अव्यवहार राशिमां रहेला तथा व्यवहार राशिमां रहेला-अभव्य जीवो तेमज भव्य जीवो सघळाय जीवोनुं

हित करनारा-चिंतवनारा एटले आ सघऴाय जीवोना अंतरमां जे अनुकूऴ पदार्थना सुखना रागनो रस रहेलो छे ते दूर करीने ए सघऴाय जीवोना अंतरमां शासननो रस पेदा करी दउं आ भावनाथी सघऴा जीवोनुं हित करनारा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

लोगपइवाणं.....लोकने विषे प्रदीप समान.

अहीं लोक शब्दथी सम्यक्त्वादि पामेला जीवोने लेवाना छे. एटले के सम्यक्त्व पामेला जीवो अथवा सम्यक्त्व पामवानी सन्मुख थयेला जीवोना अंतरमां ज्ञान रुपी दीपक पेदा करनारा होवाथी प्रदीप समान एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

लोगपज्जोअगराणं.....लोकने विषे प्रद्योत करनारा.

अहीं लोक शब्दथी गणधर भगवंतना आत्माओने ग्रहण करवाना छे.

कारणके ज्यारे तीर्थंकरना आत्माओने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाय छे त्यारे पहेली देशना जे आपे छे ते गणधर भगवंतोने उद्देशीने अपाय छे ए सांभऴता ए आत्माओ दीक्षाने ग्रहण करे छे अने ते दीक्षा ग्रहण कर्या बाद तेओ भगवानने त्रण प्रश्नो पूछे छे. भगवान तेओने जवाब़ आपे छे ए जवाब सांभऴता ज जगतमां रहेला सघऴा पदार्थोने जाणवानो क्षयोपशम भाव ज्ञानरुपे ते

आत्माओमां थाय छे. माटे प्रद्योत करनारा कहेवाय छे. एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

अभयदयाणं-चक्खुदयाणं-मग्गदयाणं-शरणदयाणं-बोहिदयाणं ।

अभयदयाणं = अभयने आपनारा.

सात प्रकारना भयनो नाश करनारा.

(१) इहलोक भय- आ लोकमां मनुष्यादिने सजातीय एवा अन्य मनुष्यादि थकी जे जे भय ते.

(२) परलोक भय- विजातीय एवा तिर्यंचादि-देवादि थकी मनुष्यादिने जे भय ते.

(३) आदान भय- चोर राजा आदि थकी लूंटावानो भय ते आदान भय.

(४) अकस्मात् भय- विना कारण आकस्मिकपणे विशेष शस्त्रघात आदिथी भय आवी पडे ते.

(५) आजीविका भय- वृत्तिनो भय ते.

(६) मरणनो भय- रखेने हुं मरी जइश तो पाछळ शुं थशे इत्यादि प्रकारे अने

(७) अश्लाघा भय- लोको मारुं वांकु बोलशे इत्यादि प्रकारे अपकीर्ति भय.

आ साते प्रकारना भयनो नाश करी अभयने आपनारा अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

चक्खुदयाणं = चक्षुने आपनारा.

कइ चक्षुने आपनारा ? भाव चक्षु विवक्षित छे. कइ ? जीव-अजीवादि तत्व अवबोधना निश्चय कारणरुप एवी जे श्रध्धा-प्रतिती धर्म प्रशंसादि रुप रुचि तेज स्वभाव छे जेनो एवुं (एवी) चक्षुने आपनारा.

मार्गानुसारिणी एटले सम्यग्दर्शनादि मोक्ष मार्गने अनुकूळपणे अनुसरती तत्वदर्शनना मार्ग प्रत्ये लइ जती एवी आ तत्वरुचि रुप श्रध्धा सहेलाइथी प्राप्त थाय ते चक्खुदयाणं कहेवाय एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

मग्गदयाणं = मार्गने आपनारा.

चित्तनुं अवक्रगमन एटले सरल सीधुं जे गमन. अकुटिल प्रवृत्ति छे अर्थात् चित्तनुं आडुं अवळुं वाकुं चुकुं नहि चालवुं सीधुं चालवुं ते मार्ग छे. आवा चित्तना अवक्रगमन रुप मार्गने आपनारा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

शरणदयाणं = शरणने आपनारा.

नरक तिर्यंचादि चारे गतिमां जन्म जरा मरणादि अनंत दुःख परंपराथी अने क्रोधादि कषाय जन्य संकलेशथी उपजता आत्म स्वरुप चलन रुप विक्षोभ थकी जे अत्यंत बऴवान राग द्वेषादिथी पीडाइ रह्या छे एवा संसार कान्तारगत जीवोने आत्मशांति अर्पनारुं आश्रय स्थान छे. तत्वचिंतन ए समाश्वासन स्थान समुं छे. आ रीते शरण आपनारा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

बोहिदयाणं = बोधिने आपनारा.

मिथ्यात्व मोहनीयना उपशमथी उपशम समकित थाय छे मिथ्यात्वना क्षयोपशम भावथी जीवोने क्षयोपशम समकित थाय छे अने मिथ्यात्वना क्षयथी जीवोने क्षायिक सम्यक्त्व थइ शके छे. ए सम्यक्त्व एटले के बोधि भगवद्भक्तिथी जीवोने प्राप्त थाय छे के जेमां यथाप्रवृत्तकरण-अपूर्वकरण-ग्रंथीभेद-अनिवृत्तिकरण अध्यवसायने प्राप्त करी जीव सम्यक्त्व पामी शके छे के जे तत्व प्रत्येनी श्रध्धारुप छे एने आपनारा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

धम्मदयाणं-धम्मदेसयाणं-धम्मनायगाणं-धम्मसारहीणं ।

धम्मदयाणं = धर्मना दातारने.

भगवाने धर्म बे प्रकारनो कहेलो छे. (१) चारित्र धर्म (२) श्रावक धर्म अणुव्रतादि.

आ बन्ने प्रकारनो धर्म भगवान परना बहुमान भाववाळा जीवो प्रत्ये अनुग्रह करे छे. भगवद् बहुमान एटले साचो अंतरंग भव वैराग्य छे. एज भगवंतनुं बहुमान होवाथी तेनो अनुग्रह छे तेने आपनारा.

धम्मदेसयाणं = धर्मोपदेश देनारा.

धम्मनायगाणं = धर्मना नायकने तथा

धम्मसारहीणं = धर्मना सारथी एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

एक वखत भगवान महावीर राजगृह नगरमां पधार्या. तेमना उपदेशथी श्रेणिक राजानी धारिणी राणीनो पुत्र मेघकुमार बोध पाम्यो. माता पितानी अनुमतिथी आठ स्त्रीओने त्यजीने दीक्षा लीधी. भगवाने चारित्रनी शिक्षा माटे स्थवीरोने सोंप्यो. त्यां मोटा नानाना क्रम प्रमाणे संथारो करतां मेघकुमार मुनिनो संथारो छेल्लो आव्यो. पछी रात्रे बहार जतां आवतां साधुओना पगनी रज संथारामां भराइ तेथी रात्रिमां निद्रा न आवी मनमां चिंतव्युं के क्यां मारी राज महेलनी सुख शय्या अने क्यां आ भूमिमां आळोटवुं ? आवुं दु:ख केटलो काळ सही शकाय ? माटे सवारे भगवानने पूछीने घेर जइश. ए विचारथी सवारे भगवान पासे आव्यो. भगवाने मधुर

वाणीथी तेने बोलाव्यो अने कह्युं के- हे वत्स तें रातना दुर्ध्यान कर्युं पण ते योग्य नथी. नारकी वगेरेमां केटला सागरोपम काळ सुधी दुःख वेठ्या छे तेनी सामे आ दुःख तो अल्प मात्र छे. वळी कह्युं के अग्निमां पडवुं के कोइ सुकृत करतां मरवुं सारुं पण व्रत भांगी जीववुं सारुं नथी एटलुं ज नहि पण आ चारित्र वगेरेनुं कष्ट तो महालाभनुं कारण छे. सांभळ ! तें पण पूर्व भवमां धर्म माटे कष्ट सहवाथी आटलुं मोटुं फळ मेळव्युं छे. पूर्व त्रीजा भवे तुं वैताढ्यनी भूमिमां मोटो हाथी हतो. एकदा जंगलमां दावानळ सळगवाथी भय पामी तृषातुर एक सरोवरमां उतर्यो पण मार्ग नहि जाणवाथी कादवमां खूंची गयो. पाणी अने कांठाथी वंचित बनेलो तुं आकुळ व्याकुळ थयो त्यारे पूर्वना वैरी हाथीए दन्तशूळथी घणां प्रहारो कर्या तेनी तीव्र वेदना भोगवीने सातमा दिवसे मरीने तुं विंध्याचळमां राता वर्णवाळो सातसो हाथीओनो स्वामी चार दांतवाळो हाथी थयो. एकवार त्यां दावानळ जोइने जाति स्मरण ज्ञान थयुं तेथी दावानलथी बचवा तें एक योजन प्रमाण भूमिमांथी सघळुं घास उखेडी नांख्युं अने नवुं उगे ए पण उखेडतो रह्यो. फरी दावानल सळगवाथी वनमां रहेला सर्व जीवो भय पामीने तारी भूमिमां आवी गया. तुं पण जल्दी दोडतो तेमां उभो रह्यो. त्यां शरीरने खणवा एक पग उपाड्यो त्यारे त्यां पग नीचे ससलुं

आवी बेसी गयुं. ज्यारे पग नीचे मुकता ससलाने जोयुं त्यारे दया आववाथी अढी दिवस एज पगने उंचो राख्यो. पछी दावानल शांत थतां सर्व जीवो स्वस्थाने गया त्यारे अकडाइ गयेला पगने नीचे मूकतां तुं पडी गयो ते पछी त्रण दिवस भूख अने तरसथी पीडावा छतां करुणाना परिणामथी ते भवनुं सो वरसनुं आयुष्य पूर्ण करी मरीने आ श्रेणीक राजाने त्यां पुत्रपणे जन्म्यो छे हे मेघ ! तिर्यंचना भवमां पण धर्म माटे तें कष्ट सह्युं तो आ जगत् वंद्य साधुओना पगना स्पर्शथी आजे तुं केम दुभाय छे ? ए सांभळी चारित्रमां स्थिर थयेलां मेघकुमारे संवेग वधवाथी बे नेत्रो सिवाय सर्व शरीरनी सारवारने हुं तजुं छुं एवो द्रढ अभिग्रह कर्यो. ते पछी निरतिचार चारित्र पाळी एक मासनी संलेखना करी अंते काळधर्म पामी विजय नामना विमानमां देव थयो त्यांथी महाविदेहमां जन्मी चारित्रने पामी आराधना करीने मुक्तिने पामशे ए रीते तीर्थंकरो भव्य जीवोने माटे मोक्ष मार्गमां धर्म सारथी जेवा जाणवा.

पहेलुं व्याख्यान समाप्त.

श्री कल्पसूत्रव्याख्यान बीजुं

सवारना व्याख्यानमां जोइ गया के इन्द्र महाराजा पोतानी ऋध्धि सिध्धि साथे सौधर्म सभामां बेसीने पोताना परिवार साथे नाटक चेटक जोइ रह्या छे. तेमां अवधिज्ञानना उपयोगथी जंबुद्वीपनुं निरिक्षण करी रह्या छे तेमां ब्राह्मणकुंड ग्राम नगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणना घरने विषे देवानंदानी कुक्षिमां चरम तीर्थपति श्री महावीर परमात्मानो आत्मा च्यवन पामेलो जोयो के

तरत ज अत्यंत हर्ष पाम्या. विचारो के समकिती आत्माओ संसारनी क्रियाओ करता होवा छतां तेओना भाव अने परिणाम केवा होय छे ते आना उपरथी विचारो. नाटक चेटक वगेरे जोवा बेठेला होवा छतां तेमां रस नथी पण तेनाथी विशेष रस भगवानने च्यवन पामेला जाणीने सिंहासन उपरथी उठी पादुका काढीने जे दिशामां भगवाननो आत्मा छे त्यां सात डगला जइने भगवाननी स्तवना करे छे.

ए स्तवनामां शक्रस्तव एटले नमुत्थुणं बोलता धम्म सारहिणं पद सुधी जोइ गया. इन्द्र हर्षथी रोमांचित थइने भविष्यमां थनारा अने भूतकाळमां थयेला सर्व श्री जिनेश्वरोने हृदयमां धारण करीने शक्रस्तवनी स्तवना करे छे. एम भगवानना पांचे कल्याणकोना प्रसंगे इन्द्र महाराजा सदा स्तवना करे छे ते कारणथी तेनुं नाम शक्रस्तव कहेवाय छे.

धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गइ पइट्ठा ।

धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं

धर्मना श्रेष्ठ चाउंतर एटले चार गतिनो उच्छेद करनार चक्रवर्तीपणाने धारण करनारा श्री

अरिहंतोने.....

दीवो = द्वीप अर्थात् संसारमां समुद्रमां डूबता प्राणीओने द्वीपनी तुल्य आधार

ताणं = रक्षक अनर्थनो नाश करवामां हेतु

शरण = शरण एकारणथी कर्मना उपद्रवथी भय पामेला जीवोनुं शरणुं-गइ = गति अर्थात् दु:खीआओनो आश्रय.

पइट्ठा = पावठुं अर्थात् संसार रुपी कुवामां पडता प्राणीओने आलंबन एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

अप्पडिहय वरनाण-दंसण धराणं-विअट्ट छउमाणं ।

कोइ भीतं-पडदा वगेरेथी पण ढंकाय नहि तेवा श्रेष्ठ जे केवलज्ञान अने केवलदर्शन तेने धारण करनारा तथा जेओनुं घाती कर्मोनुं आवरण नाश थयुं छे एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

घाती कर्मोनुं आवरण नाश थयुं छे एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुध्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ।

पोताना राग द्वेषने जीतेला तथा बीजाना राग द्वेषने जीतावनारा, पोते संसार समुद्रथी तरेला अने बीजाने तारनारा पोते तत्वना बोधने पामेला तथा बीजाने तत्वनो बोध पमाडनारा पोते कर्मरुप पांजरामांथी मुकायेला अने बीजा ने कर्मरुप पांजरामांथी मुकावनारा एवा श्री अरिहंतोने नमस्कार थाओ.

सव्वन्नूणं-सव्व दरिसिणं-सिवमयलमरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति, सिध्धिगइ नाम धेयं-ठाणं संपत्ताणं-नमो जिणाणं-जिअ भयाणं ।

सर्वज्ञोने-सर्वदर्शिओने वळी निरुपद्रव-अचळ-रोग रहित-अनंत-अक्षय-अव्याबाध ज्यांथी संसारमां पाछुं आववानुं नथी एवुं सिध्धिगति एवा नामवाळुं जे स्थान तेने पामेलाने, एथी ज सर्वभयोने जीतेलाने, एवा सर्व जिनेश्वरोने नमस्कार थाओ ! ए रीते नमस्कार करीने इन्द्र श्री वीर भगवानने नमस्कार करे छे.

श्रमण भगवान महावीरने नमस्कार थाओ जे पूर्व तीर्थंकरोए कहेला छे एवा जे छेल्ला

तीर्थंकर थशे के जे धर्मतीर्थ स्थापीने मोक्षपदने पामवाना छे. ते श्री वीर भगवंतने स्वर्गमां रहेलो हुं वंदन करुं छुं त्यां रहेला भगवंत पण अहीं रहेला मने जुओ ! एम कही वारंवार वंदन अने नमस्कार करे छे !

पछी इन्द्र महाराजा सिंहासन उपर बेठा अने तेमने विचार थयो के आ शुं थयुं ? श्री तीर्थंकर देवो तो नियमा उच्चकुलमां अवतरे छे ज्यारे आ वीर भगवान ब्राह्मण कुळमां अवतर्या छे. माटे ए आश्चर्य जाणवुं. कोइवार अनंताकाळे लोकने आश्चर्य पमाडनार आश्चर्यो एटले अच्छेरां जगतमां थाय छे.

श्री अरिहंतो क्या कुळोमां आवे ?

उत्तम पुरुषो तो उग्र भोग राजन्य इक्ष्वाकु कुळोमां क्षत्रियना के हरिवंशना कुळोमां अथवा तेवा बीजा विशुध्ध जाति कुळ जेनां होय तेओना वंशमां अवतर्या हता. अवतरे छे अने अवतरशे.

तेमां भगवान श्री ऋषभदेवे जेओने आरक्षक तरीके स्थाप्या तेओनुं उग्रकुळ, गुरु तरीके

मान्या तेओनुं भोगकुळ, मित्र तरीके स्वीकार्या तेओनुं राजन्यकुळ, भगवाननुं पोतानुं इक्ष्वाकु कुळ अने जे प्रजा तरीके रह्या तेओनुं क्षत्रिय कुळ जाणवुं तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलथी चाल्यो ते हरिवंश जाणवो. तेमां पण जाति एटले मातृपक्ष अने कुळ एटले पितानो पक्ष जाणवो.

छतां आ वीर भगवान ब्राह्मण कुळमां अवतर्या. माटे एवी पण भवितव्यता होय छे के- अनंती उत्सर्पिणी-अवसर्पणी गया बाद कोइकवार आश्चर्य कारक अलौकिक भावो बने छे तेवुं आ पण एक आश्चर्य थयुं छे.

तो पण मारो आचार छे के ते गर्भने बदलीने उत्तम स्थानमां मुकवो जोइए. एम विचारी पदाती सैन्यना अधिपति हरिणैगमेषी नामना देवने बोलाव्यो अने आ अवसर्पिणीमां बनेला दश अच्छेरानी वात कही जणावी.

दश अच्छेरा आ प्रमाणे.....

(१) भगवान श्री वीर प्रभुने केवलज्ञान पछी उपसर्ग थयो. (२) श्री मल्लिनाथ स्त्रीपणे तीर्थंकर थया. (३) श्री वीर प्रभुना गर्भनुं अपहरण थवुं. (४) श्री वीर परमात्मानी देशना

निष्फळ थवी. (५) कृष्ण वासुदेव धातकी खंडमां गया. एटले अपर कंकामां जवुं. (६) चमरेन्द्रनो उत्पात. सौधर्म देवलोकमां जवुं. (७) उत्कृष्ट अवगाहनाए एकसोने आठनुं सिध्ध थवुं. (८) सूर्य अने चन्द्र मूळ विमाने श्री वीर प्रभुने वंदन करवा आववुं. (९) असंयतिओनी पूजा थवी. (१०) युगलिक जीवो नरकगतिने पाम्या. आवा दश आश्चर्यो थया.

(१) श्री वीर भगवानने गोशालाए उपसर्ग कर्यो ते आ प्रमाणे. एकवार श्री वीर भगवान श्रावस्ती नगरीए समसर्या. ते नगरीमां गोशालो, हुं तीर्थंकर छुं एम लोकमां बोलतो हतो. तेथी नगरीमां अहीं बे तीर्थंकरो आव्या छे एवी प्रसिध्धी थइ ते जाणीने श्री गौतम महाराजाए भगवानने पूछ्युं के हे भगवंत ! आ बीजो हुं जिन छुं एम कहेनारो छे कोण ? भगवाने कह्युं के गौतम ! ए जिन नथी पण शरवण ग्रामवासी मंखलीनी सुभद्रा नामनी स्त्रीनो पुत्र छे. ब्राह्मणनी गौशालामां जन्मेलो होवाथी गोशालो एवा नामथी ते प्रसिध्ध थयो छे. अने में शिष्य नहि करवा छतां स्वयं शिष्य बनेलो ते बहुश्रुतनो आडंबर करीने मिथ्या पोताने जिन कहेवरावे छे. श्री वीर भगवाने कहेली आ वात सर्वत्र विस्तार पामी. ते जाणीने रोषे भरायेला गोशालाए गोचरीए

गयेला आनंद नामना प्रभुना शिष्यने कह्युं के हे आनंद सांभळ एक द्रष्टांत कहुं छुं. केटलाक वेपारीओ धन कमाववा माटे गाडाओमां विविध प्रकारना करीयाणा भरीने परदेश चाल्या ! चालतां चालतां एक जंगलमां पेठा. त्यां बहु तरस्या थया. पाणी माटे तपास करतां तेओ ए चार टेकराओ जोया ते टेकराओनी चारे तरफ लीलुं घास उगेलुं जोयुं तेथी निश्चय थयो के टेकरामां पाणी होवुं जोइए. पछी एक टेकरो खोद्यो तेमांथी घणुं पाणी नीकाळ्युं. ते पाणी पीवाथी तरस छीपी. पोताना वासणो पाणीथी भरी दीधा पछी एक वृध्धे कह्युं के आपणुं काम सिध्ध थयुं छे माटे बीजो टेकरो खोदशो नहि तेम छतां बीजो टेकरो खोद्यो तेमांथी सोनुं नीकळ्युं. वळी वृध्ध माणसे वार्या छतां त्रीजो टेकरो खोद्यो तेमांथी रत्नो नीकळ्या त्यारे पेला वृध्ध माणसे कह्युं के भाइओ आपणने पाणी मल्युं, सोनुं तथा रत्नो मल्या हवे चोथो टेकरो खोदशो नहि, जो खोदशो तो मने ठीक जणातुं नथी. माटे बुढानुं कह्युं मानो अने रस्तो पकडो. आ प्रमाणे वारवा छतां लोभांध बनेला वेपारीओए चोथो टेकरो खोद्यो तेमांथी द्रष्टि विष सर्प नीकळ्यो अने ते सर्पे क्रोधथी राफडा पर चढी चारे तरफ द्रष्टि फेंकी तेओने भस्मीभूत करी नांख्या. संतोषी-त्यागी

अने हितशिक्षा आपनार पेलो वृध्ध न्यायी हतो माटे वन देवताए तेने जीवतो पोताना स्थानके पहोंचाड्यो. एवी रीते हे आनंद तारो धर्माचार्य आटली बधी पोतानी संपदा होवा छतां हजु पण असंतुष्ट थइने जेम तेम मारी निंदा करी मने क्रोध चढावे छे. तेथी हुं मारा पोताना तपना तेजथी तेने आजे ज बाळीने भस्म करी नांखीश माटे तुं जल्दी जइने आ संदेशो तेने जणाव. हुं वृध्धनी जेम तारुं रक्षण करीश ! आ सांभळी आनंद मुनि भयभीत थइ गया अने भगवान पासे जल्दी आवीने सर्व वृतांत जणाव्यो. प्रभुए कह्युं के आ गोशालो आवे छे माटे हे आनंद तुं गौतम वगेरेने जणाव के तमो तुरतमां आडा अवळा चाल्या जाओ अने गोशालानी साथे कोइए बोलवुं नहि. ते प्रमाणे कर्युं तेटलामां गोशालो आव्यो अने कहेवा लाग्यो के अरे काश्यप, तुं एम केम बोल्या करे छे के आ गोशालो मंखली पुत्र छे ! ते तारो शिष्य तो मृत्यु पाम्यो छे हुं तो बीजो ज माणस छुं पण तेना शरीरने परिषह सहवामां द्रढ जाणीने हुं ते शरीरमां रह्यो छुं. एवी रीते प्रभुनो आवो तिरस्कार थतो जोइने सहन न थवाथी सुनक्षत्र अने सर्वानुभूति नामना बे साधुओ तेने उत्तर देवा लाग्या ! तेथी गोशालाए गुस्से थइ तेजो लेश्या मूकीने बेयने बाळी नाख्या. ते बे साधुओ काळ

करीने स्वर्गमां गया. प्रभुए कह्युं के हे गोशाला ! तुं तेज छे बीजो कोइ नथी. फोकट पोताने शा माटे छूपावे छे ? आवी रीते कहेवा छतां ते दुरात्माए गुस्सो करी भगवंत उपर पण तेजोलेश्या मूकी ! परंतु ते तेजोलेश्या प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दइने गोशालाना ज शरीरमां दाखल थइ तेने लइने आखूं शरीर दाझी गयुं अने तेथी सात दिवस सुधी अत्यंत वेदना भोगवी सातमी रात्रिए मरण पाम्यो. तेना तापथी छ महिना सुधी प्रभुने लोहीखंड झाडो रह्यो. श्री वीर भगवानने केवलज्ञान थया पछी पण आवी रीते उपसर्ग थयो. तीर्थंकरोने केवलज्ञान थया पछी उपसर्ग न थाय छतां उपसर्ग थयो ए पहेलुं अच्छेरुं !

बीजुं अच्छेरुं गर्भ हरण.

एटले गर्भनुं एक उदरमांथी बीजा उदरमां मूकावुं ते ! पहेला कोइपण जिनेश्वरने थयुं नथी पण श्री वीर प्रभुना गर्भनुं संक्रमण देवानंदानी कुक्षिमांथी श्री त्रिशला राणीनी कुक्षिमां थयुं छे ए अच्छेरुं छे !

त्रीजुं अच्छेरुं स्त्री तीर्थंकर.

एवो नियम छे के, तीर्थंकरो पुरुषोज होय छे, कदापि स्त्री न होय ! पण आ अवसर्पिणीमां

मिथिला नगरीना राजा कुंभराजनी मल्लि नामे कुंवरीए ओगणीशमा तीर्थंकररुपे थइने तीर्थ प्रवर्ताव्युं, ए अच्छेरुं थयुं !

चोथुं अच्छेरुं अभावित पर्षदा.

एटले तीर्थंकरोनी देशना निष्फल थवी ! तीर्थंकरनी देशना कोइ पण वखते निष्फल थती नथी, पण आ अवसर्पिणीमां श्री वीरप्रभुए केवलज्ञान पाम्या बाद देवोए रचेला पहेला समवसरणनी अंदर देशना दीधी, छतां तेथी कोइने विरति परिणाम थयो नहिं; ए अच्छेरुं चोथुं !

पाचमुं अच्छेरुं द्रौपदी माटे.

नवमा वासुदेव श्रीकृष्णनु अपरकंका नामे नगरीमां गमन थयुं ! ते आवी रीते. एक दिवस पांडवोनी भार्या द्रोपदी पासे नारद ऋषि आव्या ! ते वखते तेणीए नारदने असंयति जाणीने 'उभा थइ सामे आववुं ' विगेरे आदर सत्कार कर्यो नहिं, तेथी गुस्से थयेला नारदे विचार्युं के- ' मारुं अपमान करनारी द्रौपदीने गमे तेम करी कष्टमां नाखुं !' एम विचारी नारद

धातकीखंडना भरतक्षेत्रमां गया ! त्यां अपरकंका नगरनो राजा पद्मोत्तर स्त्रीओमां अत्यंत लुब्ध हतो, तेथी तेनी पासे जइ द्रौपदीना रुपनुं वर्णन कर्युं ! तेथी पद्मोत्तरे द्रौपदी उपर अनुरागी थइ, पोताना मित्र एक देव पासे तेणीनुं हरण करावी, पोताना अंत:पुरमां राखी ! महासती द्रौपदीए त्यां पण पोतानुं सतीपणुं जाऴवी राख्युं ! हवे पांडवोनी माता कुंतीए द्रौपदी गुम थयानी वात कृष्णने जाहेर करी; तेथी तेणे घणे स्थऴे शोध करावी, पण पत्तो लाग्यो नहिं ! एटलामां नारदने मोढेथीज द्रौपदीना समाचार मऴ्या ! पछी कृष्णे लवणसमुद्रना अधिष्ठायक सुस्थित देवनुं आराधन कर्युं, प्रसन्न थयेला देवे समुद्रमां मार्ग आप्यो; तेथी बे लाख योजन विस्तारवाऴा लवणसमुद्रने कृष्ण तथा पांडवोना रथ तरी गया ! अने पछी अपरकंकामां जइ, नरसिंहनुं रुप करी, कृष्णे पद्मोत्तर राजाने जीत्यो ! द्रौपदीना वचनथी तेने जीवतो छोड्यो ! द्रौपदीने साथे लइ पाछा फरतां कृष्णे पोतानो शंख फूंक्यो, ते शंखनो शब्द सांभऴी त्यांना कपिल वासुदेवने आश्चर्य थयुं, अने तेथी तेणे त्यां विचरता श्रीमुनिसुव्रत जिनेश्वरने पूछ्युं, त्यारे तेमणे कृष्ण वासुदेव आव्यानुं जणाव्युं ! आ प्रमाणे सांभऴी कपिल वासुदेव कृष्ण वासुदेवने मलवा माटे उत्सुक थइ

तरत समुद्रने कांठे आव्यो, अनें पोतानो शंख फूंक्यो, समुद्रमां गमन करता कृष्णे पण पोतानो शंख फूंक्यो, ते बन्ने वासुदेवना शंखनादो मल्या ! आवी रीते पहेलां कोइ वखत थयुं नथी, तेथी ए अच्छेरुं थयुं !

छट्ठुं अच्छेरुं

कौशांबी नगरीमां भगवान् श्रीमहावीरने वांदवा माटे सूर्य अने चंद्र पोताना मूल विमानो साथे उतर्या हता, एवुं कोइ वखत थयुं नथी; तेथी अच्छेरुं थयुं !

सातमुं अच्छेरुं हरिवंश कुलनी उत्पत्ति ।

ते आवी रीते–कौशांबी नगरीना राजा सुमुखे वीरक नामना शाऴवीनी वनमाला नामनी स्त्रीने अत्यंत रुपाऴी देखी अन्तःपुरमां बेसाडी दीधी ! तेथी ते शाऴवी पोतानी प्राणप्रियाना वियोगथी एटलो बधो गांडो थइ गयो के, जेने देखे तेने ' वनमाला वनमाला ' कहीने बोलावववा लाग्यो ! कौतुक प्रिय लोको अने बाऴकोथी घेरायेलो ते गांडो वीरक एक वखत राजाना महेल नीचे आव्यो, अने ' वनमाला वनमाला ' पोकारवा लाग्यो ! झरुखामां बेसी

क्रीडा करी रहेला राजाए अने वनमालाए तेने देख्यो ! त्यारे वीरकनी आवी दयाजनक हालत जोइ तेओ खेद करवा लाग्या के, ' आपणे आ काम अनुचित कर्युं, आपणी विषयलालसानी तृप्ति खातर आ निरपराधी माणसनी जींदगी बरबाद करी ! विषय वश थइ कामांध माणसो शुं शुं अनर्थ नथी करतां ?' आ प्रमाणे पोते करेला अनुचित कार्य माटे खेद करे छे, तेवामां भवितव्यताने योगे तेओ उपर विजळी पडवाथी तेओ बन्ने मरीने हरिवर्ष क्षेत्रमां युगलीया थया ! हवे राजा अने वनमाला मरी गया जाणी वीरकने शुध्धि आवी, ते विचारवा लाग्यो के ' ठीक थयुं, पापीओने पाप नड्युं '! धीरे धीरे वीरक डाह्यो थइ गयो ! त्यारपछी ते वैराग्यभावथी तापस थइ तप तपीने मृत्यु पामी व्यंतरदेव थयो ! ते व्यंतर विभंगज्ञान वडे ते बन्ने युगलीयाने जोइ चिंतववा लाग्यो के- ' अरेरे ! आ बन्ने मारा पूर्वभवना वैरी युगलीयानुं सुख भोगवी रह्या छे, अने वळी पाछा देव थइ अनुपम सुख भोगवशे ! मारा वैरी सुख भोगवे ए माराथी केम सहन थाय ?, तेथी आ बन्नेने दुर्गतिमां पाडुं जेथी दुःख पामे !' एम विचारी ते व्यंतरे पोतानी शक्ति वडे ते बन्नेनां शरीर अने आयुष्य संक्षिप्त करी दीधां ! अने आ भरतक्षेत्रमां लावीने राज्य आपीने

सातेव्यसन शीखवाड्यां ! ते बेनां नाम ' हरि ' अने ' हरिणी ' एम प्रसिध्ध करीने, पोताना पूर्वभवना वैरिओने मांस मदिरादि सात व्यसनोमां आसक्त करीने व्यंतर चाल्यो गयो ! ते बन्ने सातेव्यसन सेवी मृत्यु पामी नरकमां गया ! ते हरिना वंशमां जे माणसो थया ते हरिवंशथी ओळखावा लाग्या ! अहीं युगलीयानुं आ क्षेत्रमां आववुं, तेओनां आयुष्य अने शरीरनुं संक्षिप्त थवुं, तथा ते युगलीयानुं नरके जवुं; ए सघळुं अच्छेरारुप जाणवुं !

आठमुं अच्छेरुं असुरकुमारोनो इन्द्र जे चमरेन्द्र छे, तेनुं उंचे जवुं !

ते आवी रीते–पूरण नामनो ऋषि तप तपीने चमरेन्द्र थयो ! नवा उत्पन्न थयेला तेणे अवधिज्ञान वडे पोताना मस्तक उपर सौधर्मेन्द्रने जोयो, तेथी इर्ष्याथी धमधमी रहेला तेणे गुस्से थइ, भगवान् श्रीमहावीरनुं शरण लइ, भयंकर रुप करी, लाख योजन शरीर करी, हाथमां परिध नामनुं हथियार लइ, गर्जना करी ते परिधने चारे तरफ घूमावतो शक्रना आत्मरक्षक देवोने त्रास पमाडतो उंचे गयो; अने सौधर्मावसंतक विमाननी वेदिकामां पग मूकी शक्रने आक्रोश तथा तिरस्कार करवा लाग्यो ! तेथी शक्रे पण क्रुद्ध थइ तेना तरफ जाज्वल्यमान वज्र छोड्युं ! तेथी

भयभीत बनेलो चरमेन्द्र तुरत प्रभु वीरना चरणकमलमां आवी पड्यो ! त्यार पछी शक्रे ते वृतांत अवधिज्ञानथी जाणी, तीर्थंकरनी आशातनाना भयथी तुरत त्यां आवी, वज्र हजु चार अंगुल छेटुं हतुं तेवामां संहरी लीधुं ! अने चरमेन्द्रने कह्युं के- ' आज तो फक्त प्रभुनी कृपाथीज तने छोडी दउं छुं ' एम कहीने तेने छोडी दीधो ! एवी रीते चमरेन्द्रनुं जे उर्ध्वगमन थयुं, ते अच्छेरुं जाणवुं !

नवमुं अच्छेरुंउत्कृष्ट अवगाहनवाला एकसो ने आठ एक समये सिध्ध न थाय, आ अवसर्पिणिमां सिध्ध थया !

ते आ प्रमाणे-श्री ऋषभदेव, भरत सिवाय तेमना नव्वाणुं पुत्रो, अने भरतना आठ पुत्रो; एम उत्कृष्ट अवगाहनावाला एकसो आठ एक समयमां सिध्ध थया, ते अच्छेरुं थयुं !

दसमुं अच्छेरुं असंयतिओनी पूजा !

आरंभ-परिग्रहमां आसक्त जे असंयमी ब्राह्मणो विगेरे, तेओनी पूजा नवमा अने दसमा जिनेश्वरनी वच्चेना कालमां थइ छे ! हमेशां संयतिओज पूजाय छे, पण आ अवसर्पिणीमां

असंयतिओनी पण पूजा थयेली छे; ए अच्छेरुं. थयुं !

आ दसे अच्छेरां अनंतकाल गया बाद आ अवसर्पिणीमां थयां छे ! एवीज रीते काऴनुं तुल्यपणुं होवाथी बाकीना पण चार भरतोमां तथा पांच ऐरवतोमां प्रकारांतरे दस दस अच्छेरां जाणी लेवां ! हवे आ दस अच्छेरां कोण कोण तीर्थंकरोना तीर्थमां थयां छे ते जणावे छे–उत्कृष्ट अवगाहनवाला एकसो आठ एक समये सिध्ध थया, ते श्रीऋषभदेवना तीर्थमां जाणवुं ! हरिवंशनी उत्पत्ति श्रीशीतलनाथना तीर्थमां जाणवी ! कृष्ण वासुदेवनुं अपरकंकामां गमन श्रीनेमिनाथना तीर्थमां जाणवुं ! स्त्रीनुं तीर्थंकर थवुं, ते श्रीमल्लिनाथना तीर्थमां जाणवुं ! असंयतिओनी पूजा श्रीसुविधिनाथना तीर्थमां जाणवी ! बाकीना–उपसर्ग, गर्भाहार, अभावित पर्षद्रा, चमरेन्द्रनुं उंचे जवुं, तथा सूर् चन्द्रनुं मिलन मूल विमाने उतरवुं; ए पांच अच्छेरां श्रीमहावीरस्वामीना तीर्थमां जाणवां !

वऴी शक्रेन्द्र विचार करे छे के–

नीच गोत्र नामनुं कर्म के जेनी स्थितिनो क्षय थयो नथी जेनो रस वेद्यो नथी तथा ते कर्म

प्रदेशो जीव प्रदेशनी साथेथी नाशपाम्या नथी एवा नीच गोत्र कर्मना उदयथी श्रीमहावीर तीर्थंकरनो जीव देवानंदा ब्राह्मणनी कुक्षिमां गर्भपणे उत्पन्न थया छे. ते नीच गोत्र भगवाने स्थुल सत्तावीश भवनी अपेक्षाए त्रीजे भवे बांध्युं हतुं.

श्री महावीर स्वामीना सत्तावीश भवोनुं वर्णन.

पहेलो नयसारनो भव.

वीर प्रभुनो जीव पश्चिम महा विदेहमां नयसार नामे ग्रामपति हतो.

आ नयसारनो जीव जैनकुऴने पामेलो नथी पण जैनतर कुऴ-जाति मऴेला छे पण आर्य देश मऴेलो होवाथी तेनामां गुणोपण खीली उठेला छे. सामान्य रीते नियम छे के आर्यदेशना जे गुणो कहेला छे ते गुणोमांथी कोइपण एक गुणने प्राण करतां अधिक रीते साचवे तो ते जीवनुं मिथ्यात्व गया वगर रहेतुं नथी. अर्थात् ते जीवो सम्यक्त्व पाम्या विना रहेता ज नथी. आ नयसारमां एनी माताए नानपणथी एने एवो गुण पेदा करेलो के ज्यारे ज्यारे नयसारने भूख लागे अने मा पासे खावानुं मागे त्यारे मा तेने कहेती के दिकरा ! बहार जइने कोइ दीन-दु:खी-

अनाथ वगेरे लइ आव एने तारा हाथे जमाड पछी हुं तने खावा आपीश. नयसार पण मानी आज्ञाथी बहार जइ दीन-अनाथ वगेरेने लावी जमाडी पछी ज जमतो हतो. आ संस्कार आर्यदेशनो नानपणथी पोताना जीवमां ताणा-वाणानी जेम वणी लीधो हतो आ सिवाय नयसार पहेला गुणहीन गुणस्थानकमां मित्यात्वना उदयमां रहेलो होवा छतां तेनामां कया कया गुणो विकसीत थयेला हता ते आचार्य भगवंत श्री गुणचन्द्र सूरीश्वरजीए वर्णवेल छे.

नयसारने साधु सेवानो योग मल्यो नहोतो छतां पण तेनामां चार गुणो महत्वना हता.

(१) अकार्योना आचरणने विषे आऴसुपणुं.

(२) परपीडामां एटले बीजाने पीडा आपवामां पराङ्मुखपणुं.

(३) गुणोना अर्जन माटे एटले गुणोने मेऴववा माटे प्रयत्नशीलपणुं अने.

(४) अन्यना छिद्रोना अवलोकन माटे एटले बीजाना छिद्रो जोवा माटे अंधपणुं अर्थात् आंधऴापणानो स्वभाव हतो.

आ उपरथी आचार्य भगवान आपणने समजावे छे के साधुसेवानो सुंदर योग मल्यो

नहोतो छतां पण आवा गुणो हता तो आपणने तो साधुसेवानो सुंदर योग मऴेलो छे छतां आ गुणो छे के नहि ते खास रोज जोवा जेवुं छे. न होय तो प्रयत्न करीने पण खास मेऴववा योग्य छे के जेथी मिथ्यात्वनो नाश थाय अने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय.

हवे नयसार राजाने त्यां नोकरी करे छे तेमां राजाने त्यां उंची जातिना काष्ठ एटले लाकडानी जरुर पडी तेमां नयसार तेनी जाणकारीमां होंशियार हतो तेथी राजाए अनेक नोकर चाकर-रसोइया तथा रसोइनी सामग्री साथे जंगलमां उंचीजातिना लाकडा लाववाने माटे मोकल्यो. ते नयसार राजानी आज्ञाथी मोटा सार्थ साथे जंगलमां आव्यो. त्यां कोइ मोटा वडवृक्ष नीचे पडाव नांख्यो. तंबु बांध्या अने रसोइयाओ त्यां रसोइनी तैयारी करे छे. नयसार अनेक नोकरोने लइने ज्यां उंची कोटिना लाकडा देखाय ते कपाववा माटे साथे लइने गयो छे. ज्यां ज्यां उंची कोटिना लाकडा देखाय ते नयसार उभो उभो कपावी रह्यो छे. तेमां मध्याह्नकाऴ थयो जमवानो वखत थयो छे. ते वखते तंबूमांथी माणसो जमवा माटे बोलाववा आव्या छे के रसोइ तैयार थइ गयेल छे जमवा पधारो. नयसारे लाकडा कापतां नोकरोने कह्युं के हमणां लाकडा

कापवानुं रहेवा दो. आपणे सौ जमीने पछी आवीए छीए. विचारोके रसोइ तैयार होवा छतां पोते जमीने पछी नोकरोने जमवा एक एकने मोकले तो वांधो हतो ? पण ना, बधाए साथे ज जमवानुं. तमारे त्यां शुं रिवाज छे ? ओफीसमांथी जमवा जतां नोकरोने पूछीने एटले जमीने आव्या छो के बाकी छे ? एम पूछीने पछी जमवा जावने ? कोइ नोकर बाकी होय तो साथे लइने जावने ? के हुं जमीने आवुं पछी तमे जजो एम कहो !

नयसार जमवा माटे बधाने साथे लइ मंडपमां आव्या. भाणा तैयार छे. सौ बेठा. नयसार पण बेठा छे. भाणामां बधुं पीरसाइ गयुं सौ जमवानी शरुआत करे छे. नयसार कोऴीयो हाथमां लइ मोढामां मुकवा जाय छे त्यां अतिथि याद आवे छे के अतिथिने जमाड्या वगर माराथी जमाय नहि. आ विचार आवतां कोऴीयो नीचे मुकी उभो थइ मंडपनी बहार जाय छे ते वखते नोकरो पूछे छे के अत्यारे क्यां जाव छो ? कहे छे के अतिथिनी शोध माटे जाउं छुं. नोकरो कहे छे के–आवा जंगलमां अतिथि क्यांथी मलशे ? तो नयसार कहे छे के मारुं पुण्य हशे तो जरुर मलशे विचारो के....भुख लागेली छे. पाणीनी तरस लागेली छे. छतां अतिथि याद आवतां न

जमाय ए कांइ जेवो तेवो गुण छे ? तथा अनेक नोकर चाकरो छे कोइपण एकने आज्ञा करे तो पालन करे एवा छे छतां पण अतिथिनी शोध मारे ज कराय एमां नोकरने न मोकलावाय ! आ पण गुण छे ने ? ज्यारे आजे तो साधुने तेडवा छोकराने मोकले अगर माणसने कहीदे मारा घरे साधुने लावजे. केम एम ज ने ?

नयसारने अतिथि प्रत्ये जेटलुं बहुमान छे एटलुं तमने साधु प्रत्ये बहुमान छे ?

मंडपनी बहार नीकळी पूर्वदिशामां अडधो माइल जइ तपास करे छे. दूर सुधी नजर नांखे छे पण अतिथि न देखातां पाछा वळे छे. पछी दक्षिण दिशामां अडधो माइल चाल्या, पश्चिम दिशामां अडधो माइल चाल्या अने अतिथि न मळतां कपाळे हाथ दइ पाछा आव्या पछी एक विदिशामां अडधो अडधो माइल जतां छेल्ली विदिशामां दूर नजर नांखता अतिथि सफेद कपडावाळा देखाया. ए जोतानी साथे ज हैयुं नाची उठ्युं अने विचारे छे के मारा पुण्योदयथी आवी अटवीमां अतिथि मली गया. त्यार पछी तेमने सामे लेवा माटे जाय छे.

विचारो के-अतिथिने जोतानी साथे ज भुख अने तरस बन्ने भुलाइ गया छे अने अत्यंत

आनंद हैयामां पेदा थयो छे.

नजीकमां जइने ज्यारे अतिथि उंची कोटिना महात्मा जेवा लाग्या एटले साष्टांग प्रणाम करे छे. पछी पूछे छे के आवी अटवीमां शस्त्र विना अमे फरी शकता नथी तो शस्त्र विनाना आप क्यांथी ? आ सांभळी महात्मा कहे छे के अमे सार्थनी साथे नीकळेला कोइ गाम बहार सार्थे पडाव नाख्यो. सार्थपतिनी आज्ञा लइ अमो गाममां गोचरी माटे गया अने कह्युं के अमो पाछा न आवीए त्यां सुधी सार्थ उपाडता नहि. गाममां गोचरी न मली सार्थपतिए सार्थ उपाडी दीधो. अमो सार्थनी शोध माटे नीकळ्या एमां अमे भुला पड्या अने आ अटवीमां आवी चढ्या. नयसार कहे छे के सार्थपति आवो ! एनी शी गति थशे ? खेर, तेनुं जे थवुं होय ते थाय भगवन् पधारो मने लाभ आपो ! एम कही महात्मानी साथे चाले छे. विचारो अतिथि प्रत्ये बहुमान केटलुं छे ? आजे साधु महात्मा प्रत्ये आटलुंय बहुमान छे ? महात्माए नियम आप्यो होय के गाममां महात्मा होयतो वहोराव्या विना वापरवुं नहि अने महात्माने बोलाववा गया. महात्माने खबर पडे अने तमने भुख लागी होय अने महात्मा कहे तमारे त्यां छेल्लो आवीश तो तमोने

बहुमान भाव टके खरो ?

महात्माने, अतिथि छे एम मानीने लइ आवी पोताना वडवृक्षनी पासे बीजुं वडवृक्ष हतुं त्यां जग्या आपी, महात्माओ तैयार न थया त्यां सुधी त्यां बेठो रहे छे. महात्मा तैयार थया एटले साथे लइ जइ वहोरावी महात्माने पाछा तेमना स्थाने मुकी जणावे छे के आप वापरीने तैयार थाओ हुं जमीने आवुं छुं. आपने जे गामे जवुं छे त्यां हुं तमोने पहोंचाडी दइश.

पोताना स्थाने जइ जमीने जल्दी तैयार थइ महात्मा पासे पहोंची गयो. महात्मा तैयार थया एटले एमनी साथे मुकवा माटे जाय छे. ज्यारे गाम नजीक देखायुं अने सीधो रस्तो लाग्यो एटले महात्माने कहे छे के आ रस्तो सीधो पेला मकान पासे पहोंचशे. आ सांभळी महात्माओनी साथे एक देशना लब्धिवाळा महात्मा हता. तेओ विचारे छे के जेमनी आपणने ओळखाण पीछान नथी छतां सामे लेवा माटे आव्यो. जग्या आपी. आहार पाणी आप्या अने रस्तो बतावबा साथे आवी जे गाम जवुं छे ते रस्ते पहोंचाड्या. बहु उंची कोटिनो योग्य जीव लागे छे. एम विचारी नयसारने कह्युं के तारी इच्छा होय तो अमारे कांइक कहेवुं छे. नयसारे कह्युं के महात्मन् आपनी

साथे रहेला महात्माओनी जेम मने एक गणी जे योग्य लागे ते कही शको छो. त्यारे महात्माए कह्युं के रस्ते चालता चालता न कहेवाय. पेलुं झाड देखाय छे त्यां बेसीए. पछी नयसार साथे गयो अने झाड नीचे बेठा त्यां महात्माए देव-गुरु अने धर्मनुं स्वरुप समजाव्युं. नयसारने रुच्युं एटले कहेछे मारी योग्यता होय तो आपो. महात्माए कह्युं तारा जेवो योग्य नहि होय तो कोण हशे ? ते वखते नयसारे विधिपूर्वक नवकार मंत्र ग्रहण कर्यो. त्यां समकितनी प्राप्ति थइ.

आ सम्यक्त्व पाम्या एटले महात्माने कहे छे के भगवन् हुं आपने मुकवा नथी आव्यो पधारो ! मारी साथे लइ जवा माटे आव्यो छुं. मारा गाम अने मारा घरे पधारो मारुं जे कांइ छे ते आपनुं ज छे. महात्माए कह्युं के अमारे जे आपवनुं छे ते तने मली गयुं छे तेने प्राण करतां अधिक रीते साचवी राखजे हाल अमारा आववाना संयोग नथी. एम कही महात्मा चालता थया. ज्यां सुधी महात्मा देखाया त्यां सुधी आंखमां पाणी पाडी महात्माओने जोतो रह्यो. ज्यारे न देखाया त्यारे आंखमां पाणी पाडी कपाळे हाथ दइ पाछो फर्यो छे.

विचारो अतिथि प्रत्ये बहुमान अने आदर भाव केटलो छे ? आजे साधु प्रत्ये शुं स्थिति

छे ? साधु विहार करता आवता होय, थाकेला होय, परसेवाथी रेबझेब थयेला होय, गाममां प्रवेश करतां होय अने गामना नाके तमारी दुकान होय, कपाळमां चांदलो जुए अने महात्मा पुछे के भाइ उपाश्रय क्यां छे ? तो तमो ते वखते शुं कहो ? दुकानमां माणसो होय तो तमे मुकवा जाव ? के रस्तो बतावी द्यो ? कदाच शरमे मुकवा जाव अने उपाश्रय बंध होय तो चावी लावी खोली आपी पछी जावने ? उपाश्रयमां धूळ होय अने महात्मा कहे जरा कचरो वाळी द्यो ने तो वाळो ? आ बधु कदाच करो अने महात्माने लागे योग्य छे तो ते वखते बेसवानुं कहे के बेसो मारे बे शब्दो कहेवा छे तो बेसो ? के पछी आवीश एम कहीने चालता थाव ?

सम्यक्त्व जोइतुं हशे तो शुं करवुं पडशे ए कांइ विचार आवे छे ? हाल जे रीते धर्मनी प्रवृत्ति करो छो एनाथी सम्यक्त्व आवशे एवुं लागे छे खरुं ? पुण्योदयथी सामग्री घणी ज सारी पाम्या छीए तो तेनाथी सम्यक्त्व पाम्या विना मरवुं ज नथी आवो संकल्प खरो ?

हवे नयसार त्यांथी पाछो आवी लाकडा कपावी बधाने लइने पोताना गाम आव्यो. राजा पासेथी निवृत्ति लइने जे सम्यक्त्वने पाम्यो छे तेने प्राण करतां अधिक रीते साचववा माटे

धर्मना पुस्तकोनुं वांचन कर्या करे छे. आ सम्यक्त्व प्राप्तिनो नयसारनो एटले श्रमण भगवान महावीर परमात्मानो पहेलो भव थयो.

सम्यक्त्वना पाम्या विनाना अत्यार सुधीनां अनंता भवो मोक्ष प्राप्तिमां एकडा विनना मींडा जेवा नकामा जाणवा.

नयसार अंतकाळे श्री नमस्कार मंत्रनुं आराधन स्मरण करीने काळ करीने सौधर्म देवलोकमां एक पल्योपमना आयुष्यवाळो देव थयो ए बीजो भव.

त्यांथी च्यवीने त्रीजे भवे भरत चक्रवर्ती नो मरीचि नामे पुत्र थयो. अनुक्रमे यौवन वयने पाम्यो. प्रभुश्री ऋषभदेव अयोध्या नगरीनी बहार उद्यानमां पधार्या. भरत महाराजा पोताना परिवार साथे वंदन करवा गया अने प्रभुनी देशना सांभळी. देशना सांभळता मरीचिने वैराग्यभाव थवाथी दीक्षा लीधी अने स्थविरो पासे अग्यार अंगो भण्यो. अने देशना लब्धि पेदा करी. आ रीते भगवाननी साथे विचरतां हजारो वर्ष सुंदर संयमनुं पालन कर्युं. एकवार उनाळामां ताप सखत पडवाथी अने तडको सहन न थवाथी विचारवा लाग्यो के आ संयमनो भार बहु ज

आकरो छे हुं तेने वहन करवा माटे अर्थात् पालन करवा माटे शक्तिमान नथी. माराथी पऴाय एम नथी. छोडीने घरे जवाय एम नथी माटे शुं करवुं ? एम विचार करीने तेणे नवीन जातनो वेश रच्यो. ते आ रीते-साधुओ तो मनदंड, वचन दंड, काय दंड ए त्रण दंडथी विराम पामेला छे. हुं त्रणे दंडथी जीतायेलो छुं माटे मारे त्रिदंडनुं चिन्ह राखवुं ! साधुओ द्रव्यथी मुंडित थयेला छे अने भावथी राग-द्वेषने जीतेला छे माटे भावथी पण रागादिथी सर्वथा मुकायेला छे. हुं तेवो नथी माटे हुं मस्तक उपर चोटली राखीश अने हजामत करावीश ! साधुओने सर्व प्राणातिपातादिथी विरति छे हुं तेवो नथी माटे स्थुलप्राणातिपातादिकनी विरति पाऴीश. साधुओ शीलरुप सुंगधिथी वासित थयेला छे हुं तेवो नथी माटे हुं शरीरे चंदनादि सुगंधी वस्तुओनुं विलेपन करीश. साधुओ मोहथी रहित छे हुं तो मोहथी आच्छादित थयेलो छुं माटे छत्र राखीश ! साधुओ पगरखां विना उघाडे पगे चालनारा छे हुं तेवो नथी माटे हुं पगमां पावडीओ राखीश. (पहेरीश) साधुओ कषायथी रहित छे हुंतो कषाय सहित छुं माटे रंगेला भगवा कपडा पहेरीश ! साधुओ स्नानथी विरतीवाऴा छे पण हुं तो परिमित जलथी स्नान अने पान करीश. इत्यादि पोतानी बुध्धिथी तेणे

परिव्राजकनो वेष निपजाव्यो.

आ परिव्राजकनो वेष होवा छतांय हजीय भगवानना मार्गनी श्रध्धा मजबुत छे तेथी सम्यक्त्वपण रहेलुं छे अने परिमित वस्तुओनुं जीवनमां पालन होवाथी देशविरतिपणानो भाव पण रहेलो छे.

आ परिव्राजकनो वेष बनावीने ते पहेरीने भगवाननी साथे विचरतो हतो. समवसरणमां भगवाननी देशना सांभऴवा घणां राजकुमारो आवता ते देशना सांभऴी नवा वेशवाऴा त्रिदंडी पासे जतां. त्यां तेओने पूछतां के आ बधाथी जुदो वेश शाथी ? तो मरीचि कहेता के ए वास्तविक साधु छे, हुं पतित छुं, साधुपणुं पाऴी शकुं तेम नथी माटे में आ वेश लीधो छे एम जणावी ते राजकुमारोने उपदेश आपी वैराग्य भाव पेदा करी घणांयने भगवान पासे दीक्षा अपावी छे. लोकधर्म पुछतुं तो कहेता धर्म भगवान कहे छे ते ज छे. मारामां धर्म नथी एम कहेता. अने भगवाननी साथे ज विचरता हता.

एक वखत भगवान विचरता विचरता अयोध्या नगरमां पधार्या त्यां भरत चक्रवर्ती

पोतानी ऋध्धि सिध्धि साथे भगवानने वंदन करवा साथे देशना सांबऴवा गया देशना सांबऴीने भगवानने पुछ्युं के हे भगवन् ! आ पर्षदमां आ अवसरपिणी काऴमां आ भरतक्षेत्रमां तीर्थंकर थाय एवो कोइ जीव छे ? भगवाने उत्तर आप्यो के हे भरत ! तारो मरीचि नामनो पुत्र आ अवसरपिणीमां वीर नामनो चोवीशमो तीर्थंकर थशे तथा महाविदेह क्षेत्रमां मूका नामनी नगरीमां प्रियमित्र नामनो चक्रवर्ती थशे. वऴी आज भरतक्षेत्रमां पोतन नामना नगरनो स्वामी थशे. त्रिपृष्ठ नामनो पहेलो वासुदेव थशे ! ए सांभऴीने हर्ष पामेला भरत महाराजाए मरीचि पासे आवीने त्रण प्रदक्षिणापूर्वक वंदन करतां कह्युं के हे मरीचि जगतना मोटा सर्वलाभ तमे मेऴव्या छे. कारणके तमे अहीं भरतक्षेत्रमां छेल्ला तीर्थंकर थशो. महाविदेह क्षेत्रमां चक्री थशो अने आ भरतमां पहेला वासुदेव थशो. छेल्ला तीर्थंकर थवाना छो माटे हुं वंदन करुं छुं पण आ परिव्राजकना वेशने नमस्कार करतो नथी एम वारंवार स्तवना करीने भरत महाराजा पोताना स्थाने गया.

हवे मरीचि भरत महाराजए कहेली हकीकत सांभऴीने अतिशय हर्षित थयो अने त्रण वार पग पछाडीने नाचतो नाचतो बोल्यो के–

" हुं पहेलो वासुदेव थइश, हुं मूका नगरीमां चक्रवर्ती थइश, तथा छेल्ला तीर्थंकर थइश,

अहो ! मारुं कुल अति उत्तम छे ! हुं वासुदेवमां पहेलो थइश, वळी मारा पिता पण चक्रवर्तीओमां पहेला छे, तेम मारा पिताना पिता पण जिनेश्वरोमां पहेला छे, माटे अहो ! मारुं कुल अति उत्तम छे !"

एवी रीते मरीचिए जातिनो मद करवाथी नीच गोत्रकर्म बांध्युं ! कह्युं छे के-

" जे माणस जाति, लाभ, कुळ, ऐश्वर्य, बल, रुप, तप अने ज्ञाननो मद करे छे; ते माणसने ते जाति विगेरे हीन मले छे !"

अहींया कुलमद करवाथी सम्यक्त्व गयुं अने मिथ्यात्व गुणस्थानक आव्युं अने नीचगोत्र कर्म एवा जोरदार रसवाळुं बांधीने निकाचीत कर्युं के छेवट स्थुल भवोमां सत्तावीशमा भवे पण ब्याशी दिवस सुधी भोगववुं पड्युं. हवे अहीं केटलाक आचार्यो कहे छे के कदाच गुणस्थानक चोथुं रहेलुं होय तो ए गुणस्थानकमां आ कुलमद रुपी अशुभ विचारथी सत्तामां रहेलुं नीचगोत्र कर्म छे ते वखते बंधातुं उच्च गोत्र कर्म तेनी स्थिति अने रसने संक्रमीत करीने नीच गोत्ररुपे बनावी नीकाचीत करी शकाय छे ए प्रमाणे पण करेल होइ शके छे. जेम मल्लीनाथ भगवानना

आत्माने संक्रमथी स्त्रीवेद कर्मनी स्थिति अने रस निकाचीत करीने भोगववा पड्या एनी जेम पण बन्युं होय.

आथी कहेवाय छे के खरेखर प्रशंसा सांभऴवी सहेली छे पण तेने पचाववी दुष्कर छे. आ कारणे ज्ञानीओए जेनी तेनी प्रशंसा नहि करतां विवेकी बनवानुं कह्युं छे. आवा कुलीन आत्मा पण प्रशंसा पचावी न शक्या तो बीजा सामान्य आत्माओनुं तो शुं कहेवुं ?

हवे प्रभु मोक्ष गया बाद पण मीरिच साधुओ साथे विचरतो छतो आगऴनी पेठेज माणसोने प्रतिबोध आपी शिष्य करवा साधुओने सोंपतो ! एक दहाडो तेने शरीरे कांइक मांदगी थइ आवी, पण ते अविरति होवाथी तथा तेने वेष जुदो होवाथी कोइ साधुए तेनुं वैयावच्च कर्युं नहिं ! त्यारे ते विचारवा लाग्यो के– " अरेरे ! घणा वखतना परिचयवाऴा पण साधुओ मारी सारवार करता नथी. पण तेमां मारोज दोष छे, हुं असंयमी छुं, तेथी पोताना शरीरनीपण मूर्च्छा न राखनारा कृतकृत्य थयेला महात्मा संयमी मुनिओ अविरति एवा मारी सारवार केम करे ? माटे हवे हुं नीरोगी थाउं त्यारे वैयावच्च करे एवो एकाद शिष्य करुं, जेथी आवे वखते काम

आवे. " पछी मरीचि अनुक्रमे नीरोगी थयो. एक दहाडो कपिल नामे राजपुत्र तेनो उपदेश सांभळी प्रतिबोध पाम्यो, त्यारे मरीचिए कह्युं के- ' कपिल ! तुं साधु पासे जा, अने मोक्षपदने अद्वितीय हेतु एवो मुनिमार्ग स्वीकार.' पण कर्मना उदयने लीधे मुनिमार्गथी पराङ्मुख बनेला कपिले कह्युं के- ' हुं तो तमारीज पासे दीक्षा लइश, जो मुनिमार्ग मोक्षनो हेतु होय तो तमे आ परिव्राजकनो वेष केम स्वीकार्यो ?' मरीचिए कह्युं के- ' कपिल ! हुं मुनिमार्ग पाळवाने असमर्थ छुं, मुनिओ तो मन वचन अने कायाना दंडथी विरत थयेला होय छे, हुं तेवो नथी ' इत्यादि पोतानी सत्य हकीकत जणावी. कपिले कह्युं- ' स्वामी ! शुं तमारा मतमां धर्म नथी ज ?' त्यारे मरीचिए विचार्युं के- ' खरेखर, आ भारेकर्मी होवाथी जिनेन्द्रे प्ररुपेलो सत् मार्ग स्वीकारतो नथी, माटे मारेज शिष्य करवो ठीक छे, मारे योग्यज आ शिष्य मली गयो छे. ' एम विचारी कह्युं के, " कपिला ! इत्थं पि इहयं पि- कपिल ! जेम जिनेश्वरे प्ररुपेला मार्गमां धर्म छे तेम आ मारा मार्गमां पण धर्म छे." एवी रीते मरीचि उत्सूत्र वाक्य बोल्यो. ते सांभळी कपिले तेनी पासे दीक्षा लीधी, मरीचिए उत्सूत्र प्ररुपवाथी पोतानो कोडाकोडी सागरोपम जेटलो संसार

वधार्यो.

एक उत्सूत्र बोलवाथी निकाचीत मिथ्यात्वना उदयना कारणे सम्यक्त्व गयुं अने एक कोटाकोटि सागरोपम जेटलो संसार वधार्यो. एटलुं ज नहि पण बार बार भव सुधी सम्यक्त्व मल्युं नहि. तेमज सम्यक्देव-गुरु-धर्म पण मल्यो नहि. आलोचना कर्या वगर मरण पाम्या तेना प्रतापे देवलोक अने मनुष्यपणामां ब्राह्मणकुळमां उत्पन्न थइ त्रिदंडी वेशने पाम्या ते भवोनी वचमां नाना नाना भवो एकेन्द्रिय पणाना असंख्य कर्या.

विचारो के एक उत्सूत्र वचनथी आटला भवो वधे तो वाते वाते बोलता होइए के शुं साधुपणामां ज धर्म छे. श्रावकपणामां नथी अहीं पण धर्म छे एम बोलता केटलो संसार वधे छे ते विचारजो.

हवे ते कर्मने आलोच्या विना चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पाळी त्यांथी काळ करीने, (३) वीरप्रभुनो जीव चोथा भवमां ब्रह्मलोकमां दस सोगरोपमनी स्थितिवाळो देव थयो. (४) त्यांथी च्यवीने पांचमा भवमां कोल्लाक नामना गाममां एंशी लाख पूर्वना आयुष्यवाळो कौशिक

नामे ब्राह्मण थयो. विषयमां आसक्त, द्रव्य उपार्जन करवामां तत्पर, अने हिंसादिकमां क्रूर हृदयवाळो ते ब्राह्मण घणो काळ गृहस्थवास भोगवी, अंते त्रिदंडी थइ, मृत्यु पामीने. (५) घणा काल सुधी संसारमां भम्यो, ते भवो स्थूलभवोमां गण्या नथी. त्यांथी छट्ठे भवे स्थूणा नगरीमां बोंतेर लाख पूर्वना आयुष्यवाळो पुष्प नामे ब्राह्मण थयो. ते अंते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामीने. (६) सातमे भवे सौधर्म देवलोकमां मथ्यम स्थितिवाळो देव थयो. (७) त्यांथी च्यवीने आठमे भवे चैत्य नामना गाममां साठ लाख पूर्वना आयुष्यवाळो अग्निद्योत नामे ब्राह्मण थयो. ए अंते त्रिदंडी थइ, मृत्यु पामीने. (८) नवमे भवे इशान देवलोकमां मध्यम स्थितिवाळो देव थयो. (९) त्यांती च्यवीने दसमे भवे मंदर नामे गाममां छप्पन लाख पूर्वना आयुष्यवाळो अग्निभूति नामे ब्राह्मण थयो. ते अंते त्रिदंडी थइ, मृत्यु पामीने (१०) अगीयारमे भवे सनत्कुमार देवलोकमां मध्यम आयुष्यवाळो देव थयो. (११) त्यांथी च्यवीने बारमे भवे श्वेतांबी नगरीमां चुम्मालीश लाख पूर्वना आयुष्यवाळो भारद्वाज नामे ब्राह्मण थयो. ते अंते त्रिदंडी थइ, मृत्यु पामीने. (१२) तेरमे भवे माहेन्द्र देवलोकमां मध्यम स्थितिवाळो देव थयो. (१३) त्यांथी च्यवीने केटलोक

काल भवभ्रमण करी, चौदमे भवे राजगृह नगरमां चोत्रीश लाख पूर्वना आयुष्यवाळो स्थावर नामे ब्राह्मण थयो. ते पण अंते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामीने. (१४) पंदरमे भवे ब्रह्मदेवलोकमां मध्यम स्थितिवाळो देव थयो. (१५) त्यांथी च्यवीने घणो काल संसारमां परिभ्रमण करी सोळमे भवे-राजगृह नगरमां विशाखाभूति नामे युवराजनी धारिणी नामे भार्यानी कुखे,करोड वरसना आयुष्यवाळो विश्वभूति नामे क्षत्रिय थयो. विश्वभूति एक वखत पोताना अंत:पुर साथे पुष्पकरंडक नामना रमणीय उद्यानमां क्रीडा करतो हतो, ते जोइ तेना काकाना दीकरा विशाखानंदीने इर्ष्या आवी के- ' ज्यां सुधी विश्वभूति छे त्यां सुधी माराथी त्यां जइ शकाय नहिं, माटे तेने कपट करी बहार काढुं. ' एम विचारी विशाखानंदीए कपट करी सरल स्वभावी विश्वभूतिने बहार काढ्यो, अने पछी पोते पोताना अंत:पुर साथे उद्यानमां क्रीडा करवा लाग्यो. पाछळथी विश्वभूतिने कपटनी खबर पडतां क्रोध चड्यो, अने एक मुष्टि वडे कोठाना वृक्ष पर प्रहार करी तेनां बधा फळो नीचे पाडी नांख्या. त्यार पछी विशाखनंदीने उद्देशीने बोल्यो के- " आ कोठानां फळनी जेम तमारा मस्तको पृथ्वी पर रगदोळी नाखुं एवी मारी ताकात छे, पण शुं करुं ?

वडिलो उपरनी मारी भक्तिथीज एम करी शकतो नथी. आवा कपटयुक्त भोगनी मारे जरुर नथी.'' एम कही विषयोथी विरक्त बनीने विश्वभूतिए संभूति मुनि पासे दीक्षा लीधी अहींया आ विश्वभूति ना भवमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थइ अने छट्ठा गुण स्थानकनो परिणाम प्राप्त थयो. संयमनो स्वीकार करी अग्यार अंगना पाठी थया अने मासखमणने पारणे मासखमण करवा लाग्या. तेमां तेमनुं शरीर कृश थइ गयुं. एमां विचरतां विचरतां मथुरामां आव्या अने गोचरी माटे नीकळ्या. ते वखते तेमना काकानो दीकरो विशाखानंदी पण त्यां परणवा माटे आव्यो हतो. तेणे तपथी अत्यंत कृश थइ गयेला विश्वभूतिने जोया.

हवे विश्वभूति गोचरी माटे चाल्या जाय छे. तेवामां तेओ एक गाय साथे अथडावाथी पडी गया ते जोइने झरुखामां उभेला विशाखानंदी हस्या अने बोल्या के कोठाना फऴने पाडवानुं तारुं वऴ क्यां चाल्युं गयुं ? ए सांभऴी विश्वभूति मुनि एकाकी विहार करनारा गीतार्थ होवा छतांय गुस्सो पेदा थतां भान भूला बन्या अने क्रोधथी ते गायने शींगडाथी पकडी त्रणवार भमावी आकाशमां उछाऴी अने ते वखते नियाणुं कर्युं के मारा तप अने संयमनुं फऴ मने मऴतुं

होय तो ए मऴजो के भवांतरमां हुं एने मारनारो थाउं. अने घणां पराक्रमवाऴो थाउं.

अहींया नियाणुं करतां सम्यक्त्व गयुं. मिथ्यात्वनो उदय पेदा थयो तेना कारणे एने मारनारो थाउं एवो भाव पेदा थयो आ परिणामना प्रतापे एवो जोरदार अनुबंध पेदा कर्यो के जेना प्रतापे सातमी नारकीमां जवा लायक कर्मनो अनुबंध पण अहीं बांध्यो एम जणाय छे.

विचारो–तीर्थंकर थनार एवा आत्माओ पण मोहना उदयने आधीन थतां सातमी नारकीमां जवा लायक कर्मनो अनुबंध पण प्राप्त करी शके छे. तो अत्यारे आपणा जेवा जीवोनी शुं हालत ?

पछी पोतानुं करोड वरसनुं आयुष्य पूर्ण करी पूर्व पापनी आलोचना कर्या वगर मृत्यु पामीने सत्तरमा भवमां महाशुक्र देवलोकमां उत्कृष्ट आयुष्यवाऴो देव थयो.

त्यांथी च्यवीने अढारमा भवमां पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामना राजानो दीकरो त्रिपृष्ठ नामे वासुदेव थयो.

प्रजापति राजानुं नाम पहेला रिपुप्रति शत्रु हतुं तेने भद्रा नामे राणीनी कुखे अचल नामे पुत्र

अने मृगावती नामे पुत्री थइ मृगावती घणी रुपाणी हती. एक वखते यौवनवती अने सौंदर्यवती ते मृगावती पोताना पिताने प्रणाम करवा गइ त्यारे तेणीनुं अतिशय सौंदर्य जोइ राजा कामातुर थयो अने तेणीनी साथे लग्न करवानो उपाय विचारी मृगावतीने विदाय करी. हवे राजाए नगरना मोटा मोटा माणसोने सभामां बोलावी पुछ्युं के हे सभ्यो राज्यमां जे जे रत्न वस्तुओ उत्पन्न थाय ते कोनी समजवी ? त्यारे सभ्यजनोए उत्तर आप्यो के हे स्वामी ! जे उत्तम उत्तम रत्न वस्तुओ होय ते राजानी ज कहेवाय कारणके रत्न वस्तुओनो स्वामी राजा सिवाय बीजो कोण योग्य कहेवाय ? आ प्रमाणे लोकनाज मुखथी कहेवरावी राजाए मृगावतीने राजसभामां बोलावी, अने लोकोने कह्युं के- ' तमाराज वचन मुजब आ कन्यारत्न मारेज ग्रहण करवुं जोइए !' आ बनाव जोइ सभाना लोको लज्जित थइ गया. पछी राजाए मृगावती साथे गांधर्व विधिथी लग्न कर्युं. आ प्रमाणे ते राजा पोतानी प्रजा एटले संततिनो पति थयो, तेथी तेनुं नाम ' प्रजापति ' ए प्रमाणे प्रसिध्ध थयुं. ते मृगावतीनी कुखे सात स्वप्नोए सूचित, चोराशी लाख वरसना आयुष्यवाळो त्रिपृष्ठ नामे पुत्र थयो. तेणे बाल्यावस्थामां पण प्रतिवासुदेवना डांगरना खेतरने विध्न करनारा

सिंहने शस्त्र वगर पोताना हाथथीज चीरी नांख्यो हतो. अनुक्रमे त्रिपृष्ठ वासुदेवपणाने पाम्या. एक वखते वासुदेवना शयन समये मधुर स्वरवाऴा केटलाक गवैया गाता हता, त्यारे वासुदेवे पोताना शय्यापालने आज्ञा करीके- ' मारा उंघी गया पछी गायन बंध करावजे, अने गवैयाओने रजा आपजे.' हवे वासुदेव निद्रावश थइ गया, छतां पण मधुर गायनना रसमां तल्लीन बनी गयेला शय्यापाले गायन बंध कराव्युं नहिं. तेथी थोडी वारमां वासुदेव जागी उठ्या, अने तेओने गाता जोइ गुस्से थइ द्वारपालने कह्युं के- 'अरे दुष्ट ! मारी आज्ञा करतां पण शुं तने गायन वधारे प्रिय छे ? ठीक छे ! त्यारे तो तुं तेनुं फऴ भोगव.' एम कहीने तेमणे शय्यापालकना कानमां तपावेला सीसानो रस रेडाव्यो. आ कृत्यथी वीरप्रभुना जीव त्रिपृष्ठ वासुदेवे कानमां खीला ठोकवानुं कर्म उपार्जन कर्युं.

विचारो.....आ भवमां पोतानी पुत्रीनी साथे लग्न करी तेनाथी पुत्र रुपे भगवाननो जीव उत्पन्न थयो आटलुं नीच गोत्र कर्म भोगववा छतां खप्युं नहि ते छेवट सत्तावीशमां भवमां पण भोगववुं पड्युं. अने नवा कर्मो उपार्जन करी घणां दुष्कर्मो उपार्जन करीने मरीने सातमी

नारकीमां ओगणीशमा भवे तेत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाळा नारकी थया. मिथ्यात्वना उदय साथे सातमी नारकीमां उत्पन्न थया त्यां एक अंतर्मुहूर्तमां पर्याप्त थतानी साथे ज पोते विचारणा करे छे के एवा में केवा कर्मो कर्या के जेना प्रतापे मारे अहीं आववुं पड्युं. आ विचार आवतानी साथे स्थिरता आवतां मिथ्यात्व गयुं अने क्षयोपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति थइ ते समकित तेत्रीश सागरोपम सुधी टकावी राख्युं अने सातमी नारकीमां रहेला जीवोने नियमा तिर्यंच आयुष्य बंधातुं होवाथी अने पहेला गुणस्थानकेज बंधातुं होवाथी मिथ्यात्वे आवी तिर्यंचायुष्य बांधीने त्यांथी नीकळीने वीशमा भवे सिंह थया.

त्यांथी मरी एकवीशमा भवमां चोथी नारकीए गया. अर्थात् चोथी नारकी रुपे उत्पन्न थया. त्यांथी नीकळीने घणोकाळ संसारमां परिभ्रमण करीने बावीशमा भवे मनुष्यपणुं पाम्या. अहींयाथी हवे उत्तरोत्तर आत्मिक गुणो विकास पामवानी शरुआत थशे जे मोटा भागना दुर्गतिमां जइने भोगववा लायक कर्मो हता ते भोगवाइने नाश पामी गया. हवे उत्तरोत्तर पुण्यानुबंधि पुण्य उपार्जन करतां करतां आत्मिक गुणोनो विकास साधशे.

त्यां तेणे शुभ कर्म उपार्जन करी मृत्यु पामीने (२२) त्रेवीशमे भवे विदेहक्षेत्रमां मूका नामनी राजधानीमां धनंजय राजानी धारिणी नामे राणीनी कुखे चोराशी लाख पूर्वना आयुष्यवाळो प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती थयो. तेणे पोट्टिल नामे आचार्य पासे दीक्षा लइ, एक करोड वरस सुधी संयम पाळी अंते काळ करीने (२३) चोवीशमे भवे महाशुक्र देवलोकमां सर्वार्थ नामना विमानमां सत्तर सागरोपमनी स्थितिवाळो देव थयो. (२४) त्यांथी च्यवीने पचीशमे भवे आ भरतक्षेत्रमां छत्रिका नामे नगरीमां जितशत्रु राजानी भद्रा नामे राणीनी कुखे पच्चीश लाख वरसना आयुष्यवाळो नन्दन नामे पुत्र थयो. तेणे घणा वरस राज्य भोगवी, अनुक्रमे जन्मथी चोवीश लाख वरस व्यतिक्रमावी, राज्यनो त्याग करी, पोट्टिलाचार्य पासे दीक्षा लीधी. दीक्षित थया बाद नंदन मुनिना भवमां तीर्थंकर नामकर्म निकाचीत करवा माटे अग्यारलाख एंशी हजार छसोने पीस्तालीश मासखमण करीने आराधना करी. आ आराधनानी साथे अग्यार अंगेनो अभ्यास कर्यो रोज सात-सात प्रहर एटले एकवीश कलाक सुधी काउस्सग मुद्राए रहीने (उभा रहीने) एकाग्र चित्ते स्वाध्याय करता हता. ते स्वाध्यायना परावर्तनना बळे राग द्वेषनो उदय होवा

छतां पण उदय निष्फळ बनावी पोताना आत्मामां शरीरथी एवुं उच्च कोटिनुं भेद ज्ञान पेदा करेल हतुं के जेना प्रतापे ए भवमां कोइ तेमना शरीरने वांसलाथी छोले तो ते जीव प्रत्ये द्वेष पेदा थतो नहोतो. अने कोइ तेमना शरीरे चंदननो लेप लगाडी जाय तो पण ते जीव प्रत्ये राग पेदा थतो नहोतो. आ रीते रागादिने संयमीत करी उदय निष्फळना संस्कार द्रढ करीने एक लाख वरस सुधी चारित्र पाळी, छेल्ले एक मासनी संलेखना पूर्वक काळ करी.....(२५) छवीशमे भवे प्राणत नामना देवलोकमां पुष्पोत्तरावतंसक विमानमां वीश सागरोपमनी स्थितिवाळो देव थयो. त्यां सुखनी सामग्रीमां पण अभ्यास करेल ज्ञान ते साथे लइने गयेला छे तेनुं परावर्तन करीने काळ पसार कर्यो. (२६) त्यांथी आयुष्य पूर्ण थतां च्यवीने, मरीचिना भवमां बांधेला अने भोगवतां बाकी रहेला नीच गोत्रकर्मना उदयथी, सत्यावीशमे भवे वीर प्रभुनो जीव ब्राह्मणकुंडग्राम नगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कुखे गर्भपणे उत्पन्न थयो. (२७)

वळी इन्द्र विचार करे छे के अरिहंतो, चक्रवर्तीओ, बलदेवो के वासुदेवो शुद्र आदि कुलोमां पूर्वे आव्या हता. आवे छे अने आवशे परंतु मातानी कुक्षिथी कोइ जन्म्या नथी जन्मता

नथी अने जन्मशे नहि. आ प्रभु हाल अवतर्या छे माटे इन्द्रोनो एवो आचार छे के नीचकुऴमां अवतरेला ते श्री अरिहंतने त्यांथी लइ पूर्वे कह्यातेवा उग्रकुऴ वगेरे श्रेष्ठ कुऴोमां मुकवा जोइए. तेथी मारुं कर्तव्य छे के ते गर्भ मारे बदलवो जोइए माटे हे हरिणगमेषी देव ! क्षत्रियकुंड नामना गाममां काश्यप गोत्रीय सिध्धार्थ नामना क्षत्रिय राजा छे अने तेमनी वासिष्ठ गोत्रवाऴी त्रिशला क्षत्रियाणी गर्भवती छे तेनी कुखे गर्भ बदली भगवाननो गर्भ मूको अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो पुत्रीपणे गर्भ छे तेने देवानंदानी कुखे स्थापो ए मारी आज्ञा प्रमाणे सर्व कार्य करी मारी आज्ञा मने पाछी आपो.

इन्द्रनो आदेश सांभऴी हर्षित-प्रसन्न थयेला चित्तमां आनंद-प्रीति पामेला ते देव के जेनी रोम राजी विकस्वर थइ छे ते बे हाथ जोडी जेवी आपनी आज्ञा एम कहीने आज्ञाने विनयपूर्वक स्वीकारीने त्यांथी मनुष्य लोकमां आववा माटे इसान दिशामां जइ वैक्रीय समुद्घात करी बीजुं वैक्रीय शरीर बनाववा प्रयत्न कर्यो.

ते प्रयत्नमां संख्याता योजन प्रमाणवाऴो उंचे अने नीचे दंडने आकारे लांबो अने शरीरना

जेवा जाडा जे जीव प्रदेशो अने कर्मपुद्गलोनो समुह तेने शरीर थकी बहार काढी पछी आत्मप्रदेशो द्वारा वैक्रीय पुद्गलो ग्रहण कर्या ते पुद्गलो कर्केतन रत्न, हीरा, नीलरत्न, लोहीताक्ष रत्न, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलाक सौगन्धिक, ज्योतिरस श्याम, अंजनपुलाक जात, सुभगअंक, स्फटिकरत्न अने रिष्टरत्न आ सोळ जातिना रत्नो सदृश ते बीजुं वैक्रीय शरीर रच्युं. पछी मनोहर त्वरावाळी-प्रचंड पवनथी उछळतां धूमाडानी गति जेवी-शरीरना अवयवोने कंपावनारी-देवोने योग्य देवगति वडे उतावळथी दोडते ते देव असंख्याता द्वीप समुद्रोनी मध्यभागमां रहेला जंबुद्वीपने विषे त्यां भरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंड नगरमां ज्यां भगवान अवतर्या हता त्यां आव्यो. भगवाननुं दर्शन थतां ज प्रणाम करीने देवानंदा परिवारने अवस्वापिनी निद्राथी निद्राधीन कर्या. गर्भमां रहेला अशुभ पुद्गलोने दूर करी शुभ पुद्गलोनुं स्थापन करीने हे भगवन् मने अनुमति आपो एम प्रार्थना करीने पोतानी देव शक्तिथी माताने अने भगवानने जराय पीडा न थाय तेम गर्भने हाथना संपुटमां ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने क्षत्रियकुंड नगरमां त्रिशला क्षत्रियाणी पासे आव्यो त्यां त्रिशला आदि सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा आपीने अशुभ कर्मोने दुर करी शुभ

पुद्गलो दाखल करी पुत्रीना गर्भने लइने भगवानना गर्भने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुखमां पधराव्यो. अर्थात् संक्रमाव्यो अने जे पुत्रीनो गर्भ हतो ते देवानंदानी कुक्षिमां संक्रमाव्यो.

आ प्रमाणे इन्द्रनी आज्ञानुसार काम करीने देव पाछो आव्यो. आवीने इन्द्र महाराजने कह्युं के आपनी आज्ञा प्रमाणे करी आव्यो एम आज्ञा पाछी आपी इन्द्र पण खुश थया. आ गर्भनुं संहरण वर्षाऋतुनो आसो महिनो कृष्ण पक्ष अने तेनी तेरसनी मध्यरात्रि हती अर्थात् देवानंदानी कुक्षिमां ब्याशी दिवस पूर्ण थया त्यारे संक्रमण थयुं.

संहरण वखते भगवान त्रण ज्ञानवाळा होवाथी जाणता हता के मने अहींथी संहरशे. पछी जाण्युं के मारुं संहरण थयुं अने संहरण करती वेळाए पण जाण्युं के मारुं संहरण थइ रह्युं छे छतां ए कार्य देवे एवी कुशलताथी जल्दीथी अने जरापण पीडा न थाय एम कर्युं के जाणे भगवाने कांइ जाण्युं नहि. एम जाणवा छतां न जाण्युं एम व्यवहारमां बोलाय छे. कोइ कांटो एवी कुशळताथी काढे के कांइ जणायुं नहि एम बोले. सिध्धांतमां पण अति सुखना काळमां आ रीतना वाक्यो मळे छे कह्युं छे के त्यां व्यंतरदेवो श्रेष्ठ देवीओनां गीत अने वादिताना शब्दोथी

नित्य सुखी अने प्रमुदित थकां काळ क्यां गयो ते जाणतां पण नथी.

भगवान त्रिशळा मातानी कुक्षिमां आव्या त्यारे क्यां सूता हता ? ते कहे छे के सुंदर वासघरमां भगवान सुख शय्यामां सूता हता. जेनुं वर्णन जीहवाथी करवुं अशक्य छे. एवुं महाभाग्यशाळीने चित्रोथी शोभीत छतवाळुं, नीचे देदीप्यमान अने विविध रत्नोथी जडेला भूमि तळवाळुं, सर्वत्र मणि अने रत्नोना प्रकाशथी झगमगतुं, पंचवर्णोना सुगंधी पुष्पोनी सुवासथी मघमघतुं अने विविध जातिना सुगंधी चूर्णोना गंधथी जाणे पूर्ण भरेलुं हतुं तेमां त्रिशला क्षत्रियाणी सुखपूर्वक सुता हता. ते शय्या शरीरना आधार माटे शरीर जेटली लांबी हती. मस्तक अने पगना स्थाने बे ओशिका हता. एथी उपर-नीचे उंची अने वच्चे नीची हती वळी ते नरम हती. उपर रेशमी चादर पाथरेली हती तेना उपर लालवर्णवाळी मच्छरदानी हती. तेमां सुगंधी मान पुष्पो अने चूर्णो वेरेला हता. एवी शय्या उपर त्रिशला देवी सूतेला हता. ते वखते आकाशमांथी उतरता चौद महास्वप्नो पोताना मुखमां प्रवेश करतां जोयां. ते आ प्रमाणे- हाथी-वृषभ-सिंह-श्रीदेवी-पुष्पमाळा-चन्द्र-सूर्य-इन्द्रध्वज-पूर्णकळश-पद्म सरोवर-क्षीर

समुद्र-विमान-रत्नराशी अने निर्धूम अग्नि शिखा जोइ.

घणी जिनेश्वरनी माताओ आ क्रमथी स्वप्ना जुए छे माटे ए क्रम कह्यो. वास्तविक रीतिए ऋषभदेवनी माताए पहेला वृषभ अने वीर प्रभुनी माताए पहेला सिंहने मुखमां प्रवेश करतो जोयो हतो.

आ स्वप्नो सहर्ष सांभऴवा-पूजवां के तेनो महोत्सवादि करवो ते सघळुं तीर्थंकरनुं ज सन्मान-भक्ति अने पूजा रुप छे. ए कारणे स्वप्नो उतारवानो व्यवहार धर्म परंपराथी चाल्यो आवे छे तेनी उपजनुं द्रव्य प्रभुना सत्कार रुपे समर्पित करातुं होवाथी परंपराथी तेनो, देव द्रव्य मानवानो व्यवहार पूर्ण पुरुषोए अखंड साचव्यो छे अने ते साचववा योग्य छे. कोइ स्थऴे जो आ व्यवहार न सचवायो होय तो ते युक्ति बाह्य अने एना उंडा रहस्यने नहि समजवानुं परिणाम छे.

ते स्वप्नो जोइने जागेला त्रिशला देवी अति हर्षने पाम्या अने शय्यामांथी उठीने पोताना पति पासे गया. तेमने ते स्वप्नोनो सघऴो वृतांत कह्यो ते सांभऴी अति हर्षित थयेला सिध्धार्थ

राजाए पोतानी बुध्धि वगेरेथी विचारीने कह्युं के हे देवी सांभळो. आपणने शूरवीर वगेरे अनंत गुणोनुं निधान एवो उत्तमोत्तम पुत्र थशे.

देवानंदानी कुखेथी भगवान संहराया ते वात पोताना पति ऋषभदत्तने कही त्यारे ते बोल्या के रंकना घरमां रत्ननुं निधान न रहे तेम आपणा घेर उत्तम स्वप्नोथी अवतरेलो आवो पुण्यवंत पुत्र न रहे.

हवे स्वप्नाओनुं वर्णन कराय छे.

पहेला स्वप्ने हाथी जोयो. ते वरस्या पछी वादऴनो, मोतीना ढगलानो, क्षीर समुद्रनो, चन्द्रना किरणोनो, रुपाना वैताढ्य पर्वतनो अने जऴना बिन्दुओना वर्ण जेवो होय तेवो श्वेत वर्णवाऴो मोटा अने उजऴा बऴवान चार दंतूशऴ वाऴो ते घणो उंचो, झरता मदनी अति सुवासथी खेंचाइने आवेला भमराओना समुहोथी युक्त, गंड स्थऴमांथी मद रसने चूसतां इन्द्रना ऐरावण हस्तिना जेवुं लक्षणयुक्त अने प्रमाणसर अवयोवाऴुं शरीर छे एवो, मेघ गर्जना जेवो गंभीर अने मनोहर शब्द स्वरवाऴो ते सर्वश्रेष्ठ लक्षणोवाऴो तेथी ज मंगलकारक अने श्रेष्ठ एवा उत्तम हाथीने पहेले स्वप्ने त्रिशला देवी जुए छे.

बीजा स्वप्नमां वृषभ जोयो. तेनुं शरीर सुंदर अने पुष्ट छे. तेना शिंगडा तीक्ष्ण छे अने भ्रमरो जेवां श्याम नेत्रो छे. श्वेत कमलोनां पत्रोनी कान्तिथी पण अति उजळी अने कोमळ एवी देहकान्तिथी दशेय दिशाओने ते शोभावे छे. आवी अतिशायी शरीर शोभानी प्रेरणाथी ज जाणे उछळतो होय, तेम ते तेनी आंखो उछाळतो थकी शोभे छे. निर्मल अने सुकुमार रोमराजीथी तेनी काया सुंवाळी छे. तेना स्थिर हाडकां, मजबूत बांधो, मांसथी पुष्ट देखावडुं शरीर अने शिंगडा मजबूत, गोळ, अति श्रेष्ठ, तीक्ष्ण छेडावाळां तथा चळकतां छे. ते स्वभावे शान्त अने उपद्रवने हरनारो छे. तेनुं मुख उजळा अने सरखा दांतथी शोभे छे. घणा गुणोने करनारा आ महा मंगलोने आववानुं जाणे ते द्वार छे. अर्थात् जेना दर्शन मात्रथी पण विघ्नो टळे अने गुणो प्रगटे, तेवा वृषभने बीजा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए जोयो.

त्रीजा स्वप्ने सिंह दीठो. ते पहेला स्वप्ने जोयेला हाथी जेवो वर्णे उजळो, मजबूत अने श्रेष्ठ पगना पंझावाळो, गोळ, पुष्ट अने परस्पर अंतररहित एवी श्रेष्ठ तथा अति तीक्ष्ण दाढाओथी शोभता मुखवाळो, उत्तम अने जातिवंत कमळना जेवा कोमळ यथोक्त प्रमाणवाळा होठथी शोभतो, राता कमळना पांदडा जेवुं कोमळ अने सुंवाळुं तथा लपलपती जीव्हावाळो, अग्निथी

गाळेलुं सुवर्ण भमे तेम भमतां गोळ अने तेजस्वी नेत्रोवाळो, विशाळ साथळवाळो, खांधानी केसराओथी शोभतो, उंचे उछाळीने पीठ उपर कुंडलाकार करेला पुच्छवाळो, अक्रूर एवी शान्त आकृतिवाळो, विलासी चाले चालतो, तीक्ष्ण अने मजबूत नखवाळो तथा जाणे मुखनी शोभा माटे लटकती राखी होय तेवी लटकती जीव्हावाळो, एवा श्रेष्ठ लक्षणोवाळो, उंचा, सौम्य आकृतिवाळा तथा सुशोभित सिंहने आकाशमांथी उतरीने पोताना मुखमां प्रवेश करतो त्रीजा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए जोयो.

हवे चोथा स्वरप्नमां श्रीदेवीने जोइ. तेनुं वर्णन करे छे के-

हिमवान नामना पर्वत उपर मनोहर पद्मद्रह छे, त्यां कमळ उपर वासभवनमां रहेनारी लक्ष्मीदेवी छे. ते कमळना छ वलयोमां सर्व मळीने एक क्रोड अने वीशलाख कमळो छे. एवी लक्ष्मीदेवीने चोथा स्वप्नमां जोइ. तेनुं वर्णन आ प्रमाणे छे.

आ जंबूद्वीपमां भरतनी उत्तरे हिमवंत नामे सोनानो पर्वत छे. ते सो योजन उंचो अने एक हजार ने बावन योजन बार कळा जेटलो पहोळो छे. तेना मध्य भागे पद्मद्रह नामे सरोवर छे. ते दश योजन उंडुं, हजार योजन लांबुं अने पांचसो योजन पहोळुं छे. तेनुं तळियुं वज्रमय छे. आ

सरोवरना मध्यमां एक मुख्य कमळ छे, तेनुं नाळ दश योजन लांबु छे, जळथी ते बे कोश उंचुं छे अने एक योजन लांबुं-पहोळुं गोळ छे. तेनुं मूळियुं वज्ररत्ननुं, कंद रिष्ठरत्ननो अने नाळ नील रत्ननुं छे. तेनां बहारनां पांदडां राता सुवर्णनां अने अंदरनी पांदडीओ पीळा सुवर्णनी छे. ते कमळमां एक सुवर्णनी कर्णिका छे. ते बे कोश लांबी-पहोळी अने एक कोश उंची तथा राता सोनानी केसराओथी शुशोभीत छे. आ कर्णिका उपर श्रीदेवीनुं वासभवन छे. ते एक कोश लांबुं, अडधो कोश पहोळुं अने चौदसो चुंमालीस धनुष्य उंचुं छे. तेने पूर्व, दक्षिण अने उत्तर-एम त्रण दिशाए पांचसो धनुष्य उंचा अने अढीसो धनुष्य पहोळा त्रण द्वार छे. आ वासभवननी मध्यमां अढीसो धनुष्य लांबी-पहोळी एक पीठिका अने तेना उपर श्रीदेवीनी शय्या छे. आ मुख्य कमळने फरतां चारेय दिशामां श्रीदेवीनां आभरणो भरवानां एक सो आठ कमळो वल याकारे रहेलां छे. ते प्रत्येकनुं प्रमाण मुख्य कमळथी अडधुं जाणवुं. एम पछीनां सर्व वलयोनां कमळो पण पूर्व पूर्व वलयनां कमळोथी अडधा मानवाळां समजवां. आ पहेलुं वलय जाणवुं. तेने फरतां बीजा वलयमां पूर्वदिशाए चार महर्दिक देवीओनां चार कमळो, वायव्य, उत्तर अने इशानमां चार हजार सामानिक देवोनां चार हजार कमळो, अग्निकोणमां गुरुस्थानीय अभ्यंतर

पर्षदानां देवोने रहेवानां आठ हजार कमळो, दक्षिणमां मित्रतुल्य मध्यम पर्षदाना देवोना दश हजार कमळो, नैऋत्यकोणे किंकरतुल्य बाह्यपर्षदाना बार हजार देवोनां तेटलां कमळो अने पश्चिममां सात सैन्यना सेनापतिओनां सात कमळो छे. तेने फरतां त्रीजा वलयमां सोळ हजार अंगरक्षक देवोने रहेवानां सोळ हजार कमळो चारेय दिशामां रहेला छे. चोथा वलयमां अभ्यन्तर आभियोगिक देवोनां बत्रीश लाख कमळो, पांचमा वलयमां मध्यम आभियोगिक देवोनां चालीश लाख कमळो अने छट्ठा वलयमां बाह्य आभियोगिक देवोनां अडताळीश लाख कमळो छे. एम मूळ कमळ अने तेनी चारेय बाजु रहेलां छ वलयोनां कमळो मळीने कुल एक क्रोड, वीश लाख पचास हजार अने एकवीश कमळो छे. ते सर्व कमळोमां रहेनारा देव-देवीओ श्रीदेवीनो परिवार जाणवो.

आ लक्ष्मीदेवीना बे चरणो जाणे सोनाना घडेला काचबा होय, तेवा उन्नत अने आंगळीओ तरफ ढळता छे; दशेय आंगळीओना नख जाणे रंगथी रंग्या होय तेवा राता, मांसथी पुष्ट, पातळा, सुंवाळा अने तेजस्वी छे; पगनी आंगळीओ कोमळ अने श्रेष्ठ छे; हाथ-पगना तळियां कमळपत्र जेवां सुकुमार; बांधाओ गोळ अने हाथीनी सूंढनी जेम नीचे थोडी स्थूल, पछी क्रमशः उपर

उपर वधारे स्थूल; ढींचणना सांधा मांसथी ढंकायेला गुप्त अने साथळो हाथीनी सूंढना सदश पुष्ट अने मजबूत छे; सुवर्णनो कंदोरो धारण करेलो होवाथी तेमनो कटिभाग मनोहर देखाय छे; तेमनी रोमराजी अंजन, भ्रमरो वगेरेना वर्ण जेवी श्याम, कोमळ, सुंवाळी अने सूक्ष्म छे; नाभि गंभीर छे, तेमनो कटिप्रदेश सिंहनी कटि जेवो कृश छे; उदरनो भाग त्वचानी त्रण रेखाओथी सुशोभित छे; तेमनां हृदय उपर निर्मळ अने उत्तम जातिना रक्त सुवर्णना, पीळा सुवर्णना, चंद्रकान्त वगेरे मणिओना अने मोतीओना हारो शोभे छे; तेमणे हाथे सुवर्णनां रत्नजडित कंकणो पहेरेला छे तथा तेमनी अंगुलीओ उपर विंटीओ शोभे छे; तेमनां हृदयभागे धारण करेली मोतीनी माळाथी स्तन मोतीनी माळाथी शोभता बे सुवर्णकळश जेवा शोभे छे. वळी वच्चे वच्चे पानांथी शोभता मोतीना गुच्छनो उज्वळ हार, सोनैयानी माळा तथा सुवर्णमय दोरो पहेरवाथी तेमनुं हृदय अति शोभे छे; तेमनां खभानी साथे घसातां बे कर्णकुंडलो पण घणां शोभे छे; एम विविध आभरणो अने अलंकारोनी शोभाथी तेमनुं मुखकमळ मोटा परिवारथी कुटुम्बनो वडो शोभे तेम शोभे छे. तेमनां नेत्रो कमळ जेवां निर्मळ, लांबा अने मनोहर छे; बन्ने हाथमां पकडेला एक एक कमळमांथी मकरन्दनां बिन्दुओ झरे छे; क्रीडा करवा माटे होय तेम एक हाथमां

सुन्दर पंखो तेमणे धारण करेलो छे; तेमनां मस्तकना केशो सुंवाळा, तेजस्वी, कोमळ अने सूक्ष्म छे; तथा ते पण वच्चे वच्चे खीली नहि, जटाजूटनी जेम परस्पर गुंथायेला नहि अने टूंका पण नहि, किन्तु सुंदर गुंथेला छे. ए श्रीदेवी उपर जणाव्युं ते कमळमां बेठां छे अने ऐरावण वगेरे दिग्हस्तिओ पोतानी पुष्ट सूंढो द्वारा तेमने जळनो अभिषेक करे छे.

एवी श्रीदेवीने त्रिशलादेवीए चोथा स्वप्ने जोइ.

एम चार स्वप्नोनो अर्थ कहींने हवे अटकीए, कारणके- श्री कल्पसूत्रनुं बीजुं व्याख्यान अहीं पूर्ण थाय छे. जे भव्य जीव ते सांभळे, संभळावे, हृदयमां धारे अने पाळे, ते पुण्यपुरुष अनुक्रमे मुक्तिसुखने पामे. एम वडाकल्पना दिवसे बे व्याख्यानो वांचवा-सांभळवां अने ओच्छव-महोच्छव करवा. आ बे व्याख्यानोनो अधिकार श्री ज्ञानविमळसूरिजीए पोताना गुरुना मुखेथी सांभळीने कह्यो छे.

बीजुं व्याख्यान समाप्त.

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान त्रीजुं

हवे प्रथम शेष दश स्वप्नोनुं वर्णन श्री कल्पसूत्र नामना शास्त्रमां कह्या प्रमाणे एकाग्रचिते सांभळीए अने पछी प्रात:काळे सिध्धार्थ राजा स्नान अने द्रव्यमंगल करीने, शरीरे वस्त्रो तथा आभूषणो वगेरे पहेरीने राजसभामां पधार्या, ते प्रसंगनुं वर्णन कहेवाशे.

पांचमा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए पुष्पमाला जोइ, ते माळा चम्पो, अशोक, पुन्नाग, प्रियंगु अक्कोल, कोज, कोरंट, तिलक, बकुल अने सहकारादि वृक्षोनां तथा मोगरो, मालती, जाइ, जूइ, नवमालिका, वासंतिका, पद्मलता वगेरे वेलडीओनां-एम छए ऋतुनां ताजां पुष्पोनी छे. तेमां पण मुख्यतया घणां पुष्पो श्वेत छे अने वच्चे वच्चे रातां, पीळा वगेरे पांचेय वर्णोना पुष्पो छे, तेथी ते माळा मनने आश्चर्य उपजावे तेवी अने सर्व पुष्पो ताजां अने श्रेष्ठ गन्धवाळा होवाथी दशेय दिशाओने सुगंधथी मघमघावे छे. तेनी गन्धथी आकर्षायेला विविध जातिना भ्रमरा-भ्रमरीओ वगेरे तेना उपर बेसीने मकरंद चुसता आनंदमां मस्त बनीने गुंजारव करता होवाथी, जाणे माळा गुंजारव करती होय तेवी देखाय छे. एवी महा मंङ्गलकारी पुष्पमाळा आकाशमांथी उतरती पांचमा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए जोइ.

छट्ठा स्वप्नमां चन्द्र जोयो. ते गायनुं दूध, जळनां बिन्दुओ, रुपानो कळश वगेरेना जेवो वर्णे अति उज्वळ छे; जोनारना हृदयने अने नेत्रोने आनंदकारी छे; वननी निकुंजोमांथी अंधकारने टाळनारा; सर्वत्र प्रकाश करनार; रात्रिने शोभावनार; रात्रिवासी कमळोने विकसावनार; सोळे

कळाओथी परिपूर्ण; हंसना जेवो उज्वळ, निर्मळ अरीसानी जेम दीपतो; बीजा ग्रहो, नक्षत्रो वगेरे ज्योतिषिओमां मुख्य; समुद्रनी वेलाने वधारनार अने कामदेवने बाणो पूरा पाडनार छे; अर्थात् विरही जनोने चंद्रना किरणरुपी बाण वडे कामदेव पीडे छे. माटे कवि उपालम्भ आपे छे के- ' हे ! दुर्मति निशाचर चंद्र ! तुं तारां किरणो द्वारा निश्चे विरही मनुष्योनुं रुधिर चूसे छे. जो एम न होय, तो उदयवेळा तुं रातो अने तेओ शरीरथी सूकायेलां केम होय ? माटे आ दुष्ट साहसथी तुं अटकी जा.' वळी जाणे आकाशनुं चालतुं-फरतुं तिलक होय तेवो ते शोभे छे. ते रोहिणीनो वल्लभ, सौम्य अने मनोहर कान्तिथी शोभतो छे. एवा पूर्णचंद्रने पूर्णचंद्र जेवा मुखवाळी त्रिशलादेवीए आकाशमांथी आवतो जोयो.

पछी सातमा स्वप्नमां सूर्यने जोयो. ते अंधकारनो नाश करनार अने तेजथी जाज्वल्यमान रुपवाळो छे. जो के सूर्यना बिम्बमां बादर पृथ्वीकाय जीवोनां शरीरो शीतल होय छे, तो पण तेओने आतप नामकर्मनो उदय होवाथी तेना तेज द्वारा जीवो व्याकुळ थाय छे. वळी अशोकवृक्ष, पुष्पितपलाशपत्र, पोपटनी चांच, चणोठीनो अर्धभाग वगेरेना जेवो वर्णे रातो, कमळना वनोने

विकसित करीने शोभावनार, मेषादि राशिओमां संक्रमण करवा वगेरेथी ज्योतिश्चक्रनां लक्षणोने जणावनार, आकाशमां प्रकाश करनार, हिमना समूहनो पराभव करनार, ग्रहोनो नायक, रात्रिना विनाशनुं कारण, उदय अने अस्त वेळाए एक मुहूर्त सुखेथी जोइ शकाय तेवो, शेषकाळे दुःखे जोइ शकाय तेवो, रात्रिए अन्याय करनारा चोर वगेरेना पापकार्योने रोकनार, ठंडीनो नाश करनार, पोताना एक हजार किरणोना प्रकाशथी दीप्त, शेष चंद्र, तारा वगेरेनी शोभाने हरनार, मेरुगिरिनी चारेय दिशाए परिभ्रमण करतो अने विशाळ, एवा सूर्यने आकाशमांथी उतरीने सन्मुख आवतो त्रिशलादेवीए जोयो. अहीं सूर्यने हजार किरणोवाळो कह्यो ते लोकप्रसिद्धिनी अपेक्षाए समजवुं. वस्तुतः तो ऋतुभेदे चैत्रमां १२००, वैशाखे १३००, ज्येष्ठमां १४००, अषाढमां १५००, श्रावणमां १४००, भाद्रपदमां १४००, आसोमां १६००, कार्तिकमां ११००, मृगशीर्षमां १०५०, पोषमां १०००, माधमां ११०० अने फाल्गुनमां १०५० किरणोथी तपतो होय छे.

आठमा स्वप्नमां ध्वजने जोयो. तेनो दंड उत्तम जातिवंत सुवर्णनो छे. तेना उपर टोचे

रहेलां घणां नील, रातां, पीळां, धोळां अने श्याम, एम पद्मवर्णी सुकुमार मोरना पींछां वायुथी उछळे छे, तेथी जाणे मस्तके केश होय तेम जे ध्वज शोभे छे अने ते स्वयं पण अति सुशोभित छे. वळी तेना पटमां स्फटिक, शङ्ख अने मोगरानां पुष्पो जलबिन्दुओ अने रजतनो कळश वगेरेना जेवो वर्णे उज्वळ सिंह चित्तरेलो छे. ते सिंह पवनथी उडता ध्वजनी साथे ए रीते उछळे छे के-जाणे आकाशने भेदवा माटे उद्यम करतो होय तेवो देखाय छे. वळी सुखाकारी अने मंद मंद वहेता वायुना योगे ते ध्वज कम्पे छे-उडे छे. ते प्रमाणथी अति मोटो अने मनुष्योने जोतां ज आनंद थाय, तेवा मनोहर रुपवाळो छे. एवा ध्वजने आठमा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए जोयो.

नवमा स्वप्नमां रुपानो सुवर्णकळश जोयो. ते जातिवंत सुवर्णनी जेम तेजस्वी होवाथी अति दीप्त रुपवाळो छे, निर्मळ जळथी भरेलो होवाथी शुभसूचक छे, देदीप्यमान छे, कमळोना समूहथी सर्व बाजुए शोभे छे, प्रतिपूर्ण एवां सर्व मंङ्गलोनुं संकेतस्थान छे, अर्थात् तेनुं दर्शन जीवने सर्व प्रकारे मङ्गल करनार छे, श्रेष्ठ रत्नमय विकसित कमळ उपर मूकेलो छे, नेत्रोने आनन्द करनारो छे, कान्तिथी अनुपम छे, सर्व दिशाओमां पोतानी कान्तिथी प्रकाश करे छे,

प्रशस्त लक्ष्मीनुं घर छे, सर्व पापोथी रहित छे, एथी सर्व रीते शुभ छे. शोभाथी पण श्रेष्ठ छे अने सर्व ऋतुओनां सुगंधी पुष्पोनी माळाओ तेना कंठे स्थापेली छे, एवा पूर्ण रजतकळशने त्रिशला क्षत्रियाणीए जोयो.

दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर जोयुं. तेनुं पाणी तूर्त उगेला सूर्यनाकिरणोथी खीलेलां सहस्त्रकमळ वगेरे मोटां कमळोनी सुगंधथी सुगंधवाळुं अने ते कमळोना परागथी पीळुं-रातुं मिश्र रंगवाळुं थयुं छे. घणा मच्छरो वगेरे जळचर जीवोथी ते परिपूर्ण छे अने ते जीवो तेना जळनो उपयोग करे छे. वळी ते सूर्यविकाशी कमळो, चंद्रविकाशी कमळो, राता कमळो, मोटां कमळो, पुंरडीकि कमळो वगेरे जातिनां श्रेष्ठ कमळोनी अति शोभाथी दीपतुं होय तेवुं शोभे छे. एथी ज ते रमणीय रुपवाळुं छे. तेनां कमळोना मकरन्दने चूसता अने तेथी चित्तमां अति आनन्द मानता, एवा मत्त भ्रमराओ अने भ्रमरीओना घणा समूहथी युक्त छे. वळी तेमां कलहंसो, बगलां, चक्रवाको, मधुर अवाज करता राजहंसो, सारसपक्षीओ वगेरेनां नर-मादानां युगलो रहे छे. ते आवुं सुंदर स्थान मळवाथी अभिमानपूर्वक तेना जळनो उपभोग करे छे. पद्मिनीनां पत्रो

उपर लागेला जलबिन्दुओथी जाणे इन्द्र नीलरत्नना पानां उपर मोती टांकेलां होय तेम ते शोभे छे. वळी जोनारना हृदय तथा नेत्रोने प्रिय होवाथी ते रमणीय छे. एवुं सर्व सरोवरमां पूज्य पद्म नामनुं सरोवर त्रिशलादेवीए जोयुं.

अगियारमां स्वप्नमां क्षीरोदधिने जोयो. तेनो मध्यभाग चंद्रनां करिणोना समूह जेवो वर्णे उज्वळ अति शोभे छे. चारेय दिशामां तेनो वृध्धि पामतो जळप्रवाह अगाध छे. वळी अतिशय चपळ अने उंचे उछळता एवा मोटा जळतरंगोथी तेनुं पाणी वारंवार भेगुं थइने जुदुं पडे छे. मोटा वायुथी अकळायेला पाणीमांथी उठता तरंगो जाणे किनारा तरफ जवा माटे दोडता होय. तेवा, चपळ, वळी प्रगट आम-तेम नाचता अने भयभ्रान्त थया होत तेम भमता देखाय छे. तेमां स्वच्छ, शोभता अने उछळता एवा नाना-मोटा अगणित जळतरंगोना परस्पर मिलनथी जाणे ते समुद्र शीध्र वेगथी किनारा तरफ दोडतो अने त्यांथी पाछो फरतो होय तेम अति देदीप्यमान अने अति मनोहर देखाय छे. वळी तेमां मोटा मगरो, नानां नानां माछलांओ, निरुध्ध तथा तिलतिलक वगेरे विविध जातिना जळचर जीवोनी दोडादोडीथी तथा पुच्छोना पछाडवाथी ज्यां-त्यां कर्पूर

जेवुं उज्वळ फीण प्रगटेलुं छे. गंगा वगेरे मोटी नदीओना आवता प्रवाहना वेगथी संगमस्थाने तेनुं जळ जग्याना अभावे संकडाइने उंचे उछळे छे अने पाछुं नीचे पडीने त्यां ज आवर्तमां गोळ भमे छे. एथी जाणे समुद्र भमतो होय शुं ?-एवो देखाय छे. एम मनोहर द्रश्यवाळा क्षीरसागरने शरदऋतुना चन्द्र समान प्रसन्न मुखवाळी त्रिशलादेवीए जोयो.

बारमा स्वप्नमां श्रेष्ठ पुंडरिक विमान जोयुं. तेनी कान्ति नवा उगेला सूर्यना बिंब जेवी राती-तेजस्वी छे. ते देदीप्यमान शोभावाळुं छे. उत्तम सूवर्ण अने विविध रत्नोथी शोभता श्रेष्ठ एक हजार ने आठ थांभाओथी शोभतुं छतुं ते आकाशने पण शोभावे छे. अंदरना भागे सुवर्णनां पत्रोमां टांगेलां मोतीओथी ते घणुं दीपे छे. वळी तेमां टींगावेली देवोनी पुष्पमाळाओ शोभे छे. मृगलांओ, वरगडां, वृषभो, अश्वो, मनुष्यो, मगरो, पक्षीओ, सर्पो, किन्नर देवो, रुरु जातिना मृगो, अष्टापदो, चमरी गायो, संसक्त जातिनां जंगली पशुओ, हाथीओ, अशोकलताओ अने पद्मलताओ वगेरेनां विविध-श्रेष्ठ चित्रोथी ते आश्चर्य उपजावे छे. वळी ते गीत-वाजिंत्रोना श्रेष्ठ नादथी गाजे छे अने महा मेघनी गर्जनातुल्य देवदुन्दुभिना नादथी गाजतुं सकळ लोकमां शब्दने

फेलावे छे. वळी विविध जातिना कृष्णागुरु, दशांग वगेरे धूपो अने सुगंधी द्रव्योनी मघमघती सुवास सर्वत्र उछळती होवाती पण ते मनोहर छे, नित्य प्रकाशवाळुं छे अने वर्णथी उज्वळ छे, जेथी तेनी कान्ति पण उज्वळ छे. वळी ते शून्य नहि पण मध्ये बेठेला उत्तम देवोथी शोभे छे. सातावेदनीय वगेरे शुभ कर्मजन्य सुखोने भोगववानुं उत्तम स्थान छे. एवा अन्य विमानो करतां पुंडरिक कमळनी जेम अति श्रेष्ठ विमानने त्रिशला क्षत्रियाणीए जोयुं.

तेरमां स्वप्नमां रत्नोनो राशि जोयो. ते राशिमां पुलाक, वज्र, इन्द्रनील, सम्यक, कर्केतन, लोहिताक्ष, मरकत, मसारगल्ल, प्रवाल, स्फटिक, सौगन्धिक, हंसगर्भ, अंजन अने चन्द्रकान्त, ए सर्व जातिनां रत्नोना समूहथी ते रत्नराशि एटलो मोटो छे के-जमीन उपर होवा छतां छेक आकाशमां पोतानी कान्तिथी प्रकाशित करे छे. ते मेरुपर्वत सरखो घणो उंचो छे. एवा श्रेष्ठ उंचा अने मोटा रत्नराशिने त्रिशलादेवीए जोयो.

ते पछी छेल्ला चौदमा स्वप्नमां निर्धूम अग्नि जोयो. ते अग्नि घी अने पीळा मध वडे सिंचायेलो होवाथी, तेनी धूमाडा विनानी, ' धगधग ' अवाज करती अने उंचे उछळती मोटी-

पहोळी ज्वाळाओथी अति उज्वळ छे अने तेथी अतिशय शोभे छे. वळी तेनी नानी-मोटी ज्वाळाओ परस्पर एकबीजामां प्रवेश करती होय तेम देखाय छे. तेनी ज्वाळाओ उंचे उंचे वधती होवाथी जाणे आकाशना कोइ भागने बाळवा ते अग्नि प्रयत्न करतो होय तेम देखाय छे. एवा अति वेगथी वधता, चंचळ, निर्धूम अग्निने चौदमा स्वप्नमां त्रिशलादेवीए जोयो.

एम कल्याणकारी, कीर्तन करवायोग्य, जोतां ज प्रीतिने करनारां, सुंदर स्वप्नोने जोइने त्रिशला क्षत्रियाणी जाग्यां. ते वारे स्वप्नो जोवाथी तेओनां नेत्रो कमळनी जेम प्रसन्न अने रोमराजी हर्षथी विकस्वर थइ.

जे रात्रिए महा यशस्वी श्री तीर्थंकरदेवो मातानी कुखमां आवे, त्यारे तेओनी माताओ आ चौद महा स्वप्नोने जोइने जागे छे. त्रिशलादेवी पण आ चौद स्वप्नोने जोइने अति हर्ष पाम्यां अने तेनुं पुनः पुनः स्मरण करवा लाग्यां, ते स्मरणपूर्वक हृदयमां अवधारीने पलंगमांथी पादपीठ उपर उतर्यां अने उत्सूकता, चपळता तथा स्खलना विनानी राजहंसना जेवी मध्यम चाले चालतां चालतां ज्यां सिध्धार्थ राजानुं शयनमंदिर हतुं त्यां आव्यां. त्यां आवीने मधुर, मांगलिक,

मनोज्ञ, विनयथी कोमळ वगेरे पूर्वे कही तेवी भाषा वडे तेओने जगाड्या. पछी सिध्धार्थ राजानी आज्ञाथी उत्तम मणिरत्नोथी जडेला सुवर्णना भद्रासन उपर पोते बेठां अने विसामो लइने, क्षोभने त्यजीने, उपर कही तेवी मधुर वगेरे गुणोवाळी भाषाथी सिध्धार्थ राजाने कहेवा मांड्युं के- ' हे स्वामिन्! आजे हुं शयन मंदिरमां, श्रेष्ठ शय्यामां ज्यारे कंइक जागती-उंघती निद्रामां हती, त्यारे उत्तम कल्याणकारी, श्रेष्ठ, मांगलिक वगेरे गुणोवाळां चौद महास्वप्नोजोइने जागी छुं.' -एम कहीने पोते जोयेलां ते स्वप्नोने जेवां जोयां हतां, तेवुं यथार्थ वर्णन करीने क्रमशः कही संभळाव्यां. पछी पुछ्युं के- ' स्वामिन्! मने एवो प्रश्न थाय छे के-आ उत्तम कल्याणकारी स्वप्नो जोवाथी आपणने केवा लाभो अने केवुं फळ मळशे ?'

ते सघळुं सांभळीने सिध्धार्थ राजा पण घणा हर्षित थया. वर्षाथी जेम कदम्बवृक्षनुं पुष्प खीले तेम हर्षथी तेओना शरीरे रोमराजी विकसित थइ. पछी तेओ ते स्वप्नोने याद करीने, हृदयमां अवधारीने, पुनः तेनुं स्मरण करता तेना अर्थनो विचार करवा लाग्या. पोतानी साहजिक बुध्धि,मति अने विज्ञानथी स्वप्नोना अर्थने विचारीने तेमणे तेना फळनो यथाशक्य निर्णय कर्यो.

पछी पूर्वनी जेम उत्तम, मधुर, माङ्गलिक, विनयवाळी, सुशोभित भाषा वडे तेमणे त्रिशलादेवीने कह्युं के- ' हे देवानुप्रिय त्रिशलादेवी ! तमे जोयां ते स्वप्नो घणा ज श्रेष्ठ, कल्याणकारी, उपद्रवनाशक, धन-धान्यनी वृध्धि करनारां, मङ्गलकारी अने सुशोभित छे. ते आरोग्यने, चित्तमां प्रसन्नताने, दीर्धायुष्यने समृध्धिने अने वांछित वस्तुनी प्राप्तिने करावनारां छे. एथी मणि, सुवर्ण वगेरे धननो तथा शब्दादि पांचेय इन्द्रियोना भोगोनो लाभ थशे, परिवारनो अने सप्ताङ्ग मोटा राज्यनो लाभ थशे. वळी विशेष लाभ तो ए थशे के तमे नव मास अने साडा सात दिवस-रात्रि पूर्ण थतां एक अति रुपवंत पुत्रने जन्म आपशो. ते पुत्र आपणा कुऴना विजयध्वज सरखो अति अद्‌भुत थशे, दीपकनी जेम कुऴनो प्रकाशक तथा मङ्गलकारक थशे. पर्वतनी जेम कोइथी पराभव पामशे नहि, मुगटनी जेम कुऴनी शोभा वधारशे, तेथी कुऴना तिलकरुप थशे, शुभ आचरणथी कुऴनी कीर्ति वधारशे, कुऴनुं भरण-पोषण करशे, सूर्यनी जेम कुऴनो प्रकाश करशे, पृथ्वीनी जेम कुऴनो आधार थशे, कुऴमां सर्व प्रकारे वृध्धि करशे, यश वधारशे, अहीं एक दिशामां फेलाय ते कीर्ति अने सर्व दिशामां फेलाय ते यश जाणवो. वळी ते पुत्र वृक्षनी

जेम कुळने आश्रय आपशे. एवा ते उत्तम पुत्रनुं शरीर पण घणुं श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ लक्षणोथी युक्त तथा कोइ खोड-खामीरहित सर्व अवयवो अने पांचेय इन्द्रियोथी परिपूर्ण हशे. तेना हाथ-पगनां तळां सुकुमार हशे तथा पूर्वे कह्या प्रमाणे शरीरथी मान, उन्मान अने प्रमाणोपेत ते थशे. सर्व अङ्ग-उपाङ्गोथी सुशोभित ते पुत्र चंद्रनी जेम सौम्य कान्तिवाळो तथा सर्वने वारंवार दर्शन करवायोग्य थशे. '

' वळी बाल्यकाळ व्यतीत थतां, ते सर्व विज्ञाननो पार पामशे अने योवन प्रगटतां तो ते दानमां अने प्रतिज्ञा-पालनमां शूर थशे, युध्धमां वीर थशे, पराक्रमी थशे अने घणा मोटा सैन्य तथा वाहनोनो स्वामी मोटो राजाधिराज थशे.'

' एवा उत्तम पुत्रने तमे जन्म आपशो. माटे हे त्रिशला ! तमे घणां प्रशस्त अने श्रेष्ठ स्वप्नो जोयां छे.'-एम वारंवार कहीने पोते प्रसन्न थया अने त्रिशलाने प्रसन्न कर्या. त्रिशलादेवी पण ते सांभळीने अति हर्षित थयां अने तेमणे बे हाथथी मस्तके अंजलि जोडीने कह्युं के- ' हे स्वामिन् ! आपे कह्युं तेमज छे. तेवुं ज छे. यथार्थ छे अने नि:संदेह छे. में पण ए ज इच्छ्युं छे.

आपना मुखमांथी पडता बोलने में हृदयमां झील्या छे अने ए ' सर्व सत्य थशे.' एम निश्चित स्वीकार्युं छे.' इत्यादि स्वीकारपूर्वक सिध्धार्थ राजाए कहेला स्वप्नोना अर्थने विधि अने विनयपूर्वक मस्तके चढाव्यो अने सिध्धार्थ राजानी अनुमतिथी उठीने, राजहंसना जेवी श्रेष्ठ गतिथी चालतां त्रिशलादेवी पोताना शयनमंदिरमां आव्यां. त्यां ' रखे मारां आ उत्तम स्वप्नो बीजां पापस्वप्नो आववाथी निष्फळ न थाय.' -ए कारणे शेष रात्रि सखीओ साथे देव-गुरु-धर्म वगेरेनी श्रेष्ठ धार्मिक वातो करवारुप स्वप्न जागरण करीने पूर्ण करी.

सिध्धार्थ राजा पण प्रातःकाळे उठ्या. तेओए सूर्योदय थतां परिश्रम (कसरत) शाळामां जइ विविध व्यायाम कर्यो अने ते परिश्रमने टाळवा निपुण पुरुषो द्वारा शतपाक, सहस्त्रपाक वगेरे तेलथी अङ्गमर्दन करावी पुनः तेनुं उद्वर्तन कराव्युं. एम कुशळ पुरुषो द्वारा हाडकांने, मांसने, त्वचाने अने रोमराजीने पण पोषण मळे ए रीते अङ्गमर्दनादि करावीने तेओ त्यांथी स्नानमंडपमां गया. ते स्नानमंडपनुं भूमितळ विचित्र मणिरत्नोथी जडेलुं छे. तेमां मोतीओनी जाळीथी गोख गूंथेला छे अने वच्चे मणिरत्नोथी जडेली स्नानपीठिका करेली छे. तेना उपर

बेसीने तेओए चन्दनरस वगेरे विविध उत्तम पदार्थोथी मिश्रित करेलां सुगंधवाळां उष्ण पाणी, शीतळ पाणी, तीर्थजळ, शुध्धजळ वगेरे पवित्र जळथी स्नान कर्युं, पछी श्रेष्ठ सुकुमार वस्त्रथी शरीर लुंछीने महा मूल्यवान अखंड श्रेष्ठ एक उज्वळ वस्त्र पहेर्युं; शरीरे चन्दनादि सुगन्धी पदार्थोनुं विलेपन कराव्युं; मस्तके मुगट, काने कुंडळ, हाथे बाजुबंध, गळामां विविध जातिना हार इत्यादि मणि-सुवर्ण-रत्न-मोती वगेरेना मूल्यवान अलङ्कारो पहेर्या; एक लांबुं अखंज उत्तरासङ्ग धारण कर्युं अने निपुण शिल्पीए घडेलां रत्नजडित सुवर्णनां वीरवलयो बे हाथमां पहेर्यां.

(बीजा व्याख्यानमां श्रीदेवीना स्वप्नमां अने अहीं सिध्धार्थ राजाना प्रसङ्गमां शरीरनां लक्षणो वगेरेनुं तथा वस्त्रालङ्कारादिनुं जे वर्णन कर्युं छे, तेमां एम समजवानुं छे के-वस्त्राभरणादि धारण करवानो व्यवहार अनादि छे अने ते आत्मानी पवित्रता माटे तथा आरोग्यनुं रक्षण तथा पोषण करवा माटे छे. ते ते जीवोनी योग्यता अने देश-काळादिना वातावरण तथा हवामानने अनुसरीने नियत थयेलो खान, पान अने वस्त्राभरणादिनो व्यवहार पण एक विशिष्ट लोकाचार

मनाय छे. शरीरनी रेखाओ वगेरे शुभाशुभ लक्षणो जेम शुभाशुभ फळो आपे छे, तेम योग्य-अयोग्य वस्त्राभरणादि पण हिताहितनुं कारण बने छे. माटे मनुष्ये ब्रह्मचर्यादि गुणोनुं अने आरोग्यनुं रक्षण तथा वृध्धि थाय एवां वस्त्राभरणादि पहेरवां जोइए. आ वर्णनमां ए गर्भित उपदेश छे. उत्तम आत्माओ वस्त्राभरणादि पहेरवामां शरीरशोभा के सुखाकारीने महत्व आपता नथी, पण गुणोना अने आरोग्यना रक्षण-पोषणनो उद्देश राखे छे. ते ते अवयवो उपर पहेरातां आभरणो तथा वस्त्रोना आकारोनो पण शरीररचनानी साथे आध्यात्मिक संबंध रहेलो छे. ते संबंध तेवां योग्य वस्त्राभरणादि पहेरवाथी सचवाय छे वगेरे घणुं तत्त्व आ विषयमां समजवा योग्य छे, छतां लंबाण थवाना भये अहीं ते वर्णन आपी शकाय नहि. एटलुं तो अवश्य मानवुं जोइए के-आपणने न समजाय के समजाय तेवो पण पूर्वपुरुषोए करेलो उपदेश अने बतावेला आचारो आत्माने खूब उपकार करनारा छे. तेओए केवळ भावि जीवोना हित माटे ज ए हितोपदेश कर्यो छे अने पोते तेने पाळ्यो छे, माटे सौए तेना पालनमां आदर करवो जोइए.)

पछी मस्तके उत्तम छत्र अने बाजुमां विंझाता श्वेत चामरोथी शोभता सिध्धार्थ राजा

स्नानमंडपमांथी नीकळी अनेक राजपुरुषो तथा मोटा मानवसमूहनी साथे राजसभा तरफ चाल्या. ते वखतनी तेमनी शोभा कहे छे के–

जाणे साक्षात् फाल्यो–फूल्यो कल्पवृक्ष होय तेवा प्रिय तथा दातार अने वादऴमांथी जेम सूर्य नीकऴ्यो होयतेवा तेजस्वी सिध्धार्थ राजा राजकचेरीमां आवीने बेठा. हवे पुरुषोमां श्रेष्ठ एवा नोकरोने बोलावीने तेओए जे व्यवस्था करावी हती ते कहे छे.

त्रिशला राणीने आवेलां स्वप्नोनो व्यतिकर जाण्या पछी तरत तेओए नोकर पुरुषोने बोलावीने कह्युं के–राजमहेलनी बहार जे राजकचेरी छे, तेने लींपीने शुध्ध अने धूप दइने पवित्र करो, पछी तिहां श्रेष्ठ सिंहासन मांडो; ए सघळुं करी–करावीने शीघ्र जणावो के ज्यां राजकुटुम्ब बेसीए.

सिध्धार्थ राजानी ए आज्ञा सांभऴीने घणा हर्ष पामेला ते राजपुरुषोए ते आज्ञाने बे हाथे अंजलि करीने मस्तके चढावीने त्यांथी कचेरीए आव्या. तेनुं संमार्जन करीने शुध्ध करी, पवित्र जऴ छांट्युं, पूजा करी होय तेम सर्वत्र ताजां सुगंधीवाऴां पुष्पो वेर्यां अने कृष्णागुरु, दशांग

वगेरे उत्तम धूपो तथा सुगंधी चूर्णोनी सुवासथी तेने मघमघती करी.

राजाना सिंहासनथी थोडे दूर राणी माटे भद्रासन मंडावीने वच्चे पडदो बंधाव्यो तथा पोताना सिंहासनथी पूर्वदिशामां स्वप्नपाठको माटे सारो आडम्बर करीने आठ भद्रासनो मंडाव्यां.

अर्थात् राजसभाना मध्यमां पूर्वसन्मुख पोताना माटे सिंहासन अने तेनी जमणी बाजु थोडे दूर पडदाना अंतरे त्रिशला राणीने बेसवा माटे एक भद्रासन मंडाव्युं. आ पडदो ताणा-वाणाथी एवो गूंथेलो छे के-तेना वणाटमां मृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगर, सर्प, किन्नर, हाथी, चमरी गाय, अष्टापद, सिंह वगेरे प्राणीओ तथा चम्पा वगेरेनी वेलडीओना आकार देखाय छे, जोनारने आश्चर्य थाय तेवा घणा मूल्यवाळो छे अने निपुण कारीगरोए बनावेलो छे. ते पडदाना अंतरे राणी माटे मंडावेलुं भद्रासन पण मणिरत्नोना जडावथी शोभतुं आश्चर्यकारी छे. तेना उपर कोमळ अने सुंवाळो मशरुनो चाकळो अने सुंदर आस्तरण पाथरेलुं छे. इशानकोणे स्वप्नपाठकोने माटे आठ भद्रासनो मंडाव्यां छे अने तेना उपर पण श्वेत वस्त्रोनुं आच्छादन करीने मङ्गल निमित्ते उपर श्वेत सर्षपोनो उपचार कर्यो छे. एम राजानी आज्ञा प्रमाणे कौटुंबिक पुरुषोए सघळुं सुशोभित कर्युं

छे.

ते सेवकोए राजाए कह्युं हतुं ते प्रमाणे सघळुं हर्ष आणीने कर्युं अने आवीने राजाने कह्युं. ते सघळुं सांभळीने सिध्धार्थ राजा पण खुशी थया. पछी पूर्वे जणाव्या प्रमाणे स्नानविलेपन आदि प्रातः कृत्यो करीने मोटा परिवार साथे तेओ राजसभामां आवी मुख्य आसने बेठा अने ते कौटुंबिक पुरुषोने कह्युं के- ' हवे स्वप्नलक्षणना जाण एवा स्वप्नपाठकोने घेर जइ तेओने हर्ष पूर्वक राजसभामां सन्मानपूर्वक बोलावी लावो.'

मस्तके बे हाथ जोडवापूर्वक राजानी ते आज्ञाने सहर्ष स्वीकारी राजपुरुषो स्वप्नपाठकोने तेडवा गया. ते स्वप्नपाठको आठ प्रकारना निमित्तशास्त्रना जाण छे. निमित्तना आठ प्रकारो कह्या छे के-

(१) स्त्री-पुरुषोना नेत्रादि अङ्ग-उपाङ्गोना स्कूरणना बळे भावि शुभाशुभ भावोने जाणी शकाय ते अंगविद्या, (२) चाषपक्षी, देवचकली, कागडो, घुवड वगेरे पक्षीओना शब्दोना आधारे शुभाशुभ भाव जाणी शकाय ते स्वरविद्या, (३) भूमिकम्प वगेरे जाणीने थनारा भावो

समजाय ते भूमिविद्या, (४) शरीर उपरना मस, तल वगेरे जोइने भाविभाव समजी शकाय ते व्यजंनविद्या, (५) जेना बळे हाथ, पग वगेरेनी रेखाओ द्वारा भावी जाणी शकाय ते सामुद्रिक शास्त्र वगेरे लक्षणविद्या, (६) जेना आधारे उल्कापात वगेरेनां भावि फळ जाणी शकाय ते उत्पातविद्या, (७) ग्रहो, नक्षत्र वगेरे ज्योतिष्चक्रना चारना आधारे शुभाशुभ भावो समजाय ते अन्तरिक्षविद्या, अने (८) जेना बळे विविध स्वप्नोनां उत्तम-मध्यम-जघन्य फळ समजी शकाय ते स्वप्नविद्या जाणवी. अष्टाङ्गनिमित्त उपरान्त बीजां पण विविध शास्त्रोना जाण; समय, औचित्य वगेरे व्यवहारना पण जाण; तेमज अनुभवी अने सदाचारथी लोकमां प्रामाणिक मनायेला, एवा स्वप्नपाठको ज्यां रहेता हता त्यां तेडवा गया अने विनय-बहुमानपूर्वक तेओने राजानो आदेश जणाव्यो. ते स्वप्नपाठको पण ते सांभळीने पोताने राजानुं तेडुं आव्युं जाणीने घणो हर्ष पाम्या.

पछी स्वप्नलक्षण पाठको पण स्नान करीने पोतपोताने मान्य देवनी घरमां पूजा करी, पछी स्वयं अमंगलने टाळनारां तिलक वगेरे कौतुको अने दहीं, दुर्वाअक्षत वगेरेना उपचाररुप मंगल

कर्या, राजसभामां शोभे तेवां उज्वळ अने मंगलसूचक वस्त्रो तथा अल्प छतां बहुमूल्य अलंकारो पहेर्या अने पछी श्रेष्ठ वस्त्रनुं उत्तरासङ्ग अने जनोइ पण धारण करी. एम पोतपोताने घेर सज्ज थइने ते सघळा घेरथी नीकळी क्षत्रियकुंड नगरना मध्य राजमार्गे थइने सौ सिध्धार्थ राजाने मळवा चाल्या.

तेओ राजगढना मुख्य द्वार पासे आव्या. त्यां बधाए एकठा थइने विचार कर्यो के– ' जेम परस्पर मेळ विनाना पांचसो सुभटो मान न पाम्या अने तेथी काढी मूकाया,' तेम जे समूहमां सर्व पोताने पंडित मानता होय अने सौ अग्रेसर थवा मागता होय, ते समूहनो नाश थाय. जेम कोइ परस्पर मेळ विनाना पांचसो सुभटो सेवा माटे एक राजसभामां गया. तेओनी परीक्षा माटे मंत्रीनी सलाहथी राजाए तेओने एक मकान आपी बधाने माटे एक ज पलंग मोकल्यो.

अभिमानी अने नाना–मोटाना व्यवहारथी रहित तेओ पलङ्ग माटे विवादे चढ्या अने 'ए पलङ्गने सौए वापरवो ' एवो निर्णय कर्यो. पछी पलंगने वच्चे मूकी बधा तेनी सामे पग राखीने सूता. राजाए गुप्तचर पुरुष द्वारा ए व्यतिकर जाणी लीधो अने परस्पर संप विनाना आ रांकडाओ

युध्ध वगेरे कार्यो शी रीते करशे ? एम समजी अपमान करीने काढी मूक्या.

ते कारणे सौए संप करीने एकने मुख्य तरीके स्थाप्या अने वडिलनी आज्ञा लइने बीजाओए राजानी साथे वार्ता करवी-एवो निर्णय कर्यो. ए रीते वडिलनी आज्ञाथी बोले तो मान पामे, कारणके- ज्यां संप होय त्यां निश्चे कल्याण होय-एम समजी, संप करीने तेओ राजसभामां आव्या. राजाने जोतां ज मस्तके बे हाथ जोडीने तेओए जे आशीर्वाद आप्यो ते कहे छे.

तमो दीर्धायुषी थाओ, सदाचारी थाओ, लक्ष्मीवंत थाओ, यशस्वी थाओ, बुध्धिमान थाओ, घणा जीवोने करुणादान देनारां अग्रेसर थाओ, भोगी, भाग्यवंत अने महा सौभाग्यकारी थाओ तथा महा लक्ष्मीवंत, कीर्तिवंत अने सदा विश्वने जीवाडनारा थाओ. वळी-

हे राजन् ! तमारुं कल्याण थाओ, तमो उपद्रवरहित थाओ, तमारे त्यां धननुं आगमन थाओ, तमो दीर्धायु थाओ, तमोने पुत्रजन्मरुप समृद्वि थाओ अने कोइ शत्रु न थाओ; तमारो सदा जय थाओ अने तमारा कुळमां सतत श्री जिनभक्ति थाओ.

हे राजन्! तमे घणुं जीवो! तमारो जय थाओ! तमारो विजय थाओ! -एम आशीर्वाद बोलीने राजाना गुणोने गावा लाग्या. ते वारे राजाए पण तेओने बेसवा काजे मंडाव्या हता ते भद्रासने बेसवा कह्युं. पछी तेओनो सत्कार करवा फूल, फळ आदि हाथमां लीधुं, वगेरे वर्णन चोथा व्याख्यानमां कहेवाशे. अहीं पर्युषण कल्पनुं त्रीजुं व्याख्यान पूर्ण थयुं. तेने आदर-बहुमानपूर्वक सांभळवाथी मङ्गलनी माळा अने परम धर्मनी प्राप्ति थाय छे.

त्रीजुं व्याख्यान समाप्त.

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान चोथुं

त्रीजा व्याख्यानमां कह्युं तेम राजसभामां तेडेला सुपनपाठकोना गुणोनी स्तुति करीने सिध्धार्थ राजाए तेओने पुष्पादिथी पूज्या, फळ-वस्त्रादि आपीने सत्कार्या अने विनयथी तेओनुं सन्मान कर्युं. पछी त्रिशलादेवीने बोलावीने पडदाने अंतरे मांडेला भद्रासन उपर बेसाड्यां अने

बे हाथनी अंजलिमां पुष्पो तथा फळो लइने विनयपूर्वक राजाए सुपनलक्षण-पाठकोने जे कह्युं ते कहे छे.

राजाए सुपनलक्षण-पाठकोने त्रिशलादेवीने आवेलां स्वप्नोनुं सघळुं वर्णन यथास्वरुप क्रमशः कह्युं अने प्रश्न कर्यो के- ' हे देवानुप्रिय स्वप्नलक्षण-पाठको ! मने ए प्रश्न थयो छे के-आ उत्तम कल्याणकारी महा स्वप्नो जोवानुं उत्तम अने प्रशस्त एवुं शुं शुं फळ मळशे तथा शा शा लाभो थशे ? ते तमे विचारीने कहो.'

पछी स्वप्नलक्षण-पाठको ए सांभळीने खूब हर्षित थया अने स्वप्नोने हृदयमां धारण करीने तेनो अर्थ विचारवा लाग्या. पछी जेने जे अर्थ समजायो, ते परस्पर एकबीजाने कह्यो. एम परस्पर विचारी-पूछीने, वेदशास्त्रमां कह्या प्रमाणे अर्थनो निश्चय करी, ते सिध्धार्थ राजानी समक्ष कहेवा लाग्या.

स्वप्नशास्त्रमां बहोंतेर स्वप्नो कह्यां छे, तेमां बेंतालीश सामान्य फळवाळां छे अने त्रीश उत्तम फळ आपनारां कह्यां छे. तेमां पण एकीसाथे जो चौद विशिष्ट रुपे देखाय, तो ते विस्तीर्ण

अने मनपसंद उत्तमोत्तम फऴने आपे छे. तेमां-

तीर्थंकर अथवा चक्रवर्ती ज्यारे गर्भमां आवे, त्यारे तेनी माता त्रीश महा स्वप्नोमांथी चौद स्वप्नो देखे, वासुदेवनी माता सात महा स्वप्नो अने बलदेवनी माता चार महास्वप्नोने देखे. ज्यारे मंडलिक राजानो जीव गर्भमां आवे, त्यारे तेनी माता एक महास्वप्नने जोइने जागे. आ त्रिशलाए जोयेलां स्वप्नो घणांज शुभने सूचवनारां छे. वऴी नव कारणे स्वप्नो आवे छे. तेमां-

पूर्व जोयेलो-१, सांभऴेलो-२ अने अनुभवेलो-३, वृतान्त स्वप्नमां देखे, वऴी मानसिक खेद-संताप वगेरे आधिथी, शारीरिक रोगरुप व्याधिथी के चिंताथी स्वप्न आवे-४, मऴ-मूत्र वगेरेनी बाधाथी-५ अने स्वभावना कारणे-६, एम छ कारणे जे स्वप्न आवे, ते लेश पण फऴ न आपे.

१-धर्मक्रिया ना प्रभावथी, २-देव-देवीनी सहायथी अने ३-उग्र पापना उदयथी, ए-त्रण कारणे जोया, सांभऴ्या के अनुभव्या विना ज जे जे स्वप्न जोयां होय, ते ते सारां-माठां सर्व स्वप्नो प्रायः फऴे.

स्थिर चित्तवाळो, इन्द्रियोनो विजेता, प्रकृतिए अल्पकषायथी-शान्त, धर्मनी रुचिवाळो अने श्रध्धाळु वगेरे गुणोवाळो होय, तेने माठुं स्वप्न पण सारा स्वप्ननी जेम फळे. तेमां पण कह्युं छे के-

दिवसे आवेलुं अने एक पछी एक-एम घणां आवेलां निष्फळ जाणवां. रात्रे पहेला, बीजा, त्रीजा अने चोथा प्रहरमां देखेलुं स्वप्न अनुक्रमे बार, छ, त्रण अने एक महिनामां फळ आपे. छेल्ली बे घडीमां जोयेलुं स्वप्न दश दिवसमां अने सूर्योदय वखते जोयेलुं स्वप्न तत्काळ फळे. तेमां पुण्यवंत अने धर्मी जीवने आवेलुं स्वप्न प्रायः मनवांछित फळ आपे छे. माठुं स्वप्न कोइने कहेवुं नहि. उत्तम स्वप्न धर्मगुरु वगेरेने जणाववुं. जो एवो योग न होय तो गायना कानमां स्वप्न कहेवुं. तथा-

इष्ट स्वप्न जोइने निद्रा करवाथी ते फळतुं नथी, माटे डाह्या पुरुषे धर्मनी वातो के जिनराजनी स्तुति स्तवनादि करीने शेष रात्रि पूर्ण करवी. अनिष्ट स्वप्न जोइने जो रात्रि बाकी होय तो निद्रा करवी अने कोइने कहेवुं नहि. एम करवाथी ते निष्फळ थाय छे. पहेलां इष्ट अने

पछी अनिष्ट स्वप्न जो देखे तो अनिष्ट फळे. ए रीते स्वप्न अनिष्ट जोइने जो इष्ट देखे तो इष्ट फळे. स्वप्नमां कोइ एम देखे के-हुं म्यानामां के सिंहथी, घोडाथी, हाथीथी, वृषभथी अथवा सिंहणथी जोडेला रथमां बेसीने जाउं छुं, तो ते राजा थाय. स्वप्नमां घोडो, हाथी, रथ वगेरे वाहन, आसन, घर के वस्त्रादिनुं हरण थयुं,-एम देखे तेने राजभय, शोक, स्वजननो विरोध के धननी हानि थाय. स्वप्नमां जे सूर्यनुं के चंद्रनुं बिम्मब में गळ्युं-एम देखे, ते जो दीन-दरिद्र होय, तो पण समुद्र पर्यन्त पृथ्वीनो घणी-राजा थाय. जे स्वप्नमां हथियार, भूषण के मणि-मोती-सुवर्ण-रुपुं अथवा बीजो कोइ धातुनुं हरण थयुं, -एम देखे, तेने धननी, माननी हानी थाय अने प्रायः दारुण मरण थाय. स्वप्नमां जे नदीकांठे उज्वळ हाथी उपर चोखानुं भोजन करुं छुं, -एवुं देखे, ते जो हीनजातिनो होय तो पण समग्र देशनो राजा अने धर्मिष्ठ थाय. स्वप्नमां जे पोतानी भार्यानुं हरण थयुं जो देखे, तो तेना धननो नाश अने जो पराभव देखे, तो शोक-संताप-दुःख थाय. ते रीते स्वप्नमां जे पोताना गोत्रीय कोइनी स्त्रीनुं जो हरण थयुं देखे, तो तेना स्वजननो वध थाय अने जो पराभव थयो देखे, तो ते बन्धनमां पडे. स्वप्नमां जो पोतानी जमणी

भुजाए श्वेत सर्प करड्यो-एवुं देखे, तो ते पांच अहोरात्रिमां एक हजार सेनैया पामे. जेने स्वप्नमां जो पोताना शयननुं हरण देखाय, तो तेनी पत्नी मरे अने जो पगरखानुं हरण देखे, तो तेने आकरी शरीरपीडा थाय. जे स्वप्नमां मनुष्यनुं मस्तक, चरण अने भुजानुं भक्षण करे, तेने क्रमशः राज्य, एक हजार सोनैया अने पांच सो सोनैया मळे. स्वप्नमां जे पोताना बारणानी भूंगळ, हिंचको अने पगपावडी के घर भाग्युं देखे. तेने पण स्त्रीनो नाश थाय. स्वप्नमां जो सरोवर, समुद्र, जळथी पूर्ण नदी के पोताना मित्रनुं मरण थयुं देखे, तो तेने अति-घणुं विना निमित्ते मळे. स्वप्नमां जे गोमय अने औषध साथे उष्ण जळनुं पान करे, ते नियमा अतिसारना रोगथी मरे. स्वप्नमां जे प्रभुप्रतिमानी यात्रा, स्नात्र, तेने फळादिनुं भेटणुं के पूजा वगेरे कर्यानुं देखे, तेने सर्व प्रकारे सर्व शुभनी वृध्धि थाय. जेने स्वप्नमां पोताना हृदयसरोवरमां कमळो उगेलां देखाय, ते तरत कोढरोगथी पीडाइने यमने घेर पहोंचे. जे स्वप्नमां घणुं घीनुं पान देखे तेनो यश वधे अने क्षीर साथे घीनुं भोजन कर्युं देखे तो पण लाभ थाय. स्वप्नमां जो हसे तो शोक, जो प्रवृत्ति करे तो वध-मार तथा जो नाचे तो बंधन अने पठन करवाथी कलह थाय.

सामान्यतया स्वप्नमां जो काळी गाय, काळो घोडो, काळो राजहस्ति अने काळा वर्णनो देव देखाय, तो शुभ अने शेष श्याम वस्तु देखे तो अशुभ जाणवुं. स्वप्नमां श्वेत वस्तुओमां पण कपास, रु, लवण, हाडकुं अशुभ अने बीजी श्वेत वस्तु देखे तो शुभ जाणवुं.

जे स्वप्न पोताने उद्देशीने देखाय तेनां शुभाशुभ फळ पोताने मळे, पण बीजाने उद्देशीने देखे तेनुं फळ तेने मळे-जोनारने न मळे. दु:स्वप्न जोया पछी पण जो देव-गुरु वगेरेनी सेवा, भक्ति पूजा, यथाशक्ति तप वगेरे सतत धर्म करे, तो ते शुभ फळ आपे. श्री जैन सिध्धान्तमां पण कह्युं छे के-

स्वप्नमां जो कोइ स्त्री अथवा पुरुष एक मोटा दूधना घडाने, दहींना घडाने, घीना अथवा मधना घडाने देखे, तेने उपाडवा मांडे, उपाडे अने एम माने के-में उपाड्यो-एवुं जोइने ते ज क्षणे जागे, तो ते ते ज भवमां सिध्ध थाय, यावत् सर्व कर्मोनो क्षय करे. एम कोइ स्त्री के पुरुष स्वप्नमां जो एक मोटा हिरण्यना ढगलाने, रजतना ढगलाने, सुवर्णना ढगलाने के वज्रना ढगलाने देखे, ते महा कष्टथी उपाडतो, उपाडे अने में कष्टथी पण उपाड्यो-एम जोइने ते ज क्षणे

जागे, तो ते पण ते ज भवमां सिध्ध थाय, सर्व कर्मोनो अंत करे. ए प्रमाणे लोखंडना, जसतना, ताम्रना अने शीशाना ढगला माटे पण समजवुं. मात्र जे लोखंड, जसत, ताम्र अने शीशाना ढगलाने स्वप्नमां उपाड्यो-एवुं देखे, ते बीजा भवमां सिध्ध थाय, एटलो भेद समजवो. वगेरे प्रसंगानुसार सामान्य कह्युं.

हे देवानुप्रिय सिध्धार्थराय ! त्रिशलादेवी ए आ चौद महा स्वप्नो जोयां छे, माटे तमोने द्रव्यनो, राज्यनो, सुखनो, भोगनो अने बीजा पण घणा लाभ थशे. उपरान्त नव मास अने साडासात दिवस पूर्ण थतां तमारा घरमां परम भाग्यवंत पुत्रनो जन्म थशे.

ते पुत्र कुलदीपक, वंशनो आधार, कीर्तिनो वधारनार, धन-धान्यादिनो लाभ करनार, लश्करनी अने भंडारनी वृध्धि करनार तथा राजाधिराज चक्रवर्ती थशे, अथवा त्रिभूवनपूज्य श्री तीर्थंकर थशे-एम कह्युं.

एम त्रिशलादेवीए प्रशंसनीय महा स्वप्नो जोयां छे. मंगलकारक वगेरे पूर्वे कह्यां तेवां आ श्रेष्ठ स्वप्नो जोवाथी हे राजन् ! तमोने द्रव्यनो, भोग्य वस्तुओने, पुत्रनो, सुखनो, राज्यनो वगेरे

विविध लाभ थशे; उपरान्त त्रिशलाक्षत्रियाणी निश्चे नव मास अने साडा सात दिवसो पूर्ण थतां, तमारा कुऴमां ध्वजसमा, दीपकसमा, मुगटतुल्य, पर्वततुल्य, तिलकस्वरुप, कीर्तिने वधारनारा, कुऴनो निर्वाह करनारा, कुऴनो प्रकाश करवामां सूर्यतूल्य, कुऴमां आधारभूत, यशस्वी, वृक्षनी जेम छायासुख आपनार अने कुऴनी परंपरामां वृध्धि करनार-एवा पुत्रने जन्म आपशे.

तेना हाथ-पगनां तऴियां कोमऴ अने शरीर पांचेय इन्द्रियोथी परिपूर्ण थशे; उत्तम रेखाओरुप लक्षणो अने श्रेष्ठ मस, तल वगेरे व्यंजनोथी युक्त थशे; वऴी शरीरनुं मान, प्रमाण अने उन्मान शास्त्रयुक्त थशे; वऴी कान्तिथी मनोहर, दर्शन करतां प्रीति उपजे तेवुं चंद्रसमान सौम्य मुख वगेरे देवोने पण ते दर्शन करवायोग्य थशे.

वधुमां बाल्यकाऴ पूर्ण थतां ज ते पुत्र स्वयमेव लौकिक-लोकोत्तर सर्व शास्त्रोनो ज्ञाता महा वैज्ञानिक थशे; यौवन पामतां ज दानमां शूर, युध्धमां वीर अने विशाऴ सैन्य-वाहनोथी युक्त राजाओनो पण राजा छ खंडनो धणी चक्रवर्ती के त्रणेय जगतनो नायक धर्मचक्रवर्ती श्री तीर्थंकर थशे.

एवां वचनो सांभळीने सिध्धार्थ राजा घणा हरखाया अने खुश थइने तेओने घणुं धन भेट आप्युं. चौद स्वप्नोनुं समग्र फळ एम जाणवुं के-ते पुत्र चौद राजलोक उपर मुक्तिस्थानने प्राप्त करशे. हवे प्रत्येकनुं जुदुं जुदुं फळ कहे छे.

पहेला स्वप्ने चार दांतवाळो हस्ति देखायो, तेथी ते पुत्र दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररुपशे अने अैरावण हस्तिनो पति सौधर्म इन्द्र पण तेना चरणकमळनी सेवा करशे. बीजा स्वप्ने श्रेष्ठ वृषभ जोयो, तेथी भरतक्षेत्रमां समकितनुं बीज वावशे अने महाव्रतो वगेरे धर्मरथनी धुंसरीने वहन करशे.

त्रीजा स्वप्ने सिंह जोयो, तेना बळे मिथ्याद्रष्टिओरुप हिंसक जीवो भव्य प्राणीओरुप वनने भांगशे, अर्थात् भव्य जीवोनो धर्म लूंटशे तेनुं ते रक्षण करशे. चोथा स्वप्ने लक्ष्मी जोइ, तेथी तेनुं फळ ते पुत्र वार्षिक दान दइने, दीक्षा लइ आठ प्रातिहार्यादि शोभाथी युक्त श्री तीर्थंकरपदनी श्रेष्ठ लक्ष्मीने भोगवशे.

पांचमे स्वप्ने पुष्पमाळा जोइ, तेथी तेना फळरुपे त्रणेयलोक तेनी आज्ञाने मस्तके

चढावशे. छट्ठे स्वप्ने चंद्र जोयो, तेथी भव्य जीवोरुप कमळोनो विकास करशे. सातमे स्वप्ने सूर्य जोयो, तेथी सूर्यनां किरणो जेवा तेजस्वी भामंडळथी अलङ्कृत थशे.

आठमे स्वप्ने पुर्णकुम्भ जोयो, तेथी तेनुं फळ ए पामशे के-ते पुत्र धर्मरुप प्रासादना शिखरे बेसशे, अर्थात् धर्मने पामशे, नवमे स्वप्ने ध्वज जोयो, तेथी तेनुं फळ सहस्त्र योजननो इन्द्रध्वज तेमनी आगळ चारेय दिशामां शोभशे, धर्मनो विजयध्वज फरकावशे अने सर्वत्र धर्मने प्रचारशे.

दशमे स्वप्ने पद्मवाळुं सरोवर जोयुं, तेथी तेनुं फळ ए रीते भोगवशे के-देवोए रचेलां सुवर्णनां कमळो उपर पग मूकीनें चालशे. अगियारमा स्वप्ने रत्नाकर जोयो, तेथी तेना फळनुं प्रमाण ए जाणवुं के-ते पुत्र केवळज्ञानरुप रत्ननो आधार-केवळी थशे.

बारमे स्वप्ने देवविमान जोयुं, तेथी तेनुं सुंदर फळ ए मळशे के भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक सुधीना चारेय निकायना देवोथी ते पुत्र सेवाशे. तेरमे स्वप्ने रत्ननो राशि जोयो, तेथी तेनुं फळ ते रत्न वगेरेना त्रण गढवाळा समवसरणमां बेसीने धर्मने प्ररुपशे.

चौदमे स्वप्ने निर्धूम अग्नि देखायो, तेथी तेनो ए भाव जाणवो के–अग्नि जेम कंचनने शुद्ध करे छे, तेम ते पुत्र भव्य जीवोना कर्ममेलने बाळीने तेओना आत्मानुं शुद्ध स्वरुप प्रगटावशे. चौदेय स्वप्नोनुं समग्र फळ तो चौद राजलोकना अग्रभागे रहेला सिद्धस्थानने प्राप्त करशे. ए प्रमाणे स्वप्नशास्त्रनी साक्षी आपीने सुपनपाठको ए चौद स्वप्ननां प्रगट फळो कह्यां.

अहीं एटलो विशेष छे के–चक्रवर्तीनी माता चौद स्वप्नोने झांखां देखे अने तीर्थंकरनी माता अति उज्वळ देखे.

सिद्धार्थ राजाए, सुपनपाठको ए कहेला एक एक शब्दने संदेह के तर्क कर्या विना 'तहत्ति' कहीने स्वीकार्या अने पोते पण घणा राजी थया, कारणके– उत्तम पुरुषो ज्ञानीना वचनमां शंका के तर्क करता नथी. शंका के तर्क वगेरे करवाथी ते वचन फळतुं नथी अने ज्ञानीनी आशातना थाय छे. माटे ज्ञानीनां वचनोने ते जेवां कहे, तेवां ' तिहत्ति ' कहीने श्रद्धाथी स्वीकारवां जोइए. एम करवाथी श्रोताना विघ्नकारी कर्मोनो क्षयोपशम थाय छे अने तेथी सांभळेलुं वचन फळे छे. आ कारणे व्याख्यान वगेरे सांभळतां 'जी महाराज !, तिहत्ति ! ' वगेरे

शब्दो बोलवानो व्यवहार घणो श्रेष्ठ छे.

पछी सुपनपाठकोनुं पुष्पोथी, वस्त्रोथी अने अलङ्कारोथी सत्कार-सन्मान करीने तेमने जीवतां सुधी चाले एटलुं धन वगेरे दानमां आप्युं. वस्तुतः दाननुं मान लेनार व्यक्तिनी अपेक्षाए नथी थतुं, पण दातारनी भावनाने अनुसारे थाय छे. तेथी प्रसन्न थयेला राजाए एटलुं हर्षदान आप्युं के तेनुं वर्णन केटलुं कहेवुं ? अर्थात् घणुं ज आप्युं अने ते लइने सुपनपाछको पोताने घेर गया. पछी राजाए स्वप्नफऴनी सघऴी वात जेवी सांभऴी हती, तेवी परिपूर्ण त्रिशला राणीने कही संभऴावी. त्रिशलादेवीए पण ते संदेह के तर्क विना सांभऴी अने ' तिहत्ति ' कहीने स्वीकारी. पछी ते पण पोताना शयनमंदिरमां गयां.

सुपनपाठको राजसभामां आव्या, त्यां त्रीजुं व्याख्यान पूर्ण थयुं. परन्तु चोथा व्याखाननो सुपननो अर्थ श्री ज्ञानविमलसूरिए गुरुना मुखे जे सांभऴयो, ते अहीं आगऴथी कह्यो.

हवे इन्द्रना आदेशथी कुबेरनी आज्ञाने उठावनारा जे तिर्यगजृंभक जातिना देवो छे, तेओए कुबेरनी आज्ञाथी सिद्वार्थ राजानुं घर हंमेशां धन-धान्यादिथी भरवा मांड्युं. ते क्रोडो सोनैया

वगेरेथी एटलुं भर्युं के-ते राजानी बराबरी कोण करी शके ? अर्थात् कोइ न करी शके तेवुं थयुं. सप्ताङ्ग राज्यनुं बळ पण वध्युं अने सर्वत्र अति उल्लास वधी गयो.अर्थात् प्रभु गर्भमां आव्या ते दिवसथी, देवोए जेना रक्षक, पोषक एवा कोइ मालिक रह्या न हता अने जेना मालिकोना गोत्रीओ पण न हता, एवां धणी विनानां थवाथी इन्द्रनी मालिकीनां बनेलां निधानो वगेरे ज्या-ज्यां गामोमां, शहेरोमां, खीणोमां, मार्गोमां,आश्रमोमां, खेतरोमां, खळांओमां, राजमार्गोमां, चोकमां, चौटामां, खाळोमां, उज्जड थइ गयेलां गाम-नगरोमां, उद्यानोमां, वनोमां, नवखंडोमां, शून्य घरोमां, स्मशानोमां, पर्वतनी गुफाओमां, शान्तिघरोमां के सभास्थानोमां पड्यां हतां, त्यांथी-त्यांथी लावीने भरवा मांड्यां. एथी सिध्धार्थ राजाने त्यां रुपुं, सुवर्ण अने अलंकारो वधी गया. जाइफळ आदि गणीने लेवाय-देवाय ने गणिम; गोळ, साकर वगेरे तोळीने लेवाय-देवाय ते धरिम; चोप्पड, लूण वगेरे मापीने लेवाय ते मेय अने रत्नो, वस्त्रादि जे परीक्षा करीने लेवाय-देवाय ते परीक्षेय; -एम चारेय प्रकारनी वस्तुओ घणी वधवा लागी. चोवीश प्रकारनां धान्यो, सप्ताङ्ग सैन्य, उंट वगेरे वाहनो, भंडारो, कोठारो, नगरो, प्रजाजनो, वगेरे वध्युं. यश वध्यो अने

रत्न, मणि, माणेक, मोती आदि जवाहिर, दक्षिणावर्त शंखो, राज्यना पट्टको, प्रवाल, पद्मरागमणि, वस्त्रो, कम्बलो वगेरे मूल्यवान दुर्लभ वस्तुओनी पण एटली वृद्धि थइ, के राजानी बराबरी कोइ करी न शके. सर्वत्र उल्लास अने प्रसन्नता वधी गइ, सत्कार-सन्मान पण वध्यां. एथी ते वखते माता-पिताए मनमां एवुं चिंतव्युं के-गर्भना प्रभावे आ सघळुं वध्युं, माटे पुत्रनो जन्म थया पछी, अमे ए पुत्रनुं गुणने अनुरुप ' वर्धमान कुमार ' एवुं नाम आपीशुं.

एम माता-पिताना मनोरथो जेम जेम वधता गया, तेम तेम गुणवंत एवो गर्भपण वधवा लाग्यो. प्रभुनो एवो अतिशय होय छे के-ते गर्भमां होवा छतां माताने लेश पीडा थती नथी अने उदर पण वधतुं नथी. तो पण एक दिन मातृभक्त प्रभुए गर्भमां रह्यां रह्यां मातानी भक्तिने कारणे एम विचार्युं के-माराय हलन-चलन-कंपनथी माताने दुःख थशे, माटे मारे लेश पण हलन-चलन के कंपन करवुं नहि. एम विचारीने ते एवी रीते स्थिर थया के-जाणे मोहनो जय करवा कोइ अगोचर ध्यान साधता होय, अथवा मोक्षनी साधना माटे एकान्तमां कोइ एक तान करता होय, एम मातानी भक्ति करवा अने बीजाओने पण ते शीखवाडवा प्रभु सर्वथा निश्चल थया.

ते वारे पुत्रना स्नेहरागथी त्रिशला माताना मनमां शोकनो समुद्र उछळ्यो. ते खाय नहि, पीवे नहि, सतत चिंतातुर थयां अने तेमनी निद्रा पण चाली गइ. तेमने एवो संकल्प थयो के- शुं मारा गर्भने कोइ देवताए हरी लीधो ? शुं चवी गयो ? के गळी गयो ? कारणके- पूर्व ते हालतो, चालतो, कम्पतो अने हरतो-फरतो हतो. हवे एवुं कंइ करतो नथी, तेथी ते झूरवा लाग्यां, तेमनुं हैयुं कलुषित थयुं अने आर्तध्यानमां डूबेलां ते विलाप करवा लाग्यां के-पूर्वभवे में वनमां दव सळगाव्यो हशे, पक्षिओना घणा माळा भांग्या हशे, सरोवरनां पाणी सोषावीने जळचर जीवोनो नाश कर्यो हशे के ऋषि-मुनिओने आळ चढाव्यां हशे, बाळकोनी माताथी वियोग कराव्यो हशे, तेमने स्तनपान करतां विघ्न कर्यां हशे, अगर उंदर वगेरेना बीलमां उष्ण पाणी पूरी तेनां बच्चाओनो नाश कर्यो हशे.

पूर्वभवे में जू, मांकड के लीखोने तावडे नाखी हशे, पशु-पक्षीओने पिंजरामां पूर्या हशे, कोइनी आजीविका भांगी हशे, देवद्रव्य-ज्ञानद्रव्य अने साधारणद्रव्य के गुरुद्रव्य वगेरे सात क्षेत्रोनां द्रव्य खाधां-खवराव्यां हशे, ते नाश पामतां उपेक्षा करी हशे, अभक्ष्यनां भक्षण कर्या हशे

के अभव्यनी करणी करी हशे, कारणके-एवां पापो कर्या विना मारे पुत्रनो आम वियोग न थाय.

धर्मकरणीमां अविधि-आशातना करी-करावी हशे, अशुद्ध प्रवृत्ति करी हशे के खोटी प्ररुपणा करी धर्म लोप्यो हशे अने छती शक्तिए अशुद्ध प्रवृत्ति नहि रोकी होय, गर्भनां शाटन-पाडन कर्या हशे, कामण-टुमण करीने के बगनी जेम मायाथी आचरण करीने लोकोने ठग्यां हशे-एम घणां पापो बांध्यां हशे, ते वर्तमानमां उदय आव्यां छे.

अथवा पूर्वे में शीयळ मांग्यां-मंगाव्यां हशे, अथवा गर्भ हराव्या हशे के बालहत्या करी हशे. शोक्यना पुत्रनुं माठुं चिंतव्युं हशे, वगेरे घणां पापकरम कर्या हशे, तेनुं आ फळ आव्युं छे. तेमां कोइनो दोष नथी. शोक करवाथी पण शुं थाय ? बांधेलां पाप भोगवे ज छूटाय. जेम समुद्रमां काणो घडो न भराय, तेमां समुद्रनो दोष नथी.

वसंतऋतुमां सर्व खीले अने जो एक केरडो न खीले, तो हे चतुर पुरुष ! कहो, तेमां समुद्रनो अने वसंतऋतुनो शो वांक ? वळी फळेला वृक्षनां डाळां नीचे नमवा छतां जो तेनां

फळो वामणो न लइ शके तो वृक्षनो, अथवा तरत उगेला तेजस्वी सूर्यने जो घूवड न देखे, तो तेमां सूर्य नो शो दोष ? तेम मारा दुर्भाग्यथी गर्भने कुशळ नथी, तेमां बीजानो शो दोष ? मारोज दोष छे, माटे हवे जीववुं निरर्थक छे.

जेम दरिद्रना घरमां रत्न न रहे के निर्भागीने मळेलुं चिंतामणी न रहे, तेम मारे थयुं. जेम भूमिना दोष थी, मरुदेशमां कल्पवृक्ष न उगे अने तृषातुर छतां निष्पुण्यक जीवने अमृतपान न मळे, तेम निर्भागीने उत्तम पुत्रनी प्राप्ति पण न थाय.

हुं निर्भागीओमां शिरोमणी बनी. हे क्रूर विधाता ! तने धिक्कार थाओ ! तें आ शुं कर्युं ? तें मने मेरुपर्वते चढावीने नीचे पटकी अने निर्मळ नेत्रो आपीने खेंची लीधां. जेम कोइ उत्तम भोजन पिरसीने थाळ खेंची ले, तेम तें मारी दुर्दशा करी. पुत्र गर्भमां न आववाथी जेटलुं दुःख न थाय, तेटलुं दुःख उत्तम स्वप्नोथी सूचित पुत्र अवतर्या पछी तेना अकुशळथी मने थाय छे. अति दुःखियारी थयेली मारे हवे आ राजवैभव, मान-सन्मान अने बीजां पण सर्व सुखो आळपंपाळ जेवां नकामां छे.

हे दुष्ट विधाता ! तें मारा मनोरथरुप वृक्षने मूऴमांथी उखेडी नाख्यो. पूर्वजन्ममां में तारो शो अपराध कर्यो छे, के जेथी आवुं दुःख देतां तुं उचित-अनुचितनो पण विचार करतो नथी ? अथवा आ दुःखथी व्याप्त संसारने अने मधथी खरडायेली तलवारनी धारने चाटवातुल्य विषयोना अल्प सुखने पण धिक्कार थाओ ! में तेमां सुखनी आशा करी तेनुं ज आ फऴ मऴयुं.

हवे हुं शुं करुं ? क्यां जाउं ? अने कोनी आगऴ कहुं ? कारण के-भोऴी एवी मने अधम दुर्भाग्ये बाऴी अने मारो नाश कर्यो.

हे कुलदेवीओ ! तमे आज क्यां गइ छो ? मारा गर्भनी संभाऴ केम न करी ? सुंदर एवुं पण आ जीवन, धन अने सुख हवे शा कामनुं छे ? जो पुत्रनुं मुख जोवा न मऴे, तो आ बधुं श्रेष्ठ सुख पण वधारे दुःख आपनारुं छे. एम विविध विलाप करती त्रिशलाने सखीओ जेम जेम कुशऴ पूछे छे, तेम तेम तेने पुत्रवियोगनुं दुःख खूब खटके छे. एम हृदय उपर दुःख वधी जवाथी ज्यारे ते मूर्छित थया, त्यारे जऴ-चंदनादिना शीतल उपचार करीने सखीओ तेने स्वस्थ करवा लागी, अने सघऴो परिवार विलाप करवा लाग्यो के-आ शुं थयुं ? निष्कारण वैरी एवा

विधाताए आ शुं कर्युं ? कुऴनी वृद्व स्त्रीओ आ विघ्ननी शान्ति माटे शान्तिकर्म, पुष्टिकर्म, मन्त्रजाप, बाधा-आखडी वगेरे करवा लागी अने जोषीओने तेडावी प्रश्नो मूकाव्या. त्यारे प्रजालोक सहित राजा पण शोकातुर थयो अने सर्व मंत्रीओ पण किंकर्तव्यमूढ थया. वातावरण शोक-चिन्तामय बनी गयुं. तेथी-

सर्व गीत-नृत्यादि बंध थयां अने सिद्वार्थ राजा वगेरे सकऴ परिवार सहित लोक शोकमग्न बन्या. ते वारे गर्भमां रहेला प्रर्भुए अवधिज्ञाननो उपयोग मूक्यो अने बहारनो सघऴो व्यतिकर जाणी त्रणेय भुवन प्रत्ये करुणानां भंडार प्रभुए विचार्युं के-शुं करीए ? कोने कहीए ? मोहनी गति ज आवी छे. ' दुष् ' घातुनो गुण करतां जेम ' दोष ' शब्द बने, तेम में माताना हित माटे कर्युं ते तेओने दोष माटे थयुं. भावि-कलिकालनुं आ लक्षण छे के-जेम नाऴियेरना पाणीमां नाखेलुं कर्पूर पीनारनुं मरण नीपजावे, तेम पांचमां आरामां जीवोने गुणो दोषकारक थशे.

एम जाणीने प्रभु एक दिशाए ज्यारे लेश मात्र फरक्या, त्यारे त्रिशलादेवी घणां हर्षित थयां

अने तेमनुं मुखकमळ प्रसन्न थयुं. पछी तेमणे कह्युं के- ' मारो गर्भ हरायो नथी अने गळ्यो पण नथी, पूर्व कम्पतो न हतो ते हवे कम्पे छे.'

त्रिशलादेवी बोल्यां के-त्रण भुवनमां हुं धन्य छुं मारी भाग्यदशा आजे जागी अने श्री जिनेश्वरोना चरणनी करेली सेवाथी मारां सघळां काज सिद्ध थयां. में मूढ मतिथी अनुचित चिन्ता करी. मारुं जीवित प्रसंशनीय थयुं अने जन्म सफळ थयो. गोत्रदेवीओए कृपा करी अने आज सुधी आराधेलो जैनधर्मररुप कल्पवृक्ष सफळ थयो.

आजे मनोरथरुप कल्पवृक्ष पत्र फूल सहित फळ्यो, वगेरे त्रिशलादेवीना शब्दो सांभळी कुळवृद्वाओए ' जय-जय ' कही आशीर्वाद दीधा, राजाए श्री जिनमंदिरमां प्रभुभक्तिना महोत्सव मंडाव्या अने सधवा स्त्रीओ धवल-मङ्गल गावा लागी, वळी ध्वजाओ चढावी, कुंकुमना पंचागुली थापा दीधा तोरणो बंधाव्या, गीत-नृत्य शरु थयां अने सधवा स्त्रीओ श्रेष्ठ अक्षत वधाववा लागी.

आंगणे मोतीथी चोक पूर्या, सघळा याचक लोकोने अमाप-घणुं दान दइने सकळ

लोकना दारिद्यने नाश कर्युं, लोकोए गीत-नृत्यथी ते राजानुं राजभुवन देवलोक सरखुं शणगार्युं अने ते वेळा राजा वधामणांमां आवेलुं क्रोडोनुं धन लइ, तेने बदले क्रोडो द्रव्य आपवा लाग्या. एम कल्पतरु सरखा बनेला सिद्वार्थ राजा घणो हर्ष पाम्या. एम सतत रीते घणां मङ्गल कार्यो थयां.

ते वारे साडा छ महिनानो गर्भनो काळ पूर्ण थतां, सातमे मासे प्रभुए गर्भमां एवो अभिग्रह कर्यो के-ज्यां सुधी माता-पिता जीवंत होय, त्यां सुधी हुं घरवास त्यजीने साधु नहि थाउं. प्रभुए विचार्युं के-गर्भमां छतां मातानो आवो सन्हे छे, ते जन्म पछी तो घणो वधी जशे. माटे माताने दुःख न थाय अने बीजाओ पण माता उपर बहुमान करे, ए उद्देशथी प्रभुए अभिग्रह कर्यो. कह्युं छे के-पशुओने मातानो संबंध ज्यां सुधी स्तनपान करे त्यां सुधी, अधम मनुष्योने ज्यां सुधी न परणे त्यां सुधी अने मध्यम पुरुषोने ज्यां सुधी माता घरनुं काम करी शके त्यां सुधी संबंध होय छे. उत्तम पुरुषो तो जीवतां सुधी तीर्थनी जेम मातानी सेवा करे छे. पछी त्रिशलादेवीए स्नान-पूजा करी, विध्ननाशक ' काजळनुं तिलक, दहींनुं भक्षण ' वगेरे द्रव्यमङ्गलरुप प्रायश्चित

कर्यां, बाद ते सर्व अलङ्कारो पहेरी विभूषा करी अने सुखपूर्वक गर्भनुं पालन करवा लाग्यां.

गर्भनी रक्षा माटे तेओ अति शीत, उष्ण, कटु, तीखा, खाटा, खारा के घणा मीठा-मादक तथा अति सूका-लूखा पदार्थो भोजनमां लेतां नथी, पण दरेक ऋतुमां पथ्य अने पोषक पदार्थो ले छे. सामान्यतया वर्षाऋतुमां लूण, शरदमां जळ, हेमन्तमां गायनुं दूध, शिशिरमां आमळानो रस, अने वसन्तमां घी अने ग्रीष्मऋतुमां गोळ-ए अमृतनी जेम पथ्य कह्यां छे. वस्त्र,गन्ध, पुष्पो वगेरे पण गर्भपोषक होय तेवां ते भोगवे छे, कारणके-अति शीतल आहार वगेरे गर्भने हितकर नथी. तेवां कुपथ्यो केटलांक वायुने, कोइ पित्तने तो कोइ कफने वधारे छे. वाग्भट्ट तो कहे छे के-वायुकारक भोजनादिथी गर्भ कुबडो, अन्ध, जड अने वामणो थाय; पित्तजनक भोजन लेवाथी टालीओ अने पीतवर्णवाळो थाय अने कफजनक भोजन लेवाथी कोढी तथा पाडुंरोगवाळो थाय. अति खारुं खावाथी नेत्रनुं तेज हणाय, अति शीत वायुने करे, अति उष्ण निर्बळ करे अने विषयसेवनथी के अति इच्छाओथी गर्भना प्राण जाय.

वळी मैथुन सेववाथी, लांबा प्रयाणथी, विषम वाहने मुसाफरी करवाथी, धक्को लागवाथी,

पडी जवाथी, पीलावाथी, घणुं दोडवाथी, अथडामणथी, विषम शयन-आसनथी, घणा उपवासथी, वडीलधु नीति रोकवाथी, अति लूखुं-कडवुं-तीक्खुं के घणुं खावाथी, घणा मोटा रोगथी, अति शोकथी, अति खारा खोराकथी, अतिसारथी वमन के विरेचनथी, हिंचकामां घणुं हिंचवाथी अने अजीर्ण थवाथी प्रायः गर्भनो बंध छूटी जाय छे. तेथी त्रिशलादेवी एवुं कंइ करतां नथी, गर्भनुं सुखपूर्वक पोषण थाय तेम वर्ते छे अने रोग, शोक, मूर्छा, भय, व्यायाम वगेरे प्रतिकूऴता रहित प्रसन्नताथी रहे छे. कारण के-दिवसे उंघवाथी गर्भ उघणशील, बहु अंजनथी अन्ध, रोवाथी विकारी द्रष्टिवाऴो, घणा स्नान-विलेपनथी दुराचारी, तैल चोऴवाथी कोढी, नख कापवाथी खराब नखवाऴो, दोडवाथी चंचऴ, हसवाथी श्याम ओष्ट-ताळुं-दांत अने जीभवाऴो, अति बोलवाथी वाचाल, अति मोटा शब्द सांभऴवाथी बहेरो, खणवाथी स्खलित अने पंखा वगेरेना अति वायुना सेवनथी उन्मत्त थाय छे. कुऴवृद्वाओ पण त्रिशलादेवीने वारंवार शिखामण आपे छे के-धीमे चालो, धीमे बोलो, कोप न करो, पथ्य सेवो, अधोवस्त्र ढीलुं बांधो, बहु न हसवुं, अगासे न फरवुं, नीचे शयनमां सुता रहेवुं अने बहार न जवुं वगेरे.

त्रिशलादेवी पण जेम गर्भनी रक्षा-पुष्टि थाय तेम योग्य समये जमे छे, निर्दोष अने कोमळ शयन-आसनो वापरे छे अने मन प्रसन्न रहे तेवी भूमिमां हरे-फरे छे. एम गर्भपालन करतां त्रिशलादेवीने एवा उत्तम दोहद प्रगट्या के-अमारिपडहोवजडावुं, दान दउं, गुरुने पूजुं, तीर्थंकरोनी विविध भक्ति करुं, श्रीसङ्घनुं वात्सल्य-पूजन करुं, मोटा धर्ममहोत्सवो मंडावुं; अथवा राजसिंहासने बेसुं, छत्र धरावुं, चामर विंझावुं, राजाओने नमन करावुं, आज्ञा पळावुं; अथवा हाथी उपर बेसीने लोकना जय-जय ध्वनि साथे मंगल वाजिंत्रना महा ध्वनि तथा उडती ध्वजाओथी शोभती उद्यानक्रिडा करुं.

त्रिशलादेवीना ए सर्व शुभ दोहलाओ सिद्धार्थ राजाए पूर्ण कर्या. त्रिशलादेवी पण जेम कुलवृद्धाओ वगेरे कहे तेम पोताना राजमहेलमां विचरे छे. एम प्रभु बे माताओना गर्भमां नव मास अने उपर साडासात दिवस रह्या अने गर्भमां रहीने पण सर्वनी आशाओ पूर्ण करी. त्रिशलादेवीना सर्व दोहद पूरवाथी हवे दोहद शान्त थया. पछी ज्यारे वेलामास आव्यो, त्यारे गर्भना भारथी त्रिशलादेवी शिथिल बन्या होय तेम बेसतां, उठतां, शयन करतां अने उभा रहेतां

टेकानो आश्रय ले छे तथा निद्रा विना पण घणो काळ शयन करे छे. एम ते सर्व प्रकारे गर्भनी रक्षा रे छे.

ते काळे अने ते समये चैत्र मासनी अजवाळी तेरसे प्रभुना गर्भना काळने नव मास अने साडसात दिवस पूर्ण थया. अहीं प्रसङ्गनुसार प्रत्येक तीर्थंकरना गर्भकाळनुं कोष्टक कहीए छीए.

जिननाम	ऋ	अ	सं	अ	सु	प	सु	चं	सु	शी	श्रे	वा	वि	अ	ध	शां	कुं	अ	म	मु	न	ने	पा	व
मास	९	८	९	८	९	९	९	९	८	९	९	८	८	९	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९
दिवस	४	२५	६	२८	६	६	१९	७	२६	६	६	२०	२१	६	२६	६	५	८	७	८	८	८	६	७

ते वेळा सर्व दिशाओ दिग्दाहादि दोषोथी रहित निर्मळ थइ, पवन शीतळ मंद मंद लहरिओथी अनुकूळ वावा लाग्यो, रज टळवाथी दिशाओ अंधकार रहित बनी, कारण के- भगवानना जन्मसमये सर्वत्र उद्योत होय. काग, घूवड, काळी चकली वगेरे पक्षिओना जय-जय शब्दो सर्व उत्तम शकुन सूचववा लाग्या, पवन दक्षिणावर्ते भमतो सुगंध फेलावतो वावा

ग्रहो	राशि	अंश
रवि	मेष	१०
चन्द्र	वृषभ	३
मङ्गल	मकर	२८
बुध	कन्या	१५
गुरु	कर्क	५
शुक्र	मीन	२७
शनि	तुला	२०

लाग्यो, सर्व पृथ्वी विविध धान्यथी निष्पन्न हती, तेथी सर्व देशना लोक सुखी हता अने हर्षित थयेला लोको प्रसन्न थइने रास-गीत वगेरे गाता आनंद करता हता.

ते समये चंद्रनो योग उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयो अने शुभ लग्नवेळाए सात ग्रहो उच्च स्थाने आव्या. तेनुं कोष्टक अहीं बाजुमां छे. एनो भाव ए छे के-ज्यारे रवि वगेरे ग्रहो मेष राशिमां होय त्यारे उच्च गणाय. तेमां पण ज्यारे दशमा वगेरे अंशना होय त्यारे परम उच्च कहेवाय. प्रभुना जन्मसमये सर्व ग्रहो परम उच्च हता. ते प्रत्येकनुं फळ अनुक्रमे सुखी, भोगी, धनिक, नेता, मांडलिक राजा अने चक्रवर्ती थाय-एम समजवुं. तेमां पण जेना जन्मसमये त्रण ग्रहो उच्च होय ते राजा, पांच ग्रहो उच्च होय ते वासुदेव, छ ग्रहो उच्च होय ते चक्री अने सातेय ग्रहो उच्च होय ते तीर्थंकर थाय. प्रभुना जन्मसमये साते ग्रहो उच्च हता. आवी उत्तम लग्नवेळाए बराबर मध्यरात्रिए ज्यारे सौ सुखमां मग्न हतुं. त्यारे त्रण ज्ञानथी युक्त अने अनंत गुणोनी खाण

एवा प्रभुनो, माताने अने पोताने कोइ प्रकारनी पीडा थया विना जंन्म थयो. ए प्रमाणे ज्ञानविमलसूरिए श्री पर्युषणा कल्पसूत्रनुं चोथुं व्याख्यान कह्युं. तेनो विधि अने सद्भावथी वांचनार सांभऴनारनुं कल्याण तथा मङ्गलमाऴा थाय.

व्याख्यान चोथुं समाप्त.

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान ५ मुं

प्रभु जन्म्या ते वारे नारकी अने स्थावर जीवोने पण क्षणवार सुख थयुं, त्रणेय भुवनमां उद्योत थयो, अचेतन पण दिशाओने हर्ष थयो होय तेम प्रसन्न थई, पृथ्वीए श्वास लीधो, स्वर्गमां दुन्दुभीओ वागी अने पवन मंद मंद सुखकर वावा लाग्यो. तीर्थंकरोना पुण्यनो महिमा ऐवो अतिशायी होय छे के-तेना प्रभावे सघळुं बने छे.

प्रभुनो जन्म जाणीने स्वर्गमांथी उतरेला अने मेरुपर्वत पर जता देव-देवीओनो प्रकाश अने शब्दोथी ते रात्रि कोलाहल अने प्रकाशमय बनी गई. ते वेळाए छप्पन्न दिक्कुमारीओनां आसन कम्प्यां, तेथी तेओए अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म थयेलो जाण्यो

अने ते जन्मनुं सुतिकर्म करवानो पोतानो आचार समजीने स्व-स्व परिवार साथे प्रभुना जन्मस्थाने आवी.

तेमां भोगंकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, सुवत्सा. वत्समित्रा, पुष्पमाला अने अनिन्दिता,-ए आठ गजदंता नीचे रहेनारी अधोलोकथी आवी अने प्रभुना जन्मघरथी ईशान खूणे एक योजन भूमि सुधी संवर्तक नामनो वायु विकुर्वीने तेटली भूमिने कचरो वगेरे दूर करी शुद्ध करी.

मेरुना नन्दन वनथी उर्ध्वलोकनी आठ मेघंकरा, मेघवती, सुमेघा, मेघमालिनी, तोयधारा, विचित्रा, वारिषेणा अने बलाहका आवी. तेओए शुद्ध करेली ते भूमि उपर सुगंधी जळ छांटीने पुष्पोना समूह वेर्या. पूर्वदिशाना रुचक पर्वतथी आवेली नन्दा, नन्दोत्तरा, आनन्दा, नन्दिवर्धना; विजया, वैजयन्ती, जयन्ती अने अपराजिता,-ए आठ प्रभुनी सामे दर्पण धरीने उभी रही. दक्षिणरुचक पर्वतथी आवेली समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुन्धरा,-ए आठ स्नात्र माटे पूर्ण

कळशोने हाथमां धरी गीत-गान करती प्रभु आगळ उभी रही. पश्चिमरुचक पर्वतथी आवेली ईलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी, पद्मावती, अेकनासा, नवमिका, मद्रा अने शीता,-ए आठ पवन नाखवा हाथमां वींझणा लईने प्रभु आगळ उभी रही. उत्तररुचक पर्वतथी आवेली अलम्बुसा, मितकेशी, पुण्डरिका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री अने ह्री-ए आठ प्रभुने चामरो वींझती उभी रही. रुचकपर्वतनी चार विदिशाए रहेनारी चित्रा, चित्रकनका, शतेरा अने वसुदामिनी-ए चार आवीने हाथमां दीपक लई चार विदिशाए उभी रही. हवे रुचकद्वीपेथी रुपा, रुपासिका, सुरुपा अने रुपकावती-ए चार आवी अने तेओए चार अंगुलथी गर्भनुं नाल कापीने खात खोदी तेमां पधराव्युं. पछी ते खात पूरीने तेना उपर वैडुर्यरत्नोनी पीठिका रचीने उपर ध्रो बांधी. ते पछी जन्मघरथी पूर्व, उत्तर अने दक्षिण दिशामां केळना त्रण मंडपो कर्या. तेमांना दक्षिण दिशाना मंडपमां प्रभुने अने प्रभुनी माताने लावीने तेओए त्यां अभ्यंगन कर्युं. त्यांथी पूर्वमंडपमां लावीने त्यां बन्नेने स्नान अने चन्दनादि विलेपन करी वस्त्रो अने अलंकार पहेराव्यां. त्यांथी उत्तर दिशाना मंडपमां

लावीने त्यां अरणिनां काष्ठो घसी, तेमांथी पवित्र अग्नि प्रगटावी, तेमां चन्दनकाष्ट होमी तेनी रक्षा करी. पछी तेनी बे पोटलीओ बनावी बन्नेना हाथे बांधी अने बन्नेने जन्मघरमां लावीने 'तमे पर्वत जेटला दीर्घायुषी थाओ.'-एम आशीर्वाद दई आनंदथी गोळा वजाडती स्व-स्व दिशामां तेओ उभी रहीने गीत गावा लागी.

आ प्रत्येक दिक्कुमारीओ, चार हजार सामानिको, चार महत्तराओ, सोळ हजार अंगरक्षको, सात सैन्यो अने सात सेनापतिओ तथा बीजा पण अनेक महर्ध्धिक देवो वगेरे स्व-स्व परिवार साथे आभियोगिक देवोए रचेला एक योजनना विमानमां बेसीने अहीं आवी अने स्व-स्व कल्प प्रमाणे सुतिकर्म करी पाछी स्वस्थाने गई.

पछी ईन्द्रोए जन्ममहोत्सव कर्यो, ते कहे छे.

प्रभुना अतिशयथी सौधर्म देवलोकना शक्र नामना ईन्द्रनुं सिंहासन कम्प्युं अने तेथी अवधिज्ञाननो उपयोग मूकी तेओए प्रभुजन्मनो व्यतिकर जाण्यो. पछी पोतानो कल्प समजी हरिणैगमेषी देव द्वारा एक योजननी मोटी सुघोषा नामनी घंटा वजडावी, तेना परमाणुओ

सर्व विमानोमां पहोच्या अने ते सांभळीने सर्व देवो सावध थया. त्यारे ईन्द्रे प्रभुना जन्ममहोत्सव माटे सर्वने मनुष्यलोकमां आववा आदेश कराव्यो अने ईन्द्रनी आज्ञाथी प्रमोद पामेला सर्व देवो जन्ममहोत्सवमां आववा तैयार थया. ईन्द्र पण पालक नामनुं एक लाख योजननुं विमान तैयार करावी तेमां वच्चे बेठा. पछी पोतानी आगळ अग्रमहिषीओनां आठ, डाबी बाजु सामानिक देवोनां चोराशी हजार, जमणी बाजु अभ्यन्तर पर्षदा देवोनां बार हजार, मध्यम पर्षदाना देवोनां चौद हजार अने बाह्य पर्षदाना देवोनां सोळ हजार मळी कुळ बेतालीश हजार, पाछळ सेनापतिओनां सात अने चारेय दिशामां आत्मरक्ष देवोनां चोराशी चोराशी हजार-एम प्रत्येकनां भद्रासनो मंडावी, तेटलां ते ते देव-देवीओ अने बीजां पण घणा देवोथी गुणगान कराता ईन्द्र मोटा परिवार साथे चाल्या. तेमां केटलाक देवो ईन्द्रनी आज्ञाथी, केटलाक मित्रना आग्रहथी, केटलाक देवीओनी प्रेरणाथी तो केटलाक पोताना भावथी चाल्या. कोई कौतुक जोवा तो कोई ईन्द्रनी भक्तिथी चाल्या. जीवोना परिणामनी विचित्रताथी एक ज कार्य करवा छतां परिणामना भेदे फळ न्यूनाधिक तथा

सारुं-माठुं मळे छे. एम विविध वाहनो उपर बेसीने आवता देवोथी ते वेळा आकाश पण सांकडुं अने वाजिंत्र वगेरेना नादथी शब्दमय बनी गयुं. आनंदमां आवेला ते देवो मार्ग मेळववा माटे विविध शब्दो बोले छे. तेमां सिंहना वाहनवाळो हाथीवाळाने कहे छे के- तारा हाथीने हठाव, नहि तो मारो दुर्धर केसरी तेने हणी नांखशे. एम घोडेस्वार पाडावाळाने, गरुड उपर बेठेलो सर्पवाळाने तथा चित्तावाळो बोकडावाळाने डरावतो मार्ग काढे छे. कोई चतुराई जणाववा मित्रने छोडीने ज्यारे आगळ जाय छे, त्यारे पाछळ पडेलो मित्र तेने धीमे चालवा विनवे छे.

वळी कोई कहे छे के-'पर्वदिवसो सांकडा होय, माटे मौन करी चालता रहो.' एम आनंदमां आवेला देवो विविध कुतूहलो करता ज्यारे ज्योतिष चक्रमांथी पसार थया, त्यारे मस्तके पडतां चंद्रकिरणोथी जाणे सफेद वाळ उग्या होय तेवा ते घरडा देखाया. ताराओ पण मस्तक उपर नानी घडी जेवा, गळामां हार जेवा अने शरीर उपर प्रस्वेदनां बिन्दुओ जेवा देखाया. एम सर्व ईन्द्रो श्री जिनेश्वरदेवनो जन्ममहोत्सव करवा माटे मेरुपर्वते आव्या.

त्यां मोटो समुदाय मळ्यो अने विमानोने संक्षेपीने सौधर्म ईन्द्र प्रभुना जन्मस्थाने आव्या.

प्रभुने अने माताने त्रण प्रदक्षिणा करीने अने वन्दन तथा नमस्कार करीने सौधर्म ईन्द्र बोल्या के-'हे रत्न-कुक्षिधरा जगतनी दीपिका ! हुं शक्र नामे देवेन्द्र छुं अने मारो कल्प होवाथी अहीं आव्यो छुं. माटे चरम तीर्थपति एवा प्रभुनो हुं जन्ममहोत्सव करीश. तमो माराथी डरशो नहि.'-एम कहीने अवस्वापिनी निद्राथी माताने निद्राधीन कर्या अने प्रभुनुं एक प्रतिबिम्ब बनावी तेमनी पासे पधराव्युं. पछी ईन्द्रे बे हाथना सम्पुटमां प्रभुने लईने सर्व ल्हावो पोते ज लेवा माटे पांच रुपो कर्या. एक रुपे प्रभुने लीधा, बे रुपे चामर विंझवा लाग्या, एक रुपे छत्र धर्युं अने एक रुपे छडीधर बनी ते आगळ चाल्या. ते वखते साथेना देवोमां जेओ आगळ हता तेओ पाछळ चालता देवोने धन्य मानी स्तवे छे, पाछळ चालता देवो आगळ चालनार देवोने धन्य माने छे, तो केटलाक आगळ चालता देवो 'नेत्रो जो पाछळ होय तो प्रभुना दर्शन थई शके.'-एम समजी पाछळ नेत्रोनी इच्छा करे छे. ए रीते देवो साथे ईन्द्र प्रभुने लईने मेरुपर्वतना शिखरे पांडुक वनमां आव्या. त्यां

मेरुचूलानी दक्षिण दिशामां 'अतिपांडुकम्बल' नामना आसन उपर ईन्द्र प्रभुने खोळामां पधरावी बेठा, त्यारे शेष ईन्द्रो प्रभुना चरणकमळ पासे बेठा. एम दश वैमानिक, वीश भवनपति, बत्रीश व्यन्तरो अने बे ज्योतिष्क मळी चोसठ ईन्द्रो आव्या. तेमां जे प्रभु भरतक्षेत्रमां जन्मे, ते प्रभुना जन्ममहोत्सवादिनो मुख्य अधिकार सौधर्म ईन्द्रनो जाणवो. पछी आ प्रमाणे सामग्री तैयार करी.

दैवीशक्तिथी १-सुवर्णना, २-रजतना, ३-रत्नना, ४-सुवर्ण-रत्नना, ५-सुवर्ण-रजतना, ६-रजत-रत्नना, ७-सुवर्ण-रजत-रत्नना अने ८-माटीना-एम आठ जातिना पचीश योजन उंचा, बार योजन पहोळा अने एक योजनना मुखवाळा प्रत्येक एक हजार ने आठ कळशो बनावराव्या. ए प्रमाणे दर्पण, रत्नकरंडक, सुप्रतिष्ठक, थाला, कटोरिओ, पुष्पचंगेरीओ वगेरे पण कळशनी जेम आठ जातिनां प्रत्येक एक हजार आठ कराव्यां-एम समजवुं. पछी मागध वगेरे तीर्थोनी माटी, क्षिरोदधि-गंगा नदी वगेरेनां जळ, पद्मद्रहमांथी पण जळ अने पद्मकमळो तथा चूल्लहिमवंत वगेरे वर्षधर पर्वतो, वैताढ्यो, विजयो अने वक्षस्कारादि

पर्वतोमांथी श्वेतसर्षप, पुष्पो, गन्धो अने सर्वोषधिओ वगेरे सघळुं अच्युतईन्द्रे आभियोगिक देवो द्वारा मंगाव्युं.

ज्यारे अभिषेक माटे देवोए ए कळशो हृदय सामे उपाड्या, त्यारे तेओ शीघ्र संसारसमुद्र तरवा माटे जाणे घडाओ पकड्या होय तेवा देखाया अने अभिषेक करती वेळा तो जाणे पोताना भावरुपी वक्षने सिंचता होय अथवा कर्ममेलने धोता होय के धर्मप्रासादे कळश स्थापता होय, तेवा देखाया. कह्युं छे के-

अभिषेक वखते सौधर्मेन्द्रने विचार आव्यो के-'आवा बाळ प्रभु आ मोटा अभिषेकोने शी रीते सहन करशे ?-ए वीचार अवधिज्ञानथी प्रभुए जाणी लीधो अने ईन्द्रना संशयने टाळवा डाबा पगना अंगुठाथी मेरुने एवो स्पर्श कर्यो के-मेरु सर्व बाजुथी चल-विचल थयो, पृथ्वी कम्पी उठी अने पर्वतोनां शिखरो पडवा लाग्यां तथा समुद्रो खळभळ्या, तेथी ब्रह्मांड तूटे तेवो शब्द थयो. ते सांभळी ईन्द्र क्रोधे भराया, पण अवधिज्ञानथी जाण्युं के-'आ तो प्रभुना अनंत बळ-वीर्यनो प्रभाव छे अने अज्ञानथी में मिथ्या संशय करी प्रभुनी

आशातना करी ते मारो ज दोष छे.' आथी ईन्द्रे प्रभुने खमाव्या. मेरुपर्वत पण जाणे 'आज पूर्वे संख्यातीत तीर्थंकरोमां कोईए मने चरणथी स्पर्श न कर्यो अने आ प्रभुए तेम कर्यो, वळी स्नात्रना जळथी सर्व पर्वतोना राजा तरीके मने राज्याभिषेक थयो, सर्व देवो हाररुप बन्या अने प्रभु मस्तकना मुगटरुप थया.'-एम समजीने जाणे आनंदथी नाचतो होय तेम ते कम्प्यो. कह्युं छे के-

अच्युतेन्द्र सौथी मोटा होवाथी तेओए प्रथम अभिषेक कर्यो अने ते पछी अनुक्रमे यावत् चन्द्र-सूर्ये पण कर्यो. एम कुल एक क्रोड साठ लाख अभिषेक आ प्रमाणे थया. आठ जातिना आठ हजार कळशोथी आठ आठ वार कर्या, तेथी एक अभिषेकमां चोसठ हजार कळशो थया. एवा अढीसो अभिषेक आ प्रमाणे थया. चन्द्र-सूर्य विना ईन्द्रोना ६२, अढीद्वीपना चन्द्र-सूर्यना ६६-६६ मळी १३२, समानिक देवोनो १, तेत्रीश त्रायस्त्रिंशत् देवोना ३३, त्रण पार्षदिक देवोना ३, आत्मरक्षक देवोनो १, चार लोकपालना ४, सात सेनाधिपतिओना ७, प्रकीर्णक देवोनो १, ईन्द्राणीओना ५, अने आभियोगिक देवोनो १

- एम कुल २५० - ६४००० - १६००००० अभिषेक थया.

छेल्ले सौधर्म ईन्द्रे प्रभुने अच्युतेन्द्रना खोळामां पधराव्या अने पोते वृषभनां चार रुपो करी आठ शृंगोथी क्षिरोदधिना जळनी धारा वहेवरावी घणा हर्षथी अभिषेक कर्यो. खरेखर! देवोने विबुध कह्या छे ते सत्य छे, कारण के-तेओए स्नात्र प्रभुनुं कर्युं अने पापो पोतानां धोयां. एम प्रभुनो जन्माभिषेक करी देवो कर्ममेलने कापी कृतार्थ थया. आ स्नात्रजळ ज्यारे प्रभुना मस्तके पडतुं हतुं त्यारे छत्र जेवुं, मुख उपर किरणो जेवुं, कंठमां हार जेवुं अने समग्र शरीर उपर उतर्युं त्यारे पहेरेला चिनाई श्वेत वस्त्र जेवुं मनोहर देखातुं हतुं. प्रभुना अंगे स्पर्शेलुं ते स्नात्रजळ भव्य श्रोताओनुं अने वक्तानुं कल्याण करो !

पछी गन्धकाषाय्य वस्त्रथी प्रभुनुं अंग लूछीने, प्रभुने चन्दनादिथी विलेपन करीने पुष्पादिथी पूजा करी अने पछी आरात्रिक तथा मंगल दीपक उतारीने गीत, नृत्य, वाजिंत्र वगेरेथी विविध नाटको कर्या. एम घणो आनंद कर्या पछी रत्नना पाटला उपर रजतना अक्षतथी अष्टमंगलनी रचना करी अने प्रभुनी सामे चैत्यवन्दन मुद्राए बेसी, काव्यना

विविध गुणोथी भरेलां एक सो आठ काव्यो रचीने प्रभुनी स्तवना करी.

पछी सौधर्म ईन्द्र प्रभुने लई अहीं आव्या. प्रभुने मातानी पासे पधरावी, पहेलां पोते दैवीशक्तिथी मूकेलुं प्रतिबिम्ब अने अवस्वापिनी निद्रा हरी लीधी. पछी बे कुंडळो अने रेशमी बे वस्त्रोनी जोडी ओशिके मूकीने, पुष्प तथा रत्नती माळाथी युक्त एक सुवर्णनो दडो स्थाप्यो, बत्रीश क्रोड सोनैयांनी वृष्टि करी, अने आभियोगिक देवो द्वारा उद्घोषणा करावी के-प्रभुनुं के प्रभुनी मातानुं जे कोई लेश पण अशुभ चिंतवशे, तेना मस्तकना ए खंडमां जरनी जेम सात टूकडा थशे. पछी ईन्द्रे प्रभुना हाथना अंगुठामां अमृतनो संचार कर्यो, कारण के-दरेक प्रभु ते अमृतपान करे, पण मातानुं स्तनपान न करे. एम प्रभुने राजमंदिरमां पधरावीने सर्व देवो नन्दीश्वरद्वीपे गया अने त्यां अट्ठाई महोत्सव करीने जेम आव्या हता तेम स्व-स्वस्थाने पाछा गया.

ए अवसरे प्रियंवदा नामनी दासीए सिद्धार्थ राजाने पुत्रजन्मनी वधामणी आपी. ते सांभळीने अति प्रसन्न थयेला सिद्धार्थ राजा हर्षथी गद्गद् थया, तेमना शरीरे रोमराजी

विकसित थई अने मुगट सिवाय तेमणे शरीर उपरना घणा मूल्यवाळा सर्व अलंकारो दासीने भेटमां आपी दीधा. तेथी तेनुं पण जन्मदारिद्र अने दासीपणुं दूर थई गयुं.

आ बाजु प्रभुनो जन्म थयो ते रात्रे कुबेरनी आज्ञाथी तिर्यंग्जृम्भक देवोए सिद्धार्थ राजाना भवनमां सोनानी, रुपानी, हीरानी, वस्त्रोनी, आभरणोनी, धान्योनी, पुष्प-पत्रोनी, फळोनी, सुगंधी चूर्णोनी अने वर्णोनी, वगेरे विविध उत्तम वस्तुओनी घणी मोटी वृष्टि करी.

हवे प्रभात थयुं त्यारे राजाए दश दिवस सुधीनो पुत्रनो जन्ममहोत्सव मंडाव्यो. तेमां प्रथम कोटवालने बोलावी बंदीवानोने छोडी मूकाव्या, कारण के-युवराजनो राज्याभिषेक थाय, बीजाना राज्यने जीते के राजपुत्र जन्मे, त्यारे केदीओने छोडवानो राजधर्म छे. कह्युं छे के-

मान-मापां वधारीने सर्व वस्तुओ सोंघी करी; राजमार्गोना मीलनवाळा त्रिकोण मार्गे चोकठां, चौटां, देवकुळो, नाना-मोटा राजमार्गो, नानी शेरीओ, हाटनी श्रेणिओ वगेरे समग्र

स्थानोमांथी कचरो दूर करीने सुगंधी जळ छंटाव्यां; हवेलीओ वगेरे मकानो धोळाव्यां-रंगाव्यां; राजमार्गे बन्ने श्रेणिओमां लोकोने गीत-नाट्यादि जोवा माटे बेसवाना मंचो उपरा उपरी गोठव्यां; विविध चित्रोवाळी रंग-बेरंगी नानी-मोटी अनेक ध्वजाओ अने तोरणो बंधाव्यां; ताजा सुगन्धी विविध जातिना चन्दनना पंचांगुली थापा भींतो वगेरे उपर देवराव्या; घरोमां अने चोकोमां चन्दनना कळशो स्थाप्यां तथा द्वारे द्वारे चन्दन कळशोनां तोरण बंधाव्यां; तेमज सर्वत्र समूहबध्ध पंचवर्णी पुष्पो छंटाव्यां अने पुष्पमाळाओ एवी रीते बंधावी के जाणे समग्र नगरनी पूजा करी होय. वळी कालागरु, कन्द्रूप, तुरुष्क वगेरे विविध धूपो करावीने अने चूर्णो वेरावीने समग्र नगरने सुगंधथी मघमघतुं करी दीधुं. एम नगरशोभा करावीने सर्वत्र नाटको, नृत्यो, वांसना खेलो, दोरना खेलो, मल्लयुद्धो, मुष्टियुद्धो, विदूषकोनां हास्यो वगेरे द्रश्यो शरु कराव्यां; कथाओ, रास-गरबाओ अने बिरुदावलिओ शरु करावी; मंखलोकोना अने भिक्षुकोना खेल शरु कराव्या; वीणाओ, वांसळियो वगेरे विविध वार्जित्रो वगडाव्यां अने ताळीओ पूर्वकनी कथाओ मंडावी. पछी हळ-गाडां

चलाववां, खांडवुं, दळवुं, वगेरे हिंसक प्रवृत्तिओ बंध करावीने सर्वत्र अमारि प्रवर्तावी. एम नगरने महोत्सवमय करावीने राजा परिश्रम शाळामां परिश्रम लई, तैलमर्दन करावी, स्नानमंडपमां आवी स्नान करी, पूर्वे जणाव्या प्रमाणे चन्दनादिनुं विलेपन करी, वस्त्र, अलंकार वगेरे पहेरी सज्ज थया अने शंख, पडह वगेरे विविध वाजिंत्रोना नादथी युक्त मोटी ऋद्धि साथे चतुर्विध विशाळ सैन्य तथा सर्व वाहनोने शणगारी मोटा परिवार अने अंत:पुरथी युक्त राजाए दश दिवसनो मोटो महोत्सव कराव्यो.

वळी राजाए राज्यनां सर्व दाण-कर छोडी दीधां, सर्वनां ऋण पोते चूकावी समग्र नगरने ऋणमुक्त कर्युं, जेने जे जोईए ते विना मूल्ये लेवा-देवानी अने तेनां नाणां भंडारमांथी आपवानी आज्ञा करी, राज्यना दंड माफ कर्या अने राजपुरुषोनो त्रास अटकावी सर्व प्रजाने निर्भय करी. एम ए महोत्सव सर्वने आल्हादक अने दु:ख नाशक बन्यो. वधारे शुं कहीए ? नगरने देवलोक जेवुं बनावी गीत-नाटक वगेरेथी आनंदमां झीलता लोकोने ऐवा निर्भय अने निश्चिंत बनावी दीधा के समग्र प्रजा ते प्रसंगे देवनी जेम दैवी आनंदमां

झीलवा लागी.

श्री आचारांगसूत्रमां कह्युं छे के-प्रभु महावीरनां माता-पिता श्री पार्श्वनाथ भगवानना शासननां श्रावक हतां. तेमणे आ दश दिवसोमां सेंकडो, हजारो, लाखो स्थळे श्री जिनपूजा-भक्ति करी अने बीजाओ द्वारा करावी, आवेलां लाखो वधामणां लीधां तथा सेवको द्वारा लेवराव्यां अने सर्व दिवसोमां दान दीधां तथा सेवको द्वारा देवराव्यां.

तेमां पण पहेले दिवसे महोत्सवनो प्रारंभ कर्यो अने त्रीजा दिवसे चंद्र-सूर्यनुं दर्शन कराव्युं. तेनो विधि एवो छे के-गृहस्थगुरु रुपानी चंद्रनी मूर्ति स्थापीने तेनी पूजा करे, पछी स्नान करावी माता-पुत्रने ज्यारे चन्द्रनो उदय थाय त्यारे चन्द्रनी सामे लावी मंत्र द्वारा चन्द्रनी स्तुति करी पोते आशीर्वाद आपे के-

'आ चन्द्र कुळनी वृद्धि करो !' वगेरे. सूर्यदर्शन माटे पण ए ज विधि समजवो. मात्र सूर्यमूर्ति सुवर्णनी के ताम्रनी करे, पछी सूर्यनी स्तुतिनो पण मंत्र बोले अने आशीर्वाद आपे के-

'जगतनो नेत्र आ सूर्य माता-पुत्र उभयनुं मंगल करो.' पछी माता-पुत्र ते गृहस्थ गुरुने नमस्कार करे. वर्तमानमां तो चन्द्र-सूर्यने स्थाने बाळकने दर्पण देखाडवानो व्यवहार कोई कोई स्थळे छे. छट्ठे दिवसे कुळाचार प्रमाणे छट्ठी जागरण कर्युं.

एम अगियार दिवसो गया पछी जन्म संबंधी अशुचिनुं निवारण थये छते बारमे दिवसे प्रभुना माता-पिताए अशन, पान, खादिम अने स्वादिम-एम चारेय प्रकारनां विविध उत्तम भोजन तैयार कराव्यां अने सर्व मित्रो, ज्ञातिजनो, पोतानो परिवार, स्वजनो, सगां-संबंधीओ अने दास-दासीओ वगेरे सर्वने भोजननुं आमंत्रण कर्युं. पछी स्नान, मंगल वगेरे करीने उत्तम वस्त्रो पहेरी भोजन समये ए सर्वनी साथे पोते मंडपमां बेसी स्वयं भोजन कर्युं अने कराव्युं. एम प्रेमपूर्वक प्रीतिभोजन करी-करावीने निवृत्त थया पछी सौनी साथे पोते बेठकमां बेठा. त्यां पुष्प-वस्त्रादि विविध वस्तुओथी पोते सौनो यथायोग्य सत्कार-सन्मान करीने कह्युं के-'हे देवानुप्रिय सज्जनो ! अमारो आ पुत्र ज्यारथी गर्भमां आव्यो, त्यारथी अमारे त्यां सोनुं, रुपुं, हीरा, माणेक, मोती, प्रवाल, वस्त्र, भूषण, आभरण,

अलंकार, धन, धान्य, कीर्ति, राज्य, प्रजा, सुख, सम्पति वगेरे सर्व वधवा लाग्युं; तेथी अमे संकल्प कर्यो छे के-ज्यारे आ पुत्रनो जन्म थशे, त्यारे अमे तेनुं तेना गुणोने अनुसरतुं यथार्थ 'वर्धमान' एवुं नाम राखीशुं. आजे अमारा ते मनोरथो सफळ थया छे, माटे अमारो पुत्र 'वर्धमान' एवा नामथी प्रसिद्ध थाओ !'-एम कहीने सौनी समक्ष प्रभुनुं 'वधमान' नाम स्थापन कर्युं.

श्रमण प्रभु श्री महावीरदेव काश्यप गोत्री हता. तेओनां त्रण नामो प्रसिद्ध छे. एक माता-पिताए आपेलुं 'वर्धमान' बीजुं तेओनी साथे जन्मेली तप वगेरेनी अतुल शक्तिथी पडेलुं 'श्रमण' अने त्रीजुं भय-भैरवथी पण निर्भय होवाथी देवोए आपेलुं 'महावीर'.

प्रभु जन्मथी मांडी अतुल बळी अने विजळी आदिना अकस्माद्भय वगेरे सर्व भयोथी अने सिंह, सर्प वगेरेना भैरवथी पण सदा निर्भय अने धीर हता. ए बळ अने धैर्य एवुं उत्तम हतुं के-तेना मदथी प्रभु कोईने उपद्रव नहि करता; किन्तु भूख, तृषा वगेरे बावीश परीषहोने अने देवो, तिर्यंचो वगेरेथी कराता सोळ प्रकारना उपसर्गोने क्षमाथी सही

लेता; 'एकरात्रिकी प्रतिमा' वगेरे घोर अभिग्रहोनुं सत्वथी पालन करता अने रति-अरतिना प्रसंगोमां पण हर्ष-विषादथी पर रहेता. एम राग-द्वेषना विजेता अने महा पराक्रमी प्रभुनुं प्रसंग पामीने देवोए 'महावीर' नाम स्थाप्युं. ते अंगे वृध्धवाद एवो छे के-जन्ममहोत्सव पछी बीजना चन्द्रनी जेम अने मेरुमां उगेला कल्पवृक्षना अंकुरानी जेम सुख-शाताथी वृद्धि पामता ज्यारे प्रभु यौवन पाम्या, त्यारे चन्द्रसम प्रसन्न मुख, हाथीना जेवी गम्भीर चाल, राता होठ, श्वेत दंतपंक्ति, श्याम केश, कमळसमा कोमळ हाथ, सुगंधी श्वास, सात हाथ उंची काया, सुवर्ण समान तेजस्वी वर्ण, मेलरहित निर्मळ देह, वगेरे बाह्य सम्पत्तिवाळा थया अने तेओना मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, विपुल अवधिज्ञान, घणा पूर्वभवोनुं स्मरण, आरोग्य, बुध्धि, कान्ति, धैर्य वगेरे अभ्यन्तर गुणो पण खीली उठ्या. एथी सर्व जगतमां श्रेष्ठ तेओ पृथ्वीना तिलकभूत बन्या. एकदा प्रभु कौतुकी न हता, छतां औचित्यना निधि होवाथी सरखी वयना अन्य कुमारोना आग्रहथी तेओनी साथे उद्यानमां क्रिडा करवा गया. त्यां तेओ सघळा साथे वृक्षो उपर चढवा-उतरवारुप 'आमलकी' रमत रमवा लाग्या. ए प्रसंगने

पामीने ईन्द्रे देवोनी सभामां प्रभुना धैर्यगुणनी प्रशंसा करतां कह्युं छे के-'हे देवो ! जुओ, वर्तमानमां मनुष्यलोकमां वर्धमानकुमार बाळ छतां प्रौढ पराक्रमी छे अने ईन्द्रादि देवो पण तेने डराववा असमर्थ छे, वगेरे प्रशंसाने कोई एक अज्ञानी मिथ्यात्वी देव सही शक्यो नहि, तेथी प्रभुने डराववा माटे त्यां आवी तेणे भयंकर सर्पनुं रुप कर्युं. बे चपळ जीव्हाओ, सांबेला जेवी स्थूळ काळी काया, क्रूर द्रष्टि, क्रोधथी धसमसतो फणाटोप, उपर तेजस्वी मणी, वगेरे रुप करीने ते सर्प आमलीना वृक्षने विंटी वळ्यो. तेने जोतां ज सघळा कुमारो नाठा, पण वर्धमानकुमारे निर्भय रीते त्यां जई तेने हाथमां पकडीने दूर फेंक्यो. पुनः सघळा कुमारो त्यां आव्या अने ते देव पण बाळकनुं रुप लई भेगो मळी गयो. पछी दडा-गेडीनी रमत शरु थई. तेमां एवी होड हती के-जे हारे ते जीतनारने खभे उपाडे, तेथी कपटी देवे क्षण पछी कह्युं के-'हुं हार्यो अने वर्धमानकुमार जीत्या.' पछी तो प्रभुने खभे बेसाडी पोते सात ताड जेटलो उंचो थयो अवधिज्ञानथी तेने जाणीने प्रभुए वज्रकठोर हाथनी मृष्ठिथी तेने प्रहार कर्यो. ए प्रहारथी मशकनी जेम शरीर संकोचीने तेणे

ईन्द्रनी प्रशंसाने सत्य मानी, प्रत्यक्ष थई सौनी समक्ष सत्य जाहेर कर्युं अने प्रभुने वारंवार खमावी क्षमा मांगी.

पछी ते देव पगे लागी, वारंवार पोताना अपराधोने खमावी, खरेखर ! ईन्द्रे जेवुं तमारुं धैर्य वर्णव्युं हतुं, तेवा आप 'महा-वीर' छो-एम कही महावीर नाम स्थापीने स्वर्गमां गयो.

वळी प्रभु कंईक न्यून आठ वर्षना हता, त्यारे कुशळ माता-पिता पुत्रने मोहथी घणा मूल्यवान अलंकारो पहेरावीने महोत्सवपूर्वक निशाळे भणाववा माटे लई गयां. ते वेळा अति हरखवाळां माता-पिताए शुभलग्न जोवरावीने घणुं धन खरची महापुरुषने शोभे तेवो मोटो महोत्सव कर्यो. तेमां हाथीओ, घोडाओ, सुवर्णना रत्नजडित हार, बाजुबन्ध, विंटीओ, कुंडळो, कंकणो अने पांच वर्णनां मनोहर उत्तम वस्त्रोथी स्वजनादिनो भक्तिपूर्वक सत्कार कर्यो; पंडितने योग्य विविध वस्त्रो, अलंकारो तथा श्रीफळ वगेरे फळो अने निशाळीआओने आपवा माटे सोपारी, शिंगोडां, खजूर, शर्करा, खांड, चारोळी, पिस्तां, द्राक्ष वगेरे विविध

मेवा तथा मीठां भोजन तैयार कराव्यां. पुस्तक माटेनां सुवर्णनां, रजतनां, अने रत्ननां उपकरणो तथा सुंदर कलमदोत, पाटी वगेरे तैयार कर्युं. सरस्वतीनी पूजा माटे सुवर्णनुं घणां रत्नोथी जडेलुं नवुं आभूषण कराव्युं अने छात्रोने माटे विविध वस्त्रो पण मेळव्यां.

पछी कुलवृद्धाओए प्रभुने स्नान कराव्युं अने गंभीरताना सागर प्रभु ज्ञानी छतां माता-पिताना हर्षने कारणे उचित समजीने मौनपणे सघळी वातमां संमत थया. पछी तो वस्त्रालंकार पहेराव्या, मस्तके श्रेष्ठ छत्र धर्युं, चामर विंझावा लाग्यां अने चतुरंग सैन्यथी परिवरेला प्रभु घेरथी नीकळी अनेक वाजिंत्रोना नाद साथे पंडितना घर पासे आव्या.

आ बाजु पंडित पण राजपुत्रने भणाववा योग्य एवी पर्व दिवसे पहेरवानी उज्वळ धोती, सुवर्णनी जनोई, केसरनां तिलक वगेरे तैयारी करवा लाग्यो. ते वेळा पींपलनुं पान, हाथीना कान, कपटीनुं ध्यान अने राजानुं मान जेम चलायमान थाय, तेम ईन्द्रनुं सिंहासन चलायमान थयुं अने अवधिज्ञाने ईन्द्रे जाण्युं के-प्रभुने भणाववानो प्रयास थाय छे. तेथी आश्चर्य पामी देवोने कह्युं के-'अरे ! आ मोटुं आश्चर्य तो जुवो के-भगवानने पण निशाळे

मूकवानी योजना थई रही छे !' प्रभु तो त्रण ज्ञानथी युक्त होय छे, तेमने भणाववा ए तो आंबाने तोरण बांधवुं, अमृतने मधुर बनाववुं, ब्राह्मीने भणाववी, चन्द्रने उजळो करवो अने पवित्रता माटे सुवर्णने सोनानुं पाणी छांटवुं, एना जेवुं अज्ञान छे. प्रभुनी आगळ वाणीनो विलास, ते माता समक्ष मामानुं वर्णन, लंकानी प्रजा समक्ष समुद्र लहेरोनुं वर्णन के लवणसमुद्रने लूणनुं दान करवा जेवुं छे. प्रभु तो भण्या विना विद्वान, द्रव्य विना पण परम ऐश्वर्यशाळी अने अलंकारो विना पण सौभागी होय छे, वगेरे कहीने ईन्द्र ब्राह्मणनुं रुप करी शीघ्र प्रभु हता त्यां आव्या, पंडित माटे रचेला आसने प्रभुने विराजमान कर्या अने पंडितने बोलाव्या. पछी पंडितना मनमां जन्मथी जे जे संशयो हता, ते ते सर्व ईन्द्रे ज्ञानथी जाणीने प्रभुने पूछ्या अने 'आ बाळक आवा प्रश्नोना उत्तर शी रीते आपशे ?'-एम समजी, सांभळवा उत्सूक बनेला-सौनी समक्ष प्रभुए ते प्रत्येक संशयोनां समाधान कर्यां. आ प्रश्नोत्तरीनुं 'जैनेन्द्र' नामे व्याकरण प्रसिद्ध थयुं. पंडिते पण विचार्युं के-'जन्मथी आज सुधीना मारा जे संशयो कोई टाळी न शक्युं, ते सघळां आ बाळके चूर्या.

जुओ तो खरा के-आ केवुं आश्चर्य छे ?'-एम कही ते प्रभुने पगे लागीने उभो रह्यो अने विचारवा लाग्यो के-बाळक एवा वर्धमानकुमारे आ विद्या क्यांथी मेळवी ? आटलुं ज्ञान छतां तेनी गंभीरता तो जुओ ! अथवा महापुरुषोने आवुं गांभीर्य युक्त ज छे. जोईए पण छीए के-जे वादळो गाजे छे ते वरसतां नथी अने जे वरसे ते गाजतां नथी. हलको मनुष्य बोले घणुं, पण करे कंई नहि. उत्तम पुरुषो बोलता नथी पण मोटां कार्यो करे छे. सुवर्ण उत्तर छे, तो तेनो ध्वनि कांसा जेवो होतो नथी एम प्रायः असार वस्तुओनो ज आडम्बर मोटो होय छे. कह्युं छे के-

सघळां लोको पण प्रभुना ज्ञाननी परीक्षा करीने हर्ष साथे आश्चर्य पाम्या. पछी ईन्द्र बोल्या के-

त्रणेय भुवनने शोभावनारा आ प्रभुना केटला गुणो कहुं ? ए मात्र बाळक नथी, सकळ शास्त्रोना ज्ञाता छे, वगेरे कह्युं. पछी सौ स्व-स्व स्थाने गया.

यौवन वये माता-पिताए स्नेहरागथी प्रभुने नरवर्म राजानी पुत्री यशोदा साथे परणाव्या

अने पूर्वे बांधेला भोगकर्मने खपाववा विषयसुख भोगवतां प्रभुने एक पुत्री थई. तेने प्रवर राजाना पुत्र जमाली साथे परणावी अने तेने पण एक पुत्री थई.

प्रभुना पिता काश्यपगोत्री हता. तेमना १-सिद्धार्थ, २-श्रेयांस, ३-यशस्वी-एम त्रण नाम हतां. माता वासिष्ठगोत्री हतां अने तेमनां १-त्रिशला, २-विदेहदिन्ना, ३-प्रीतिकारिणी-एम त्रण नाम हतां. प्रभुना काकानुं नाम सुपार्श्व, भाईनुं नंदिवर्धन, बहेननुं सुदर्शना अने भार्यानुं यशोदा-एम नामो हतां. भार्या कौडिन्यगोत्री हती. पुत्री काश्यपगोत्री हती अने तेना अणोजा, प्रियदर्शना एम बे नाम हतां. दौहित्री काश्यपगोत्री हती अने तेनां शेषवती, यशस्वती-एम बे नाम हतां.

प्रभु सर्व कळामां कुशळ, द्रढ प्रतिज्ञापालक, रुपवंत, सरळ, विनीत अने विशिष्ट सर्व गुणोथी प्रसिद्ध हता; कुळमां चंद्रतुल्य हता; पहेलुं संघयण अने पहेलुं संस्थान होवाथी शरीर घणुं श्रेष्ठ हतुं; तेमज घरवासमां कोमळ छतां दीक्षामां कठोर-सात्विक हता.. एवा प्रभुने अट्ठावीश वर्ष थयां त्यारे माता-पिता मरीने श्री आवश्यकना मते चोथा ने श्री

आचारांगना मते बारमा स्वर्गमां गयां. ते पछी पोते गर्भमां करेलो अभिग्रह पूर्ण थवाथी दीक्षा माटे मोटा भाईनी अनुमति मागी. एक बाजु माता-पितानो स्वर्गवास अने बीजी बाजु दीक्षार्थी प्रभुनो विरह, बन्ने दुःखथी पीडातां नंदिवर्धन राजाए प्रभुने बे वर्ष घरमां रहेवा घणो आग्रह कर्यो. दाक्षिण्यना भंडार प्रभुए पण भाई प्रत्येनी भक्तिथी ए स्वीकार्युं अने कह्युं के-'मारा उद्देशथी लेश पण आरम्भ करवो नहि, हुं प्रासुक आहार-पाणीथी निर्वाह करीश.' नंदिवर्धने ते कबूल राख्युं अने गृहस्थवेषमां छतां सचित आहारादिने सर्वथा तजीने प्रभु बे वर्ष अधिक घरमां रह्यां. ते दिवसथी अचित पाणीथी पण संपूर्ण स्नान कर्युं नहि अने ब्रह्मचर्य जाववीज पाळ्युं. मात्र कल्प होवाथी दीक्षाप्रसंगे एकवार सचित्त जळथी स्नान कर्युं. पछी 'भविष्यमां चक्रवर्ती थशे त्यारे सेवानो बदलो आपशे.'-एवी आशाए सेवा करता श्रेणिक चंडप्रद्योत वगेरे राजपुत्रो पण स्व-स्वस्थाने चाल्या गया. सांसारिक सुखना रसिया प्रायः प्रभुनी सेवामां टकी शकता नथी.

प्रतिज्ञा पूर्ण थई अने पांचमा ब्रह्मदेवलोकथी लोकान्तिक देवो पण आव्या. आ देवो

एकावतारी होवाथी लोकान्तिक कहेवाय छे. तेओनी सारस्वत, आदित्य, वह्नी, वरुण, गर्दतोय, त्रूटित, अव्याबाध, आग्येन अने रिष्ठ ए नव निकाय कही छे. जो के प्रभु स्वयं कर्मना जाण होय छे, छतां काळज्ञापकनी जेम आ देवोनो आचार छे के-तेओ आवीने प्रभुने दीक्षा माटे प्रार्थना करे. तेथी प्रकुर, ईष्ट, कल्याणप्रद वगेरे उत्तम वाणीथी निरंतर 'जय पामो, समृद्धि पामो', वगेरे स्तुति करवापूर्वक तेओए प्रभुने दीक्षा लेवा अने केवळज्ञान पामी सर्वजनोना हितकर-कल्याणप्रद एवा धर्मतीर्थने प्रवर्तावा प्रार्थना करी. प्रभुए पण पोताना विशिष्ट ज्ञानथी 'दीक्षा लेवानो काळ पाक्यो छे.'-एम जाणी, सुवर्ण, चांदी, झवेरात, धन, धान्य, राज्य, सैन्य, वाहनो, भंडार, कोठारो, नगर अने अंत:पुर वगेरे सर्वनुं ममत्व तजी दीधुं; घणुं दान करीने सर्वत्र तेने प्रसिद्ध कर्युं अने याचकोने, स्वजन-संबंधीओने, नोकर-चाकरोने तथा गोत्रीओ वगेरे सौने यथायोग्य जे जेटलुं जेने आपवायोग्य हतुं ते रीते तेओने आपी प्रसन्न कर्या.

एक वर्ष सुधी सूर्योदयथी मध्याह्न सुधी इच्छा होय ते लई जाओ. एवी उद्घोषणा

पूर्वक जे जेटलुं मागे तेटलुं आपता प्रभुए प्रतिदिन एक क्रोड अने आठ लाख सोनैयानुं दान कर्युं. एम एक वर्षमां त्रण अबज, अट्ठासी क्रोड, ऐंशी लाख सोनैया आप्या. कह्युं पण छे के-

आ सघळुं धन प्रभुना पुण्यातिशयथी इन्द्र जे जे ज्यां मालिक के रक्षक विनानुं पड्युं रह्युं होय, ते ते देवो द्वारा मंगावीने प्रभुने घेर पहोंचाडे छे. प्रभुना दानने लेनारा केटलाको तो एवा श्रीमंत बनी गया के-ज्यारे तेओ घोडे चढीने घेर गया, त्यारे तेओनी स्त्रीओ ओळखी शकी पण नहि अने घरमां पेसवुं पण मुश्केल थयुं. अर्थात् प्रभुए वार्षिक दानथी जगतनी निर्धनता अने दरिद्रतानो नाश कर्यो.

बे वर्ष पूर्ण थतां प्रभुए दीक्षा माटे नंदिवर्धन राजानी अनुमति मागी. तेओए संमत थई दीक्षामहोत्सव मांड्यो, समग्र नगरने ध्वजा, तोरणो वगेरेथी देवलोक जेवुं शणगार्युं. स्वर्गमांथी ईन्द्रो अने देवो पण आव्या अने जन्माभिषेक माटे कर्या हता तेवा आठ जातिना कळशो तथा बीजी पण सर्व सामग्री तैयार करी-करावी. ते कळशोथी प्रभुने ईन्द्रोए

अभिषेक कर्यो, पछी दैवीमहिमाथी ते कळशो नन्दिराजाना कळशोमां पेठा अने प्रभुने पूर्वाभिमुख बेसाडीने क्षिरोदधि आदिनां उत्तम जळ वगेरेथी नन्दिराजाए पण अभिषेक कर्यो. ते वेळा ईन्द्रादि देवो चामरो, दर्पणो, वगेरे लईने 'जय-जय' शब्द बोलता प्रभुनी सामे उभा रह्या. पछी प्रभुने सुगंधी कोमळ वस्त्रथी शरीर लूछीने लाखेणुं श्वेत अधोवस्त्र पहेराव्युं, चंदनादिनुं विलेपन कर्युं, कल्पवृक्षोना पुष्पोनी मोटी माळा पहेरावी अने रत्नादिथी जडेलो मूल्यवान मुगट, कुंडळ, हार, कडां वगेरे अलंकारो पहेराव्या. पछी नंदिराजाए करावेली पचास धनुष्य लांबी, पचीस धनुष्य पहोळी अने छत्रीस धनुष्य उंची सुवर्णनी रत्नजडित चन्द्रप्रभा पालखीमां विशुद्ध लेश्यावंत वैरागी प्रभुने पूर्वाभिमुख बेसाडया. पछी दैवी अतिशयथी ते पालखीमां ईन्द्रोए करेली पालखी पेठी, तेथी ते घणी ज सुशोभित बनी गई. एक सुंदर वेशधारी युवती स्त्रीए प्रभुनी पाछळ छत्र धर्युं, एक ईशानखूणे जळपूर्ण कळश लईने बेठी अने एक अग्निखूणे बेसी मणिमय वींझणो वींझवा लागी. एम सौ भद्रासन उपर बेठां. सघळां देवो, ईन्द्रो, नन्दिराजा अने बीजा पण सर्व मनुष्योए

विरह वेदनाथी भरेला हैये प्रभु वैराग्य, औचित्य, भक्ति, वात्सल्य, करुणा वगेरे गुणोने घणी रीते स्तव्या. ज्यारे राजानी आज्ञाथी राजपुरुषो पालखी उपाडवा लाग्या, त्यारे सौधर्म ईन्द्रे उपरनी जमणी बाहा, ईशान ईन्द्रे उपरनी डाबी बाहा, चमरेन्द्रे नीचेनी जमणी बाहा अने वळी ईन्द्रे नीचेनी डाबी वाहा पकडीने पालखी उपाडी. पछी चारेय निकायना शेष ईन्द्रोए पुष्पवृष्टि अने दुन्दुभिनो नाद कर्यो, ज्यारे पालखी उपाडी, त्यारे सौधर्म अने ईशान ईन्द्र पालखी छोडीने चामर वींझवा लाग्या. ज्यारे देवो सघळा आकाशमार्गे चाल्या, त्यारे तेओना पंचवर्णथी आकाश जाणे श्वेतकमळोथी शोभतुं सरोवर, रातां पुष्पोवाळुं अळशीनुं वन, पीळी कणेरनुं वन, लीलवर्णु चम्पानुं वन के श्याम पुष्पोवाळुं तलनुं वन होय, तेम शोभवा लाग्युं. भम्भा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि, शंख वगेरे मंगळ वाजिंत्रोनो नाद छेक आकाश सुधी पहोंच्यो. पालखीनी आगळ रत्नोथी रचेलां अष्टमंगल, पछी क्रमशः जळपूर्ण कळश, भृंगार, चामर, मोटा ध्वज, छत्र, पादपीठ सहित मणिमय सिंहासन, स्वररहित एक सो आठ हाथीओ, तेवा तेटला घोडाओ, तेटला शस्त्रोथी भरेला घंटाथी रणकता ध्वजसहित रथो अने

ते पछी तेटला रुपवंत श्रेष्ठ पुरुषो चाल्या. पछी क्रमशः घोडा, हाथी, रथ अने पायदल-ए चतुर्विध सैन्य, नानी हजार ध्वजाओथी शोभतो ईन्द्र ध्वज, खड्गधारीओ, भालावाळा, पीठ-पाटलाधारी, विदूषको, नृत्यकारो, छडीधरो अने 'जय-जय' बोलनारा चाल्या. पछी उग्र, भोग, राजन्य अने क्षत्रियकुळना मनुष्यो, कोटपालको, मडम्बपतिओ, कुटुम्बना वडेराओ, शेठीआओ, सार्थवाडो अने देव-देवीओ, ए सघळा क्रमशः प्रभुनी आगळ चाल्या.

एम प्रभु नगरनी मध्य शेरीओ उपर थईने ज्यारे दीक्षा लेवा माटे चाल्या, त्यारे मोटो जनसमुह तेओने जोईने अति हर्ष पाम्यो, सौ जय-जय बोलवा लाग्या अने स्त्रीओ तो वाजिंत्रना नादथी भान भूलीने दोडी आवी. तेमांनी कोई स्त्रीए नेत्रोमां काजलने बदले कस्तुरी आंजी, तो कोई स्त्रीए गळे झांझर अने पगमां हार पहेर्यां; कोई स्त्रीए कंदोरो गळे बांधी हारनो कंदोरो कर्यो, तो कोई स्त्रीए अळतो शरीरे अने चंदन पगे चोपड्युं, कोई स्त्री अडधा स्नाने आवी, तो कोई स्त्री पाणी टपकता छूटा केशे आवी, केटलीक स्त्रीओनां वस्त्रो खसी गयां, तो कोई स्त्री पूरां वस्त्रो पहेर्या विना ज हाथमां नाडुं पकडीने दोडी

आवी, ज्यारे कोई स्त्री तो बाळकने बदले बिलाडुं तेडीने आवी. छतां आश्चर्य हतुं के- सौ प्रभुना दर्शनमां लीन होवाथी एकेय स्त्री लज्जा न पामी. प्रभुदर्शनार्थे आवेली केटलीक चतुर स्त्रीओ प्रभुनुं रुप, सत्व, सौभाग्य, लावण्य वगेरे जोईने विधाताने धन्यवाद देवा लागी. प्रभुदर्शनमां लीन होवाथी केटलीक स्त्रीओने रस्ते खसी पडेलां आभरणोनुं पण भान न रह्युं. केटलीक स्त्रीओए प्रभुने मोतीओथी वधाव्या, कोई स्त्री मंगल गावा लागी, तो कोई स्त्री हर्षथी नाचवा लागी. कह्युं छे के-

स्त्रीने कलह, काजळ अने सिन्दुर प्रिय होय छे अने दूध, जमाई तथा वाजिंत्रो तो अति प्रिय होय छे. ए रीते मार्गे पसार थता प्रभुना रुपने जोवामां लाखो मनुष्यो लीन हतां, हजारो मुखडां स्तुति करवा लाग्यां, हजारो हैयां जय-जय नुं ध्यान करतां, प्रभुना कल्याणने इच्छतां, सेवाना मनोरथ करवा लाग्यां, तथा 'आवा कान्ति, रुप तथा सौभाग्यना निधि प्रभु स्वामी तरीके मळो.'-एवी प्रार्थना करवा लाग्यां. 'आ प्रभु-आ प्रभु'-एम देखाडता हजारो लोकोए अंगुलीओ उंची करी अने हजारो मनुष्योए बे हाथथी अंजलि

करी प्रभुने मस्तक नमाव्यां. प्रभुए पण जमणा हाथे ए नमस्कारने झीली औचित्य साचव्युं. एम हजारो हवेलीओ आगळ थईने अगणित नर-नारीओ अने देव-देवीओथी परिवरेला प्रभु सर्व प्रकारनी सर्वोत्तम शोभासहित ज्यारे दीक्षा लेवा चाल्या, त्यारे कुळवृद्धाओ वगेरे स्वजनोए 'जय जय नंदा, जय जय भद्दा'-एम कही जय अने कल्याणना आशीर्वाद आप्या अने कह्युं के 'हे वीर ! अखंड ज्ञानादिथी ईन्द्रोनो जय करजो, स्वीकारेला चारित्रने अखंड पाळजो, विघ्नोने जीतीने संयमने सिद्ध करजो,द्विविध तापथी राग-द्वेषनो निग्रह करजो, धैर्य अने पराक्रमथी त्रण लोकरुप युद्धभूमिमां शुकल ध्यानथी आठेय कर्मोरुप शत्रुओने चूरी विजय ध्वज फरकावजो, परीषहोने जीती मोक्षना उपायोथी अनुत्तर केवळ ज्ञान-दर्शनने प्रगटावी मोक्षपदने वरजो; हे क्षत्रिय शिरोमणि ! तमारो सघळो छद्मस्थकाळ परीषहोनो जय करवामां सफळ थजो, भय-भैरवोने क्षमाथी सहजो अने तमारो धर्म निर्विघ्न बनजो.' ईत्यादि विविध आशीर्वाद लेता प्रभु क्रमशः उद्यानमां पहोंच्या.

मागशर वदि दशमीए ज्ञातखंड नामे उद्यानमां आवी, पालखीने अशोकवृक्ष नीचे

मूकावी अने प्रभु नीचे उतर्या. पछी प्रभुए आभरणो, अलंकारो, पुष्पो वगेरे स्वयं उतार्युं, आभरणो हंस जेवा उज्वळ रेशमी वस्त्रमां लईने कुळवृद्धाओ हितशिक्षा आपवा लागी के- 'हे पुत्र ! तमे ईक्ष्वाकुळ अने श्रेष्ठ काश्यप गोत्रमां जन्म्या छो, क्षत्रिय कुळमां चंद्रसमा हे पुत्र ! तमे जातिवंत क्षत्रिय सिद्धार्थ अने त्रिशलाना संतान छो, ईन्द्रो अने नरेन्द्रो पण तमारी कीर्तिने गाय छे, माटे तमारी ए उत्तमताने कलंक न लागे तेम शूरवीर बनजो, मोटाओनुं आलंब लेजो, खड्गधारा जेवां महाव्रतोने पाळवा संपूर्ण पराक्रम दाखवजो, आ विषयमां लेश पण प्रमाद करणीय नथी.' वगेरे कहीने प्रभुथी थोडे दूर उभा रह्यां. त्यारे ईन्द्रे शुभ भावथी लक्षमूल्य एक देवदुष्य वस्त्र प्रभुना खभे पग सुधी लांबुं स्थाप्युं. पछी प्रभुए श्री ऋषभ प्रभु चार हजार साथे, श्री मल्ली अने श्री पार्श्व प्रभु त्रण सो साथे, श्री वासुपूज्यजी छ सो साथे अने शेष तीर्थंकरो एक हजार साथे दीक्षित थया तेम नहि, पण एकाकी, कोईनी सहाय विना चउविहार छट्ठ करी बीजा उपवासे, चढती लेश्याए, द्रव्यथी पांच मुष्ठिथी मस्तक अने दाढी-मूछना सघळा केशनो तथा भवथी क्रोध, मान वगेरे

अंतरंग शत्रुओनो लोच कर्यो. पछी ईन्द्रे सघळा कोलाहल सहित वाजिंत्रो शान्त कर्या. त्यारे प्रभु, दिवसनो छेल्लो प्रहर शरु थतां, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चन्द्रयोग होते छते स्वमुखे 'नमो सिद्धाणं' कही 'भंते !' पद बोलवानो कल्प नहि होवाथी 'करेमि सामाईअं, जोगं पच्चखामि' वगेरे सामायिक सूत्र बोलीने घर छोडीने साधु थया. ते ज समये प्रभुने चोथुं मन:पर्यवज्ञान प्रगट्युं.

पछी चार ज्ञानवाळा प्रभु महावीरे बंधुवर्गनी अनुमति लई विहार करवाने प्रस्थान कर्युं. बंधुवर्ग पण प्रभु द्रष्टिगोचर त्यां सुधी तेओनी पाछळ नीरखी रह्यो. तेओ बोलवा लाग्या के ''हे वीर ! तमारा विना अमने घर पण हवे शून्य अरण्य जेवुं लागशे !'' त्यां अमाराथी शी रीते रहेवाशे ? हे प्रभु ! तमारा विना अमने वार्तालापनो आनंद क्यां मळशे? हवे अमे कोनी साथे बेसीने भोजन करीशुं ? हे आर्य ! दरेक कार्यमां अमे तमने वीर वीर कहीने बोलावता, अने तमारां दर्शन मात्रथी ज अमने केटलो बधो आनंद तथा प्रेमभाव उत्पन्न थतो ? आजे अमे आश्रय वगरना बनी गया छीए, हवे अमने कोण आश्रय

आपशे ? हे बांधव ! अमारी आंखोने अमृतांजन जेवुं अति प्रिय दर्शन हवे अमोने फरी क्यारे थशे ? तमारुं चित्त तो रागद्वेष रहित छे, तो पण कोई वखत अमोने याद करजो!'' आ प्रमाणे बोलतो, आंखमांथी आंसु पाडतो बंधुवर्ग निस्तेज मुखे पोताना घेर गयो.

प्रभुए दीक्षा लीधी ते वखते ईन्द्रादि देवोए गोशीर्षचंदन वगेरे सुगंधी पदार्थथी तेमज पुष्पो वडे पूजा करी हती, तेनी सुगंधी प्रभुना शरीर पर चार महिनाथी पण वधारे वखत रही; ते पदार्थोनी अलौकिक सुगंधीने लीधे दूरदूरथी खेंचाई आवता भमरा प्रभुने डंख देवा लाग्या. केटलाक युवानो प्रभु पासे सुगंधमय पदार्थनी याचना करवा लाग्या; परंतु प्रभुने मौन जोई कोपेला केटलाक युवानो प्रभुने उपसर्ग करवा लाग्या. केटलीक स्त्रीओ प्रभुनुं अद्‌भुत रुप अने सुगंधीवाळुं शरीर जोई भोग प्रार्थनादि अनुकूळ उपसर्गो करवा लागी. प्रभु तो मेरु पर्वतनी माफक अडग रही, समभावे ए वेदनाओ सहन करता विहार करवा लाग्या. ए रीते विहार करता प्रभु बे घडी दिवस बाकी रह्यो त्यारे कुमार नामना गाममां पहोंच्या अने त्यां रात्रिए काउसग्गमां रह्या.

प्रभु त्यां पहोंच्या ते वखते कोई एक गोवाळीओ, आखो दिवस बळदीया पासे हळ खेंचावी, संध्याकाळे प्रभु पासे मूकी, गायो दहोवा माटे पोताना घेर गयो; पेला बळदीया चरता चरता दूर जंगलमां चाल्या गया. गोवाळ गायो दोहीने पाछो आव्यो त्यारे प्रभुने पूछवा लाग्यो के-"हे आर्य ! मारा बळद क्यां छे ?" गोवाळु विचार्युं के बळदना संबंधमां ऐने खबर नहि हाय, एटले पोते बळदनी शोध करवा जंगलमां नीकळी पड्यो. बळदीया पण रात्रे पोतानी मेळे ज फरता फरता त्यां आवी चड्या. गोवाळ पाछो फरतो फरतो त्यां आव्यो ने ते वखते बळदोने त्यां बेठेला जोईने विचारवा लाग्यो के-"आने खबर हती छतां एणे मने वात न कही अने मने भटकवा दीधो." ए प्रमाणे क्रोधे भराईने बळदनी राश लईने प्रभुने मारवा दोड्यो. ए वृत्तांत शक्रेंद्रना जाणवामां अवधिज्ञानथी आवतां गोवाळीयाने शक्रेंद्रे शिखामण आपी. पछी प्रभुने वंदन करी विनंति करी के-"हे प्रभु ! आपने बार वर्ष सुधीमां घणा उपसृग थवाना छे, माटे आप जो आज्ञा आपो तो हुं तेटलो वखत आपनी सेवामां हाजर रहुं. पछी काउसग्ग पाळी प्रभु बोल्या के-"हे

देवेन्द्र ! एवुं कदापि थयुं नथी, थतुं नथी अने थाय पण नहि के तीर्थंकरो कोईपण देवेन्द्र के असुरेन्द्रनी सहायथी केवळज्ञान प्राप्त करे, तेओ तो पोताना पराक्रमथी ज केवळज्ञान प्राप्त करे.'' पछी शकेंद्र पण प्रभुने कोई पण ठेकाणे मरणांत उपसर्ग उपस्थित थाय तेवे प्रसंगे ते अटकाववा माटे, व्यंतर जातिमां उत्पन्न थयेला, प्रभुनी माशीना पुत्र सिद्धार्थ नामना व्यंतरदेवने प्रभुनी पासे मूकतो गयो. त्यांथी विहार करी प्रभु कोल्लाकसंनिवेशमां गया. त्यां सपात्र धर्म प्ररुपवानी इच्छाथी, प्रभुए बहुल नामना ब्राह्मणना घेर प्रथम पारणुं ते गृहस्थना पात्रमां परमान्न-खीरथी कर्युं. ते वखते आकाशमां देवोए दुंदुभिना नाद कर्या, वस्त्र, सुगंधी जळ अने पुष्पोनी वृष्टि थई तेम ज साडाबार करोड सोनैयानी वृष्टि थई. देवोए 'अहो दानं ! अहो दानं !' ए प्रकारनी उद्घोषणा करी, ए रीते पांच दिव्यो प्रगट थयां.

त्यांथी आगळ विहार करता करता प्रभु मोराक नामना संनिवेशमां दूईज्जंत तापसना आश्रमे पहोंच्या. आ आश्रमनो कुलपति सिद्धार्थ राजानो मित्र होवाथी, ते मळवा माटे,

प्रभु पासे आव्यो; प्रभुए पण पूर्वना अभ्यासथी तेने मळवा माटे हाथ लांबा कर्या. कुलपतिनी प्रार्थनाथी त्यां एक रात्रि रह्या. सवारमां विहार करवा तैयार थया एटले कुलपतिए कह्युं के-"आप आ एकांत स्थळमां चातुर्मास करो तो ठीक." आठ महिना बीजी जग्याए विहार करीने, प्रभु पाछा वर्षाऋतु गाळवा माटे तेज आश्रमे आव्या. कुलपतिए प्रभुने रहेवा माटे एक घासनी झुंपडी आपी. त्यां जंगलमां बीजी जग्याए घास नहि होवाथी भूखी गायो तापसोनी झुंपडीओनुं घास खावा दोडी आवती, पण तापसो लाकडी मारी गायोने हांकी काढता. तापसोए हांकी काढेली गायो प्रभुवाळी झुंपडीनुं घास नि:शंकपणे खावा लागी. पछी ते झुंपडीना मालिके कुलपति आगळ जई ते विषे फरियाद करी. कुलपतिए आवीने कह्युं के-"हे वर्धमान ! पक्षीओ पण पोतपोताना माळानुं रक्षण करे छे अने तमे तो राजपुत्र होवा छतां पण पोताना आश्रयस्थाननुं रक्षण नथी करी शकता?" प्रभुए विचार्युं के "जो हवे हुं अहीं वधारे वखत रहीश तो आ तापसोनी अप्रीतिनो पार नहि रहे." ए प्रमाणे चींतवीने चोमासामां-अषाढ सुदी पूर्णिमाथी पंदर

दिवस वीती गया बाद तेमणे अस्थिक गाम तरफ विहार कर्यो. अने तेओए (१) ज्यां अप्रिती थाय ते घेर वास न करवो, (२) हंमेशा काउसग्गमां ज रहेवुं, (३) गृहस्थनो विनय न करवो, (४) छद्मस्थ अवस्थामां मौनपणे ज रहेवुं, अने (५) हाथमां ज भोजन करवुं. आ पांच अभिग्रह ते वखते ग्रहण कर्यां.

श्रमण भगवान महावीर एक वरस उपरांत एक महिना सुधी यावत् चीवरधारी एटले कपडुं धारण करनारा हता अने त्यार पछी अचेलक एटले कपडां वगर थया तथा करपात्री थया.

प्रभुने दीक्षा लीधा पछी एक वरस अने एक महिनाथी कांईक अधिक समय वीती गयो. एक वखते तेओ दक्षिणवाचाल नामना संनिवेशनी नजीकमां सुवर्णवालुका नामनी नदीना कांठे आव्या. त्यां चालतां चालतां देवदूष्यनो अडधो भाग कांटामां भराई जवाथी पडी गयो. प्रभुए एकवार ते पडी गयेला वस्त्र तरफ सिंहावलोकननी जेम द्रष्टिथी जोयुं अने आगळ चाल्या. आ बाबतमां केटलाक कहे छे के प्रभुए वस्त्रनी ममताने लीधे पाछुं

वाळीने जोयुं अने आगळ चाल्या. आ बाबतमां केटलाक कहे छे के प्रभुए वस्त्रनी ममताने लीधे पाछुं वाळीने जोयुं अने केटलाक कहे छे के ते वस्त्र स्थाने पड्युं के अस्थाने ते जोया सिवाय प्रभुनो बीजो कोई उद्देश न हतो; केटलाक कहे छे के अनायासे ज प्रभुथी पाछुं जोवाई गयुं, वळी केटलाक तो एम पण कहे छे के मारा शिष्योने वस्त्र-पात्र सुलभ थशे के दुल्भ तेनो निर्णय करवा पूरतो ज प्रभुए द्रष्टिपात कर्यो हतो. वृद्धो एवो अभिप्राय धरावे छे के, ते पडी गयेला वस्त्र उपरथी पोतानुं शासन केवुं थशे ते वीचारवा तेमने पाछुं वाळीने जोएलुं. वस्त्र कांटामां भराई गयेलुं जोयुं ते उपरथी प्रभुए निर्णय कर्यो के मारुं शासन घणां कंटकवाळुं थशे. प्रभु निर्लोभी होवाथी, पडी गयेला वस्त्रनो अडधो भाग तेमणे पाछो न लीधो. परंतु प्रभुना पिताना मित्र सोम नामना ब्राह्मणे ते उपाडी लीधुं अने त्यांथी चाल्यो गयो. पहेलां प्रभुए तेमांनुं अडधुं वस्त्र तेने ज आपेलुं हतुं तेनो वृत्तांत आ प्रमाणे छे.

जे वखते प्रभु संवत्सरी दान आपी रह्या हता. ते वखते एक दरिद्र सोम नामनो

ब्राह्मण धन कमाया माटे परदेश गयो हतो. पोते कमनशीब होवाथी परदेशमांथी पण खाली हाथे ज पाछो फर्यो. ते वखते तेनी पत्नी तेने कहेवा लागी के-'अरे निर्भाग्य शिरोमणि ! ज्यारे प्रभु श्री वर्धमान स्वामीए सुवर्णनो वरसाद वरसाव्यो त्यारे तमे परदेश गया हता, अने हालमां गया हता तेवा ने तेवा ज निर्धन पाछा घेर आव्या. जाओ अहिंथी दूर खसो, हुं तमारुं मों पण जोवा मागती नथी ! हजु पण मारुं कह्युं मानी जंगल कल्पवृक्ष समान श्री वर्धमान पासे जशो तो ते दयाळु अने दानवीर तमारुं दारिद्रय दूर कर्या विना नहि रहे,' कारण के-''जेमणे पहेलां दान आप्या होय छे, तेओ फरीथी पण आपी शके छे; नदी सूकाई गएली होय तो पण, खोदवाथी जरुर पाणीनी जरुरियातवाळाने पाणी मळे छे.''

पोतानी स्त्रीनां वचनो सांभळी, पेलो ब्राह्मण प्रभुनी पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के ''हे प्रभु ! आप तो जगतना उपकारी छो, आपे तो वार्षिक दान आपी, जगतनुं दारिद्रय दूर कर्युं, पण हुं ज एक अभागीयो के मने ते वखते परदेशमां जवानुं सूझ्युं. हे

परदुःखभंजक ! परदेशमां आटलुं बधुं भमवा छतां पण मारुं नसीब न फर्युं, जेवो गयो हतो तेवो ज पाछो फर्यो. हे कृपाळु ! मारी जेवा पुण्यहीन, निराश्रयी अने निर्धन, आप जेवा जगतने वांछित आपनारा पुरुषने शरणे न आवे तो बीजे क्यां जाय ? दाननी मोटी नदी वहेवडावनार आपने मारा जेवा गरीबनुं दारिद्रय दूर करवुं, एमां ते शी मोटी वात हतीं ? जेणे आखा पृथ्वीतलने जळथी भरी दीधुं होय एवा मेघने एक तुंबडुं भरवुं होय तो कांई प्रयत्न करवो पडे खरो ?''

आ प्रमाणे याचना करता ते ब्राह्मणने, करुणावाळा प्रभुए ते वखते पोतानी पासे बीजी कोई किंमती वस्तु नहि होवाथी, देवदूष्य वस्त्रनो अडधो भाग आप्यो, अने बाकीनो अडधो भाग पोताना खभा उपर मूक्यो. केटलाकना मते, प्रभुने जेनी जरुर न हती तेवा वस्त्रनो अर्धभाग ज आप्यो, ते प्रभुनी संततिमां थनारी वस्त्र-पात्रनी मूर्च्छा ज सूचवे छे. केटलाकना मते प्रभु पोते प्रथम ब्राह्मणकुलमां आव्या हता तेना संस्कार ज आ सूचवे छे.

पेलो ब्राह्मण ते वस्त्रनो अडधो भाग लईने राजी थतो थतो पोताना गामे पहोंच्यो. तेणे ते देवदूष्य वस्त्रना छेडा बंधाववा एक तूणनारने बताव्युं. अने ते वस्त्रनो सघळो वृत्तांत कही संभळाव्यो. तूणनारे कह्युं -"हे सोम ! तुं प्रभु पासे जा, तेओ निर्लोभी छे अने करुणावाळा छे एटले तने बीजो अडधो भाग पण आपी देशे. हुं ते बंने टूकडा एवी रीते मेळवी आपीश के जेथी जरा पण सांधो नहि देखाय अने ते वेचवाथी ओछामां ओछा एक लाख सोनैया आपणने तेना उपजशे, ते आपणे बंने सरखा भागे वहेंची लईशुं."

ब्राह्मण पण फरीथी प्रभु पासे पहोंची गयो. परंतु शरमने लीधे ते बोली शक्यो नहि. ते प्रभुनी पाछळ पाछळ, आशामांने आशामां एक वरस सुधी भटकतो रह्यो. पछी ज्यारे वस्त्र कांटामां भराईने पडी गयुं त्यारे तेणे ते लई लीधुं.

आ प्रमाणे प्रभुए सवस्त्र धर्मनी प्ररुपणा करवा माटे एक वरस अने एक महिनाथी कांईक अधिक समय सुधी वस्त्र स्वीकार्युं, अने सपात्र धर्म स्थापवा माटे प्रथम पारणुं पात्र वडे कर्युं. त्यारपछी जीवन पर्यंत प्रभु अचेलक अने करपात्री ज रह्या.

आ प्रमाणे विहार करता करता भगवान एक वखत गंगा नदीना किनारे आव्या, त्यां चालतां झीणी माटीना कादवमां प्रभुना पडेलां पगलांनी पंक्तिने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश वगेरे उत्तम लक्षणोने प्रतिबिंबित थयेलां जोईने पुष्प नामनो एक सामुद्रिक विचारवा लाग्यो के-'खरेखर ! आ रस्तेथी कोई चक्रवर्ती एकला चाल्या जाय छे, मने जो तेमनी सेवा करवानो लाभ मळे तो मारो पण उदय थई जाय.' एम चिंतवीने पगलांना आधारे आधारे प्रभु पासे आवी पहोंच्यो. भगवंतने जोईने ते विचारवा लाग्यो के-''आज सुधी महा महेनते प्राप्त करेलुं सामुद्रिकशास्त्र खोटुं ठर्युं. आवां उत्तम लक्षणवाळो पुरुष जो आवां कष्ट अने व्रत आचरतो प्रत्यक्ष देखाय तो हवे बधां सामुद्रिकशास्त्रो पाणीमां ज बोळी देवां जोईए.'' आ प्रमाणेनां पुष्पनां विचारतरंग इन्द्रे अवधिज्ञानथी जाणी लीधा. तेथी तेणे तुरत ज त्यां आवी प्रभुने वंदन करी पुष्पने कह्युं के-''हे सामुद्रिक ! तुं विषाद न कर, तने जे तारा सामुद्रिकशास्त्र उपर अभाव उपज्यो छे, तेने माटे तुं तेना मर्मने नथी समज्यो ए खेदनी वात छे. आवा प्रकारना उत्तम लक्षणवाळो पुरुष केवळ चक्रवर्ती ज न होय, परंतु

जगतपूज्य पण होय छे. आ पुरुष कोई सामान्य माणस नथी, ते तो देवो अने असुरोना पण स्वामी छे. तेओ थोडा ज समयमां केवळज्ञान पामी, सकळ संपत्तिओना आश्रयभूत बनी तीर्थंकर थशे. तेमनी काया स्वच्छ, रोग रहित अने परसेवा विनानी छे, तेओश्रीनो श्वासोश्वास सुगंधवाळो छे, तेमनां रुधिर अने मांस पण गायनां दूध जेवा स्वच्छ छे. एवां ऐवां बाह्य अने अभ्यंतर अगणित लक्षणो गणवाने कोण समर्थ छे ? आ प्रमाणे बोलीने शक्रेंद्रे ते पुष्प सामुद्रिकने रतन-सुवर्ण वगेरे आपीने समृद्धिशाळी बनावी रवाना कर्यो अने इन्द्र पोताना स्थानके गया. प्रभु पण अन्य स्थळे विहार करी गया.

श्रमण भगवान महावीर दीक्षा स्वीकार्या पछी बार वरस करतां वधु समय सुधीना साधनाना गाळामां शरीर तरफ तद्दन उदासीन रह्या एटले ए गाळामां तेमणे शरीरनी मावजत तरफ लेश पण लक्ष्य न कर्युं अने शरीरने तजी दीधुं होय ए रीते शरीर तरफ वर्त्या- साधनाना गाळामां जे जे उपसर्गो आवता रहे छे जेवा के, दिव्य उपसर्गो, मानवीकृत उपसर्गो अने तिर्यंच योनिको तरफथी एटले क्रूर भयानक पशु-पक्षीओ तरफथी थता

उपसर्गो उत्पन्न थया ते बधाने सारी रीते निर्भयपणे सहन करे छे, लेश पण रोष आण्या विना तेजस्वीपणे सहन करे छे अने अडगपणे मनने निश्चळ राखीने सहन करे छे.

श्री महावीर प्रभुए मोराक्संनिवेशथी विहार करी, पहेलुं चातुर्मास शूलपाणि यक्षना मंदिरमां ज कर्युं. आ यक्ष पूर्वभवमां धनदेव नामना वाणीआनो बळद हतो. धनदेवनी पांचसो गाडीओ नदी उतरतां कादवमां खूंची गई. आ बळदोमां एक बळद घणो ज बळवान, उत्साही अने पाणीवाळो हतो. तेणे पोताना मालिकनी कृतज्ञता हृदयमां राखी, दरेक गाडीनी डाबी धोंसरीए जोडाई, एक पछी एक पांचसो गाडी कीच्चडमांथी बहार खेंची काढी. गाडीओ तो बहार नीकळी, पण हद उपरांत जोर करवाथी ते बळदना सांधा तूटी गया, अने ते अशक्त थई गयो, बळदने अशक्त थयेलो जोईने धनदेवे नजीकना वर्धमान नामना गाममां जई, गामना आगेवानोने बोलावी, पोतानो अशक्त बळद ते लोकोने सोंप्यो अने तेनी सारवार माटे घास-पाणी वगेरेना पैसा पण आप्या. गामनां आगेवानोए ते अशक्त बळदनी सार-संभाळ न लीधी, तेथी ते बिचारो भूख अने तरसथी रीबातो,

अकाळ निर्जरा करीने व्यंतर जातिमां शूलपाणि नामनो यक्ष थयो. तेणे पोताना ज्ञानथी पोताना पूर्वभवनो संबंध जाणी लीधो अने वर्धमान गाम उपर खूब क्रोधे भराई मरकीनो रोगचाळो फेलाववो शरु कर्यो. ए रोगचाळामां एटलां बधां माणसो मरण पाम्यां के मुडदानां बाळनारा पण कोई ना मळे. आम मुडदां पडी रहेवाथी हाडकांओनो मोटो ढगलो थई गयो, त्यारथी ते गामनुं नाम पण वर्धमानने बदले अस्थिकग्राम पड्युं.

पछी गाममां जे लोको जीवता बाकी रह्या हता तेओए यक्षनी आराधना करी, एटले यक्षे प्रत्यक्ष थईने पोतानुं मंदिर मूर्ति करावववानुं कह्युं. मरकीथी त्रास पामेला लोकोए तुरत ज एक मंदिर करावी शूलपाणि यक्षनी मूर्ति बेसाडी; अने मूर्तिनी लोको रोज पूजा करवा लाग्या.

श्री महावीर प्रभुए ते यक्षने प्रतिबोधवा माटे पहेलुं चातुर्मास शूलपाणि यक्षना मंदिरमां ज कर्युं. लोकोए कह्युं के-"हे भगवान ! आ दुष्ट तेना चैत्यमां रहेनार दरेकने मारी नाख्या विना नथी रहेतो." लोकोए वारवा छतां, प्रभु तो यक्षने प्रतिबोधवा माटे

लोको पासेथी अनुमति मागी त्यां ज रात्रिए एकाग्रचित्ते काउसग्ग ध्याने रह्या. पेला दुष्ट यक्षे प्रभुने क्षोभ पमाडवा, क्रोधावेशमां आवी भूमिने भेदी नाखे एवुं अट्टहास्य कर्युं; प्रभु एथी जराये न डग्या. पछी तेणे अनुक्रमे हाथी, सर्प अने पिशाचनां रुप विकुर्वी, दुःसह उपसर्गो कर्या प्रभु तो पर्वतनी जेम अचळ ज रह्या. तेणे प्रभुनां मस्तक, कान, नाक, नेत्र, दांत, पीठ अने नख जेवा साते कोमळ अंगोमां एवी वेदना करी के जो सामान्य माणसने एवी वेदना थाय तो ते प्राण ज गुमावी बेसे. आटलुं करवा छतां पण प्रभु न कंप्या त्यारे, ते प्रतिबोध पाम्यो.

ते वखते सिद्धार्थ व्यंतरे आवीने शूलपाणिने कह्युं के-"अरे ! निर्भागी, नीच कार्य करनारा, शूलपाणि तने आ शुं सूझयुं ? तें इन्द्रने पण पूज्य भगवाननी आशातना करी, जो तारा अपकृत्यनी शक्रेंद्रने खबर पडशे तो तारुं स्थान ज फेंकी देशे." सिद्धार्थना आवां वचनो सांभळी ते खूब भय पाम्यो अने विशेष प्रकारे प्रभुनी पूजा करवा लाग्यो. ते पोताना पापमांथी बचवा माटे प्रभुनी आगळ गीत गावा लाग्यो अने नृत्य करवा लाग्यो.

यक्षना मंदिरमां गीत-नृत्य थतां सांभळी, लोको विचारवा लाग्या के-'जरुर यक्षे पेला तपस्वी महात्माने मारी नांख्या हशे अने तेथी ज ते खुब खुशी थई नाचगान करतो हशे.'

प्रभुए ते आखीरात्रिना चार पहोरमां कांईक ओछा समय सुधी अत्यंत वेदना सहन करेली तेथी प्रभातमां क्षणवार निद्रा आवी गई. ए निद्रामां तेमणे दश स्वप्न जोयां. सवार थतां ज गामना लोको यक्षना मंदिरमां एकठा थया. तेमणे प्रभुने दिव्य गंधचूर्ण अने पुष्पोथी पूजाएला जोई पोतानो आनंद जाहेर कर्यो अने भक्तिपूर्वक वंदन कर्युं.

गामना लोकोनी साथे अष्टांग निमित्तशास्त्रना जाणकार उत्पल अने इंद्रशर्मा नामना बे ज्योतिषीओ पण त्यां आव्या हता. प्रभुने वंदन करी उत्पले कह्युं के-"हे प्रभु ! आपे रात्रिना छेडे जे दश स्वप्न जोयां छे तेनुं फळ आप तो जाणता ज हशो. पण हुं मारी मति प्रमाणे कहुं छुं.

(१) पहेला स्वप्नमां आपे ताड जेवडा उंचा पिशाचने हण्यो, तेनो अर्थ एवो छे के आप थोडा ज वखतमां मोहनीयकर्मने हणशो. (२) बीजा स्वप्नमां आपनी सेवा करतुं

सफेद पक्षी जोयुं, तेथी आप शुकलध्यानने ध्यावशो. (३) त्रीजा स्वप्नमां आपनी सेवा करतुं विचित्र कोयल पक्षी आपे जोयुं, ते उपरथी आप द्वादशांगी प्ररुपशो एम सूचन थाय छे. (४) चोथा स्वप्नमां आपे आपनी सेवा करतो गायोनो समूह जोयो, ते उपरथी साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारुप चतुर्विध संघ आपनी सेवा करशे. (५) पाचमां स्वप्नमां आप समुद्र तर्या, तेथी आप संसारसमुद्र तरी जशो. (६) छठ्ठा स्वप्नमां आपे उगतो सूर्य जोयो, तेथी आप थोडा ज वखतमां केवलज्ञान प्राप्त करशो. (७) सातमा स्वप्नमां आपे आंतरडाओ वडे मानुषोत्तर पर्वतने वींटी लीधो, तेथी आपनी कीर्ति त्रणे लोकमां फेलाशे. (८) आठमा स्वप्नमां आप मेरु पर्वतना शिखर उपर चड्या, तेथी आप समवसरणमां सिंहासन पर बेसी देवो अने मानवोनी सभामां धर्म प्ररुपशो. (९) नवमा स्वप्नमां आपे देवोथी शोभी रहेलुं पद्म सरोवर जोयुं, तेथी चारे निकायना देवो आपनी सेवा करशे. (१०) दशमा स्वप्नमां आपे जे सुगंधमय पुष्पोनी बे माळा जोई, तेनो अर्थ हुं जाणतो नथी.'' एटले प्रभुए पोते ज कह्युं के-'हे उत्पल ! में जे बे माळाओ जोई, तेथी हुं

साधुधर्म अने श्रावकधर्म एम बे प्रकारनो धर्म कहीश.'

ते पछी उत्पल ज्योतिषी प्रभुने वंदन करीने गयो. प्रभुए त्यां आठ अर्ध मासक्षमण वडे प्रथम चातुर्मास निर्गमन कर्युं.

त्यांथी प्रभु मोराकसंनिवेशमां गया. त्यां प्रतिमा धारीने रहेला प्रभुनो महिमा वधारवा माटे सिद्धार्थ व्यंतर, प्रतिमाध्याने रहेला प्रभुना शरीरमां पेसीने लोकोने भूत, भविष्य अने वर्तमानकाळनी वातो कहेवा लाग्यो. निमित्तने लीधे प्रभुनो महिमा चोतरफ फेलाई गयो. अच्छंदक नामना एक ज्योतिषीथी प्रभुनी आ कीर्ति सहन ना थई शकी, तेथी ते प्रभुना मुखद्वारा बोलाती सिद्धार्थनी वाणीने लोको पासे खोटी पाडवा तुरत ज त्यां आव्यो. तेणे पोताना हाथनी आंगळीमां घासनुं एक तणखलुं बंने बाजुथी पकडीने प्रश्न कर्यो के- ''कहो, आ तरणुं माराथी छेदाशे के नहि ?'' सिद्धार्थे कह्युं के-''ए तणखलुं नहि छेदाय.'' आ वचन सांभळी अच्छंदक आंगळी वडे ते तणखलुं छेदवा तत्पर थयो, एटलामां इन्द्रने अच्छंदकनो प्रपंच मालुम पड्यो, तेथी तत्काळ पोताना वज्र वडे अच्छंदकनी

आंगळी कापी नाखी अने तणखलुं छेदाया वगरनुं ज पडी रह्युं. सिद्धार्थ व्यंतरने पण तेना उपर घणो ज गुस्सो चड्यो, तेथी हाजर रहेला लोकोने कह्युं के-''ज्योतिषी होवानो डोळ करनार आ माणस मोटो चोर छे.''

लोकोए पूछ्युं के-''ए चोर छे एनी खात्री शी ?'' सिद्धार्थे कह्युं के-''एणे वीरघोष नामना खेडूतनो दशपल प्रमाणनो वाटको चोरीने, घरनी पछवाडे ज पूर्वदिशामां खजुरीना झाड नीचे दाट्यो छे. बीजुं ईंद्रशर्मानो घेटो चोरीने खाई गयो छे, ते घेटानां हाडकां, तेना घरनी बोरडी नीचे खोदवाथी मळी आवशे. एनुं त्रीजुं दुश्चरित्र तेनी स्त्रीने पूछवाथी ते ज तमने कहेशे.''

पछी लोको अच्छंदकना घेर जई तेनी स्त्रीने पूछवा लाग्या. ते दिवसे अच्छंदके पोतानी स्त्रीने मारी हती, तेथी लोकोना प्रश्नना उत्तरमां ते बोली उठी के-''ए पापीनुं काळुं मों जोवुं ए पण पाप छे, कारण के ते पोतानी बेनने पण भोगवे छे.''

लोकोमां अच्छंदकनी आबरु रही नहि, एटले ते प्रभुने अति दीनपणे विनववा

लाग्यो के-"हे स्वामी ! आप तो विश्ववंद्य छो, आप ज्यां ज्यां पधारशो, त्यां त्यां पूजाशो. परंतु मारी आजीविका तो अहींआ ज छे."

तेणी अप्रीतिनुं कारण जाणी प्रभुए त्यांथी विहार कर्यो. त्यांथी विहार करीने प्रभु श्वेतांबी नगरी तरफ चाल्या. रस्तामां कनकखल तापसना आश्रमे चंडकौशिक नामनो एक द्रष्टिविष सर्प हतो, तेने प्रतिबोध करवा लोकोए वारवा छतां पण प्रभु ते ज मार्गे चाल्या.

चंडकौशिक पूर्वभवमां उग्र तपस्वी साधु हतो. एक दिवसे तपस्याना पारणे गोचरी वहोरवा माटे एक शिष्यनी साथे गाममां जतां रस्तामां तेमना पग नीचे एक देडकी आवी गई. देडकीनी थएली वीराधनाना प्रायश्चित्त माटे शिष्ये ईरियावही पडिक्कमतां, गोचरी पडिक्कमतां अने सांजनुं प्रतिक्रमण करतां, एम त्रण वार देडकीवाळी वात संभारी आपी. आथी साधुने खुब क्रोध चड्यो अने क्रोधमां ने क्रोधमां शिष्यने मारवा दोड्या. परंतु अकस्मात् एक थांभला साथे अथडातां तपस्वी साधु मरण पामीने ज्योतिष्क देव तरीके उत्पन्न थया. त्यांथी च्यवीने ते एक आश्रममां पांचसो तापसोनो नायक चंडकौशिक नामे

तापस थयो. त्यां पण एक वखते केटलाक राजकुमारोने पोताना बगीचामांथी फळ-फूल तोडतां जोईने, हाथमां कुहाडो लईने मारवा गयो; तेटलामां रस्तामां आवेला एक कूवामां पड्यो, अने क्रोधना आवेशमां ने आवेशमां मरीने त ज आश्रममां पोताना पूर्वभवना नामवाळो द्रष्टिविष सर्प थयो.

महावीर प्रभुने काउसग्ग ध्याने उभेला जोई, ते क्रोधी सर्प सूर्य सामे द्रष्टि करी, प्रभुनी तरफ द्रष्टिज्वाला फेंके अने रखेने प्रभु पोतानी पर पडे एवा भयथी पाछो हठी जाय. प्रभुने आटलुं करवा छतां पण निश्चल उभेला जोईने ते असाधारण क्रोधे भरायो अने तेणे प्रभुने एक सखत डंख मार्यो. डंख मारवा छतां पण प्रभुने अेकाग्र ध्यानमां उभेला जोईने, तथा डंसवाळा भागमांथी गायना दूध जेवी रुधिरनी धारा वहेती जोईने विस्मय पामेलो चंडकौशिक थोडीक वार प्रभुनी सामे जोई रह्यो.

चंडकौशिकने शांत थऐलो जोई प्रभुए कह्युं के-'हे चंदकौशिक ! बुझ बुझ !'

प्रभुनां अमृत जेवां मीठां वचन सांभळतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, अने ते पोताना

अपराधोनो पश्चाताप करवा लाग्यो. प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा दईने ते मनमां विचारवा लाग्यो के–खरेखर – आ करुणासमुद्र भगवंते मने दुर्गतिरुप मोटा कूवामां पडतो बचावी लीधो. ते ज वखते तेणे अनशन अंगीकार कर्युं अने पोतानी द्रष्टिथी कोई प्राणीने नुकशान न थाय ते हेतुथी पोतानुं मुख दरनी अंदर छुपावी दीधुं.

आ प्रमाणे नागराजने पडेलो जोईने ते रस्ते थईने घी, दूध वेचवा जती गोवालणोए, तेनी भक्तिपूर्वक घी, दूध वडे पूजा करवा मांड़ी. आ घी, दूधनी सुगंधने लीधे सेंकडो कीडीओ सर्पना शरीर उपर एकठी थई, तीक्ष्ण चटका भरवा लागी; छतां पण प्रभुनी अमीद्रष्टिथी पावन थऐलो ते चंडकौशिक शुभ्र भावना भावतो, मृत्यु पामीने सहस्त्रार देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो.

प्रभु त्यांथी विहार करीने उत्तरवाचालमां आव्या. त्यां नागसेन श्रावके प्रभुने क्षीर वहोरावी, अने त्यां पांच दिव्यो प्रगट थयां. त्यांथी विहार करीने प्रभु श्वेतांबी नगरीए गया. श्वेतांबीना राजा प्रदेशीए प्रभुनो घणो सत्कार कर्यो. त्यांथी सुरभिपुर जतां रथसहित नैयक

गोत्रना पांच राजाओए प्रभुने वंदन कर्युं.

प्रभु सुरभिपुर पहोंचतां पहेलां गंगा नदी ओळंगवा माटे सिद्ध नामना नाविकनी नावमां बेठा हता. प्रभु जेवा नाव उपर आरुढ थया के तुरत ज घुवड पक्षीनो अवाज कान उपर आवतां ते नावमां प्रभुनी साथे ज बेठेलो क्षेमिल नामनो एक निमित्तीयो बोली उठ्यो के-"आजे आपणने मरणांत कष्ट उत्पन्न थशे, परंतु आ महात्माना पुण्यबळथी आपणो वाळ वांको नहि थाय." उतारुओथी भरेलुं नाव ज्यारे गंगा नदीनी मध्यमां आवी पहोंच्युं त्यारे, प्रभुए पोताना त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवमां जे सिंहने मार्यो हतो ते सिंहनो जीव ते वखते नागकुमार निकायमां सुद्रष्ट्र नामे देवता थएलो हतो, तेणे प्रभुने नावमां बेठेला जोईने पोताना पूर्वभवना वैरनो बदलो लेवा माटे नावने डुबाडवा मांड्युं; बराबर ते ज वखते नागकुमार निकायमां उत्पन्न थएला कुंबल अने शंबल नामना बे देवोए प्रभुने उत्पन्न थएलो आ उपसर्ग जोयो के तुरत ज त्यां आवी पहोंच्या अने सुदंष्ट्रने हांकी काढीने नावनुं रक्षण कर्युं. आ कंबल अने शंबलनुं चरित्र आ प्रमाणे छे :

मथुरा नगरीमां जिनदास नामनो एक शेठ अने साधुदासी नामनी श्राविका रहेता हता. आ बंने परम श्रावक होवाथी पांचमां व्रतमां पोताने त्यां एक पण पशु राखता न हता. तेओने जे कांई दूध, घी वगेरेनी जरुर पडती ते एक भरवाडण पासेथी खरीदता हता. घणा दिवसना आ प्रमाणेना व्यवहारने लीधे भरवाडण अने साधुदासी वच्चे गाढ मैत्री थई. एक वखते भरवाडणने त्यां लग्न प्रसंगे शेठ-शेठाणीने निमंत्रण आपवामां आव्युं. दंपतीए कह्युं के-"अमे आवीशुं नहीं, परंतु तमारा लग्न प्रसंगे कांई जोईतुं करतुं होय तो खुशीथी लई जजो."

पछी जिनदास शेठे चंद्रोदयादि उपकरणो तथा वस्त्रो, आभूषणो वगेरे घणी वस्तुओ भरवाडणने आपवाथी, तेणीनो लग्नप्रसंग बहु सरस रीते उजवायो. भरवाड अने भरवाडण बंने जणां जिनदास शेठ उपर घणा प्रसन्न थयां अने तेमणे पोताने त्यांथी अति मनोहर अने सरखी उंमरना मजबुत बे वाछरडा लावीने शेठने आप्या.

शेठ अने शेठाणी ए आनाकानी करवा छतां, बळजबरीथी शेठना आंगणामां बांधीने

भरवाड अने भरवाडण चाल्या गयां. शेठे विचार कर्यो के जो हुं वाछरडा छोडी मूकीश तो तेने खस्सी करीने, गाडी, के हळमां जोडी अनेक रीते दुःखी करशे. आ प्रमाणे विचार करीने बंने वाछरडाओने अचित्त घास-पाणीथी जिनदास शेठ पोषवा लाग्या. आठम, चौदश जेवी पर्वतिथिओए शेठ पोसह लई धार्मिक ग्रंथोनुं वांचन करता, ते सांभळी आ बे वाछरडाओ पण भद्रकपरिणामी थया. जे दिवसे शेठ उपवास करता ते दिवसे बन्ने वाछरडाओ पण घास, पाणी वगेरे लेतां नहि ने उपवास करता हता. आ प्रमाणे करवाथी शेठने तेओना उपर साधर्मिक भाईओ जेटलो ज प्रेम थयो.

एक वखते जिनदास शेठनो मित्र आवा सुंदर बळवान बळदोने जोई, शेठने पूछ्या वगर ज भंडीरवन नामना यक्षनी यात्रामां वाहनो दोडावानी शरतोमां बंने बळदोने लई गयो. आ अणपलोटेला बळदोने तेणे गाडीए जोडी खुब दोडाव्या. खुब दोडाववाथी बने सुकोमळ बळदोना सांधा तूटी गया, अने शेठनो मित्र बंने बळदोने पाछा बांधी पोताने घेर चाल्यो गयो. शेठने बळदोनी आवी अवस्था जोईने घणुं दुःख थयुं तेणे आंखमां आंसु

लावी, भक्त पच्चक्खाण कराव्युं अने नवकार मंत्र संभळावी, बंने बळदोने निर्यामणा करावी. शुभ भावना भावता ते बळदो मरीने नागकुमार देव थया. बंनेने देवलोकमां उत्पन्न थतांनी साथे ज अवधिज्ञाननो उपयोग मूकतां प्रभुने नावमां सुदंष्ट्रे करवा धारेला उपसर्गनी खबर पडी के तुरत ज त्यां आवी सुदंष्ट्रने हांकी काढ्यो अने प्रभुना सत्त्व, रुपनी प्रशंसा करी. प्रभु पासे नृत्य महोत्सव करीने, सुगंधी जल तथा फूलोनी वृष्टि करीने पोताना स्थाने बंने गया.

प्रभु पण नावमांथी उतरीने राजगृह नगरना नालंदा नामना पाडामां एक शाळवीनी शाळाना एक भागमां शाळवीनी रजा लई, पहेलुं मासक्षमण स्वीकारीने रह्या.

ते वखते मंखली नामनो एक मंख रहेतो हतो. तेने सुभद्रा नामनी स्त्री हती. ते गाममां बहुल नामना ब्राह्मणनी गौशाळामां सुभद्राए एक पुत्रने जन्म आपयो, ते बाळक गौशाळामां जन्मेलो होवाथी गोशाळा नामे प्रसिद्ध थयो.

आ गोशाळो युवान थयो. ते फरतो फरतो राजगृह नगरमां ज्यां प्रभु चातुर्मास रहेला

हता त्यां आवी पहोंच्यो. ते वखते प्रभुने मासक्षमणनुं पारणुं विजय शेठे कराव्युं, ते वखते पांच दिव्यो प्रगट थयां आ प्रमाणेनो महिमा जोईने गोशाळो प्रभुनो शिष्य थयो.

प्रभु तो मौन ज रह्या. गोशाळो गमे त्यां भिक्षा मांगीने पोतानी आजीविका चलावतो अने पोताने प्रभुना शिष्य तरीके गणाववा लाग्यो. प्रभुने बीजा मासक्षमणनुं पारणुं नंद नामना शेठे पकवान वगेरेथी कराव्युं. त्रीजा मासक्षमणनुं पारणुं सुनंद नामना शेठे परमान्नथी कराव्युं. चोथा मासक्षमणे प्रभु कार्तिक सुदि पूर्णिमाए विहार करीने कोल्लाक सन्निवेशमां पधार्या. त्यां प्रभुने चोथा मासक्षमणनुं पारणुं बहुल नामना ब्राह्मणे खीर-दूधपाक वहोरावी कराव्युं. पांच दिव्यो त्यां देवोए प्रगट कर्यां.

प्रभुए ज्यारे राजगृहीथी विहार कर्यो, त्यारे गोशाळो भिक्षा माटे बहार गयो हतो. ते भिक्षा लईने पाछो फर्यो त्यारे प्रभुने त्यां जोया नहि. पछी तेणे पोताना बधां उपकरणो ब्राह्मणोने आपी दईने दाढी, मूछ तथा मस्तक मुंडावी नांख्युं, अने फरतो फरतो कोल्लाकमां आव्यो. प्रभुने जोईने बोली उठ्यो के-"हे प्रभु ! मने आपनी दीक्षा आपो." प्रभुए

कांईपण जवाब न आप्यो.

प्रभु त्यांथी विहार करीने सुवर्णखल नामना गाम तरफ चाल्या, गोशाळो पण तेओनी साथे ज हतो. रस्तामां एक जग्याए केटलाक गोवाळीयाओ माटीनी मोटी हांडीमां खीर रांधता हता. ते जोईने गोशाळाए प्रभुने कह्युं के-''स्वामी ! आ खीर रंधाय छे ते वापरीने आगळ चालीए तो ठीक.'' प्रभुना शरीरमां रहेलो सिद्धार्थ व्यंतर बोल्यो के - ''आ हांडी फूटी जवानी छे.'' गोशाळाए आ वात गोवाळीओने कही. गोवाळीयाओए पोताथी बनी शकतुं हांडीनुं रक्षण कर्युं, परंतु दूधमां नाखेला चोखा फूलवाथी हांडी फूटी गई. आ दाखलो जोईने गोशाळाए नक्की कर्युं के - 'जे थवानुं होय ते थया विना रहेतुं ज नथी.'

अनुक्रमे प्रभु सुवर्णखल पहोंच्या. त्यांथी विहार करीने ब्राह्मण ग्राम पधार्या. त्यां नंद अने उपनंद नामना बे भाईओना बे महोल्ला हता. प्रभु नंदना महोल्लामां गोचरीए गया, त्यां नंदे तेओने उत्तम भोजन वहोराव्युं. गोशाळो उपनंदना महोल्लामां गोचरीए गयो. त्यां उपनंदे तेने वासी अन्न वहोराव्युं, आथी तेने घणो गुस्सो चडयो. तेणे क्रोधमां श्राप आप्यो

के-'जो मारा धर्माचार्यनुं तप : तेज होय तो तेना प्रभावे आनुं घर बळी जाओ.'' प्रभुना नामे आपेलो श्राप पण निष्फळ न जवो जोईए, एम विचारी नजीकना कोई एक देवे उपनंदनुं घर बाळी नाख्युं.

त्यांथी विहार करीने प्रभु चंपानगरीमां पधार्या. त्यां बे मासना उपवासनुं तप स्वीकारीने त्रीजुं चोमासुं रह्या, छेल्ला बे मासी तपनुं पारणुं चंपानगरीनी बहार करीने कोल्लागसंनिवेशमां प्रभु पधार्या; त्यां एक शून्य घरमां काउसग्ग ध्याने रह्या.

आ शून्य घरमां ए गामना मुख्य आगेवानना सिंह नामना पुत्रने विद्युन्मती दासी साथे क्रीडा करतो जोईने गोशाळो हसवा लाग्यो. आथी सिंहने खुब क्रोध चड्यो, अने तेणे गोशाळाने खुब मार मारीने अधमुओ करी नाख्यो. त्यार पछी गोशाळो प्रभु पासे आवीने कहेवा लाग्यो के - ''हे स्वामी ? मने एकलाने तेणे आटलो बधो मार्यो, छतां आपे तेने तेम करतां वार्यो केम नहि ?'' सिद्धार्थे कह्युं के- ''तारे कोईनी मश्करी करवी जोईए नहि.''

त्यांथी पात्रालक गाममां जई, कोई एक शून्य घरमां काउसग्ग ध्याने रह्या. त्यां पण स्कंद नामना युवकने स्कंदिला नामनी दासी साथे रतिक्रीडा करतो जोईने, गोशाळो मश्करी करवा लाग्यो; तेथी त्यां पण तेने खुब मार पडयो. त्यांथी प्रभु विहार करीने, कुमारक संनिवेशमां गया, त्यां चंपक नामना रमणीय उद्यानमां काउसग्ग ध्याने रह्या. ते वखते श्री पार्श्वनाथ प्रभुना संतानीय श्री मुनिचंद्रसूरि नामना आचार्य, घणा शिष्योना परिवार साथे एक कुंभारनी शाळामां आवीने रह्या हता. गोशाळाए तेओना साधुओने जोईने पूछयुं के-"तमे कोण छो ?" तेओ बोल्या के - अमे निग्रंथ छीए. पछी ते बोल्यो के "तमे क्यां अने मारा धर्माचार्य क्यां ? ते साधुओ बोल्या के : "जेवो तुं छुं तेवा ज तारा धर्माचार्य पण हशे ?"

तेथी क्रोधे भराईने गोशाळो बोल्यो के - "जो मारा धर्माचार्यनुं तेज होय तो तेना प्रभावथी तमारो आ आश्रम बळी जाओ." साधुओ बोल्या के - "अमने कोईपण जातनो भय नथी." पछी ते प्रभु पासे आव्यो अने आ बधुं कहेवा लाग्यो. सिद्धार्थे जवाब

आप्यो के : "ते साधुओ बळे ज नहि."

ते रात्रे श्री मुनिचंद्रसूरि जिनकल्पनी तुलना करता होवाथी शाळानी बहार प्रतिमा धारण करीने रह्या. पेलो कुंभार मदिरापान करी घुमतो घुमतो मुनिचंद्रसूरि पासे आवी चड्यो. दारुना नशामां तेणे आचार्य महाराजने ओळख्या नहि, अने चोर मानीने खुब मार मार्यो, तेणे मारेला खुब मारथी आचार्य महाराजनो प्राण उडी गयो. तेओ काळधर्म पामी देवलोकमां उत्पन्न थया. देवोए आवी ते मुनिराजना महिमा माटे प्रकाश कर्यो. आ प्रकाश जोईने गोशाळो मनमां मलकायो के मारो श्राप फळ्यो खरो ! ते वखते सिद्धार्थे तेणे सत्य हकीकत कही संभळावी. छतां ते त्यां जईने सूई रहेला साधुओनो तिरस्कार करीने पाछो आव्यो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु चौरा नामना गाममां आव्या. त्यां प्रभुने अने गोशाळाने जासुस जाणी कोटवाले तेमने हेडमां नांखवानो विचार कर्यो. पहेलो गोशाळाने हेडमां नांख्यो. प्रभुने हेडमां नांखवानी तैयारी करतो हतो, तेटलामां उत्पल नामना निमित्तीयानी

सोमा अने ज्यंती नामनी बे बहेनो, संयम पाळी नहि शकवाथी, सन्यासिनी थई हती, तेमणे प्रभुने ओळख्या अने प्रभुने हेडमां नांखवा न दीधा अने गोशाळाने पण हेडमांथी मुक्त कराव्यो.

त्यांथी विहार करी प्रभु पुष्टचंपा नगरीए पधार्या. त्यां तेओश्रीए चार महिनाना उपवास करीने चोथुं चातुर्मास निर्गमन कर्युं. चातुर्मास पूर्ण करीने, नगरनी बहार पारणुं कर्युं. त्यांथी विहार करीने प्रभु श्रावस्ती नगरीए पहोंच्या. गामनी बहार काउसग्ग ध्याने रह्या. गोचरी जतां गोशाळाए प्रभुने पूछ्युं के - "हे स्वामी ! आजे मने केवो आहार मळशे ?"

सिद्धार्थे ज गोशाळाने कह्युं के : "आजे तो तने मनुष्यनुं मांस मळशे." गोशाळो पण ज्यां मांसनुं नामनिशान पण ना मळे तेवा वाणियाओने घेर गोचरीए गयो. ते नगरमां पितृदत्त नामना एक वाणियानी स्त्री भद्राने कर्मवशात् दरेक वखते मरेलां संतान जनमतां हतां. तेणीए शिवदत्त नामना एक निमित्तीयाने तेनो उपाय पूछतां, ते निमित्तीयाए तेणीने

कहेलुं के : "हवे तने जो मरेलुं संतान जनमे तो, ते मरेलां संताननुं मांस खीर साथे मेळवीने, कोई भिक्षुकने खवरावजे, एटले तने जीवतां बाळक अवतरशे."

तेणीए भिक्षाने माटे फरता गोशाळाने जोयो, ते ज दिवसे तेणीने मरेलुं संतान जनमेलुं हतुं अने निमित्तीयाना कह्या प्रमाणे खीरनी साथे बाळकनुं मांस पण पकवेलुं हतुं. गोशाळो पण कर्मसंयोगे तेणीने त्यां भिक्षा लेवा आवी चड्यो. भद्रा पण एकदम उभी थई अने मांसमिश्रित खीर गोशाळाने वहोरावी दीधी. तेणीए विचार्युं के जो आ भिक्षुकने खीरमांना मांसनी खबर पडशे तो जरुर श्राप आपीने मारुं घर बाळी नाखशे. तेथी तेणीए घरनुं बारणुं फेरवी नाख्युं.

गोशाळो पण आनंदथी ते खीर खाईने प्रभुनी पासे आव्यो. सिद्धार्थे बधुं स्वरुप कही बताव्युं. गोशाळाए ते वातनो निर्णय करवा वमन कर्युं. वमननी अंदर बराबर तपास धरतां बाळकनुं मांस जणायुं एटले तेनुं घर बाळी नांखवा त्यां पाछो आव्यो. परंतु घरनुं बारणुं फेरवी नांखेलुं होवाथी, तेणे कह्युं के "जो मारा धर्माचार्यनुं तप : तेज होय तो

आ आखो लत्तो बळी जाओ.'' तेथी नजीक रहेला व्यंतरोए आखो महोल्लो बाळी नांख्यो.

त्यांथी विहार करी प्रभु हरिद्र नामना संनिवेशनी बहार हरिद्रवृक्षनी नीचे काउसग्गध्याने रह्या. ए ज वृक्ष नीचे रातवासो रहेला मुसाफरोए ठंडीथी बचवा माटे अग्नि सळगावेलो, सवार थतां ते अग्निने बुझाव्या वगर ज मुसाफरो आगळ चाल्या गया. अग्नि धीरे धीरे आगळ वधतो प्रभुना पग सुधी आव्यो. प्रभुना पगो तेनाथी दाज्या. गोशाळो तो मुठीओ वाळी नाशी गयो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु मंगला नामना गामे पहोंच्या. त्यां वासुदेवना मंदिरमां प्रतिमा धारीने उभा रह्या. त्यां गोशाळो गामना बाळकोने आंखो काढीने बीवरावववा लाग्यो, बाळकोना मा-बापोने खबर पडवाथी गोशाळाने खूब मार मार्यो. त्यांथी प्रभु विहार करीने आवर्त्त गामे पधार्या. त्यां बलदेवना मंदिरमां प्रतिमा धारीने उभा रह्या. त्यां पण गोशाळाए बाळकोने बीवरावववा माटे मुखना चाळा करवा मांड्या. बाळकोना माबापाए जोयुं के आ भिक्षुक तो गांडा जेवो लागे छे, तेथी तेने मारवा करता तेना गुरुने शिक्षा करवी जोईए.

माबापो जेवा प्रभुने मारवा तैयार थया के तरत ज मंदिरमांनी बळदेवनी मूर्तिए पोताना हाथमांनु हळ उपाडी तेमने अटकाव्या. आ चमत्कार जोईने गामना लोको प्रभुना चरणमां नमी पड्या.

त्यांथी विहार करीने प्रभु चोराकसंनिवेशमां पधार्या. त्यां एक मंडपमां उत्तम भोजन रंधातुं हतुं, ते तैयार थवाने केटलीक वार छे, ते तपासवा गोशाळो वारंवार छुपाईने जोवा लाग्यो. लोकोए तेने चोर मानीने खूब मार्यो. गोशाळाए गुस्से थईने प्रभुना नामथी ते मंडप बाळी नांख्यो.

त्यांथी प्रभु विहार करीने कलंबुका नामना संनिवेशमां पधार्या. त्यां मेघ अने कालहस्ति नामना बे भाईओ रहेता हता. त्यां कालहस्तिए मौनधारी प्रभुने अने गोशाळाने चोर धारीने पकड्या अने तेओने योग्य सजा करवा माटे मेघने सोंप्या. मेघे प्रभुने ओळख्या एटले पोताना भाईनो अपराध खमावीने प्रभुने तथा गोशाळाने मानपूर्वक छोडी दीधा.

त्यांथी विहार करीने प्रभु क्लिष्ट कर्मोनी निर्जरा करवा माटे लाट देशमां पहोंच्या. त्यां प्रभुने घणा घोर उपसर्ग थया. विहार करतां प्रभु पूर्णकलश नामना गाम तरफ जता हता, ते वखते मार्गमां तेओने बे चोर मळ्या. तेओए प्रभुना दर्शनने अपशुकन मानीने, प्रभुने हणवा माटे तरवार उगामी, ते ज वखते शक्रेंद्रे अवधिज्ञाननो उपयोग मूकी जोयुं तो पेला बे हत्यारा तेनी द्रष्टिए पड्या. इन्द्रे तत्काळ पोतानुं वज्र मूकी ते बंनेने हणी नांख्या. त्यांथी विहार करीने प्रभु भद्रिकापुरीए पधार्या. त्यां तेओ पांचमुं चातुर्मास रह्या अने चोमासी तप कर्यो. चोमासी तपनुं पारणुं नगर बहार करीने, तेओ अनुक्रमे तंबाल नामना गामे पधार्या. त्यां पार्श्वनाथ प्रभुना संतानीया नंदिषेण नामना वृद्ध आचार्य बहु शिष्योना परिवार साथे रहेला हता. तेओने प्रतिमा ध्याने उभा रहेला जोईने चोरनी शंकाथी चोकीदारना छोकराए भालो मार्यो. प्राणघातक भालानी वेदना शांतचित्ते सहन करतां, आचार्यश्रीने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं अने काळधर्म पामी देवलोके गया. तेओना शिष्योनो पण गोशाळाए मुनिचंद्रसूरिना शिष्योनी माफक उपहास कर्यो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु कूपिक नामना संनिवेशमां पधार्या. मौन धरीने प्रतिमास्थित रहेला प्रभुने जासुसनी शंकाथी, त्यांना अधिकारीओए गोशाळा साथे पकड्या. ते गाममां पार्श्वनाथ भगवाननी अंतेवासीओ विजया अने प्रगल्भा नामनी हती, जेओ चारित्र नहि पाळी शकवाथी सन्यासिनीओ थयेली हती. ते बंने जणीओए प्रभुने ओळख्या अने गोशाळाने प्रभु साथे छोडावी मूक्या.

त्यांथी विहार करीने प्रभु वैशाली नगरी तरफ चाल्या. गोशाळो प्रभुथी छूटो पडीने बीजे मार्गे चाल्यो. रस्तामां तेने पांचसो चोर मळ्या. तेमणे गोशाळाने मामो मामो कहीने तेना खभा उपर बेसीने एवो तो फेरव्यो के ते साव लोथपोथ थई गयो. चोरो तेने त्यां ज पडतो मूकीने चाल्या गया. गोशाळो विचारवा लाग्यो के : 'प्रभुनी साथे ज रहेवामां मजा छे.' तेथी प्रभु गया हता ते ज रस्ते गयो.

प्रभु वैशाली पहोंचीने एक लुहारनी खाली पडेली शाळामां तेनी आज्ञा लईने प्रतिमाध्याने रह्या. शाळानो मालिक छ महिनाथी बिमार हतो ते, ते ज दिवसे साजो थईने

लोढुं टीपवानो घण लईने शाळामां आवतो हतो. त्यां प्रभुने प्रतिमाध्याने जोई अपशुकन थया मानीने, घण लईने मारवाने दोड्यो, आ वृत्तांत अवधिज्ञानथी इन्द्रना जाणवामां आवतां, ते ज घण वडे ते लुहारने इन्द्रे मारी नांख्यो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु ग्रामाक संनिवेशमां गया. अहीं उद्यानमां रहेला बिभेलक नामना यक्षे प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी विहार करीने प्रभु शालिशीर्ष नामना गाममां गया. त्यां माह महिनानी कडकडती ठंडीमां उद्यानमां प्रभु प्रतिमाध्याने रह्या. प्रभुना त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवमां एक विजयवती नामनी अणमानीती राणी हती ते मरीने कटपूतना नामनी व्यंतरी थई हती; ते व्यंतरीए तापसीनुं रुप विकुर्वी, पोतनी जटामां हिम जेवुं ठंडुं पाणी भरी प्रभुना शरीर उपर छांटवा मांड्युं. ते जळ वडे प्रभुने बहु ज आकरो शीत उपसर्ग थयो. छतां प्रभुने ध्यानमां निश्चल जोईने, ते व्यंतरी प्रभुनी क्षमा मागीने चरणमां नमी पडी. आ शीत उपसर्गने सहन करतां अने छठ्ठना तप वडे विशुद्ध थयेला प्रभुने ते वखते लोकावधि-अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं.

त्यांथी विहार करी प्रभु भद्रिकापुरीए आव्या. त्यां चोमासी तप वडे तथा विविध प्रकारना अभिग्रहो वडे छठ्ठुं चोमासुं व्यतीत कर्युं. अहींयां गोशाळो पण फरी पाछो छ महीने प्रभुने आवी मळ्यो. चोमासी तपनुं पारणं नगरी बहार करीने, प्रभुए ऋतुबद्ध मगधदेशमां उपसर्ग वगर विहार करवो शरु कर्यो.

मगधदेशमां आठ महिना विहार करीने प्रभु आलंभिका नगरीमां चातुर्मास करवा पधार्या. त्यां चोमासी तप वडे सातमुं चोमासुं पुरुं करीने, नगरीनी बहार पारणुं कर्युं. त्यांथी विहार करीने प्रभु कुंडगसंनिवेशमां वासुदेवना चैत्यमां काउसग्गध्याने रह्या. गोशाळो पण वासुदेवनी प्रतिमा तरफ पूंठ राखीने बेठो, तेथी लोकोए तेने खूब मार्यो. त्यांथी मर्दन नामना गामे पहोंच्या. त्यां बलदेवना चैत्यमां प्रतिमाध्याने रह्या. गोशाळो बलदेवना मुखमां पुरुषचिन्ह राखीने उभो रह्यो, तेथी लोकोए त्यां पण तेने खूब मार मार्यो. बंने जग्याए तेने साधु जाणी छोडी मूक्यो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु उन्नाग नामना संनिवेश तरफ जता हता, त्यां रस्तामां तरतना

ज परणेला लांबा लांबा दांतवाळा वर-वधूने सामेथी आवतां जोई, गोशाळो हसवा लाग्यो; ''विधिराज-विधाता पण केवो कुशळ छे के दूर दूर वसतां स्त्री-पुरुषने, जेने जे योग्य लागे तेने ते ज मेळवी आपे छे. विधाताए सरखे सरखी जोडी ठीक मेळवी दीधी छे.'' आ प्रमाणे मश्करी करता गोशाळाने पकडीने जानैयाओए खूब मार्यो अने दोरडाथी बांधीने वांसना एक जाळामां हडसेली दीधो. पाछळथी ते प्रभुनो छत्रधर होवानी खबर पडतां तेने छोडी दीधो. त्यांथी प्रभु विहार करीने गोभूमिमां आव्या.

त्यांथी विहार करीने प्रभु राजगृह नगरमां पधार्या. त्यां चोमासी तप वडे आठमुं चातुर्मास पूर्ण करीने, पारणु नगरनी बहार कर्युं. त्यांथी विहार करीने प्रभु वज्रभूमिमां पधार्या. त्यां चोमासुं करवानुं कोई नियत स्थान नहि मलवाथी प्रभुए नवमुं चोमासुं अनियत ज कर्युं. आ चातुर्मासमां प्रभुने घणा उपसर्गो थया हता.

त्यांथी विहार करीने प्रभु कूर्म गाम तरफ जता हता, रस्तामां गोशाळाए एक तलनो छोड जोईने प्रभुने पूछ्युं : 'हे प्रभु ! आ छोड फळशे के नहीं ?'' प्रभुए कह्युं के

'फळशे. तेने सात फूल लाग्यां छे. साते फूलना जीव मरीने आ ज छोडनी शींगमां सात तल थशे.' प्रभुना वचनने जुठुं पाडवा माटे गोशाळाए ते छोडने मूळमांथी खेंची काढीने फेंकी दीधो. नजीकमां रहेला व्यंतरोए, आ घटना जाणी, प्रभुनी वाणी निष्फळ न बनाववा, त्यां वृष्टि करी. वरसादथी भीनी थयेली भूमिमां, छोडनुं मूळीयुं कोई गायनी खरीथी बराबर दबाई गयुं अने धीरे धीरे ते छोड हतो तेवो ज थई गयो. त्यांथी प्रभु कूर्म गामे पहोंच्या.

त्यां वैश्यायन नामनो एक तापस मध्याहन समये, सूर्य सामे द्रष्टि राखी; सूर्यनी आतापना लेतो हतो. सूर्यना सखत तापने लीधे तेनी जटामांथी जुओ खरती हती, ते जूओ वीणी पाछी पोतानी जटामां मूकतो जोईने गोशाळे तेने यूकाशय्यातर कह्यो. आ प्रमाणे हांसी करवाथी तापस क्रोधे भरायो, अने तेणे गोशाळा उपर तेजोलेश्या मूकी. परंतु करुणासागर प्रभुए तेजोलेश्या सामे शीतलेश्या मूकवाथी तेजोलेश्या शमी गई, अने गोशाळो बची गयो. वैश्यायन पण प्रभुनी अलौकिक शक्ति आगळ नमी पडयो, अने

प्रभुनी क्षमा मांगी.

गोशाळाए प्रभुने 'तेजोलेश्या शी रीते उत्पन्न थाय ?' एवो प्रश्न कर्यो. सर्पने दूध पावा, समान, भविष्यमां पोताने अनर्थनी प्राप्ति थशे एम जाणवा छतां गोशाळाने तेजोलेश्या प्राप्त करवानी विधि प्रभुए बतावी. जे आ प्रमाणे 'जे माणस सूर्यनी आतापनापूर्वक हमेशां छठ्ठनी तपस्या करे, अने पारणामां एक मुठी अडदना बाकळा तथा एक अंजलि मात्र गरम पाणीनो उपयोग करे तो ते माणसने छ महिनाना अंते तेजोलेश्या प्राप्त थाय.'

त्यांथी विहार करीने प्रभु पाछा सिद्धार्थपुरे जता हता, त्यां मार्गमां पेला तलना छोडवानो प्रदेश आव्यो. गोशाळो बोल्यो के : "स्वामी ! आपने में जे प्रश्न पूछ्यो हतो, ते तलनी शींगमां आपना कहेवा प्रमाणे सात तल थया नथी." प्रभुए उत्तर आप्यो के : "ए ज छोड आ रह्यो."

प्रभुना वचन उपर अश्रद्धा राखता गोशाळाए ते तलनी शींगने चीरीने जोई, अने तल गणी जोया तो बराबर सात तल जोया. आथी तेणे पोतानो सिद्धांत नक्की कर्यो के : "जे

प्राणीओ जे शरीरमां मरे छे, ते ज प्राणीओ पाछा ते ज शरीरमां उत्पन्न थाय छे.'' ए रीते तेणे पोताना जुना नियतिवादने वधारे मजबूत कर्यो.

त्यांथी गोशाळो प्रभुथी छूटो पड्यो. तेणे श्रावस्ती नगरीमां जई एक कुंभारनी शाळामां रही, प्रभुए कहेला विधि प्रमाणे छ महिना तप करी, तेजोलेश्या साध्य करी. त्यां अगाडी श्री पार्श्वनाथ प्रभुना छ साधुओ के जेओ संयम पाळी न शकवाथी गृहस्थ थया हता अने अष्टांग निमित्तना ज्ञानमां निष्णात हता तेओ गोशाळाने मळ्या. तेमनी पासेथी ते अष्टांग निमित्त भण्यो. तेजोलेश्या अने अष्टांग निमित्त प्राप्त थवाथी ते पोताने सर्वज्ञ तरीके ओळखावतो पृथ्वी उपर वीचरवा लाग्यो.

किरणावली टीकाकारना मते 'गोशाळाने तेजोलेश्यानो उपाय सिद्धार्थ व्यंतरे बताव्यो हतो.' भगवतीसूत्र, आवश्यक चूर्णि, हरिभद्रसूरिनी टीका तथा महावीर चरित्र वगेरे अनेक ग्रंथोमां तेजोलेश्यानो उपाय प्रभुए बताव्यानुं विधान करेलुं छे.

प्रभु पण विहार करता करता श्रावस्ती नगरीए पधार्या. त्यां दशमुं चोमासुं विविध

तपवडे पूर्ण कर्युं. चातुर्मास पुरुं थतां, प्रभु नगरीनी बहार पारणुं पुरुं करीने, विहार करता करता अनुक्रमे म्लेच्छ लोकोथी भरपूर एवी द्रढभूमिमां गया. त्यां पेढाल नामना गामनी बहार पोलास चैत्यमां अठ्ठमनी तपस्या स्वीकारी एक रात्रिनी प्रतिमा धरीने, रह्या. ते वखते शक्रेंद्रे प्रभुने ध्यानमग्न जोई, तेओनी धीरतानी इन्द्रसभामां प्रशंसा करी, अने कह्युं के :- ''श्री वीरप्रभुना ध्यानमग्न चित्तने चलायमान करवाने, त्रण जगतमां कोई पण समर्थ नथी.''

आ सांभळीने सभामां बेठेलो, संगम नामनो एक सामानिक देव, प्रभुनी प्रशंसा सहन करी शक्यो नहि, ते भ्रकुटी चडावी, ताडुकी उठ्यो के : ''देवेन्द्र ! आप ज्यारे कोई मनुष्यनी प्रशंसा आ सभामां करो छो त्यारे समग्र देवजातिनुं अपमान करो छो. देवोनी एवी अवगणना करवी आपने शोभती नथी. आपश्रीने विशेष खातरी करवी होय तो हुं पोते ज तेने क्षणवारमां चलायमान करी दउं.''

क्रोधथी धमधमी रहेलो संगमदेव प्रभुने चलायमान करवा इन्द्र समक्ष प्रतिज्ञा करी,

तरत ज सभामांथी चाली नीकळ्यो अने सीधो प्रभु पासे आवी उभो रह्यो.

(१) प्रथम तेणे धूळनो वरसाद वरसाव्यो. धूळथी प्रभुनां आंखो, नाक, कान वगेरे शरीरनां बधा छिद्रो एवां तो पूरी दीधां के प्रभुनो श्वासो श्वास पण रुंधाई गयो. (२) पछी, वज्र जेवा कठोर मुखवाळी कीडीओ प्रभुना शरीरने वळगाडी. आ कीडीओ एक तरफ थी शरीरमां प्रवेशीने बीजी तरफ नीकळवा लागी, अने ए रीते प्रभुनुं शरीर चाळणी जेवुं करी नांख्युं. (३) पछी, प्रचंड डंखवाळा डांस-मच्छर उत्पन्न कर्या. मच्छरना तीक्ष्ण चटकाथी प्रभुना शरीरमांथी गायना दूध जेवुं लोही झरवा लाग्युं. (४) त्यार पछी, तीक्ष्ण मों वाळी धीमेलो प्रभुना शरीरे एवी रीते सज्जड चोंटडी के प्रभुनुं आखुं शरीर धीमेलमय देखावा लाग्युं. (५) ते पछी, वींछीओए अग्निना तणखा जेवा डंख मारीने प्रभुना शरीरने भेदी नांख्युं. (६) पछी नोळिया विकुर्व्या. ते नोळीयाओ दोडीदोडीने पोतानी उग्र दाढो वडे, प्रभुना शरीरनुं मांस तोडवा लाग्या. (७) ते पछी, भयंकर सर्पो विकुर्व्या. प्रभुनुं आखुं शरीर सर्पोथी छवाई गयुं, अने सर्पो दाढो भांगी जाय तेटला जोरथी प्रभुने डंख मारवा

लाग्या. (८) त्यार पछी, संगमे उंदरो विकुर्व्या. आ उंदरो नखथी अने दांतथी प्रभुना शरीरने उझडवा लाग्या अने ते उझडेला भाग उपर मूतरीने पडेला घा उपर खार छांटवा जेवुं करवा लाग्या. (९) ते पछी, मदोन्मत्त हाथीओ विकुर्व्या. हाथीओ प्रभुना शरीरने सूंढथी पकडीने, अने प्रभुने पग नीचे चगदवा लाग्या. (१०) प्रभु हाथीओथी क्षोभ न पाम्या एटले हाथणीओ विकुर्वी. हाथणीओए पण प्रभुने तीणा दांतथी घणा प्रहारो कर्या. (११) पछी, पिशाचनुं रुप विकुर्व्युं. पिशाचे अट्टहास्य वगेरे घोर उपसर्गो कर्या. (१२) त्यार पछी वाघ विकुर्व्या. वाघोए पोतानी वज्र जेवी दाढोथी अने त्रिशूल जेवा तीक्ष्ण न्होरथी प्रभुना शरीरने विदारी नाख्युं. (१३) त्यार पछी, संगमे सिद्धार्थ राजा अने त्रिशला राणीनां रुप विकुर्व्या. तेओ बंने करुण विलाप करतां बोलवां लाग्यां के : "हे पुत्र ! तें आवी दुष्कर दीक्षा शा माटे लीधी ? अमे तारा विना घणां दु:खी निराधार थई रझळीए छीए. अमारी संभाळ तुं नहीं ले तो बीजुं कोण लेशे ?" (१४) पछी, संगमे एक छावणी विकुर्वी. छावणीना माणसोए प्रभुना बंने पग वच्चे आग सळगावी, भात रांधवा माटे उपर

वासण मूक्युं. अग्नि एटलो बधो सखत सळगाव्यो के प्रभुना पग तळीएथी पण बळवा लाग्या. (१५) त्यार पछी, एक चंडाळ विकुर्व्यो. ते चंडाले प्रभुनी डोकमां, बे कानमां, बे भुजामां अने जंघा वगेरे अवयवो उपर तीक्ष्ण चांचवाळां पक्षीओनां पांजरा लटकाव्यां. ते पक्षीओए चांच अने नखना प्रहार एटला बधा कर्या के प्रभुनुं शरीर पांजरानी माफक छिद्रोवाळुं थई गयुं. (१६) पछी, प्रचंड पवन विकुर्व्यो. आ पवनथी पर्वतो पण कंपायमान थवा लाग्या, अने प्रभुने अद्धर उछाळी उछाळीने नीचे पटकवा मांड्या. (१७) त्यार पछी, पवननो वंटोळीओ विकुर्व्यो. आ वंटोळीआमां प्रभुने चक्रनी माफक खूब गोळगोळ भमाव्या. (१८). पछी, एक हजार भार जेटलुं वजनदार एक काळचक्र विकुर्व्युं. आ काळचक्र उपाडीने संगमे प्रभुना शरीर उपर नांख्युं. आ काळचक्र शरीर उपर पडवाथी प्रभु ढींचण सुधी जमीनमां पेसी गया. (१९) त्यार पछी, संगमे रात्रि होवा छतां प्रभात विकुर्व्युं. माणसो आमतेम फरवा लाग्या अने प्रभुने कहेवा लाग्या के : "हे देवार्य ! प्रभात थई गयुं. आप ध्यानमां क्यां सुधी उभा रहेशो." प्रभु तो ज्ञानथी जाणता हता के

हजु रात्रि बाकी छे. (२०) त्यार पछी, छेवटे तेणे देवतानी ऋद्धि विकुर्वी. प्रभुने कहेवा लाग्यो के : ''हे महर्षि ! हुं आपनुं आवुं उग्रतप अने पवित्र सत्त्व निहाळी भारे प्रसन्न थयो छुं. आपने जे जोईए ते मांगी लो. कहो तो तमने स्वर्गमां लई जाउं. कहो तो मोक्षमां लई जाउं.'' आवा मीठा शब्दोथी पण प्रभु ना चलायमान थया एटले तत्काळ कामदेवनी सेना जेवी हावभाव करती देवांगनाओ विकुर्वी. ते देवांगनाओए हावभावादि घणा अनुकुळ उपसर्गो कर्या. परंतु प्रभुनुं एक रुवाडुंए ना फरक्युं ते ना फरक्युं.

आवी रीते एक रात्रिमां दुष्ट संगमे मोटा मोटा वीश उपसर्गो कर्या. छतां प्रभुए तो तेना प्रत्ये दयाद्रष्टि ज राखी. कवि कहे छे के – 'जेनामां जगतनो नाश करवा जेटलुं अथवा उद्धार करवा जेटलुं असाधारण बळ हतुं, ते पोते ज आवा दुष्ट देव उपर कृपा, दया अने करुणा ज वरसावे तो पछी त्यां क्रोध रहीने शुं करे ! एटले क्रोधने ज प्रभु उपर ऐटलो बधो क्रोध चडयो के पोताने साव निरुपयोगी करी मूकनार प्रभुने छोडी चाल्यो गयो.'

सवार थतां प्रभुए त्यांथी विहार कर्यो. प्रभु ज्यां ज्यां जता त्यां त्यां संगमदेव आहारने अनेषणीय करवा लाग्यो. ते उपरांत बीजा पण घणी जातना उपसर्गो करवा लाग्यो. आवी रीते प्रभुए छ महिना सुधी उपवास कर्या. प्रभु विचारवा लाग्या के : 'हवे तो ते देव गयो हशे.' एम धारीने व्रज नामना गोकुळमां गोचरी माटे प्रभु गया. त्यां पण ते देवे आहारने अनेषणीय करी नाख्यो. प्रभुए पोताना ज्ञानबळथी आ वात जाणी लीधी अने तरत पाछा फरी ते गामनी बहार प्रतिमाध्याने उभा रह्या.

पछी ते संगमे अवधिज्ञानथी प्रभुना अस्खलित विशुद्ध परिणाम जाण्या. शरमथी ते झंखवाणो पडी गयो अने प्रभुने वंदन करीने कहेवा लाग्यो के : "हे स्वामी ! शक्रेंद्रे सुधर्मासभामां आपना सत्त्वनी जे प्रशंसा करी हती ते मने यथार्थ ज लागी छे. में आपना घणा अपराध कर्या छे-ए बदल मने क्षमा आपो." आ प्रमाणे कही, विलखो थईने, शक्रनी बीकथी प्रभुने वंदन करी सौधर्म देवलोक तरफ चाल्यो गयो. त्यार पछी ते ज गोकुळमां जती एक वृद्ध गोवालणे प्रभुने दूधपाकथी पारणुं कराव्युं. ते दानथी संतुष्ट

थयेला देवोए त्यां वसुधारा वगेरे पांच दिव्यो प्रगट कर्या.

संगम देवसभामांथी उठीने चाली नीकळ्यो हतो त्यारथी, सौधर्मवासी देवदेवीओना उद्वेगनो पार न हतो. शक्रेन्द्रे सौधर्मसभामां चालतां नाच-गान तथा रंग-विलास पण तजी दीधां हतां. ते चिंता करवा लाग्यो के : "मारी प्रशंसा सांभळीने ज संगम, प्रभुने उपसर्गोनो निमित्त बन्यो." आवा विचारो करतो, हाथ उपर मस्तक टेकवीने व्यग्र चित्ते नीचुं मुख राखीने शक्रेन्द्र बेठो हतो. एटलामां प्रतिज्ञाथी भ्रष्ट थयेलो, काळुं पडी गयुं छे मुख जेनुं तेवो संगम त्यां ज आवतो देखायो. ईन्द्रे पोतानी नजर फेरवी नाखीने, बीजा देवोनी सामे जोईने कह्युं के : "हे देवो ! आ कर्मचंडाल पापात्मा आवे छे, तेनुं मुख जोवाथी पण पाप लागे तेम छे. एणे आपणा स्वामीने बहु रीते कनडीने, मारो मोटो अपराध कर्यो छे. ए दुष्ट आपणाथी तो न डर्यो, परंतु पापथी पण न डर्यो. आ अपवित्र दुरात्माने स्वर्गमां स्थान न मळवुं जोईए. ऐने जलदी काढी मूको." आ प्रमाणे इन्द्रनी आज्ञा थतां ज, इन्द्रना सुभटो लाकडी, पाटु, मुष्टि वगेरेथी तेने मारवा लाग्या अने अंते

सौधर्म सभामांथी धक्को मारी बहार काढी मूक्यो. देवीओए पोताना हाथनी आंगळीओ मरडीने, पोतानो तिरस्कार जाहेर कर्यो. सामानिक देवोए पण तेने खूब धमकाव्यो. आ रीते चारे तरफथी तिरस्कार पामेलो संगम, चोरनी माफक आजुबाजु निहाळतो-मूढ जेवो देखातो ठरी गयेला अंगारा जेवो काळो मेंश थई गयो. देवलोकमांथी तेने धूतकारी काढवामां आव्यो. अने ते म्लानमुखे मेरुपर्वतनी चूला उपर पोतााानुं बाकी रहेलुं एक सागरोपमनुं आयुष्य पुरुं करवा रहेवा गयो. संगमनी पटराणीए दीनमुखे इन्द्रने विनंति करी के : "हे स्वामी ! जो आपनी आज्ञा होय तो हुं मारा पतिनी साथे जाउं."

त्यांथी प्रभु विहार करीने आलंभिका नगरीए आव्या. त्यां हरिकांत नामनो विद्युत्कुमारनो इन्द्र प्रभुनी सुखशाता पूछवा आव्यो. प्रभु त्यांथी श्वेतांबिका नगरीए आव्या. त्यां हरिस्सह नामनो विद्युत्कुमारनो इन्द्र प्रभुने सुखशाता पूछवा आव्यो, अने वंदन करीने पोताना स्थाने गयो. त्यांथी विहार करीने प्रभु श्रावस्ती नगरीए पधार्या. ते वखते शक्रेंद्रे कार्तिकस्वामीनी मूर्तिमां प्रवेश करीने प्रभुने वंदन कर्युं. तेथी प्रभुनो त्यां बहु ज महिमा फेलायो. त्यांथी

विहार करीने प्रभु कौशांबी नगरीए पधार्या. त्यां चंद्र अने सूर्ये उतरीने प्रभुने वंदन कर्युं. त्यांथी प्रभु वाराणसी नगरीए पधार्या. त्यां शक्रेंद्रे आवीने प्रभुने वंदन कर्युं. त्यांथी प्रभु राजगृह नगरे पधार्या. त्यां ईशानेंद्रे आवीने वंदन कर्युं. त्यांथी प्रभु मिथिला नगरीए पधार्या. त्यां जनक राजाए तथा धरणेंद्रे प्रभुने सुखशाता पूछी वंदन कर्युं. त्यांथी प्रभु वैशाली पधार्या. त्यां प्रभुए अगियारमुं चातुर्मास कर्युं. त्यां भूत नामना नागकुमारना इन्द्रे आवीने प्रभुने सुखशाता पूछीने वंदन कर्युं. चातुर्मास पुरुं थतां, प्रभु सुसुमारपुर पधार्या; अने त्यां चमरेंद्रनो उत्पात थयो. त्यांथी अनुक्रमे विहार करता प्रभु कौशांबी नगरीए पधार्या.

कौशांबीमां शतानीक नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने मृगावती नामे राणी हती. विज्या नामनी प्रतिहारी हती. त्यां वादी नामनो धर्मपाठक तथा सुगुप्त नामे प्रधान हतो. सुगुप्तने नंदा नामे परम श्राविका स्त्री हती. नंदा मृगावतीनी सखी हती. त्यां प्रभुए पोष वदि एकमना दिवसे प्रवेश कर्यो अने ते ज दिवसे तेमणे एवो उग्र अभिषेक कर्यो के : 'द्रव्यथी सुपडाना खूणामां रहेला अडद मळे तो ज वहोरवा, क्षेत्रथी एक पग उंबरामां

अने बीजो पग उंबरानी बहार राखीने वहोरावे तो ज वहोरवा; कालथी भिक्षानो समय वीती गया पछी ज मळे तो वहोरवा, अने भावथी कोई राजकुमारी दासीपणाने पामी होय, तेणीनुं मस्तक मूंडावेलुं होय; पगमां बेडी होय, रुदन करती होय अने तेणीए अठ्ठमनी तपस्या करी होय, एवी स्त्री वहोरावे तो ज वहोरवुं.' आ प्रमाणे अभिग्रह करीने प्रभु नगरीनी अंदर भिक्षा माटे फरवा लाग्या. राजा, प्रधान वगेरेए घणा घणा प्रयत्नो कर्या तो पण प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण न थयो.

ते वखते शतानीक राजाए चंपा नगरी उपर चडाई करी. चंपा नगरीनो राजा दधिवाहन हार्यो. दधिवाहन राजानी राणी धारिणी अने वसुमती नामनी राजपुत्रीने एक सुभटे पकडीने पोताना कबजामां राख्यां. ते सुभटे धारिणी राणीने पोतानी स्त्री तरीके रहेवानुं कहेतां ज ते सती पोतानी जीभ कचरीने मरण पामी. त्यारपछी, ते सुभटे वसुमतीने आश्वासन आपीने पोतानी पुत्री तरीके राखवानुं समजावी, कौशांबी नगरीना बजारमां ज्यां चार रस्ता भेगा थता हता त्यां वेचवा माटे लाव्यो. ते वखते ते नगरनो धनावह नामनो

एक शेठ त्यांथी पसार थतो हतो, तेणे ते वसुमतीने खरीदी लीधी अने पोताना घेर लई जई पुत्री तरीके राखी. ते बाळाना चंदन जेवा शीतल वचनोथी शेठे तेणीनुं नाम चंदना राख्युं. पछी शेठ तेणीना उपर एक पुत्री तरीकेनो स्नेह राखवा लाग्या.

एक वखते शेठ बपोरना घेर जमवा आव्या. ते वखते बीजी कोई दासी वगेरे हाजर नहि होवाथी चंदनाए शेठना पग धोवा मांड्या. पग धोतां धोतां चंदनानो केशपाश सहसा विखराई गयो, अने माथाना वाळ भीनी थयेली भूमि उपर पडीने गंदा थवा लाग्या. शेठे पोतानी पुत्रीना वाळ मेला न थई जाय ते माटे, सहज स्वभावे केशने लाकडी वडे उंचा कर्या अने आदरथी बांधी दीधा. झरुखामां बेठेली शेठाणी-मूळाए आ द्रश्य जोयुं तेणी विचार करवा लागी के : 'खरेखर ! शेठनी बुद्धि ज बगडी लागे छे. नक्की भविष्यमां आ बाळाने शेठ पोतानी स्त्री बनावशे, अने मारी बुरी वले थशे.'

शेठ कोई कार्यप्रसंगे बहार गया एटले मूळा शेठाणीए एक हजामने बोलावीने चंदनानुं माथुं मुंडावी नांख्युं. पछी तेना बंने पगमां बेडी पहेरावी, खूब मार मारी दूरना

एक अंधारा ओरडामां पूरी, दरवाजे ताळुं मारीने, पोताना पिताना घेर चाली गई. शेठ बहारगामथी आव्या पछी चोथा दिवसे चंदनाने ओरडामां पूर्यानी वातनी खबर पडी. ओरडानुं ताळुं खोलाव्युं, अने तत्काळ एक सूपडाना खूणामां अडदना बाकळा आपीने, पगनी बेडी तोडाववा माटे शेठ लुहारने बोलाववा गया.

आ वखते चंदनाए विचार कर्यो के : 'जो कोई भिक्षु आवी चडे तो तेने आ अडद वहोरावीने हुं पारणुं करुं.'

ते ज समये तेणीना भाग्ययोगे, छ महिनामां पांच दिवस ओछा उपवासवाळा श्रमण भगवान महावीर भिक्षार्थे फरता फरता त्यां पधार्या. प्रभुने आवता जोईने चंदनाने रुवाडे रुंवाडे आनंद व्यापी गयो. पोते लोढानी बेडी वडे सखत जकडाएली होवाथी उंबरो ओळंगवाने अशक्त हती. तेथी एक पग उंबरामां अने बीजो पग बहार राखीने, प्रभुने अडदना बाकळा ग्रहण करवानी विनंति करवा लागी.

ते वखते स्वामीनो अभिग्रह पूरो थवामां, आंखमां, आंसु नहि होवाथी, प्रभु पाछा

फर्या. ते वखते चंदना विचार करवा लागी के : ''हुं केवी अभागिणी के आ अवसरे पधारेला प्रभु कांईपण लीधा विना पाछा फर्या.'' ते दुःखथी रडवा लागी. ते वखते प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण थवाथी प्रभुए पाछा फरीने अडदना बाकळा वहोर्या. प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण थवाथी प्रसन्न थयेला देवोए वसुधारा वगेरे पांच दिव्यो प्रगट कर्या.

पंडित लोकोए चंदनाने बाळा केम कही हशे ? खरुं जोतां तो तेने महा होंशियार गणवी जोईए, कारण के तेणीए महावीर प्रभुने बाकळा आपीने मोक्ष लई लीधुं.''

तत्काळ शक्रेंन्द्र त्यां आव्यो. देवो नृत्य करवा लाग्या, चंदनाना माथामां सुशोभित केशपाश थई गयो, अने चंदनाना पगनी बेडीनी जग्याए झांझर थई गया. मृगावती राणी चंदनानी मासी थती हती, ते तथा शतानीक राजा देवदुंदुभिनो अवाज सांभळीने त्यां आव्या. मृगावतीए चंदनाने ओळखी, अने मासी भाणेज भेगा थया.

चंदना पोतानी साळीनी पुत्री थती होवाथी शतानीक राजा वसुधारा लई जवा तैयार थयो. परंतु चंदनाना कहेवा प्रमाणे ईन्द्रे ते धन धनावह शेठने लेवा दीधुं. वळी ईन्द्रे शेठने

कह्युं के : "आ चंदना श्रीवीरप्रभुनी प्रथम साध्वी थशे." शतानीक राजा चंदनाने पोताना घेर आदरपूर्वक लई गयो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु जृंभिका गामे पधार्या. त्यां शक्रेन्द्रे आवी प्रभु पासे नाटारंभ कर्यो, अने बोल्यो के, : "हे प्रभु ! हवे आपश्रीने थोडा दिवसोमां केवलज्ञान उत्पन्न थशे." त्यांथी विहार करीने प्रभु मेंढिक गामे आव्या. त्यां चमरेन्द्रे आवीने, प्रभुने वंदन करी सुखशाता पूछी.

त्यांथी विहार करीने प्रभु षण्मानि नामना गामे पधार्या. त्यां गाम बहार प्रतिमाध्याने उभा रह्या. एक गोवाळीयो पोताना बळदो प्रभु पासे मूकीने गाममां गयो. गोवाळ ज्यारे पोतानुं कार्य पतावीने गाम बहार आव्यो, त्यारे पोताना बळदो त्यां नहि जोतां, ते प्रभुने पूछवा लाग्यो के : "हे देवार्य ! मारा बळदो क्यां गया ?" प्रभु तो ध्यानमां ज उभा रह्या. तेथी गोवाळ बहु ज क्रोधे भरायो. ते दोडतो जईने, शरकट वृक्षना लाकडाना बे मजबूत खीला बनावी लाव्यो; अने ध्यानस्थ प्रभुना कानमां हथोडावती बंने खीला उंडा

पेसाडी दीधा, खीलानी आगळनी धारो एकबीजाने मळी गई. खीलाने जोई जाय अने बहार खेंची काढे नहि, एवा दुष्ट ईरादाथी, गोवाळे बंने खीलाना बहार देखाता भागो कापी नाख्या. आ प्रमाणे घोर उपसर्ग थवा छतां पण प्रभु ध्यानथी लेश मात्र पण न चळ्या. कानमां खीला ठोकाववानुं कर्म प्रभुए पोताना त्रिपृष्ट वासुदेवना भवमां शय्यापालकना कानमां तपावेला सीसानो रस रेडीने उपार्जन कर्युं हतुं; ते महावीरस्वामीना भवमां उदये आव्युं. ते शय्यापालकनो जीव घणां भवभ्रमण करी, आ भवमां गोवाळीओ थयो हतो.

त्यांथी विहार करीने प्रभु मध्यम अपापामां पधार्या. त्यां प्रभु भिक्षा माटे सिद्धार्थ नामना वाणीआने घेर गया. प्रभुने भिक्षार्थे आवेलां जोतां ज, सिद्धार्थनो मित्र खरक नामनो वैद्य त्यां बेठेलो हतो, तेणे प्रभुनी मुखमुद्रा उपरथी जाण्युं के प्रभुनुं सर्वसुलक्षणोथी संपूर्ण शरीर होवा छतां, तेओना अंगमां कांईक पण शल्य होवाथी प्रभुने दरद थतुं होवुं जोईए.

ते खरक वैद्ये सिद्धार्थना कहेवाथी प्रभुना आखा शरीरनी तपास करवा मांडी. तपास करतां प्रभुना बंने कानमां खीला ठोकेला देखाया. वैद्य अने सिद्धार्थ आ प्रमाणे वातो

करता ज रह्या. अने प्रभु तो उद्यानमां आवीने काउसग्ग ध्याने उभा रह्या. सिद्धार्थ अने वैद्य पण त्यां आवी पहोंच्या. खरक वैद्य वैदविद्यामां बहु ज कुशल हतो. तेणे साणसा वडे प्रभुना कानमांना बंने खीला खेंची काढ्या. कानमां उंडा पेसी गयेला खीला लोहीथी तरबोळ थईने जे वखते खेंची कहाडवामां आव्या, ते वखते प्रभुथी एक कारमी चीस पडाई गई. ए चीसना भयंकर ध्वनिथी आखुं उद्यान खळभळी उठ्युं. संरोहिणी औषधिथी प्रभुना बंने कान रुझावी नाखी, वंदन करीने, सिद्धार्थ तथा खरक वैद्य पोतपोताना स्थाने गया.

वैद्य अने सिद्धार्थ, मरीने देवलोकमां गया, अने खीला मारनार गोवाळीओ मरीने सातमी नरके गया. आ प्रमाणे प्रभुने उपसर्गो थया. प्रभुने थयेला उपसर्गोनी शरुआत पण गोवाळीआथी थई, अने उपसर्गनी समाप्ति पण गोवाळीआथी ज थई.

महावीर प्रभुने जे जे उपसर्गो थया तेना जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा विभाग पाडीए तो, कटपूतना व्यंतरीए करेलो शीत उपसर्ग ते जघन्य उपसर्गमां उत्कृष्ट, संगमदेवे

जे काळचक्र प्रभुना उपर मूक्युं ते मध्यम उपसर्गमां उत्कृष्ट; अने कानमांथी जे खीला खेंचाया ते उत्कृष्ट उपसर्गोमां उत्कृष्ट उपसर्ग जाणवो. आ बधा उपसर्गोने प्रभुए परमशांति अने निश्चळतापूर्वक सहन कर्या.

व्याख्यान पांचमुं समाप्त

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान ६ठ्ठुं

श्रमण भगवान महावीर महाराजा अणगार थई गया छे. आवा तीर्थंकरोने पण साधना करवी पडे छे तो बीजा साधना विना मोक्षे जता नथी. संसारनी साधना करीने रखडवुं पडे छे. तेम मोक्षनी साधना कर्या विना मोक्षे जवातुं नथी. संसारमां अनंतोकाळ रखडवुं पडे छे. ते दु:खो वेठवा तेनी मर्यादा खरी आ संयममां दु:खो भोगववा पडे तो शास्त्रे कह्युं छे के आठवार भाव चारित्र आवी जाय तो मुक्ति थया विना रहे नहीं. अेकवार भाव चारित्रमां पण मुक्ति थई जाय तो आठवार चारित्र आवे तो संसार रहे नहीं तेना गमे तेटला भवो थाय नहीं ते सात आठ भवथी वधारे भटके नहीं. तेमां सम्यक्त्व कायम

होय तो दुर्गतिमां जवानुं होय नहीं. जेने भयंकर कोटीनो बंध थयो होय तेने रखडवुं पडे. भगवान साधुपणामां केवी रीते जीवे छे. तेनुं वर्णन कर्युं छे. (ते कल्पसूत्रनो पाठ दररोज मोढे राखीने त्रिकाळ पाठ करीने रोज ते मुजब जीववा प्रयत्न करीए तो तेनो संसार घणो अल्प थई जाय छे.) आ दशा श्रुतस्कंधनुं आठमुं अध्ययन छे. श्रमण भगवान महावीर ज्यारथी अणगार थया त्यारथी इर्या समितिना उपयोगवाळा, भाषा समितिना उपयोगवाळा, भिक्षा जवुं होय तो उपयोगपूर्वक जाय आवे, वस्त्र पात्र लेवा मूकवा तेनी प्रवृत्ति उपयोगवाळी ते तीर्थंकरोना आत्माने होती नथी. मात्र समितिनुं खंडन न थाय माटे वर्णन करवामां आवे छे. भगवान दीक्षा ले त्यारथी केवलज्ञान न थाय त्यां सुधी जमीन पर बेसता नथी. स्थंडील, पेशाब, नखनो मल, शरीरनो मल परठववो पडे तो उपयोगपूर्वक तो भगवानने होतुं नथी ते छेल्ली बे समितिनो भंग न थाय माटे कहेली छे. मननो उपयोग, वचननो उपयोग, कायानो उपयोगपूर्वक ते मनवचन काया सदा गुप्त ते ज्यारे उपयोग करे त्यारे सम्यक् चिंतन पूर्वकनो ते पोते गुप्त, तेमनी इन्द्रियो गुप्त, नवे ब्रह्मचर्यनी वाडनुं

पालन, शीलसंपन्न, क्रोधादि चार नहीं, उदयमां बधा छे. छतां ते आवी गयुं तेवुं बने नहीं ते बधाने निष्फळ बनावे छे. ते क्रोध, मान, माया अने लोभ संयममां सहायक थाय तेमने विघ्नोमां आवे नहीं ते बहारथी, अंदरथी, उभयथी शांत हता. मनमां कोई विकल्प नहीं शुभ भावना वगेरे. ते विकल्प न कहेवाय मायावी अंदरना आवेशने न बतावे तेवा घणां होय छे. अेवा भगवान नथी. तेथी संताप रहीत छे. संताप उभो करे तो आवे बाकी साधु संताप रहित होय. पण कर्मना बंधथी रहित ऐवो पापनो बंध नहीं थवानो के संसारमां तेमने फेरवे ते ममत्वथी रहीत छे. द्रव्यादि किंचनथी रहित छे. द्रव्यभाव बे प्रकारना गया होवाथी निरुपलेपन छे. ते द्रष्टांतथी कहे छे. कांसाना पात्र पर मूकेलुं पाणी कांसाना पात्रने वळगतुं नथी तेम भगवान कदी स्नेहथी लेपाता नथी. रागनो उदय छतां ते द्रष्टिराग, स्नेहरागमां जाय नहीं. भगवाननो विहार अस्खलित छे. तीर्थंकरना आत्मा आलंबननी अपेक्षा राखता नथी ते वायुनी माफक अप्रतिबध्ध छे. अेक जग्याअे रहेता नथी. तेमना हैयामां खराब भाव नहीं आवतो होवाथी शरदना पाणी जेवा निर्मळ छे. काचबानी जेम

इन्द्रियो गुप्त छे. खडगी नामना जानवरने ऐक शिंगडुं होय छे. तेम ते भगवान एकला ज विचरे छे. रागादिनो उपयोग तेमने करवो होय तो करे बाकी रागादि काम करी जाय नहीं. पक्षीनो परिवार अवीहत होय छे. अने गमे त्यां फरे छे. तेम भगवान पण अविहत छे. भारंड पक्षीमां जीवो बे होय छे. पेट अेक होय छे, मोढा बे होय छे. ते मनुष्योनी भाषामां बोलनारां होय छे. ते बंनेने भिन्न भिन्न आशा थाय तो मरण पामे तेथी बंनेनी आशा एक राखी अप्रमतपणे रहेलो जीवे तेवी रीते भगवान पण अप्रमत हता. हाथीना जेवा पराक्रमी बळदनी माफक सहन करवाने माटे तैयार, सिंहनी माफक परिषह जीतवामां समर्थ हता. सागरनी माफक गंभीर हता. शांत हता. चंद्रना जेवी क्रांति जेवा हता. पृथ्वीनी माफक सघळुं सहन करनारा समभावे रहेनारा हता. घीथी सिंचायेलो अग्नि झळहळे छे तेम तपरुपी अग्निथी सिंचायेला हता. रागद्वेष वगेरे ने आधिन न थवुं अने ऐ रीते जीवे तो भाव चारित्र दीपे अने प्रगट थाय. द्रव्य-क्षेत्र-काळ अने भाव. द्रव्यमां सचित अचित बंने आवे छे. सचित्तमां स्त्री वगेरे, अचितमां अलंकार अने मिश्रमां अलंकार सहित स्त्री

तेमां राग नथी अेवा क्षेत्र धान्य तेने जुदा करवानी जग्या - आकाश घरघरनां आंगणां पर तेमने राग नथी, काळमां सौथी नानामां नानो समय छे. सो कमलना पानने जुवान तंदुरस्त मानव तीक्ष्ण भालो लईने जेटला जोरथी मारे तो भुक्को थई जाय छे. ते अेक पानमांथी बीजुं पान भेदातां असंख्याता समय थाय छे. (र) एकदम जीर्ण कपडानां तारने तोडवा माटे (फाडवा माटे) जुवान तंदुरस्त मानव जेटला जोरथी फाडे अने टुकडा थाय तेमां एक तंतुथी बीजो तंतु तुटतां असंख्याता समय थाय छे. माटे सूक्ष्म समय छे. घडीनो छठ्ठो भाग ते क्षीण छे, प्रेम, दोष, कजीयो, अभ्याखान कोईनी वात गुप्तपणे प्रगट करवी ते पैशुन्य छे, अति मोहनीयना उदयथी उद्वेग थवो ते अरति छे. द्रव्यमां कोई चीज पर, क्षेत्रमां कोई जग्या पर, काळमां कोई समय पर, अने भावथी रागादि, कोई संयममां बाध करता नथी. कोई आवीने वांसलाथी छोले तो तेना पर द्वेष नहीं अने चंदनथी कोई विलेपन करे तो तेना पर राग नहीं. ते बंनेमां समान रहे ते बोलवुं सहेलुं छे. अवसरे टकवुं कठीन छे. तीर्थंकरो संसारमां रह्या छे ते कर्म खपाववा माटे, सुख भोगववा माटे

नहीं. असलमां विचार करीऐ तो जेटला समकीति साचा छे ते संसारमां रहेवुं पडे माटे रहे ते कर्म खपावववा माटे रहे, सुख भोगववा माटे नहीं, तेम साधु थया छे ते दुःख भोगववा. केटला कर्म ऐवा होय छे के सुख भोगव्या पछी जाय. केटला दुःख भोगवावे पछी जाय. ते न भोगवे तो कर्म न जाय, पापकर्म आपणे पाप न करीऐ तोय जाय, पाप करवानी वृत्ति थाय अने सर्वथा पाप न करीऐ तो ज जाय, सुख आपनारा कर्म भोगवीए तो ज जाय, दुःख आपनारा कर्म भोगवीए तो ज जाय. ज्यारथी जीव समजु थयो त्यारथी आत्मा पर कर्मो छे ते क्यारे जाय तेनी चिंतावाळो ज होय. निकाचित होय तो सुख भोगववामां स्वतंत्र नहीं. चक्रवर्तिओमां समकीतिओना दाखला मळे तेने कोण रोके ? कर्म. चारित्र मोहनीय नडे छे तेवुं कर्म न होतुं ? समकीतीने न भोगववुं होय छतां भोगववुं पडे, श्रावक साधु न थाय तो तमारामां कंइ माल नथी तेम अमाराथी न कहेवाय. आशातना लागे समजुती आपीअे बधुं करीअे पण ते कहे अशक्त छुं. तो अमे गुस्से न थईअे. नवकारशी करनारनी मासखमणवाळो मश्करी न करे, करे तो मासखमणवाळो

अणसमजु छे. समकीतीनी नवकारशीनी मश्करी न थाय तेमां माया रमशे तो अमारे माथे पाप नहीं तमारे माथे. जातने ठगता नहीं, भगवानने शरीरना रोग नहीं, मानसिक रोग नहीं, जगतमां जेटला उपसर्गो करनारा छे ते मनुष्य संबंधी, तिर्यंच संबंधी अने देव संबंधी होय तेमना जेवाने सारी जग्याअे बेसवुं होय तो ना पाडे तेवो छे कोई ? मारा जेटला कर्म छे ते दुःख न भोगवुं तो जाय नहीं. माटे दुःख भोगववा माटे ज साधुपणुं छे. दीक्षा ज दुःज भोगववा माटे छे. शास्त्र द्रष्टिए जो सुख ज भोगववुं होय तो अमे शुं काम छोडी दइए. आत्मिक सुखनी अपेक्षाए सर्वार्थसिध्धना देवताओ छे. अमारे सुख भोगववुं होय तो अमे छोड्युं अे बेवकुफी छे. सुख दुःख भोगववा ज छोडीए छीअे. बधा तीर्थंकरोनो नियम महा अप्रमादनो उपदेश आपवो ए छे ते पोते अमल कर्या पछी ज आंख सामे मणी आवे के पथ्थर आवे, सोनुं आवे तो पण राग थाय नहीं, दुःख आवे तो द्वेष थाय नहीं, जीववामां लोभ नहीं, मरवामां चिंता नहीं केम ? तेमने कर्मशत्रुनो नाश करवानो ज प्रयत्न छे. तेमां उद्यमशील हता तेमनुं ज्ञान अनुपम, दर्शन अनुपम अने चारित्र अनुपम

हतुं तेमनो विहार केवो हतो ? तेमनुं वीर्य केवुं अने तेमनी सरलता केवी हती के उपमा न अपाय तेवी हती. मायानो अभाव, माननो अभाव द्रव्यथी कोईनी चीज ले नहीं. भावथी त्रण प्रकारनो गारव नहीं, मले तो राग नहीं न मले तो ईच्छा नहीं, ते बधी मननी अपूर्व प्रसन्नता ते बधुं अनुपम कोटीनुं हतुं. तेमनुं आचरण एवुं के मुक्तिरुपी फळ तेमने माटे नियत छे. बार वर्ष सुधी तेमने पालन कर्युं जेटला तपनी जरुर होय तेटला अवश्य करेज. तप केटलो कर्यो के बार वर्ष छ महिना अने पंदर दिवसमां ३४९ पारणा अने बधो तप चोविहारो कर्यो. तेमां पण प्रसन्नतानुं वर्णन न थई शके तेटली, दुःख भोगव्या विना कर्म जाय तेवा नथी, माटे तपने ज प्रधान गण्यो छे. बाह्य तपनी ओछी किंमत आंकी नथी ते प्रधान कर्म खपाववानुं साधन छे. ऋजुवालीका नदीना किनारे व्यंतरनुं मंदिर तेनाथी दूर नहीं अने नजीक नहीं, त्यां गोदोहीका आसने बेसीने सूर्यनी आतापना लेता चोविहारो छठ्ठ हतो ते वखते शुकल ध्यानमां रहीने (उपशम श्रेणीमां शुकल ध्यान होय ते मतांतर छे) क्षपक श्रेणी मांडी द्रव्यगुण पर्यायनी चिंतामां हता. शब्द अर्थनी

चिंतामां हता, पदार्थ केवो तेना गुण केटला छे ते चिंतनमां चढी जाय ते शुकल ध्याननां पहेला बे पाया छे तेमां द्रव्यथी गुण पर्यायमां जाय ते पहेलो, द्रव्यनुं चिंतन होय तो द्रव्यनुं, गुणनुं होय तो गुणनुं, पर्यायनुं होय तो पर्यायनुं, तेमां रहे ते बीजो पायो. तेने स्थिर दीपकनी उपमा आपी छे. ते बे पाया करी ले एटले वीतराग थाय, बारमे ध्यानान्तरीका शास्त्रो कहे छे. योगनो निरोध करवा माटे चोथो पायो छे. मोहनीय कर्म मर्या पछी त्रण घाती कर्म नियमा जवाना छे. तेनामां रहेवानी ताकात नथी. जेम ताडना झाडना उपरना भागमां सोय घालो तो ते वधे नहीं तेम मोहनीय कर्म जाय पछी त्रण जाय ज. त्यार पछी भगवानने केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं. त्यार पछी भगवान अर्हत् थया. अष्टप्रतिहारीथी पूजवाने योग्य बन्या, राग-द्वेषना विजेता बन्या. देव, मनुष्य अने असुरना पर्याय मात्रने जाणे. सर्वलोकमां रहेला सर्व जीवोनी गति आगति जाणे. आयुष्य, कायस्थिति उपपात च्यवन वगेरे भगवान जाणे छे. जे मनमां चिंतेलुं होय, गुप्तपणे होय के प्रगटपणे होय ते बधुं भगवान जाणे छे. जीवने जाणे छे अेम सघळा अजीवना पर्यायने जाणे छे.

तेमनी साथे केवळज्ञान पेदा थया पछी क्रोड देवता साथे ने साथे ज रहे छे. माटे ते एकांत नथी ते रीते भगवान विचरे छे. भगवानने ज्यां केवलज्ञान थयुं त्यां ईन्द्रादि देवताओए समवसरण रच्युं, द्रव्य तीर्थनी स्थापना माटे विनंती करी. त्यां सर्व विरती लायक कोई जीव नथी ते न होय तो तीर्थ स्थपाय नहीं. साधु जोईए. भगवान क्षणवार देशना आपीने (मंगल करीने) उभा थया, चालवा मांड्यु. अने एक रात्रीमां बार योजन चाल्या छे. भगवानने ज्ञानमां ठीक लागे तेम वर्ते. अनुचित एक वर्तन नहीं. त्यार पछी भगवान अपापापुरीमां महासेन वनना उद्यानमां पहोंच्या त्यां सोमील नामनो ब्राह्मण यज्ञ करावे छे त्यां ईन्द्रभूति अदि अग्यार ब्राह्मणो भेगा थया छे. तेमां ईन्द्रभूति आदि त्रण भाईओ हतां ते त्रणेने एक एक शंका हती. ईन्द्रभूतिने जीवमां शंका हती. बीजाने कर्ममां शंका हती. त्रीजाने जीव ए शरीर अने शरीर ए जीव ते संदेहोवाळा हता. पांचसो पांचसो विद्यार्थीओ एमनी पासे भणे छे तेवा पंडितो छे. आगळ मा-बाप आवाने त्यां मोकली आपता अने कहेता ते कहे तेम करजो. ते घरे मोकले तो आववानुं नहीं तो तेमनी पासे रहेवानुं तेनुं

नाम गुरुकुळ कहेवाय. आजे आवा गुरुकुळ बने ? तेना मा-बापने छोकरा पासे कशीने काम लेवुं छे ते अमथा मोटा करता नथी, दूध पाईने मफत मोटा करता नथी, भणावे छे ते स्वार्थ माटे ज. तमे एटलो बधो स्वार्थ कर्यो के तेथी छोकरा पर छाया पडी एवी के ते करे ज नहीं, चोथाने पांच भूत छे के नहीं तेमां शंका छे. पांचमाने जे जेवो होय ते तेवोज थाय के फेरफार होय एमां शंका छे. छठ्ठा ब्राह्मणने बंध छे के नहीं तेनी शंका छे. साातमाने देव छे के नहीं एमां शंका छे. आठमाने नारकीमां शंका छे. नवमाने पुण्यमां शंका छे. दशमाने परलोकमां शंका छे अने अग्यारमा ब्राह्मणने मोक्षमां शंका छे. ते अग्यार एक एकना संदेहवाळा होवा छतांय पोत पोताने सर्वज्ञ माने छे. मिथ्यात्व आत्माने शी रीते नुकशान करे ए समजाववुं छे. शंका होवा छतां सर्वज्ञ माने ते मिथ्यात्वनी हाजरी होय तो ज मनायने ! "सर्व जानाति ईति सर्वज्ञः" महा वैयाकरणो छे, बधुं भणेलां छे, कळामां निपुण छे. पीडे छे कोण ? मिथ्यात्व. कोईपण वात जगतमां शरु थाय तेने सारी खोटी जाण्या वगर अभिप्राय आपवानुं मन कोने थाय ? शक्ति होय तो साची खोटी वात

जाण्या वगर रहे ? ते जाणवानी ईच्छा ज नहीं. आपणे जाणीए ते साचुं. जे कांई करीए ते साचुं, बीजा करे ने माने ते खोटुं. ते पण महा मिथ्यात्वना घरनी वात छे. परस्पर वात करता तोय ठेकाणुं पडत. पण उदयकाळ न आवे त्यां सुधी जीवने जाणवानी ईच्छा थती नथी. माटे ज्ञानीओए सत्तर पापनो बाप मिथ्यात्व कह्युं छे ते जाणवुं, समजवुं सहेलुं छे ? सूक्ष्म नथी. कोईपण वातमां न जाणता होइए तो जाणवानुं मन थाय छे के नहीं. जाणीने कजीयामां पडवुं तेना करतां न जाणवुं ए सारुं ते पण मिथ्यात्व छे. ते अग्यारे साथे रहेवा छतां कोई कोईनी शंका कोई जाणतुं नथी. अरे विद्यार्थीओ पण जाणता नथी ते मिथ्यात्वनो प्रभाव. त्यां घणां ब्राह्मणो हाजर छे. भगवान पधारी गया छे. भगवान पधारे त्यां दोडादोड देवतानी होय ज. मनुष्यने तो खबर पडे तेम तेमनी पण दोडादोड चालु छे. यज्ञ चाली रह्यो छे ते वखते देवताओ आवी रह्या छे. जोईने मलकाय छे. जेमां हजारो जीवोने होमवाना होय ते दयानी वात, अने बीजा जीवोने होमवा ते मेळ खाय नहीं. ते यज्ञना महिमाथी देवताओ जोवा आवी रह्या छे तेम माने छे ते देवता समवसरणमां जाय

छे. आ महापुण्यशाळी छे अने योग्य छे, खोटा अभिमानी नथी, ते अभिमानी छे ते पण बनावटी नथी, ज्ञान एटलुं छे बोलवानी ताकात छे, समजाववानी ताकात छे, के कोई तेमनी सामे टकी शके नहीं. विद्वान न आवे त्यां सुधी कडाका मारे तेमानां आ नहीं. ते पुण्योदय जोरदार हशे आपणो जोरदार छे. तेमने सफळ कर्यो अने आपणे ? देवताओने आगळ गयेला जोईने खेद थाय छे, विचार करे छे के ते जाय छे क्यां ? त्यां हजारो लोक जाय ने आवे तेमने पूछीने कहे छे के ते सर्वज्ञने वांदवा जाय छे. ते वात ईन्द्रभूतिना कानमां पडी. तेवा विद्वान छतां मोटा ते मोटा तेमनी आज्ञा मुजब ज वर्ते ते मोटानी माफक ज बधाने साचवे. सर्वज्ञ आव्या छे तेथी लोक वंदन करवा जाय छे ते वात तेना कानथी सहन न थई मारी हाजरीमां बीजो सर्वज्ञ क्यांथी आवे ? मुर्खाने धुतारो ठगे. अ सर्वज्ञअे तो देवताने ठग्या छे क` जेथी आ यज्ञ अने मारा जेवा सर्वज्ञने छोडीने त्यां गया छे. ते केम ठगे ते ज मिथ्यात्व छे. कागडाओ तीर्थना पाणीने छोडीने खाबोचियामां जाय, देडकाओ खाबोचीयामां होय ? मांखी चंदनने छोडीने विष्टामां जाय,

सूर्यना प्रकाशमां घुवड आंधळा थाय तेम बधा देवता पण अेवा ज लागे छे जेवा सर्वज्ञ छे तेवा आ देवता हशे तेम मनमां समाधान करे छे. कोयलने आंबो, कागडाने लीमडो गमे ते स्वभावनुं औषध छे. क्या कया जीवो कया कया स्वभाववाळा होय ते ओळखाई जाय, गमे तेवी सारी वात होय ते सांभळवानुं मन न थाय तो समजवुं के अयोग्यता बेठी छे. तेम ईन्द्रभूतिने अंदर बेठेलुं के मारी हाजरीमां सर्वज्ञ तरीके पूजाय अने हुं बेठो रहुं ते केम चाले ते सहन थतुं नथी. एक आकाशमां बे सूर्य रहे ? एक गुफामां बे केशरी रहे ? एक म्यानमां बे तलवार रहे ते बने नहीं. सर्वज्ञ एक ज हुं ! ते मिथ्यात्व छे, सर्वज्ञ एक ज जोईअे. अनेक होय तो कजीयो थाय बे होई शके नहीं तेम विचार करे छे. घणां लोको वांदीने आवे छे तेमने मश्करीमां पूछे छे सर्वज्ञने जोई आव्या तेमनुं रुप केवुं छे ? तेमनुं स्वरुप शुं छे ? रुप अद्‌भुत, ज्ञान अद्‌भुत, अैश्वर्य अद्‌भुत, समवसरणनी रचना अने तेमनी बेठक ते पण अद्‌भुत छे. जे सर्वज्ञने जोईने आव्या छीए तेमना रुपनुं वर्णन करतां अमने आवडतुं नथी. त्रणे लोकना सारा सारा भणेला, गणेला, गणितशास्त्री भेगा

थाय अने तेमना गुणनुं वर्णन करवा मांडे तेमनुं आयुष्य पुरुं न थाय तेवुं होय तो पण ते गुण न गणाय, ते अमने खबर पडती नथी एवा छे. मनमां ईन्द्रभूतिजी विचार करे छे के नक्की कोई महाधूर्त लागे छे ते कोण बोलावे छे ? तेमनाथी बेसातुं नथी ने ? आजना पंडितो कजीयो तंटो न जोईअे तेम कहीने चालवा मांडे छे. तेमांनो आ नहीं. अंधकारना समुदायने नाश करवा सूर्य कदी राह जोतो नथी. आ सर्वज्ञ नामनो वादी जीवतो होय ने हुं बेसुं ते पालवे नहीं, पोतानी जातने ओळखे छे के में घणां समर्थवादीओने मुंगा करी दीधा. तेमनी हाजरीमां कोई वाद करवा तैयार नथी तो घरमां शूरो कोण सर्वज्ञ आव्यो. जे अग्नि झाडोने बाळे तेने पहाडनी शी किंमत ? जे पवन हाथीने उडाडे तेने रुना पुमडाने उडाडवामां शुं ? ज्यारे हुं गौर देशमां गयो त्यारे त्यांना पंडितो दूर भागी गया. गुजरातना पंडितो भयथी बुढा जेवा थई गया, मालवाना पंडितो हा पाडीने बेसी गया, वादी अमारे जोइतो हतो ते दुकाळ पडी गयो छे तो पछी कोण वादी आव्यो छे के मारी हाजरीमां सर्वज्ञ थईने रहे तो माराथी बेसाय नहीं. जवाने तैयार थई गया छे जेने पोतानी

शक्ति पर विश्वास न होय ते बेसी रहे ? ते वादी नामना कीडानी साथे प्रयत्न करवो ते बराबर नथी. कमलने उखेडवा सुरेन्द्रगजे जवुं न जोईअे. आ वात तेमनो नानो भाई कहे छे, ईन्द्रभूति कहे छे के तारी वात साची छे. मारो विद्यार्थी जाय तो ते पण जीती आवे एवो छे. तुं मारो भाई छो, समर्थ छो. मारा विद्यार्थी घणा, पण वादीनुं नाम सांभळ्या पछी मारायी बेसी शकातुं नथी. वायडा होत तो भगवानने न मळत, ते वायडा पंडित नहीं साचा पंडित हता. बन्युं एवुं के घाणीमां तल पीलीए अने एक तल रही जाय, अनाज दळीए तेमां कणीयो रही जाय, घास कापता तणखलुं रही जाय तेम आ वादी मारा माटे रही गयो छे. (सर्वज्ञ कहेवाता ते मने हरावावामां शक्तिमान नथी) अेकने न जीतीए तो शुं वांधो ? एकने न जीतीए तो सर्वज्ञपणुं खोटुं पडे. सती एकवार भंग करे तो सतीपणुं जाय तेम आ रही गयो छे तेने न जीतुं तो मारो यश नाश पामी जाय. जहाजमां नानुं छीद्र होय तो जहाजने डुबाडनार थाय छे. ते रीते विचार करीने जवानी तैयारी करे छे ते सभामां जवुं होय तो मर्यादापूर्वक जवाय. तमे जेवी सभा होय तेवा

कपडा पहेरोने व्यवहारमां ? धर्ममां नहीं. आपणा लोकोने लग्नमां जती वखते, प्रधान पासे जती वखते कपडा जोईए मंदिर उपाश्रयमां चाले बराबर छे ने ? आ स्थान केवुं ? तेणे बार तीलक कर्या छे. सोनानी जनोई पहेरी छे. सुंदर पीतांबर पहेर्युं छे. जेटला विद्यार्थीओ छे ते कोईना हाथमां पुस्तक, कोईना हाथमां कमंडलुं छे अने पोताना गुरुनी बिरुदावली बोलावता बोलावता जता हता. सरस्वतीना कंठना आभरण छे. वादीओने जीतवानी लक्ष्मी तेना शरणभूत छो अने पंडितमां शिरोमणि छो, सरस्वतीनुं वरदान छे तेथी दीपचक्र आकाश गाजी रह्युं छे. मार्गमां जता घणां लोको मळ्या ते बधा वखाण करता जाय, जेने पूछे ते सारुं ज बोले, जे मळे तेने पूछे छे सौ एमनी तरफेणमां ज बोले छे. चिंता थई गई के घीठाए शुं करी नांख्युं ? जो आवो मानव सर्वज्ञ तरीके जाहेर न थयो होत तो हरावा न जात. तेने मने कोपीत करी नाख्यो. ते एमनी दया चिंतवे छे. पर्वतनी सामे रहीने दावाग्नी सळगाव्यो छे. तेणे चळ पेदा थाय एवुं कर्युं छे. तो पण चिंता करवानुं शुं काम ? हमणां जाउं निरुत्तर करी आवुं. खजवो चंद्रमानी साथे आकाशमां प्रकाशी

शके क्यां सुधी, सूर्य न उगे त्यां सुधी. ते मने लागे छे के भाग्यनो योग छे माटे आव्यो छे. अत्यार सुधी जीभनी चळ उतरती नथी. चर्चा कोनी साथे करुं ते आजे उतरशे तेम शांति राखीने चाले छे. जेम आगळ चाले अने जे बधा मळे ते अेम ज कहे हवे पोतानी जातमां शंका पेदा थाय छे. हुं जोई लउं शुं शुं भण्यो छुं ते मानव शास्त्र छे. साहित्यनो भंडार छे, एक एक वाक्य पर बोली शकाय. लक्षणशास्त्रमां, साहित्य शास्त्रमां, तर्कमां मारी मति जोरदार छे. कयुं शास्त्र छे के जेना पर में तर्क कर्यो न होय, ा शास्त्रने भारेमां भारे भणवानो अने विचारवानो श्रम कर्यो छे. वज्र माटे अभेद्य नथी, महात्माओ माटे असिध्ध नथी, भूख्या माटे असाध्य नथी, दुर्जन माटे अवाच्य नथी, दुर्जन सगी मानोय दोष काढे, त्रण लोकने जीतनारा महा पराक्रमी मारे माटे कांई अभेद्य नथी. हमणां जाउं ने जीती लउं आ विचार करतां करतां समवसरण जोयुं. समवसरणने वीस हजार पगथियां होय छे. रचना व्यवस्थित छे. गढ एवा छे के पगथियां चढतां ज दर्शन थाय. समवसरण पासे आवीने पगथियां चढतां चढतां भगवान देखाय छे. आ लोको आटला अभिमानी छतां

विचार करवा मागे तो न थोभे तेमांनी जात नहीं. अभिमान पार विनानुं छे छतां आंखे कांई देखे तो विचार करवा जेवुं लागे ते विध्वता एम न कहे के न विचारुं. ते करे ज आजना पंडितो लागे के न फावे तो शास्त्रा शास्त्रने बदले दंडादंडी करे तेमाना छे. जीतवा आवनाराने संतोष पमाडीने बधा जवाब आपीए. पण आवीने घोंघाट करे तेने शुं करीए ? आवा पंडितमां विनय न होय. होय तो ते ज्यां त्यां नमस्कार आपनी माफक न करे. जात जुदी, भगवानने जोया त्यारे लाग्युं के सामान्य मानवी लागतो नथी महामानव लागे छे. तेने देव ज मानवो पडे. मनुष्य लोकनो देव, देवलोकनो नहीं आ मानवी नहीं ? निकाचीत कर्मवाळानुं मान पण न गळे. नीकाचीत कर्मवाळाने भगवानना अतिशयो काम लागे नहीं तेवा पाखंडीओ बेसे छे. तेमनी वात लई जाय, वात करे पण तेमना गुण कदी न बोले. जे निर्णय करीने आवे के धर्म नथी पामवो तेने कोई न पमाडे. भगवानने जोईने विचारे छे के आने कयो देव मानवो. जेटला जगतमां देवो छे ते बधाने याद करी जाय छे. आपणे फलाणा साचा खोटा कहेवा नथी. देवना चरित्रो वांचो. देवनी

मूर्ति जुओ जे मूर्ति जोवी गमे अने जे वांचवामां सारुं लागे ते मानवुं तेम हरिभद्रसूरि महाराजाए कह्युं छे. ते माटे ग्रंथो बनाव्या छे. हवे ते पोते पोताना देव याद करी जाय छे तेने बधा देवोना शास्त्रनी खबर छे. जो चंद्र कहीअे तो तेमां कलंक देखाय. आमां कलंक देखातुं नथी, बीजी वात समजवा मळे तो नहीं समजवी अेवो निष्ठुर नथी. सूर्य मानीए तो एनी सामे जोवाय नहीं. मेरु सोनानो छे. भगवाननी काया कोमळ छे अने मेरु कठीन होय छे. विष्णु श्याम होय छे, आ श्याम नथी. ब्रह्मा बुढा छे आ तो युवान लागे छे. कामदेवने तो शरीर ज क्यां छे. बधा देवनी कल्पना करी कोईनी साथे मेळ खातो नथी. आ पंडितनी पंडिताई वखाणवी छे जेवुं होय तेवुं देखे, जेवुं होय तेवुं विचारे, सुंदर लागे त्यां असुंदर कहेवुं ते दुर्बुद्धि कहेवाय. वीतरागना शास्त्रो पण जोया छे अने जाण्या छे तेथी निर्णय करे छे के दोषरहित अखील गुणोथी भरेला चोवीशमा तीर्थंकर थवाना छे ते आ लागे छे. एम विचारे छे ते शास्त्रो भणेला ते काम आवी गया जोवानी विचारवानी शक्ति छे. चिंतामां उभो रह्यो छे सोनाना सिंहासन पर बेठेला जगतपूज्य वीरने

जोईने चिंता करी न होत तो एक खीली माटे महेल तोड्यो आने न जीत्यो होत तो शुं खामी हती. मारी बुध्धि मंद नीकळी, सारी नहीं. जगदीशना अवतारने जीतवा आव्यो छुं. जे ईष्टदेव छे तेने कहे छे के मारा पर रक्षा कर, हवे मान कहे छे के कांई नहीं पाछा वळाय नहीं. कदाच भाग्यनो योग जीवतो होय अने जीती जाउं तो त्रण लोकनो पंडित थई जाउं. भगवान अहीं सुधी न बोल्या हवे बोलवाना छे ते विचारमां अने चिंतामां छे (पड्यो छे) ते वखते मधुरवाणीथी भगवान तेना नाम अने गोत्र कहे छे. हे गौतम गोत्री ईन्द्रभूति सुखपूर्वक अहीं आव्यो छे त्यारे ते विचारे छे के त्रण जगतमां प्रसिद्ध मारा नामने कोण न जाणे ? पण एक वात मारा हैयामां पडी छे ते कोई जाणतुं नथी ते मारो संदेह कही दे तो सर्वज्ञ ते हुं नहीं ते अभिमान मोटाई छे साथे नम्रता केटली छे ? जे वस्तु न मानता हो मानवा जेवी तमने लागे तो समजवानुं मन थाय, ते नथी एवो मारो आक्षेप छे मानवा जेवामां समजवुं जोइए ना न कहेवाय. ना कहे ते मुर्खानुं काम छे. जाणवानुं मन थाय ते जेनी पासे जणाय तेवुं होय तो हैयुं खोलीने वात करो तेवा होत तो तमे

क्यारनाय समकीत पामी गया होत. जे चीज समजवा जेवी लागे, समजवानी शक्ति होय, ईरादापूर्वक न समजवुं ते धर्म नहीं. हवे भगवाने कह्युं के हे गौतम गोत्रे ईन्द्रभूति तने आत्मानी शंका छे आटलुं भगवान बोल्या त्यां अभिमान गयुं, बाळक बनी जाय छे. नीची मुंडीए भगवान पासे आवे छे. तेमने वाद असलमां कर्यो ज नथी. सर्वज्ञ आगळ छद्मस्थ वाद शुं करे. ते ब्राह्मण पण कोकने वेचाण हतो. वेदने माननारो हतो. खीले बंधायेला हता भगवान एनी आगळ वातो करवाना छे. अग्यारे ब्राह्मणोने तात्वीक शंका छे. बधा पंडित वेद नामना शास्त्रने माननारा छे. वाघरण पण कोकनी पत्नी ते सारी जात, वारांगना गमे तेटली सारी गमे तेटला पतिनी होय पण ते अधम कहेवाय. घणांने पूछ्युं छे के तमे धर्मात्माओ गणाओ छो कोनी पासे पाम्या. बापना दिकरा छो तेम कोक गुरुना चेला छो के नहीं ते पूछ्युं छे ? ते धर्मदाता कोण ? कोनी पासे पाम्यो. पामवुं होय ते पामे छे, भीखारी शुं पामे ? साचो खोटो माल जाणे ते पूछवा जाय कचरोय न जाणे ते कोने पूछवा जाय. काकाने तत्वनी वात समजाववी छे. बाकी आ वात सहेली छे गणधर वाद

तो बे-चार वर्षनो ग्रंथ छे. तेमांनी महत्वनी वात करवी छे. महत्वना तत्वो बे छे - आत्मा अने कर्म. आत्मा शरीरथी स्वतंत्र द्रव्य छे. शरीरना धर्मो जुदा छे. आत्माना धर्मो जुदा छे. शरीर माना पेटमां उत्पन्न थयेलुं छे अने अहीं सळगी जवानुं छे. शरीर जड छे, आत्मा चेतन छे, कर्म पुण्य रुप छे अने पाप रुप छे. पुण्यमां उंचामां उंचुं होय तो स्वर्ग, पाप नरक आपवामां ताकातवान छे. मामुली दुःख सुख आपे तेवो अनुभव तमने छे. खावा-पीवा-पहेरवा-ओढवा मळे छे तेने शुं कहेशो. तमारा करता होशियार-डीग्रीवाळाने नथी मळतुं तमने बापीकुं मळ्युं छे. झाझी महेनतथी घणुं मळे छे, घणां भोगवी शकता नथी तमे भोगवी शको छो. तमारी साथे जन्मेलां मरी गया घणां, तमे जीवो छो कारण जाणवुं पडशेने ? अकस्मात् दुःख पण आवे भयंकर पाप होय तो नरक आपे, उंची जातनुं पुण्य होय तो स्वर्ग आपे. बधा कर्म आत्मा परथी जाय तो मोक्ष आपे. आत्मानी अवस्था मोक्ष, बगडेली अवस्थाए संसार छे. आत्मामां कया कया गुण छे ? ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण छे ते खबर छे ? घणांने शरीरमां आत्मा छे के नहीं तेमां शंका. मोटो भाग हुं आत्मा

छुं एम मानतो ज नथी.

दूधमां जेम घी छे तेम आत्मामां मोक्ष छे. आत्मा खुद मोक्ष छे. साचुं बोल दूध खुद घी छे के घी जुदु, दूध जुदु छे ? दूधमं घी बधा माने छे तो दूधना कुंडामां हाथ घालीए तो घीना लोचा हाथमां आवे ने ? विधि शा माटे करावती पडे छे के दूध छे तेने घीमां परिणाम पमाडवानुं छे आपणे ! दूध ज घी बनी जाय छे एम कहेवुं छे मारे. जुवानीया पैसो कमाववानो धंधो मुकीने आनी पाछळ थोडा पडे ! डिग्रीधर बनाव्या छे तेम थोडुं आ जाणीने महेनत करे ! तमे बधा मने मुर्ख लागो छो. तत्वनी बाबतमां हाथ उंचा करीने उभा रहे तेवो धर्मी होय ? दीकरो बापने कहे के धर्ममां शुं बळ्युं छे ? अने ते बाप वखाण करे होंशियार थई गयो एम कहे, तुंय धर्मथी अने हुं य धर्मथी अेम कहीने बेसाडी दे ने ! मोह लाग्यो छे एटलो के छोकरो धर्ममां कंई नथी एम कहे तोय होंशियार कहे, दूधमां घी छे एम कहेवाय पण ते दूधमां हाथ न नंखाय अने हाथ हलाव्या करो तो दूध कचरावाळुं थई जाय. पीवा जेवुं न रहे, माटे दूध ज खुद घी बनी जाय

छे. भव्य-अभव्य-दुर्भव्य समजावी दउं, तेनो भव कही दउं, पछी मजा छे. आत्मा अने कर्म मान्या विना चाले नहीं. आत्माना धर्मो जुदा अने कर्मना धर्मो जुदा. कर्म पुण्य अने पाप रुप छे. अतिपापनुं फळ नरक अने अति पुण्यनुं फळ स्वर्ग छे. कर्म रहित अवस्था ते मोक्ष. ते न माने तो चाले नहीं. तो तेनो उपाय छे तेम मानवुं ज पडे. छ स्थानमां मिथ्यात्व अने छ स्थानमां सम्यक्त्व रहे छे. समकीतना छ स्थान बोलो. आत्मा छे, नित्य छे, कर्मनो कर्ता छे, कर्मना फळनो भोक्ता छे, मोक्ष छे अने मोक्षनो उपाय छे. छ माने ते समकीती अने छ न माने ते मिथ्याद्रष्टि छे. आत्मा कोणे जोयो छे ? शरीरनी साथे नाश पामे. आत्मा कर्म करे नहीं ते करे बीजो, कर्म भोगवे नहीं. मोक्ष न होय तो खलास थई जाय तेनुं स्वरुप ज जाय (दूधनी वात घणीवार कहुं छुं ते याद राखी ल्यो.) समज्या वगर हा कहे ते गतोडियो. जेटलुं दूध ते घी थवाने लायक छे ? घी नहीं थवाने लायक दूध घणां ? तेवा दूध छे ते पीवाय ? दूधमांथी घी थवानी लायकात वाळा छे ? दूधमां घी छे पण ते जगतमां जेटलुं दूध छे तेटलानुं घी थाय ? न थाय. नक्की. तो जेटला भवी

ते बधा मोक्षे जाय ज नहीं. जेटलुं दूध ते बधानुं घी थाय ज नहीं तेम जेटला भवी ते बधा मोक्षे जाय ज नहीं. गायनुं दूध, भेंसनुं दूध, बधा दूधनुं घी थाय. न थाय. संयोग सामग्री मळे, कारीगीरी करे त्यारे थाय एम ने एम थाय नहीं. घणुं दूध ढोळाई जाय, दरियामां जाय, दूध स्वयं घी रुप थवानुं छे. संसार आत्मानुं विरुप छे. मोक्ष आत्मानुं स्वरुप छे. मानव थवुं, नारकी थवुं, तिर्यंच थवुं, देव थवुं ते आत्मानुं विरुप छे ! आत्मा मानव वगेरे नथी आत्मानुं खरुं स्वरुप मुक्त छे. आजे कोई मरण पामे ते कर्मना संयोगे खराब पर्याय वर्ते छे ! सिध्धमां अने आपणामां फेर शुं ? नमो सिध्धाणं मानो छो ? शाश्वतो नवकार छे के अशाश्वतो ? सिध्धो शाश्वत छे के अशाश्वत ? व्यक्तिगत शाश्वत के परंपराथी शाश्वत छे ? व्यक्तिगत कहो तो आदि थवानी तो सिध्धोमां अने आपणामां फेर शुं ? सिध्धो कर्मरहित छे, आपणे कर्मसहित छीए. कर्म न माने तेवाथी बध्ध मुक्त मनाय नहीं. बध्ध होय ते ज मुक्त थाय. मुक्तने मुक्त थवानुं होय नहीं. आत्मा अने कर्म अलग पड्या होय तो कांई नहीं तेथी आत्मा अने कर्मनो संयोग सिध्ध थई जाय. संसार

आत्मानुं स्वरुप नहीं ते विरुप जोईने नाचीए तो तेवा बेवकुफ छीए के डाह्या छीए ? हुं ईन्द्र छुं एम कहे तो ते पागल ते तारुं रुप नहीं विरुप छे. अनादि कर्मनो संयोग आत्मा साथे मानवो पडेने ! शेठाई तमारुं स्वरुप छे ने. दूधमां घी जरुर छे पण प्रगट क्यारे थाय के जे नकामा कचरा पड्या छे ते साफ थाय त्यारे. होजरी तमारी सारी छे माटे दूध पचे छे. ताजा जन्मेलाने गायनुं दूध पाओ तोये मरी जाय तेने माटे तो बाईनुं स्तन झरतुं होय ते तेने पीवडावे. मा मरी गई होय तो न मले तो दूध केटलुं अने पणी केटलुं तेमांय भय लागे, पचशे के नहीं जे दि होजरी बगडी गई अने टेश करवा गया तो मरी जवाना. आपणे बधा कचरावाळा छीए. दूधनुं घी बनाववुं होय तो बधा दूधनुं बनतुं नथी. जे दूधनुं बनाववुं होय तेने माटे स्पेश्यल रुम होय छे. तेमां मोटी गोळी राखवी पडे. जेवुं जेनुं घी तेवी ते गोळी होय. गोळीनी ठींकरी केटली जाडी होय. कांकरी वागे तो फुटे नहीं. बधुं दूध तेमां नांखवुं पडे. तमारो आत्मा खुद मोक्ष छे. खबर छे के मारो आत्मा मोक्ष छे. आत्मा ज एक दि मोक्ष रुपे परिणामे पामवानो छे ते दूधने जे गोळीमां नांखे ते गोळी

केवी होय. ठंडी मजेनी. तेने रोज साफ करवी पडे. कचरो न रखाय. एमने एम दूध राखी मूके तो घी थई जाय ? आपणे संसारी शांत कर्म सहित छीए माटे कर्मना उदयो चालु छे. तेनी असर चालु छे. संसारी रागमोहनी, द्वेष मोहनी ते चालु छे. तेना पेटा भेद क्रोधादि आत्मामां पडेला छे. तेनी असर छे आपणा पर. माटे दूध जेटला मेला आपणे छीए ते भव्य छीअे. जे दूधनुं घी न बने ते अभव्य-तेवा जेटला भव्य ते दूध जेटला मेला छे. ते दूधने कोठीमां नाख्या पछी विपरीत स्वभाव नाख्या पछी घी बने. दूध मीठुं छे, खाटानुं मेळवण करवुं पडे. राग तमने मीठो लागे छे तेने खाटो करवो छे. आखी कोठीमां जेटलुं दूध होय तेना प्रमाणमां खटास नामनी मेळवण नाखवी पडे त्यारथी दूध बदलावा मांडे. तेने सुंघो तो सुगंधी जुदी, तेने चाखो तो स्वाद जुदो, ते मेळवण दूधना अंगोपांगमां मळी जाय. तमारा माटे मंदिर, उपाश्रय मोटामां मोटी गोळीओ छे. खटाश नांखवी छे. बीजे दिवसे जुओ तो दूध घट्ट थई जाय ते पछी दहीं कहेवाय. दहीं बने एम बने ए ! भव्य संसारी दूध जेवो छे. भव्य साधु ते दहीं जेवो छे. तमारे अहीं आववुं

ज पडशे. नहीं आवो तो हैयामां साधुता लाववी ज पडशे. ते दहीं एमने एम पडी रहे तो गंधाई उठे के नहीं ? तेने तैयार करवा माटे रवैयो मोटो जोइए. तेमां उनाळामां ठंडुं पाणी अने शियाळामां गरमागरम लाय जेवुं पाणी नाखवुं पडे. ते तेना रोम रोम सुधी पहोंची जाय पछी रवैयो फरे ते मांदा फेरवे के अलमस्त होय ! बाई-भाई बंने ते काछडा बांधे. ज्यारे रवैया करे त्यारे आजुबाजुना पचीस घरो जागी जाय. तेमांथी संगीत नीकळे एवा करनार होय छे के पसीनो छुटी जाय ते रीते फेरव्या ज करे. ते रवैयो ऐवी रीतनो छे के कणीये कणीयानुं मांखण थई जाय अने छाश नोंखी पडी जाय. ते बधी क्रिय अहीं करवी पडशे. देखावना दहीं थई जईए अने पछी गंधाई उठीए ते चाले नहीं. दूधमां दहीं करवुं होय तो आटली क्रिया करवी पडे पछी माखण थई जाय ते माखण माटे तावडा जोईए, ते तावडा लाल चोळ जोईए, माखणनी छाश बधी बळी जाय अने ते चोख्खु थाय ते घी. घी थाय तो दूध ज घी बने. मण दूधनुं घी केटलुं बने ? तेमां कचरो केटलो ? तमारामां कचरो केटलो छे ? अमारा भगवाने मेळवणने, मांखण कह्युं

छे. धर्मना स्थानोने गोळीओ कही छे. बधी क्रियाओने वलोणुं कह्युं छे ! नीरांते बेसीने काउसग्ग करे तो कपाळ वलोणुं थाय ? तेमां मजा न आवे. तमारे अमारे घणी महेनत करवी पडशे. त्यार पछी आत्मा संसार रुप बन्यो छे ते मोक्षरुप बनी जाय. आत्मा छे ते आत्मा आपणे छीए ते शरीरथी जुदा छीए के शरीर रुप छीए, तेनाथी जे अवस्था जेटली थाय ते सारी कहेवाय के खराब, तमने दरिद्रीपणुं गमे ते श्रीमंताईपणुं ? कया बेवकुफने श्रीमंताई गमे ? तेम कह्युं छे ! जेने श्रीमंताई गमी ते अनंतीवार दरिद्री थवाना ते संसारनो क्रम छे. श्रीमंताईमां म्हाले अने गमे ते थवाना दरिद्री ! खराब दरिद्रता होय छतां तमारी आंख सामे अनेक जीवे छे. गाळो खाय छे अने हाथ जोडीने उभा रहे छे छतां टुकडो कुतरानी माफक नांखो तो अन्नदाता कहे छे. तमे सावचेत नहीं थाव तो श्रीमंताई चाली अने दरिद्रता आवी रही छे. श्रीमंताई गमे छे के नहीं ते पहेलां पूछुं पण दरिद्रता बतावुं ! श्रीमंत श्रीमंताईने भूंडी न माने ते उपयोग करी शके नहीं. करे तो वांको ज करे, थोडुं करीने घणुं बतावे. श्रीमंताईने सारी मानीने दातार थाय ज नहीं. शखावती

ज थाय ! आपणे आत्मा छीए शरीर नथी. कर्म जातनो रोग वळगेलो छे ते पुण्य रुप छे अने पापरुप छे. पुण्यनी मात्रा वधे तो देव थई शकीए. पापनी मात्रा वधे तो नरकमां जवुं पडे. कर्मरहितपणुं ते मोक्ष. मोक्षनो उपाय सम्यक्दर्शन. सम्यक्ज्ञान अने सम्यक्चारित्र ए त्रण छे. जेटली क्रिया ते आत्माने दहीं बनावी वलोणे चढावी माखण बनावी तपरुपी तावडे चढावे तो आपणुं काम थई जाय. तो मोक्ष थई जाय. ईन्द्रभूतिने बोलावे छे ते शिष्य तरीके आवे छे. भगवानने अने तेने मेळ बाप दिकरा करतां उंचो थयो ! गौतम कहे ने तेने आनंद आवे. गुरुने बधो अधिकार. भगवाने कह्युं तने शंका वेदना शास्त्रमां आवे छे तेने लईने छे. ते वेदना शास्त्रनो पूजारी तेना पर तेने श्रध्धा छे ! आपणने श्रध्धापुरी ! शेना पर ? शास्त्र पर जराय डगे नहीं तेवी. भगवान कहे छे तुं वेदना पदार्थने बराबर विचारतो नथी माटे शंका छे. तेने थयुं मारी शंका पण ते जाणे छे. वेद पदना अर्थने पण जाणे छे. जे पदनी शंका छे ते पद जाणे छे. तेथी सांभळवा आतुर बनी जाय छे. भगवानने बधा शुभ कर्मो ज उदयमां होय छे. भगवान वाणी सुस्वर ज बोले. मालकोष

रागमां ज स्वाभाविक ज कंठ होय छे. दरेक मानवो पध्धतिसर बोले तो कोईने कोई राग होय. मानवनी भाषामां कडवाश होय के मीठाश होय ? मीठाश ज जोईए. भगवान बोल्या तने आ वेदना पदथी शंका थई छे तेम कहे छे जे भणेला होय छे ते वेदना पदो सरखी रीते बोले. स्तुति भगवान बोल्या त्यारे ते गौतमने थाय छे के बधुं ज जाणे छे. तें आवो अर्थ कर्यो माटे तने शंका थई छे. विज्ञानघन गमनागमनादि चेष्टवाळो आत्मा तेमज विज्ञानघन ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने आकाशथी पेदा थाय छे. कोनी जेम ? जेम मदिरा बनाववा माटे घणां साधनो छे ते बधा भेगा थाय तो मद शक्ति पेदा थाय छे. तेम आ पांचमांथी चेतना शक्ति पेदा थाय छे. अने भुतो नाश पामी जाय छे. तेम आत्मा नाश पामी जाय छे. माटे भुतथी अतिरिक्त आत्मा छे नहीं माटे मरीने फरी जनमवानुं रहे नहीं माटे आत्मा नथी तेवो अर्थ तें कर्यो छे. तेम कहे छे. जेवुं अज्ञान अभिमान जोरदार हतुं तेवा ज्ञानी मळी गया छे. पुण्योदय जोरदार छे ते अर्थ हुं कहुं तेम करीए तो आत्मा पुरवार थई जाय. छए दर्शनवाळा आत्माने माने छे. तेमां मतभेद नथी. भगवान अर्थ करे

छे सांभळ ! विज्ञान घन - विज्ञान बे प्रकारनुं छे. सामान्य ज्ञानरुप, विशेष ज्ञानरुप. आपणने बधाने पहेला सामान्य ज्ञान थाय पछी विशेष ज्ञान थाय. हुं समजावुं छुं ते विशेष ज्ञान छे. जैन दर्शननी विशेषता छे के ज्ञानना जेटला प्रकार, जेवी जेवी रीतना तेवा कोई दर्शनमां नहीं मळे. मळे तो कहेजो मने ! जीवनी उत्पत्ति ज्ञान माने कर्मध्ध कयुं कर्म ? सुख दु:ख आपे ते विगतवार अहीं मळशे. ते भंडार भर्यो छे. छतां ज्ञाननी बाबतमां अज्ञान रहीए अने धर्म करीए. जैन दर्शन पामेला आवा लोक होय ते बधा जैन दर्शनने वगोवे छे ने ! माटे तमे कमसेकम तेना जाणकार थाव तेवी मारी भलामण छे. ज्ञान दर्शन उपयोगात्मक विज्ञान. ज्ञान दर्शन आत्मामां रहे तेनो उपयोग कोण मुके. आत्मा जे वस्तु जाणवानी ईच्छा थाय तेनो उपयोग मुकीए. तेने बहारना साधनो जोईए, ते पांच भुतोमांथी बनेली चीज होय तेने सामे आवे तेनुं ज्ञान थाय. ते घटादि हेतुथी उत्पन्न थयो कहेवाय. तेवी रीते भुतोमांथी उपयोग तरीके थयो ते उत्पन्न थयो कहेवाय. मणिभाई गया ने छगनभाई आव्या. तेनुं ज्ञान करवुं होय तो थया ज करे. जागृत अवस्थामां तेनुं ज्ञान थया

ज करे. वस्तुनुं ज्ञान विचारमां चढया होईए त्यारे थाय. ज्ञानना उपयोग विनानो आत्मा होतो ज नथी. तेमां पूर्वनी संज्ञा न होय ते वातमां आत्मा नथी, परलोक नथी तेवी संज्ञा तुं क्यांथी लाव्यो. माटे तेनी शंका टळी जाय छे. अने शंकारहित थई जाय छे. आ जगतमां छए दर्शनवाळा आत्माने माने छे नास्तिक सिवाय. नास्तिकनो विचार न करवो, शास्त्रे कह्युं छे के जेने ना सिवाय आवडतुं नथी तेनी साथे वात थाय ज नहीं. हेमचन्द्रसूरि महाराजे कह्युं छे के जेनी मति परलोक आत्मा वगेरेमां मुंझाय तेनी वात न थाय. आत्मानी वातमां बधा एक. ज्यां स्वरुपनी वात आवे त्यां बधा जुदा छे. स्वरुपनी वातमां बधानी साथे झघडो करवो पडे. कोई नित्य कहे कोई अनित्य कहे, कोई एक कहे, कोई अनेक कहे. कोई बध्ध ज माने, कोई मुक्त ज माने ते बधा दर्शन खोटा. एकांत नित्यवादी, अनित्यवादी, बध्धवादी, मुक्तवादी खोटो, आत्माना अस्तित्वमां आपणे मेळ. स्वरुपमां भेद पडे ते पाड्यो ज पडे. तात्वीक बाबतमां पडवो ज जोईए. तमे पेढी पर बेठा हो अने खोटो रुपियो कोई आपे तो गल्लामां ज नांखोने ? बाप दीकराने खोटो रुपियो आपे तो

य ले नहीं तेमां पक्का. तेम तत्वनी बाबतमां झघडो करवो पडे ते बराबरने ! विज्ञान आत्मा छे के गुण छे ? बौध्धो आत्माने क्षणिक माने छे. नित्य ज माने, बध्ध ज माने, मुक्त ज माने ते भेदने समजीए. अने समजीने चालीए तो कार्यसिध्ध थाय ? तमारा छोकराने वास्तविक ज्ञान मळे ते माटे शुं साधन छे ? व्यवहारमां छोकराने तमे भणावो छो तेनी पाछळ केटलो खर्च ? आगळना वेदमां आत्मा ज्ञानमय छे, तपोमय छे, दम, दया अने दान त्रणने माने ते जीव कहेवाय. दम, दया अने दान न माने ते जीव कहेवाता होय छतां जड छे. ते अर्थमां छे. हंमेशा भोग्य अने भोक्तानुं ज्ञान थवुं जोईए. भोक्ता हमेशां जुदो होय, शरीर हाले चाले नहीं तो आपणे शुं बोलीए. जीव नीकळी गयो तेम कहोने एटले भोगववा लायक चीज पडी छे ने अने भोक्ता गयो तेम कहेवायने. भोग्य वस्तुथी भोक्ता ओळखाय. भोगववा लायक खावापीवानी चीजो तेने भोग्य कहेवाय. शरीर पण भोग्य. भोक्ता बीजो छे. शरीरनो भोक्ता होवो ज जोईए. भोग्य छे माटे ते अनुमतिथी आत्मानी सिध्धि थाय छे. दूधमां घी, तलमां तेल छे. तेम आ शरीरमां आत्मा रही शके

छे. भले न देखी शकीए तो पण आ बधुं होवा छतां उपमान अनुमानथी शास्त्रमां आत्मानी सिध्धि करी बतावी छे. ईन्द्रभूतिए पूछ्युं हुं नथी देखतो तेने शुं ? भगवाने कह्युं तुं जगतमां जेटली चीजो माने छे ते बधी जोयेली ज माने छे के बीजाए जोई होय तोय माने छे ते कहे. घणी चीजो एवी छे के में नथी जोई छतां विश्वासपात्र कहे तेनुं पण मानुं छुं. तो हुं विश्वासपात्र तने लागुं छुं के नहीं ? तो हुं आत्माने साक्षात् जोउं छुं तुं पण मारा जेवो थईश अने आत्माने जोईश. ते मानी गयो छे. आंधळो मानव रुप शी रीते जुए तेम केवलज्ञान वगरनो अरुपी द्रव्यने शी रीते जुए ? ते सांभळीने ईन्द्रभूति माथुं नमावे छे. अने दीक्षा ले छे. पांचसो पण तेमांना छे. ईन्द्रभूतिने गम्युं ते पांचसोने गम्युं. ते पांचसो साथे दीक्षीत थाय छे. ते वात छूपी रहे ? ते वात चाली पेला राह जोईने बेठा छे के ईन्द्रभूति क्यारे आवे. आ वात सांभळी अने थाय छे मारो भाई त्यां रहे ? हमणां ने हमणां जाउं ने छोडावी लावुं. ज्यारे खबर पडी के अग्निभूति बेठा तो पछी नवे नक्की कर्युं के आ बे शिष्य एम नक्की करीने जाय छे.

२. बीजा आव्या अने कहे के पर्वत द्रवी जाय ते बने पण मारो भाई हारे तेवुं न बने. भगवाने तेमने बोलाव्या छे. तने कर्मनो संदेह छे. तुं पण वेदना अर्थनो विचार करतो नथी. माटे गरबड थई छे. आपणा धर्माचार्योए छए दर्शनना ज्ञाता बनवुं जोईए. परदर्शन न जाणता होय तेनाथी धार्यो उपकार न थई शके. जगतमां थई गयुं, थाय छे अने थशे ते आत्मा सिवाय थाय नहीं. माटे शंका पडी छे के आत्मा छे, कर्म नथी, ते वचनथी नरक, तिर्यंच वगेरे देखाय छे ते आत्मा सिवाय छे ज नहीं. ते कर्मनो निषेध स्पष्ट ज छे. आत्मा अमूर्त मानीए छीए. मुर्तिमान कर्म तेनाथी अमूर्तने उपघात केम थाय ? रुपी कर्मथी अरुपी आत्माने उपघात थाय नहीं तेवो संदेह छे. आ अर्थ बराबर नथी. बधी वस्तु संसारमां होय पण भोक्ता न होय तो संसारमां शुं किंमत छे ? आत्मा जाय तो शरीरने काढो काढो कहेने ? केटला पद एवा छे के विधि बतावनारा छे. अग्निहोत्र करे ते स्वर्गे जाय. प्रशंसा करवी होय के आत्मा सिवाय कांई नथी तेनाथी कर्मनो निषेध थतो नथी. ज्यां त्यां विष्णु बेठा नथी पण विष्णुनो महिमा गवाय छे तेम ज्ञानथी अस्तित्व

छे. भगवाननुं ज्ञान सर्वव्यापक छे जे खरेखर भगवानने सर्वज्ञ मानतो होय तेनी पासे खूणामां घालीने पाप करावावा मांगतो होय तो ते करे ज नहीं. तमे ज्यां जाव त्यां दश वर्षनुं छोकरुं चोवीशे कलाक साथे राखो ते कबुल छे ? सारुं ज काम जेने करवुं छे ते राखी शके. जेने खराब काम करवुं छे तेने पांच वर्षनुं छोकरुं भारे पडे ! जे भगवानने माने तेनाथी पाप थाय ? करे ज नहीं. करवुं पडे तो दुःख थाय ते महिमा बतावे छे. अभाव बतावतो नथी. कारण के आत्मा अमूर्त छे तेम ज्ञान पण अमूर्त छे. दारु पीए तो मानव गांडो थई जाय छे. ब्राह्मी खाय तो बुध्धि खीली उठे. आ रीते उपघात थतो होय तो अमूर्तने मूर्तथी कांई असर थती नथी. एम मानीए ते चाले नहीं. कर्म न मानीए तो एक माना पेटमां बे दिकरा जन्मे छे तेमां एक सुखी अने बीजो दुःखी केम ? माटे कर्म मानवुं ज पडशे.

३. जीवनी शंकावाळो त्रीजो छे. शरीरने जीव एक ज छे एम माननारो छे. आजना नास्तिक जेवो आ नथी. आ सुखी तो आपणे सुखी, आ दुःखी तो आपणे दुःखी. माटे

सुखी बनाववा माटे अने दुःखथी रहित बनाववा माटे गमे ते करीए अेमां वांधो नहीं, तेम कहीने करे तो सर्वथी अभेदपणुं खोटुं, सर्वथा भिन्न मानीने करे तो खोटुं ! भिन्नाभिन्न मानीने करे तो साचो माटे व्यवहारमां स्याद्वादने माने ते स्याव्वादी थाय.

४. भूतमां संदेहवाळा छे तेने वेदना पदथी शंका पडी छे. आखुं जगत स्वप्न जेवुं छे. स्वप्नमां जोईए ते असलमां होतुं नथी. स्वप्नमां ते ज जोवाय छे के जे जगतमां होय छे न होय ते देखातुं नथी. माटे आत्माने ओळखवो जोईए. पृथ्वी देवता वगेरे साबीती करी छे भुतनी शंका लागी छे तेना पर राग नहीं करतां वीरागी थवा माटे कह्युं छे.

५. जे जेवो होय ते तेवो थाय. मनुष्य होय ते मनुष्य थाय. देव होय ते देव थाय. जानवर होय ते जानवर थाय. एटले उंचो नीचो न जाय, नीचेनो उंचो न जाय ते शंका पडी छे. पुरुष होय ते पुरुषपणाने पामे, पशु पशुपणाने पामे ते वेदमां आवे छे. मरण पामे तेने झाडो थई जाय अने ते झाडावाळा साथे बाळे तो क्षुद्रजातिमां जाय. मरण वखते झाडो थाय ते नरकमां जाय, पुरुष पुरुषपणुं पामे छे ते मनुष्यपणामां कोई मार्दव आदि

गुणोवाळो मनुष्य आयुष्य बांधे तो मनुष्य थाय. पशु पण सारी रीते जीवे तो मनुष्य थाय अने मनुष्य खराब रीते जीवे तो पशु पण थाय अने नरकमां पण जाय. डांगर वावीए तो डांगर आवे, घउं केम आवे ? छाणमांथी वींछी आदि जेम उत्पन्न थाय छे तेम जेवी सामग्री मळे तेवी रीते पेदा थाय.

६. बंध अने मोक्षना संदेहवाळा वेदमां कह्युं छे के गुणरहित एवो विभु बंधातो नथी. संसारमां फरतो नथी. पोते मुकातो नथी अने कोईने मुकावतो नथी. ते संसारमां भटके नहीं, बंधन वगरनो जीव मुकाय नहीं, जेनामांथी छद्मस्थिक गुणो चाल्या गया छे ते विभु सर्वव्यापक नहीं पण केवलज्ञान रुपी सर्वव्यापक आत्मा ते पोते बंधातो नथी, मुकातो नथी अने बधाने मुकावतो नथी. ते पोते मुकाय तो मुकी शके.

७. देव छे के नहीं. यज्ञ वगेरे करे ते देवमां जाय. माटे संदेह थयो छे. देवताओ सदा जीवता नथी. आयुष्य पूर्ण थाय के मरे छे तेने बीजी गतिमां जवुं पडे छे.

८. नरकमां संदेहवाळाने कहे छे फरीने नारकीमांथी नारकी थतो नथी माटे तेने

नारकीनो अभाव लागे छे. परलोकमां कोई नारको तेमां शाश्वत रहेवाना नथी. आयुष्य पूर्ण थये नाश पामवानां छे. जे पाप करे ते नरकमां जाय अथवा नारकी तेमांथी मरीने नारकी थतो नथी.

९. पुण्यमां शंकावाळा छे. पुण्यथी पुण्य थाय, पापथी पाप थाय छे तेने पण पहेलांनी माफक कह्युं तो शंका टळी गई छे.

१०. परलोक नथी ते तेना कह्या मुज करे तो टळी जाय. प्रत्यक्ष देवता आवेला देखाडे छे.

११. मोक्ष नथी. जीवो मरे पछी अग्निहोत्र करवुं पडे. ते करे तो स्वर्गमां जाय. तेनाथी मोक्ष नथी एवो संदेह थाय छे. ते निर्वाणनुं कारण थतुं नथी. जे आगळ न वधी शके अने न करी शके तेने अग्निहोत्र करवुं जोइए. एम पण कहीने शब्द मुक्युं ते शंका टळी जाय छे. अने ते दीक्षीत थाय छे. गणधरो पूर्वनी आराधना करीने आव्या होय छे. भगवान मलवानी ज खामी हती. ते साधु थवाना अने थवानी साथे ज त्रण प्रश्न पूछवाना सत्

– जगतमां जेटली वस्तु ते, सत् तेज होय के जेनी उत्पत्ति अने विनाश थाय. कोईपण वस्तु न होय ते उत्पन्न थती नथी. न होय तेनो नाश थतो नथी. सत् तो छे ज. ते जेटली सत्त्व वस्तु होय ते समये समये परिवर्तन पामे. विगमेइवा पूर्वावस्था गया वगर नवी अवस्था आवे नहीं. माटे पूर्वनो विनाश थाय छे अने ते सत् पद होय तेमां थाय छे. ते सांभळीने अंतर्मुहूर्तमां द्वादशांगी रचे छे तेमां भगवान महोर छाप मारे छे. मारा वचनने सानुकूळ छे. हैयामां जे होय ते ज लखाय छे. ते गणधरो चौदपूर्वी बधा मतिमां फेर थवानो ! अवधिज्ञान थाये पण खरुं अने न पण थाय ते एकांत नथी. गौतमने द्रव्यगुण पर्यायना निरुपण माटे अनुज्ञा करे छे. सुधर्मास्वामीने आगळ राखीने साधु समुदायना आगेवान बनावे छे. आ रीते गणधरवाद पूर्ण.

आ रीते अभिमान प्रतिबोध माटे थयुं ते तद्न पाया विनानुं नहोतुं, ज्ञान हतुं अने अभिमान हतुं. ज्ञान न होय अने अभिमान होय ते जडभरत जेवो छे. तेमनो स्नेह गुरु भक्ति माटे हतो. माटे केवलज्ञान थयुं नहोतुं. हवे तेमनो शोक शेनो छे ते कहेवाय छे.

आपणने वियोग थाय अने बीजा जीवोनुं कल्याण अटकी जाय तेनो हतो. हे भगवन् आजथी मिथ्यात्व रुपी अंधकार फेलाशे. आपनी हाजरीमां कुतीर्थो, गर्जारव करता नहोता ते थशे. आखुं भरत आपना विना केवुं थई गयुं छे के जेम राहुथी चंद्र ग्रहाई जाय त्यारे आकाश केवुं लागे तेवुं आजे थयुं छे. ज्यारे मने शंका उठती तो आपने पूछीने समाधान मेळवतो हतो. अने गौतम कहेनार हवे कोण रहेशे. भदन्त हुं कोने कहीश ? आम कहेता. हा हा वीर आपे मने शुं कर्युं ते मोह प्रशस्तना घरनो माटे बोले छे. थोडीवार पछी थाय छे के वीतराग स्नेह विनाना ज होय छे. आपणा गुरुओ क्रियामां सहायक हता. तेमना शोकने लइने रोया करीए अने बेठा रहीए तो मुक्ति थई जाय ? देवना विरहमां देवनी आज्ञा देव जेवी बनाववी. गुरुनी आज्ञाने गुरुनी अने वर्तनमां मुकवी आ रीते वर्ते तो मुक्ति आ रही. नजीक थई जाय. मार्गनो देशक मारग बतावनार गमे तेनाथी थोडीवार दु:ख रहे पण चेतना आवी जाय. भगवाने आज्ञा करी तेथी वगर शंकाए गया छे. उपयोग मूक्यो होत तो न जात. आज्ञानी सामे विचार करता नथी. भर सभामां पूछे छे शंका. तेमां

क्षोभ थतो नथी. आवाने थोडीवार स्नेह थाय ते बराबर छे. वीतराग निस्नेह होय छे तेमने रागनो कणीयो न होय. छठ्ठा गुणठाणा वाळाने स्नेह न होय ! होय तो ते रागने निस्नेह तरफ वाळवो छे. वीतराग निस्नेह छे. मारो अपराध छे के ते वखते में उपयोग न मूक्यो. आ एक पाक्षीक स्नेह ज भूंडो छे. ते स्नेह मारे राखवो जोईतो नहोतो. बन्युं ते बन्युं. मारुं कोई नथी. हुं एकलो छुं ते रीते समताभावे भावना करता तेमने केवलज्ञान थयुं छे. ते आत्मामां केवलज्ञान छे ते शेनी राह जुए छे ? प्रगट थवामां वीतरागतानी. ते माटे राग-द्वेष छोडवानी महेनत छे. पहेलां संसार परथी राग-द्वेष छोडवानी महेनत करवी छे अने देव, गुरु अने धर्म पर राग करवो छे ते प्रशस्त माटे अप्रशस्तना घरनो राग करवो नहीं. स्नेह कदी प्रशस्त होय नहीं. गुणनो स्नेह ते प्रशस्त. परिचयना कारणे आपणा कामना कारणे जे स्नेह थाय ते अप्रशस्त कोटिनो थाय छे. व्यक्तिने लईने भौतिक रागना कारणे (राग-स्नेह) थई जाय ते स्नेह राग थई जाय. गुणने लईने राग थाय ते केवलज्ञान आपनारुं थाय छे. मोक्ष मार्गने पामेलाने स्नेह व्रजशृंखला जेवुं काम करे छे. ''अहंकार बोध माटे

थयो, स्नेह राग, गुरु भक्ति माटे थयो. शोक केवलज्ञान माटे थयो, तेम कवि कहे छे जे कोई आ रीते सुधारे अने अप्रशस्तमां जवा न दे तेनो राग लाभने माटे थाय छे. छद्मस्थ गुरु शिष्यमां पण सारणा, वारणा, चोयणा, पडिचोयणा करतो नथी ते गुरु गच्छनो वैरी छे तेने पाप लागे छे. तेने वहेलामां वहेलो बीजाने गच्छ सोंपी देवो जोईए.

अनंत शक्तिना धणी, अनंत वीर्यना धणी होवा छतां भगवान पोते आयुष्य वधारवामां अशक्तिमान छे तेम जाहेर करे छे. उंचामां उंची शक्ति जे उपयोग नथी करता तेने मळे छे. जेने सामान्य थोडी शक्ति मळे छे ते नालायक होय छे अने शक्तिनो दुरुपयोग करे छे. तेने शक्ति अनंतकाळ रखडाववा माटे मळी छे तेम कहेवाय. जे मकानमां चोमासु रह्या होईए अने ते गाममां जीवोत्पत्ति वधी जाय तो अमने पण चोमासामां विहार करवानी आज्ञा छे. कारण के जीवोनी हिंसाथी बचवा माटे ते काळमां संपूर्ण् चारित्र पाळीने क्षपक श्रेणी न मांडे ते पण मुक्तिमां जता नथी. अने देवलोकमां जाय छे. तेथी आ काळमां मोक्षमार्ग नथी तेम कहीने धर्म छोडाय नहीं. शंका कराय नहीं.

भगवानना निर्वाण पछी चार वर्ष पछी मोक्षमार्ग चालु थयो. कारण के एक मुनि चार वर्ष पछी केवलज्ञान पामीने निर्वाण पाम्या त्यारथी निर्वाणनी पाट चालु रही. भावि काळमां शिष्यो मोटे भागे गुरुनी परवा राखशे नहीं तेवा पाकशे ते शाथी के भगवान एकला मुक्तिमां गया तेना परथी सूचवे छे तेनाथी एम न समजवुं के बधा तेवा छे. जे गुरुनी आज्ञामां रहेशे तेनुं कल्याण थशे, जे नहीं रहे तेनुं कल्याण थशे नहीं.

ईतश्च तस्मिन्नवसरे मिलितेषु सुरासुरेषु स्थले वृष्टिमिव निष्फलां
देशनां क्षणं दत्वा प्रभुः अपापा पुर्यां महासेन वने जगाम.....

प्रभु महावीर देवे दीक्षा पछी साडा बार वर्ष घोर उपसर्ग सह्या, अने घातिकर्म खपावी वैशाख सुद १० ना रोज केवळज्ञान प्राप्त कर्युं. देवोए समवसरण रच्युं. त्यां प्रभुए देशना दीधी पण ते वखते कोईने विरतिना परिणाम थया नहि तेथी देशना निष्फल थई गणाय. त्यां क्षणवार देशना दई, प्रभु अपापापुरीना महसेन वनमां पधार्या. त्यां पण वैशाख सुद ११ ना दिवसे देवोए समवसरण रच्युं.

ते अवसरे अपापामां सोमिल नामना ब्राह्मणना घेर अगीआर विद्वान ब्राह्मणो पोताना ४४०० शिष्योना परिवार साथे यज्ञ करावववा आव्या हता. अगीआरेय महान पंडितो हता. तेओना अंतरमां एक एक संशय रही गयो हतो. छतां तेओ दरेक पोतपोताने सर्वज्ञ मानता हता. अने अभिमानथी एकबीजाने ते संशयनुं समाधान पूछता न हता.

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
नाम	ईन्द्रभूति	अग्निभूति	वायुभूति	व्यक्त	सुधर्मा	मण्डित	मौर्यपुत्र	अकम्पित	अचलभ्राता	मेतार्य	प्रभास
परिवार	५००	५००	५००	५००	३५०	३५०	३००	३००	३००	३००	३००
संशय	जीव	कर्म	जीव तेज शरीर	पांच भूतनो	आ जन्म जेवो ज अन्य जन्म	कर्मना बंधनो	देवनो	नारकनो	पुण्यनो	परलोकनो	मोक्षनो
दीक्षा समये उंमर	५०	४६	४२	५०	५०	६५	५३	४८	४६	३६	१६
कुल आयुष्य	९२	७४	७०	८०	१००	९५	८३	७८	७२	६२	४०

समवसरणमां बिराजमान महावीर परमात्माने वंदन करवा आवता आकाशमांथी उतरता अनेक देवोने जोईने आ ब्राह्मणोअे मान्युं के अहो, आ यज्ञनो महिमा केवो छे ? देवो पण साक्षात् यज्ञमां आवी रह्या छे पण यज्ञमंडप छोडीने देवोने आगळ जतां जोईने तेओ खेद पाम्या. लोकोनी वातचीत परथी जाण्युं के आ देवो तो कोई सर्वज्ञ प्रभुने वंदन करवा जाय छे त्यारे ईर्ष्या अने सर्वज्ञपणाना अभिमानथी भरेला मुख्य ब्राह्मण ईन्द्रभूति विचारे छे के अरे, हुं सर्वज्ञ होवा छतां आ बीजो कोण पोताने सर्वज्ञ मनावे छे ? खूबी तो ए हती के एमने पोताने ज आत्मा छे के केम ? ए संशय हतो. छतां विचारे छे के खरेखर सांभळी न शकाय एवुं आ कडवुं वचन हुं केम सांभळी शकुं ? आवा धुताराथी कोई मुर्ख ठगाय पण विबुध कहेवाता देवो पण ठगाया ? आ देवो पण केम भ्रांति पाम्या ? तीर्थना पवित्र पाणी मूकी कगडो जेम खाबोचियामां लीन थाय तेम आ देवताओ मने मुकीने कहेवाता सर्वज्ञ पासे जई रह्या छे. ना, ना, मने तो लागे छे के जेवो ए सर्वज्ञ हशे तेवा ज आ देवो हशे ? गमे ते होय, पण आकाशमां बे सूर्य न होई शके तेम

हुं अने आ एम बे सर्वज्ञ शी रीते होई शके ?

प्रभुने वंदन करीने पाछा वळता लोकोने मजाकमां ईन्द्रभूति पूछे छे, केम भाई, सर्वज्ञने जोयो ? केवो छे तमारो ए सर्वज्ञ ? त्यारे लोको कहे छे. त्रण लोकनां तमाम जीवो ते महापुरुषना गुणो गणवा बेसी जाय अने तेमना आयुष्यनी समाप्ति न थाय तेमज गणित परार्धथी पण आगळ थई जाय तो पण ते सर्वज्ञ पुरुषना बधा गुणो गणी शकाय ?

ईन्द्रभूति लोको पासेथी पण तेमनी प्रशंसा सांभळीने विचारमां पड्या. साचे ज, आ कोई महाधूर्त लागे छे. नहीं तो बधा लोकोने विभ्रममां केम पाडी शके ? आ सर्वज्ञने हुं क्षणवार पण सहन करी शकीश नहीं. जे वायुए मोटा हाथीओने उडाडी मुक्या ऐने रुनुं पुमडुं उडाडी मुकवुं एमां शी मोटी वात ? तल पीलतां पीलतां एक बाजु एकाद तल रही जाय तेम आ वादी रही गयो लागे छे. एम विचारता ते प्रभु पासे जवा तैयार थया.

त्यारे तेमनां नाना भाई अग्निभूति कहे छे हे बंधु ? आप रहेवा दो, कमळने उखेडवा अैरावण हाथीनी जरुर पडती हशे ? ईन्द्रभूतिए कह्युं. अरे अग्निभूति ! तुं तो शुं पण मारो एक शिष्य जीती आवे एम छे पण ते सर्वज्ञनुं नाम सांभळी माराथी अहीं रही शकातुं नथी. माटे हुं ज जाउं छुं. सती स्त्री एकादवार पण शीलभंग करे तो सती कहेवाय नहीं. तेम एकाद वादी जीत्या वगर रही जाय तो मारी जीत कहेवाय नहीं. एम कहीने जेना ५०० शिष्यो बिरुदावली बोली रह्या छे ऐवा ईन्द्रभूति वीरप्रभु पासे जवा नीकळ्या.

रस्तामां जतां जतां विचारे छे के हमणां ज हुं तेने निरुत्तर करी जीती लईश... विचारमां वाट पूरी थई अने प्रभुना समवसरण पासे आवीने उभा ! सुवर्णना सिंहासन उपर बेठेला, ईन्द्रोथी सेवाता अने जगत् पूज्य श्री वीरप्रभुने जोईने ईन्द्रभूति विचारमां पडी गया. के में पूर्वे मेळवेला यशनुं रक्षण केम करीश ? एक ने न जीत्या होत तो मारी मानहानि शी थवानी हती ? जगदीशना अवतारने जीतवा आव्यो ते में वगर विचार्युं काम कर्युं छे. हुं एमनी पासे शी रीते बोली शकीश. हवे तो हुं संकटमां पड्यो छुं. हवे शिव मारुं

रक्षण करो !

विविध विचारोथी मुंझायेल ईन्द्रभूतिने वीरप्रभुए तेमना नाम अने गोत्र कहेवा पूर्वक अमृतसमी वाणीथी बोलाव्या के हे ईन्द्रभूति गौतम ! तमे सुखपूर्वक आव्या ? ए सांभळतां ज ईन्द्रभूति आश्चर्यथी विचारे छे के अरे ? आ शुं मारुं नाम पण जाणे छे? पण त्रणे जगतमां विख्यात मारुं नाम कोण नथी जाणतुं ? मारुं नाम जाणे एमां कांई नवाई नथी. पण मारा हृदयमां रहेल संशयने कही आपे तो हुं एमने सर्वज्ञ मानुं ! ईन्द्रभूतिने प्रभुए फरमाव्युं के हे ईन्द्रभूति गौतम ! तमने जीवना अस्तित्व विषेनो संशय छे अने ते संशय वेदना पदनो अर्थ बराबर नहीं करवाथी थयो छे. एम कही श्री वीर प्रभुए मंथन करता समुद्र सरखा अथवा गंगाना पूर जेवा अथवा आदि ब्रह्मना ध्वनि जेवा मधुर अने गंभीर ध्वनिथी वेदना पदोनो उच्चार कर्यो, तेमज तेनो अर्थ बताव्यो.

१ ला गणधर :

हे ईन्द्रभूति, वेदवाक्यो परस्पर विरोधी लागवाथी तमने जीवना विषयमां संशय थयो

छे. पण एज वाक्योनो अर्थ बराबर करशो तो तमारी शंका निर्मूळ थशे. ''विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानु विनश्यति, न प्रेत्यसंज्ञाडस्ति.''

तमे आ वेद पदनो एवो अर्थ करो छो :- पृथ्वी वगेरे पांच भूतमांथी चेतना उत्पन्न थईने पांच भूत वीखराई जवानी साथे चेतना पण पाणीना परपोटानी जेम नाश पामी जाय छे तेथी तेने परलोक जवानुं होतुं नथी. एटले के तेनो पुनर्जन्म नथी. परलोकमां जनार आत्मा जेवो पदार्थ नथी. परंतु आ अर्थ बराबर नथी. तेथी तमने पांचभूतोथी जुदो आत्मा जेवो पदार्थ नथी ऐवो भ्रम थयो छे ज्यारे स वै अयं आत्मा ज्ञानमय... (२) सत्येन लभ्य स्तपसा ह्येष ब्रह्मचर्येण नित्यं ज्योतिर्मयो 'हि शुध्धोडयं पश्यन्ति धीरा यतयः संयमात्मानः । (३) 'ददद' दमो दानं दया इति दकार त्रयं यो वेत्ति स जीवः

आ वेद पदोथी आत्मानी सिध्धि थाय छे एटले परस्पर विरोधी अर्थवाळा वेदोनां ज वाक्यथी तमने संदेह थयो छे.

वेदपदनो साचो अर्थ :- (ज्ञान दर्शननां उपयोग रुप) विशिष्ट ज्ञानमय आत्मा भूतोना

निमित्ते उत्पन्न थाय छे. (सामान्य उपयोग रुप आत्मा नित्य होवा छतां कोई पदार्थना उपयोगवाळो थाय त्यारे ते विशिष्ट ज्ञानवाळो थयो कहेवाय).

(अहिं भूत शब्दनो अर्थ पांच भूत ज केवल नथी, पण अहिं अर्थ छे : 'प्रमेय' अर्थात् पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु, आकाश मात्र ज नहिं परंतु जड-चेतन समस्त ज्ञेय पदार्थो ए भूत शब्दनो अर्थ लेवो.) १. आत्माना दरेक प्रदेशे ज्ञान-दर्शनना उपयोग रुप अनंता पर्यायो रहेला छे. २. आत्माना त्रण स्वभाव छे :- पर्याय रुपे उत्पत्ति अने विनाश छे अने द्रव्य रुपे नित्य छे. दाखला तरीके जेम घडाना ज्ञानमां पंचभूतमय जे घडो छे, तेथी आत्मामां आ घडो छे ऐवो उपयोगात्मक ज्ञान (पर्याय) उत्पन्न थाय छे. त्यारे तेमांथी उत्पन्न थयेलो जे ज्ञान (पर्याय) तेनो पण नाश थाय छे. 'न प्रेत्य संज्ञाडस्ति'' एनो अर्थ एज थयो के घडानो नाश थया पछी ए घडा संबंधी आत्मानो ज्ञान पर्याय नाश पामे छे. (ज्ञान ए आत्मानो पर्याय छे.) पण तमने एम समजायुं के आत्मा नामनी कोई वस्तु नथी. ज्यारे ''अग्निहोत्रं जुहूयात् स्वर्गकामः'' आ वेदवाक्यथी स्वर्गनी ईच्छावाळा जीवे अग्निहोत्र

करवो जोइए. तेथी स्पष्ट जणाय छे के आत्मा अहिंथी आ देह छोडी परलोक जनारो सिद्ध थाय छे. माटे परस्पर विरुध्ध अर्थवाळा वाक्योथी तमने संशय थयो छे. के आत्मा छे के नहि ? तो शुं स्वरचित एक ज शास्त्रमां वेदमां परस्पर विसंवादी प्ररुपणा होई शके? अने होय तो ते शास्त्र साचुं गणाय ? माटे वेद वाक्योनो समन्वय करवाथी आत्मानुं अस्तित्व (१) आगम प्रमाणथी साबित थाय छे. तेम (२) प्रत्यक्ष, (३) अनुमान, (४) उपमान, (५) अर्थापत्ति, (६) संभव (ऐतिह्य) प्रमाणोथी पण आत्मा आ रीते सिध्ध थाय छे.

(२) प्रत्यक्ष प्रमाण :

(१) जे वस्तु जगतमां विद्यमान न होय तेनो संशय ज न थाय. आत्मा संबंधी संशय तमने थयो छे तेथी ते आत्म प्रत्यक्ष गणाय छे. संशयवाळी वस्तुनो अभाव होतो नथी. कोईपण जग्याए ते चीज हयात होय छे.

(२) जेम संशय ज्ञाननो प्रकार छे तेम स्मृति, इच्छा, तर्क, जिज्ञासा, बोध वगेरे ज्ञानना

प्रकारो पण प्रत्यक्ष सिध्ध छे. तेना आधार-भूत गुणी आत्मा पण प्रत्यक्ष मानवो जोईए. ज्ञान आत्मानो सहभावी गुण छे. माटे ज्ञान होय त्यां आत्मा होय ज !

(३) सुख दुःखनो जे अनुभव थाय छे ते पण आत्माने ज सिध्ध करे छे. तेथी ज मृत देहने हर्ष, शोक, सुख, दुःख, स्मरणादि थतुं नथी.

(४) शरीरनी हलन-चलनादि क्रियाओनो प्रेरक पण आत्मा ज छे. आत्मा विनानुं मृतक कोईपण क्रिया करी शकतुं नथी.

(५) हुं छुं, हुं हतो, हुं होईश. आम त्रण काळनी सौने प्रतीति थाय छे ते पण आत्माना अस्तित्वनी साख पूरे छे.

(६) ईन्द्रियथी अनुभवेलो पदार्थ ईन्द्रियना अने पदार्थना अभावमां अंधत्वादि प्रसंगे पण जे याद रहे छे ते ज आत्मानी साबिती छे.

(७) 'आत्मा नथी'. अे वाक्य आत्मा छे एम सिध्ध करे छे. जेम कोई कहे के 'देवदत्त नथी', 'घडो नथी' एनो अर्थ ए के ते 'घरे नथी' पण सर्वथा नथी एम सिध्ध

थतुं नथी.

(८) तलमां तेल, पुष्पमां गंध, लाकडामां अग्नि, दुधमां घी, चंद्रकान्तमां सुधा होवा छतां प्रत्यक्ष देखाता नथी. तेम आत्मा शरीरमां होवा छतां प्रत्यक्ष देखातो नथी.

(९) जेम ओरडामांथी, भोंयरामांथी के कोठीमांथी अवाज बहार नीकळी शके छे छतां ते अवाज देखातो नथी तेम शरीरमांथी नीकळी जतो आत्मा अरुपी होवाथी प्रत्यक्ष देखातो नथी.

(१०) वायुथी भरेली कोथळीने खाली करीने तोळवा छतां स्थुल रीते वजन न घटे तेम मृतकना वजनमां घटाडो न थाय केम के आत्मा अगुरुलघु गुणवाळो छे.

(११) गाढ अंधकारमां ज्यां पोतानुं शरीर देखातुं नथी त्यां तथा स्वप्नमां पण आत्मा 'हुं छुं' एवो प्रत्यक्ष अनुभव करे छे. अंधारामां अमुक वस्तु छे के नहीं एवो संदेह थाय छे. पण क्यारेय हुं छुं के नहीं एवो संदेह थतो नथी.

(१२) मांदगीमां शरीर कृश थता तथा कोई अकस्मातमां शरीरनो रंग फरी जतां संदेह

पडी जाय के आ मारुं शरीर ? वळी शरीरना अवयवो कपाई जवा छतां ते अवयवोए करेल अनुभव याद रहे छे तो ते कोण याद राखे छे ? अनुभव करनार अवयव तो नाश पामी गयो छे ! ए ज आत्मा सिध्ध करे छे.

(१३) गुणना प्रत्यक्षथी गुणी प्रत्यक्ष कहेवाय छे. दा.त. घडानुं रुप देखाता घडो देखाय छे. तेम स्मरण, सुख दुःख वगेरे गुणथी आत्मा प्रत्यक्ष गणाय छे. वळी 'हुं छुं' आ ज्ञान पण गुण छे. एटले ए ज्ञानरुप गुणनो गुणी जीव सिवाय कोई होई शके नहि.

(१४) सर्वज्ञने आत्म प्रत्यक्ष देखाय छे. जेम मने आत्मा प्रत्यक्ष छे तेम ज तारा मननां संदेहने पण हुं प्रत्यक्ष जाणी शकुं छुं. वळी सिंह, वाघ वगेरे अनेक वस्तुओ होवा छतां दरेक मनुष्यने दरेक वस्तु प्रत्यक्ष होती नथी. छतां संसारमां सिंह, वाघ वगेरे नथी एम कोई नथी मानतुं. तेमज परमाणुं अतीन्द्रिय होवाथी प्रत्यक्ष न देखावा छतां परमाणुं कार्यरुप घडाने सौ कोई जोई शके छे. एम कर्म भले प्रत्यक्ष न होय परंतु एनुं फळ तो सौ कोईने प्रत्यक्ष छे ज. परमाणु रुपी छतां प्रत्यक्ष नथी तो अरुपी अमूर्त एवो आत्मा

छद्मस्थने प्रत्यक्ष शी रीते होई शके ?

(३) अनुमान प्रमाण :-

जेम अग्नि विना धूम न होय तेम भोगी विना भोग्य न होय. शरीर भोग्य छे माटे भोगी आत्मा पण छे ज. (भोग्य होय त्यां ज, ते ज वेळाए, ते ज स्थाने भोगी होवो जोईए तेवो नियम नथी. अन्य क्षेत्रमां पण होई शके. जेम वस्त्रादि बीजे होय अने पहेरनार बीजे होय.)

(२) काया ए बे थांभलाना महेल जेवी छे. तो एनो मालिक एमां वसनार होवो जोईए अने ते आत्मा छे : ए शरीररुपी महेलमां आत्माने मझा माणवा आंख, कान, नाक, जीभ, स्पर्श रुपी पांच झरुखा छे. गळामां अवाज करवानुं यंत्र, हृदयमां जीवननी शक्ति, नीचे कोठार, रसोडुं, एनी नीचे मुतरडी, पायखानुं छे. आनो संचालक आत्मा छे. कोई ईश्वर कहे तो ए ईजनेर अधुरो कहेवाशे. एणे खावापीवानी लपवाळुं अने मळमुत्रने उंचकी फरवुं पडे. आवुं अधुरुं शरीर केम बनाव्युं ? पाछळ न देखाय एवी खामीवाळी आंख

केम बनावी ? कोईनुं रुपाळुं, कोईनुं बेडोळ, कोईनुं साजु, कोईनुं मांदु, कोईनुं देखातुं, कोईनुं आंधळुं आवुं विचित्र शरीर केम बनाव्युं ? माटे कहो के आ जीव माळी छे तो देह बगीचो छे. शरीर यंत्र छे तो आत्मा ए यंत्र चलावनार छे. शरीर महेल छे तो एनो मालिक राजा ए आत्मा छे पण मन नथी. केम के मनने ना पसंद एवुं पण कार्य आत्माने करवुं पडे छे, माटे ज साधु-संतो, योगीओ, तपस्या, लोच विहारादि कष्टमय साधन वडे आत्मा प्रसन्न होवाथी शरीरने कष्ट पसंद नथी छतां आपे छे.

(३) 'मनुष्य जेम साणसी रुप साधनथी काम ले छे तेम ईन्द्रिओ ए साधन छे.' आत्मा रुप मालिक ए ईन्द्रियोथी काम ले छे जेम चप्पुथी कलम घडाय छे, दातरडाथी कपाय छे, दीवाथी जोवाय छे. आमां घडनार, कापनार, जोनार जुदा छे. तेम ईन्द्रियो अने विषयोने ग्रहण करनार ए जुदा छे. साधकने साधननी अपेक्षा छे पण साधक अने साधन ए बे एक होई शके नहि.

(४) आत्मा स्वतंत्र मालिक, शेठ के प्रोप्रायटर छे, मन व्यवस्थापक, मेनेजर छे.

कडवी दवा नथी गमती छतां पीवी पडे छे. बिमारीमां मिठाई खावा मन कुदे छे ऐने कोण अटकावे छे ? आत्मा ज.

(५) छींक आवती अटकावनार कोण ? आंख कोणे बंध करी ? अधवच्चे मार्गमां चालता पगने कोणे रोक्या ? लघुशंकाने कोणे रोकी ? क्रोध न करतां क्षमा कोणे करी? आ बधुं करनार ते आत्मा ज छे.

(६) ईन्द्रियो वच्चे झघडो पडे त्यारे न्यायाधीश कोण ? आंख जेने साकर कहे एने ज जीभ मीठुं कहे त्यारे फेंसलो आपनार पण आत्मा ज छे.

(७) शरीर ए पण स्त्री, पुत्र, धन वगेरेनी जेम मुडी छे. ममत्व करवानी चीज छे तो 'ए शरीरनुं ममत्व करनार कोण ? स्त्री, घर, पैसा, तिजोरी, शरीर ए पोते ज पोतानी उपर ममत्व करता नथी हुं थाक्यो छुं, हुं धक्को खाउं एवुं बोलनार शरीरनुं ममत्व करनार आत्मा ज छे.

(८) जन्म थतां ज बाळकने आहारादि संज्ञा तथा ममत्व आदि केम थाय छे ? कहेवुं

पडशे के पूर्वजन्म अने आजन्म वच्चे अनुसंधान करनार स्वतंत्र आत्मा छे.

(९) पकवान जमवा बेठा, नुकशानीनो तार आव्यो, दुःख कोने थयुं ? आत्माने ! शरीर तो सुखमां हतुं.

(१०) सडेली आंगळी कपावी आगळ सडो थतो अटक्यो छतां जिंदगी सुधी हाय मारी आंगळी गई दुःखी कोण थयुं ? आत्मा ज.

(११) तरत जन्मेला बाळकने स्तनपान करतां कोणे शीखव्युं ? अने धराई जता ए छोडी दे छे ए संस्कारनो अनुभव करावनार कोण ? आत्मा ज.

(१२) माता क्रोधी अने पुत्र शांत होय एवुं केम ? माता-पिताने दरिद्रता, अंधापो, लोभ, अहंभाव वगेरे दुर्गुणो होय छे, त्यारे केटलाक पुत्रमां तेथी उलटा श्रीमंताई, निर्मळ चक्षु, निस्पृहता, नम्रता वगेरे गुणो देखाय छे. ए सुचवे छे के आत्मा जुदा संस्कार लईने आव्यो छे.

(१३) माताना उदरमां एक साथे पोषाईने जन्मेला बे बाळकोमां स्वभाव, रुची,

लागणीमां फेर केम ? बंने आत्मा जुदा छे माटे.

(१४) शरीर एनुं ए होवा छतां अशुभ भावो छोडी शुभ भावो लावनार कोण ? आत्मा.

(१५) प्रतिपक्ष - विरोधी पण सत्-विद्यमान पदार्थनां ज होय छे. जेम के आर्य-अनार्य, दया-निर्दयता तेम जीवनो प्रतिपक्ष अजीव. ए ज आत्मानी साबिती छे.

(१६) वेपार माटे आराम जतो कराय छे, बिमार छोकरा माटे वेपार जतो कराय छे. 'पत्नी माटे छोकराने जुदो कराय छे, आग लागे तो शरीर माटे पत्नी पुत्रने छोडी पोतानो जीव बचाववा भागे छे. एटले अंतिम प्रिय तरीके आत्मा सिध्ध थाय छे. ऐने सुख, शांति, मानपान गमे छे, कंकास, झगडा, त्रास, मानहानि के अपकीर्ति गमती नथी. अने ते ज अवसरे आपघात पण करवा तैयार थाय छे. तो कोनी खातर शरीर जतुं करे छे ? जीव (आत्मा) माटे शुं शुं न करे ?

(१७) दंभी अंदरथी नाराज होय छे, उपरथी मों हसतुं राखे छे, तो अंदरथी नाराज

रहेनार कोण ? आत्मा ज.

(१८) जाति स्मरण ज्ञानवाळा पूर्वभव याद करे छे. अहीं शरीर तो आ भवनुं छे. पण आत्मा ए पूर्वना शरीरमां व्यवहार कर्यो छे अने तेथी ज कोईने क्रूरताना, कोईने मूर्खताना तो कोईने विद्वत्ताना आवा जुदा जुदा प्रसंगो पूर्वकर्मवाळा आत्माने साबित करे छे.

(१९) भूतावेश थवाथी भूतने आधीन चेष्टा थाय छे, तेम शरीरमां थती चेष्टा आत्माने आधीन छे. भूत नासी गया पछी चेष्टा थती नथी, तेम आत्मा चाली जवाथी शरीरमां चेष्टा देखाती नथी.

(४) उपमान प्रमाण :- (रोझ) गवय नामना प्राणीने जेओए न जोयुं होय तेओने गायनी उपमा आपी गवय रोझनी ओळख अपाय छे. एटले सरखामणी करवी पडे छे. परंतु अहीं आत्मा जेवो बीजो पदार्थ जगतमां नथी. छतां आत्मानी सरखामणी वायु साथे करी शकाय छे. शरीरमां थतां ईष्ट अनिष्ट तरफ प्रवृत्ति निवृत्तिथी मों उपर क्रोध, क्षमा अभिमान आदि

विविध लागणीथी निश्चित थई शके छे के अंदर कोई अद्रश्य आत्मद्रव्य होवुं ज जोईए. जगतमां पण एकेदेशीय समानता होय तेनी उपमा आपी शकाय छे.

(५) अर्थापत्ति प्रमाण : दिवसे नहीं जमनार देवदत्त पुष्ट छे, त्यां रात्रीभोजन विना पुष्टता घटती नथी. तेम मृत्यु पछी हिलचाल बंध थता अर्थापत्तिथी आत्मा साबीत थाय छे.

(६) संभव प्रमाण :- आ प्रमाणमां पण अनुमान करवुं पडे छे. वृध्ध माणसने जोईने कही शकाय के आ पुरुषे युवानी जोई छे. तेम बाळकने जन्म वखते देखाती स्तनपान चैतन्य, वगेरे प्रवृत्ति जोई ते कार्य पाछळ कोई अद्रश्य हेतु साबित थाय छे अने तेज आत्मा छे.

ऐतिह्य प्रमाण :

विद्वान लोको. आत्मा माने छे तेम बिमार माटे अज्ञान माणसो कहेता ज होय छे के हजी जीव गयो नथी, शरीरमां हजी जीव छे अने एज आत्मा छे.

आ रीते बधा प्रमाणोथी आत्मा-जीव सिध्ध थाय छे, जीवना स्वरुप बाबतमां बीजा

दर्शनकारो एकांत द्रष्टिने लीधे जुदु जुदु माने छे. जेम के :

१. वेदान्त दर्शन :- (अद्वैत वाद)

'बधामां एक ज आत्मा माने छे.' परंतु ते घटतुं नथी. केम के जगतमां सुखी दुःखी वगेरे जे भिन्न भिन्न विचित्रता देखाय छे ते जो आत्मा एक ज होय तो न ज घटे. अने बंध मोक्ष पण न घटे.

२. सांख्य - योग दर्शन :-

'आत्मा अनेक छे अने ते पण कूटस्थ - स्थिर नित्य छे, एटले के त्रणेय काळमां कोईपण परिवर्तनने अयोग्य छे. ज्ञानादि गुण विनानो निर्गुण छे एम तेओ माने छे.' तो प्रश्न थाय छे के आ जीवने मोक्षनो प्रयत्न शा माटे ?

३. न्याय - वैशेषिक दर्शन :-

'आत्मामां ज्ञानादि गुण माने छे पण ते आगंतुक, नवा उत्पन्न थता माने छे.' तो प्रश्न थाय छे के ज्ञान रहित काळमां चेतननुं स्वरुप शुं हशे ? मोक्षमां जड पत्थर जेवी मुक्ति

तेओना मते मळशे. तेओ आत्माने एकांत नित्य विश्वव्यापी कहे छे. आम जो एकांते आत्माने नित्य ज मानीए तो परिवर्तन – फेरफार कांई थई शके ज नहीं तो पछी भिन्न भिन्न अवस्थाओ केम बनी शके ? मोक्षमार्ग शा माटे ? कारण के एमना मते आत्मामां परिवर्तन तो थाय ज नहि. तो आत्मानुं विश्वव्यापीत्व अने भवांतर के देशांतर गमनागमन शी रीते मनाय ? अने सुख दुःख, ज्ञान ए शरीरमां ज केम ?

(४) बौध्ध दर्शन :-

"आत्माने विज्ञान स्वरुप माने छे. पण पाछा क्षणिक कहे छे. एटले आत्मामां परिवर्तन तो थाय पण बीजी क्षणे आत्मा गुम मानवो पडे. एम बीजी क्षणे आत्माने नष्ट थतो मानीए तो करेलुं कर्म भोगवे कोण ? अने जे आत्मा हाल कर्म भोगवे छे ए तो पूर्वे हतो ज नहीं तो ए कर्म कर्या कोणे ? पहेलां तत्त्वज्ञान, पछी मनन-ध्यान, आम जाणवुं, इच्छवुं, प्रवृत्ति करवी. आवी क्रमिक क्रियाओ आत्मा क्षणिक होय तो केम घटे?

(५) चार्वाक (नास्तिक) दर्शन :-

खाओ, पीओ, मझा करो, आत्मा, परभव, पुण्य पाप कांई नथी. आ लोकनां प्रत्यक्ष सुख छोडी परोक्ष अद्रष्ट सुखनी आशा केम राखो छो ? आम आत्माना विचारमां बिचारा चार्वाकनी तो मति ज मुंझाई गई छे. एनी शुं वात करवी ?

(६) जैन दर्शन :- (अनेकांत दर्शन)

यः कर्ता कर्मभेदानां, भोक्ता कर्मफलस्य च,
संसर्त्ता परिनिर्वाता, स ह्यात्मा नान्यलक्षणः ॥१॥

आत्मा अनेक छे, देश परिमाणवाळा छे. आत्मा द्रव्यथी नित्य छे. अने पर्यायथी अनित्य छे. कर्मनो कर्ता अने तेना फळनो भोक्ता पण छे. संसारमां परिभ्रमण करनारो छे. अने दया ईन्द्रिय दमनादि उपायो द्वारा कर्मरहित थइ मोक्षमां पण जाय छे. आ रीते ज्ञानादि स्वरुपवाळो आत्मा सिध्ध छे.

अने ए स्वरुप छे माटे बीजा ददद वगेरे वेद पदोनो अनेकांत द्रष्टिअे समन्वय थई शके छे. आम ईन्द्रभूति गौतमनो संदेह टळी जतां मारे 'प्रभु वीरनुं शरण हो.' एम नक्की

करी ५०० विद्यार्थीओ साथे प्रभु पासे त्यां ने त्यां ज चारित्र लीधुं. घरवास त्यजी मुनि बन्या. प्रभुए "उपन्नेईवा, विगमेईवा, घुवेईवा." ए त्रिपदीनुं दान कर्युं, तत्काल श्री ईन्द्रभूतिजीने ज्ञानावरणीय कर्मनो अपूर्व क्षयोपशम थयो तेओ श्रुत केवळी थया. अने बार अंग स्वरुप द्वादशांगी शास्त्रोनी रचना करी. प्रभुए एना उपर महोर छाप स्वरुप अनुमति आपी. द्रव्यगुण पर्यायथी तीर्थनी अनुज्ञा आपी, आम श्री गौतम ईन्द्रभूतिजी प्रथम गणधर थया. ॥ ईति गणाधर १॥

२ जा गणधर :

अग्निभूतिए सांभळ्युं के ईन्द्रभूतिए प्रभुनुं शरण स्वीकारीने तेमनी पासे दीक्षा लीधी छे. त्यारे ते वीचार करवा लाग्या के कदापि पर्वत पीगळे, बरफ सळगी उठे, अग्नि शीतल थई जाय, अने वायु स्थिर थई जाय, ए कदाचित् संभवे पण मारा मोटाभाई हारे ए संभवे नहि, अग्निभूतिए निर्णय कर्यो के त्यां जईने ते धूर्तने जीतीने हुं मारा भाईने पाछो लावुं. पोताना ५०० विद्यार्थीओ साथे अग्निभूति प्रभु पासे आव्या. प्रभुए पण तेमने नाम गोत्रना

उच्चार पूर्वक बोलाव्या. अने तेमना मनमां रहेल संदेह प्रगट कर्यो.

हे गौतम अग्निभूति ! तमने कर्मनो संदेह छे. अने ते संदेह वेदवाक्यनो जुदो अर्थ करवाथी थयो छे. "पुरुष एवेदं ग्निं यद्भूतं यच्च भाव्यं" आ वेद वाक्यनो तमे आवो अर्थ करो छो के जे थयुं अने जे थशे ए सर्व आत्मा ज छे. कर्म, ईश्वरादि जेवी कोई वस्तु ज जगतमां नथी. वळी बीजी बाजु वेदवाक्य "पुण्यः पुण्येन कर्मणा, पापः पापेन कर्मणा." पुण्यकार्यथी जीव पुण्यशाळी थाय छे. अने पाप कार्यो करवाथी पापी थाय छे. आ अर्थ मुजब कर्म जेवी वस्तु छे एम सिध्ध थाय छे. तेथी परस्पर विरोधी देखाता वेदवाक्यथी तमने संदेह थयो छे. पण हे अग्निभूति ! आ वेद पदोनो अर्थ तमे बराबर करशो तो कर्म जेवी वस्तु पण छे, एम तमने बराबर समजाशे.

"पुरुष एवेदं...." ए वेद पद आत्मानी स्तुति रुप छे.

(१) वेद वाक्यो त्रण प्रकारे छे :

(१) केटलाक विधान करनार.

दा.त. स्वर्गनी इच्छावाळाए यज्ञ करवो जोइए. वगेरे

(२) केटलाक अनुवाद करनारा.

दा.त. जे देखाय छे ते आत्मा ज छे. (आत्मानी कृति छे.) आ वेदवाक्य आत्मानी अचिन्त्य शक्ति बतावनार छे. पण कर्मनो निषेध करनार नथी. जेम :-

"जले विष्णुः स्थले विष्णुः विष्णु पर्वत मस्तके ।
सर्व भूतमयो विष्णुस्तस्माद् विष्णुमयं जगत् ॥१॥

अर्थात् : जलमां विष्णु, स्थलमां विष्णु, पर्वत उपर विष्णु अने सर्व भूतमय विष्णु. अहीं विष्णुनो महिमा गायो छे. तेथी बीजी वस्तुनो अभाव जणातो नथी. तेम पुरुष एवेदं..." ए वाक्य आत्मानी स्तुति-महिमानुं वाक्य छे, पण कर्मनो निषेध करनारुं नथी.

(२) वळी अरुपी आत्माने रुपी कर्म केम असर करे ए शंका तमे करता हो तो ते पण अनुचित छे. कारण के अरुपी ज्ञाननो रुपी 'मदिरा'थी उपघात अने "ब्राह्मि" वगेरेथी उपकार थाय छे. आ अनुभव सिध्ध छे.

(३) वळी जो कर्म न होय तो एक सुखी बीजो दुःखी, एक स्वामी बीजो सेवक वगेरे केम घटे ?

(४) जेम तमारो अरुपी पण संशय में जाण्यो छे तेम सृव जीवोना कर्मने पण हुं ज्ञानचक्षु वडे प्रत्यक्ष जाणुं छुं अने सुख दुःखनी अनुभूति रुप कर्मनुं फळ तो तमने पण प्रत्यक्ष छे.

(५) सर्वनो आत्मा स्वरुपे निर्मळ छतां राग, द्वेष, क्रोध, मान, वगेरे दोषोनो सौने अनुभव थाय छे, तेना निमित्ते जीव नवा नवा कर्म बांधे छे, अने संसारमां भटके छे, माटे कर्म स्वीकारवुं ज जोईए.

(६) दरेक कार्यनुं कारण होय छे, जेम अंकुर कार्य छे तो तेनुं कारण बीज छे. तेवी ज रीते सुख दुःख कार्य छे तो कर्म तेनुं कारण छे. समान कारण होवा छतां फळमां विषमता देखाय छे. ते विषमतानो सर्जक जे हेतु ते ज कर्म छे.

प्रभुना युक्ति संगत अर्थथी अग्निभूतिनो संशय टळी गयो, अने पोताना शिष्यो साथे

प्रभु पासे दीक्षा लई बीजा गणधर थया.

३ जा गणधर :

पोताना बे मोटाभाई ईन्द्रभूति अने अग्निभूति महावीर प्रभुना शिष्य बनी गया ए वात सांभळी वायुभूतिए विचार्युं, के मारा बे भाईओ जेमना शिष्य थया ते मारे माटे पण पूज्य ज छे. माटे हुं पण त्यां जाउं अने संशयनुं निवारण करीने तेमनुं शरण स्वीकारुं. पोताना प०० शिष्यो साथे वायुभूति प्रभु पासे आव्या. प्रभुए पहेलांनी जेम नाम अने गोत्रना उच्चारपूर्वक संबोधन करीने कह्युं : हे गौतम वायुभूति आ शरीर एज जीव छे के शरीरथी जीव कोई जुदी वस्तु छे. आवो संदेह तमने वेदवाक्यना जुदा जुदा अर्थथी थयो छे. ''विज्ञान घन...'' ए वेदवाक्यथी आत्मा नथी एम तमने समजाय छे वळी, ''सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येषा ब्रह्मचर्येण नित्यं ज्योतिर्मयो हि शुद्धो यं पश्यन्ति धीरा यतयः संयतात्मानः''

अर्थ :- आ ज्योतिर्मय शुध्ध आत्मा सत्य, तप अने ब्रह्मचर्य वडे मेळवाय छे एटले जणाय छे. आ वेदवाक्यथी आत्मानी प्रतीति थई छे. आम परस्पर विरोधी जणाता

वाक्योथी तमने संदेह थयो छे. पण ते अयोग्य छे. "विज्ञान घन..." इत्यादि पदोथी ईन्द्रभूतिने समजावेल अर्थ समजाव्यो. अने कह्युं के जो शरीर अने आत्मा भिन्न न होय तो जीवन-मरणनो भेद केम घटे ?

(१) आजे पण कोई कोईने पूर्वजन्मनुं ज्ञान थतुं देखाय छे माटे प्रत्येक भवमां सुखदुःख सहन करनार शरीरथी जुदो आत्मा छे.

(२) वळी १. दूर होवाथी, २. सूक्ष्म होवाथी, ३. अति नजीक होवाथी, ४. मन अस्थिर होवाथी, ५. मतिमंदताथी, ६. ईन्द्रिय मंदताथी, ७. आवरण आववाथी, ८. पराभव थवाथी, ९. समानता होवाथी, १०. बीजुं लक्ष्य होवाथी, ११. विस्मरण थवाथी, १२. अंध थवाथी, १३. गेरसमज (व्युद्ग्राह) थवाथी, १४. मिथ्यात्व (मोह)थी, १५. वृध्धावस्थाथी, १६. सन्निपातादि विकारथी, १७. दहींमांथी माखण काढवानी जेम क्रिया नहीं करवाथी, १८. दूध-पाणीनी जेम संयुक्त भेगा मळवाथी, १९. अशिक्षण (ओळख) न होवाथी, २०. वायु-आकाश पिशाचादिनी जेम स्वभावथी, २१. देव मायाथी आदि एकवीश कारणोथी

वस्तु होवा छतां देखाती नथी. तेम छद्मस्थने शरीरथी आत्मा जुदो होवा छतां बाह्य द्रष्टिथी देखातो नथी.

(३) आत्मा जेम मने शरीरथी जुदो देखाय छे, तेम सर्व केवलज्ञानी जोई शके छे. ज्यारे अज्ञानी माटे एक गंभीर कोयडो छे. तेओने माटे आत्मा सूक्ष्मातिसूक्ष्म अने गूढातिगूढ पदार्थ गणाय छे, छतां अनुमानथी आत्मा शरीरथी जुदो जाणी शकाय छे.

(४) अनादि काळथी जड-चेतन बंने दूध अने घीनी जेम एकबीजामां मळेला छे, आपणे दूधने जोईने अंदर घीनुं अनुमान करी शकीए छीए, तेम चेष्टावाळा शरीरने जोईने शरीरथी अलग आत्मानुं अनुमान करवुं जोइए.

(५) जीवता सुधी जे शरीर सडतुं नथी. ते ज शरीर मृत्यु बाद प्रति समये सडे छे. अने तेमांथी दुर्गंध उछळे छे. वळी हलन-चलन आदि चेष्टा पण बंध थाय छे. तो ते चेष्टा करनार शरीरमां जुदो आत्मा छे ते सिध्ध थाय छे.

वायुभूतिनो संदेह टळी जतां पोताना ५०० शिष्यो साथे प्रभु पासे दीक्षित थई त्रीजा

गणधर थया.

४ था गणधर - (शून्यवाद)

हवे पांच भूतना संदेह (शून्यवाद) वाळा व्यक्त नामना पंडितने प्रभुए कह्युं के तुं वेदना अर्थने बराबर विचारे तो संशय टळी जाय. ''येन स्वप्नोपमं वै सकलं ईत्येष ब्रह्मविधि रंजसा विज्ञेय'' आनो अर्थ तमे एम समज्या छो के पृथ्वी पाणी आदि प्रत्यक्ष देखाता सघळां पदार्थो स्वप्न जेवा असत् छे. वळी बीजी बाजु ''पृथ्वी देवता आपो देवता'' पृथ्वी देव छे पाणी देव छे. आ वेदवाक्यथी पांच भूतनी सत्ता सिध्ध थाय छे. पण आम परस्पर विरुध्ध लागता वेदना पदोथी तमने संशय थयो छे, पण ते बराबर नथी केम के ''येन स्वप्नोपमं...'' ए वेद पद मुमुक्षु जीवो माटे आत्मध्यान करवा प्रसंगे स्त्री, पुत्र, धन, संपत्ति वगेरे संबंधो जाग्रत अवस्थाना स्वप्ननी जेम असत् छे. ते जणाववा माटे छे. वळी ते जीवो आ असार पदार्थोमां आसक्त बनी मूढ न बने ! राग-द्वेष न करे ! अने अंते मोक्ष प्राप्त करे ए माटे आ उपदेश वाक्य छे. पांच भूतो प्रत्यक्ष छतां तने संदेह

थयो तो, संशय करनार हशे के नहि ? तथा वेद, तेना वचनो, तेना वाचक वगेरेनो पण संशय थशे ! अने ते पण असत् करशे. परिणामे सघळुं शून्य मानवुं पडशे.

हे आर्य व्यक्त ! जे वस्तु विद्यमान होय तेनो ज संशय थाय छे. माटे तेना ज्ञेय पदार्थनुं अस्तित्व अनुमानथी सिध्ध छे. स्वप्नमां जे संदेह थाय छे ते पूर्वे जाग्रत अवस्थामां अनुभूत वस्तुना स्मरणथी थाय छे. जो वस्तुनो अभाव होत तो स्वप्नमां पण संदेहने स्थान न ज होत ! वळी स्वप्न ए पोते भावरुप छे एटले सर्वशून्य न ज कहेवाय! प्रभुना आवा युक्ति संगत वचनो सांभळी संशय टळी जतां आर्य व्यक्त पंडित भगवाननां चरणमां नमी पड्या. अने गद् गद् स्वरे बोल्या भगवंत ? आप मारा तारणहार बनो.... मने पण आपना चरणोमां स्थान आपो. ए ज वखते पोते पोताना ५०० शिष्यो साथे प्रभु पासे दीक्षित थई चोथा गणधर थया.

५ मा गणधर :

"आ जन्ममां जेवो होय तेवो ज अन्य जन्ममां थाय के केम ?" आवा संशयवाळा

सुधर्म नामना पांचमा पंडितने प्रभुए कह्युं के : ''पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते...'' ए वेद वाक्यनो अर्थ तमे एवो कर्यो छे के मनुष्य होय तो फरी मनुष्यपणाने पामे अने पशुओ पशुपणाने पामे. वळी वेदमां ''शृगालो वै एष जायते यः स पुरीषो दह्यते'' एम कह्युं छे. एटले जेने विष्टा सहित बाळवामां आवे ते शियाळ थाय छे. आम बे वाक्योनो परस्पर विरोधी अर्थ करवाथी तमने संशय थयो छे, पण ते बराबर नथी. क्षमा, सरळता, मृदुता आदि गुणवाळो होय ते मरीने पुनः मनुष्य थाय छे परंतु बधाय मनुष्य मरीने मनुष्य ज थाय एवो नियम नथी कारण के (१) विष्टामांथी कीडा पेदा थाय छे. (२) छाणमांथी वींछी थाय छे. (३) शृंगथी शरनामनी वनस्पति थाय छे. अने तेने ज (४) जो सरसवनो लेप करवामां आवे तो तेनाथी जुदा प्रकारनुं घास थाय छे. (५) गाय अने बकरीना वाळथी दुर्वा - ध्रो थाय छे. (६) वळी जुदा जुदा द्रव्योना संमिश्रणथी सर्प, सिंह, मत्स्य आदि प्राणीओ अने रत्नो मणि वगेरे पण उत्पन्न थई शके छे. आम कारणथी विलक्षण कार्य जगत प्रसिद्ध ज छे. एटले वस्तु सद्रश्य पण थाय छे. अने विसदृश्य पण थाय

छे. ए अनेकान्त स्वीकारवुं जोइए. आम प्रभुना शास्त्र अने युक्तिसंगत वचनो सांभळी श्री सुधर्मा पंडितनो संशय दूर थतां ५०० शिष्यो साथे दीक्षा लई प्रभुना पांचमां गणधर बन्या.

६ ठ्ठा गणधर –

''बंध मोक्ष'' ना संदेहवाळा छठ्ठा मंडित नामना पंडितने प्रभुए कह्युं के :-

स एष विगुणो विभुर्न बध्यते संसरति वा न मुच्यते मोचयति वा नवा एष बाह्याभंतरं वेद...''

आ वेद पदोनो अर्थ तमे एवो कर्यो छे के सत्त्वादि गुणरहित अने विभु एटले व्यापक आ जीव पुण्य पापथी संसारमां परिभ्रमण करतो नथी, कर्म रुपी बंधन न होवाथी तेनो मोक्ष पण नथी. अने अन्यने छोडावतो नथी. बाह्य पुष्प चंदनना सुखने तथा अभ्यंतर आभिमानिक सुखने अनुभवतो नथी. आ वेद पदथी जीवने बंध मोक्ष नथी एम तमने समजायुं छे. बीजा वेद पदमां कह्युं छे के :- ''न ह वै सशरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति-, अशरीरं वा वसन्तं प्रियाडप्रिये न स्पृशत:'' अर्थात् निश्चे देहधारी आत्माने सुखदु:खनी

निवृत्ति नथी. एटले के सुखदुःख होय छे. परंतु देहरहित पणे रहेला मुक्त आत्माने सुखदुःख स्पर्शतां नथी. आ पदोथी देहधारी जीवने कर्मबंधन होय छे एम सिध्ध थाय छे. आ रीते परस्पर विरोधी लागता वेद पदोथी तमने आ संशय थयो छे. पण ते बराबर नथी. कारण के पहेलां वेद पदो विगुण अने विभु ए शब्दनो तमे खोटो अर्थ कर्यो छे. खरो अर्थ आ छे, विगुण :- मति श्रुतज्ञान वगेरे क्षयोपशमिक अथवा सत्व, रजस् तमस् वगेरे औदयिक, छाद्मस्थिक गुणो जेना नष्ट थया छे तेवो अने विभु :- ज्ञान दर्शनना उपयोग रुपे जगतमां व्यापक आवो आत्मा नवा कर्मथी बंधातो नथी.

जो बंध मोक्ष न होय तो मुक्तिना प्ररुपक शास्त्रो अने तेमां कहेली सर्व क्रियाओ निष्फळ थाय. वळी प्रत्यक्ष देखाता जन्म-मरण, सुख-दुःख, पुण्य-पाप, धर्म-अधर्म वगेरे असत्य ठरे. वळी शरीर अने कर्मनो संबंध अनादि छे. बीज अने अंकुरनी माफक ते बंनेमां परस्पर कार्यकारण भाव रहेलो छे. बीजथी अंकुर अने अंकुरथी बीज आ क्रम जेम अनादि काळथी चालु छे एज प्रमाणे देहथी कर्म अने कर्मथी देह आ क्रम पण

अनादिथी चालु छे. एटले कर्म् पहेलुं के जीव पहेलो, पक्षी पहेलुं के इंडुं पहेलुं ए विकल्पोने अवकाश ज रहेतो नथी. शरीरथी कर्म उत्पन्न थाय छे अने पूर्वकर्मनुं परिणाम शरीरनी उत्पत्ति छे. आम कर्म अने देह परस्पर कार्यकारण होवाथी बंनेनो संबंध अनादि छे. तेथी कर्मनो संबंध अनादि छे. वळी उंडो विचार करता समजाशे के-जीव कर्म द्वारा शरीरने उत्पन्न करतो होवाथी शरीरनो कर्ता छे. अने ए शरीर द्वारा कर्मने उत्पन्न करतो होवाथी ते कर्मनो पण कर्ता छे. जेम घटने उत्पन्न करनार कुंभार ए घटनो कर्ता कहेवाय छे. आ रीते सिध्ध थयुं के जीव अनादिनो छे, अने कर्मनो बंध पण अनादि छे.

आर्यमंडिते घडी विचार करी फरी पूछ्युं के हे भगवंत ! कर्म अने तेनो बंध अनादि होई शके, पण तेनो मोक्ष शी रीते घटे ?

भगवंते कह्युं :- हे पंडित ! बीज अने अंकुरमांथी गमे ते एकनो पोताना कार्यो पहेलां ज नाश थई जाय तो बीज अंकुरनी परंपरानो अंत आवी जाय छे. एज रीते सुवर्ण अने माटीनो खाणमां संयोग अनादिनो होवा छतां अग्निना योग वडे ते संयोग नाश थाय

छे. ते ज प्रमाणे जीव अने कर्मनो संयोग अनादिनो होवा छतां दर्शन, ज्ञान, चारित्रनी आराधना तथा देवगुरु धर्मनी भक्ति द्वारा अंत आवी शके छे. अने बंधमां पडेलो जीव मोक्ष प्राप्त करी शके छे. ज्यां जन्म, मरण, दुःख, संताप, रोग, शोक, भय, जरा, राग, द्वेष एवा कोई तत्त्वो नथी अने जेनुं स्वरुप शब्दोमां न बतावी शकाय एवुं अनंत सुख ज्यां छे ते मोक्षनुं स्वरुप समजावता आर्य मंडितना मननो संदेह दूर थयो. एटले ते पण पोताना साडा त्रणसो शिष्यो साथे दीक्षा लई प्रभुना छठ्ठा गणधर बन्या.

७ मा गणधर :-

देवो अने देवगतिना संदेहवाळा सातमा मौर्यपुत्र नामना पंडितने प्रभुए कह्युं : तमे वेदना अर्थने केम विचारता नथी ?

''को जानाति मायोपमान् गीर्वाणान् ईन्द्र यम वरुण कुबेरादीन्''

अर्थात् ईन्द्रजाळ स्वरुप एवा ईन्द्र, यम, वरुण, कुबेर वगेरे देवोने कोणे जोया जाण्या छे ? आवो अर्थ करी तमे देवो नथी एम समज्या छो. अने

''स एष यज्ञायुधी यजमानोडजसा स्वर्गलोकं गच्छति''

अर्थात् ते आ यज्ञ करनार याज्ञिक तुर्त देवलोकमां जाय छे. आ वेद पदथी देवो छे एम लाग्युं. आ परस्पर विरोधी जणाता वेद पदोथी तमने संदेह थयो छे. पण ते बराबर नथी.

(१) कारण के तमे अने हुं आ अहीं आवेला देवोने प्रत्यक्ष जोई शकीए छीए.

(२) पहेला वेद पदमां देवोने ईन्द्रजाळ स्वरुप कह्या ते देवभव पण मायाजाळनी जेम अनित्य छे. देवोनां सुख पण शाश्वता नथी. ए दर्शावतुं उपदेश वाक्य छे.

(३) पूर्व देवनो भव अने त्यांना भोगो जातिस्मरणवाळाने प्रत्यक्ष देखाय छे.

(४) देवभवनी प्राप्तिनी क्रिया पण वेदशास्त्रमां कही छे.

(५) अति पुण्यवानने पुण्य भोगववानुं स्थान होवुं जोईए. ए अनुमानथी पण देवगति सिध्ध थाय छे.

(६) लोको अति पुण्यशाळीने देवनी उपमा आपे छे.

(७) लोको देवताओनो अनुग्रह अने पीडा अनुभवता देखाय छे. केटलीक वार देवो राजानी जेम वैभव आपे छे, ज्यारे कोईना वैभव वेडफी पण नांखे छे.

(८) सूर्य, चन्द्रना विमानोमां वसनारा कोई होवा जोईए अने ते वसनारा देवो छे.

(९) संसारमां एवो कोई देखातो नथी के जे सर्व रीते सदा सुखी ज होय अने जेने दुःखनो लेश मात्र स्पर्श ज न थयो होय ? मनुष्य गमे तेटलो सुखी होवा छतां आधि, व्याधि, जरा, ईष्ट वियोग आदि दुःख भोगवतो होय छे. एटले दानादि धर्मथी बंधायेला उत्कृष्ट पुण्यना फळ तरीके उत्कृष्ट सुख मोगववानी योनि होवी जोईए.

मौर्यपुत्र क्षणवार विचार करी बोल्या - तो पछी तेओ मनुष्यनी जेम साक्षात् स्वेच्छा विहारी होवाथी अहीं वारंवार आवता केम नथी ?

भगवंत कहे :- महानुभाव ! तेओ स्वर्गना सुख अने विषय भोगमां आसक्त थवाथी कार्य वगर आजे जेम आवेला देखाय छे, तेम वारंवार आवता नथी. तेनां घणां कारणो छे.

१. अहीं आववानुं खास कोई प्रयोजन वारंवार आवतुं नथी.

२. स्वर्गना सुख आगळ मानव लोक दुःखभर्यो अने दुर्गंधमय लागे छे.

३. तेओ पोते स्वाधीन छे मनुष्य पासे तेओने स्वार्थ नथी छतां अहीं आववाना पण केटलांक कारणो होय छे.

(१) तीर्थंकरना जन्म, दीक्षा, केवल अने निर्वाण वगेरे महोत्सव समये, (२) केवलीने पोताना संशय पूछवा माटे, (३) पूर्वभवना संबंधना ममत्वना कारणे, (४) वचनथी बंधायेला होवाने कारणे, (५) केटलाक विशिष्ट तप-अनुष्ठान, मंत्र आदिने आधीन थवाना कारणे, (६) केटलाक क्रीडा-कौतुक अर्थे अने (७) केटलाक साधु अने सत्त्वशील पुरुषोनी परीक्षा अर्थे मनुष्य लोकमां आवता पण होय छे. प्रभुनी वाणीथी तेमनो संशय दूर थयो, अने पोताना त्रणसो शिष्यो साथे दीक्षा लई प्रभुना शिष्य थया.

८ मा गणधर :-

नारकी हशे के नहीं एवा संशयवाळा अकंपित नामना आठमा पंडितने प्रभुए कह्युं,

'तमे वेद वाक्योने बराबर विचारता नथी. ''न हवै प्रेत्य नरके नारकाः सन्ति...'' ए पदोथी तमे समज्या के नरकमां नारकीओ उपजतां नथी. बीजी बाजु ''नारको वै एष जायते य शूद्रान्नमश्नाति'' ए वाक्यथी जे शूद्रनुं अन्न खाय छे. ते मरीने नारकी थाय छे एम परस्पर विरोधी जणाता वेदवाक्योथी तमे संशयमां पड्या पण ते बराबर नथी. केम के पहेला वेद वाक्यनो अर्थ एवो छे के (१) नारकीओ मेरु पर्वतनी जेम शाश्वता रहेता नथी. (२) जे कोई पाप आचरे छे ते नारकी थाय छे. पण नारकी मरीने फरी बीजा भवमां नारकीपणे उत्पन्न थता नथी. एटले सर्वथा नारकीओनो अभाव नथी. (३) अति पापनो बदलो भोगववानुं स्थान नरकगति मानवी ज जोईए. अहिं पण अति दुःखीओने नरक नी पीडानी उपमा अपाय छे. (४) आ लोकमां आप्त पुरुषना प्रत्यक्षने स्वप्रत्यक्ष जेवुं ज स्वीकाराय छे. जेम हंस, सिंह, शरभ आदिनुं प्रत्यक्ष सर्व कोईने थतुं नथी, छतां तेने अप्रत्यक्ष कोई कहेतुं नथी. वळी तमे तमारो ज विचार करी जुओ ! तमे कांई बधा ज देश, काल, नगर, गाम, नदी के समुद्रने प्रत्यक्ष जोया नथी. छतां ते बधा बीजाओने प्रत्यक्ष होवाथी तमो

पण ते बधाने प्रत्यक्ष ज मानो छो. एज रीते नारकीओ मने प्रत्यक्ष छे. तो तमे तेने अप्रत्यक्ष केम कही शको ? खरी रीते ईन्द्रिय प्रत्यक्ष बधुं साचुं नथी. ए एक जातनो भ्रम छे. ईन्द्रिय प्रत्यक्ष ए तो उपरथी ज प्रत्यक्ष कहेवाय. साचुं प्रत्यक्ष तो अतीन्द्रिय (ईन्द्रियनी मदद विनानुं सीधुं आत्माने थनारुं) ज्ञान छे. कारण के ते आत्माने साक्षात् थाय छे. जेम झरुखो पोते कशुं जोई शकतो नथी. पण झरुखामां उभेलो देवदत्त आदि जुअे छे. तेम ईन्द्रियो साधन छे. अने ते साधन द्वारा जीव पोते जुए छे. एटले ईन्द्रियोने जोनार मानी शकाय नहि. अने ईन्द्रियथी थतां ज्ञानने प्रत्यक्ष पण कही शकाय छे. ज्यारे ईन्द्रियोना उपयोग विना बीजा पदार्थोनी जेम हुं नारकीओने आत्मप्रत्यक्ष जोई शकुं छुं.

आ रीते वेदवाक्यना अर्थनो समन्वय थवाथी आठमा अकंपित पंडितनो नारकनो संशय दूर थयो अने पोताना त्रणसो शिष्यो साथे दीक्षा लई प्रभुना आठमा गणधर थया.

९ मा गणधर –

पुण्य हशे के नहि ? एवा संशयवाळा नवमा अचलभ्राता पंडितने प्रभुए कह्युं :

"पुरुष एवेदं ग्निं सर्वं" ए वेदवाक्यने तमे बराबर केम विचारता नथी ? बीजा पंडित श्री अग्निभूतिजीनी जेम तमने पण ए ज वाक्यथी पुण्यनो संशय थयो छे. पण ए बराबर नथी. त्यारबाद प्रभुए अग्निभूतिजीने आपेली समजुति तेमने पण आपी. वळी "पुण्य पुण्येन कर्मणा, पापः पापेन कर्मणा" ए वाक्यथी पण पुण्य पाप छे ते सिध्ध थाय छे. वळी हे अचलभ्राता, तमे कर्म, क्रिया, सत् (विद्यमान) छे एम तो मानो ज छो तो ते कर्म शुभ अने अशुभ बे रीते होवाथी पुण्य-पाप घटे छे. अने आ बेना योगे ज संसार छे. बेमांथी एकनी हाजरी नहीं होय तो संसार अने मोक्ष एकेय न घटे.

अचलभ्राता - हे भगवंत ! पापनो जेम जेम नाश थाय तेम तेम सुख थाय अने सर्वथा नाश थाय तो मोक्ष थाय ! एम केवळ एक पापने ज मानीए तो शी हरकत छे? पुण्यने जुदुं मानवानी शी जरुर छे ?

भगवंते फरमाव्युं - हे अचलभ्राता ! 'पुण्यनुं परिणाम सुख छे, अने पापनुं परिणाम दुःख छे... एक ज वस्तुना बे विरोधी परिणामो कल्पवां ए तो सामान्य द्रष्टिए पण

अव्यवहारु छे. वळी हे सौम्य ! पाप अने पुण्य संकीर्ण रही शके नहीं, झेर अने अमृत अथवा तो दहीं अने दूध बे मिश्र रही शके नहीं. पाप अने पुण्यनुं कारण तो कर्म ज छे. कोई कर्म एवुं न होय के एक ज समये बंनेनुं साथे उपार्जन थाय. कर्मनुं कारण योग छे. ऐ योग एक समये शुभ या अशुभ होय, परंतु शुभाशुभ रुपे न होय.

अचलभ्राता कहे - हे प्रभु, हवे मने समजाय छे के पाप अने पुण्य बंने स्वतंत्र छे. तो ए बंनेनुं लक्षण शुं हशे ?

भगवंते फरमाव्युं के : हे महानुभाव ! जेनो विपाक शुभ होय ते पुण्य अने तेथी जे विपरीत छे ते पाप छे. पुण्य अने पाप ए बंने पुद्गल छे, जेम कोई उघाडा शरीरे तेल चोळीने बेसे तो तेलना प्रमाणमां तेना देह उपर रज चोंटे छे, तेम द्वेषथी स्निग्ध बनेला जीव उपर पाप-पुण्य कर्मरुपी रज चोंटे छे.

प्रभुना युक्तियुक्त वचनोथी प्रतिबोध पामी पोताना त्रणसो शिष्यो साथे दीक्षा लई नवमा अचलभ्राता पंडित प्रभुना नवमा गणधर बन्या.

१० मा गणधर -

परभव हशे के नहि ! एवा संदेहवाळा मेतार्य नामना दशमा पंडितने प्रभुए फरमाव्युं के ईन्द्रभूतिजीनी जेम तमने पण ''विज्ञान घन'' ए वेदवाक्यथी परलोकनो संदेह थयो छे. त्यारबाद परमात्माए ईन्द्रभूतिजीने समजावेल युक्तिओथी एमने पण समजाव्या. वळी प्रभुए समजाव्युं के (१) बाळकने जन्मतानी साथे ज स्तनपाननी इच्छा थाय छे अने विना शिक्षणे ते करे छे. आ सौने अनुभव सिध्ध छे. वासना विना इच्छा थाय नहीं. अने अभ्यास विना क्रिया आवडे नहीं. माटे वासना अने क्रियानुं शिक्षण जीवे पूर्वभवमां प्राप्त कर्युं छे. (२) वळी पूर्वजन्म न होय तो जीवोनुं वैचित्र्य देखाय छे. ते केम घटे ? कारण विना कार्य कदी संभवे नहीं. संसारमां वैचित्र्य प्रत्यक्ष छे तो तेना कारणभूत पूर्वे बांधेलां कर्मो पण छे. (३) अने ते कर्म ज्यां बांध्या ते पूर्वजन्म पण छे, अने तेनो पण पूर्वजन्म, तेनो पण पूर्वजन्म एम भूतकाळना अनंताभवो अने ते दरेकनी पछीना उत्तरभवो पण छे ज. (४) जातिस्मरण ज्ञान पण परभवने ज साबित करे छे. आवा प्रभुना यथार्थ वचनोथी

मेतार्य पंडितनो संशय दूर थयो अने पोताना त्रणसो शिष्यो साथे दीक्षा लई प्रभुना दशमा गणधर बन्या.

११ मा गणधर –

निर्वाण – मोक्ष हशे के नहि ? एवा संशयवाळा मात्र १६ वर्षनी उंमरना छतां महा पंडित गणाता अगीयारमा पंडितने प्रभुए कह्युं के तमे वेदना अर्थने यथार्थ केम विचारता नथी ? ''जरामर्यं वा यदग्निहोत्रं'' आ वेद पदनो अर्थ तमे एवो करो छो के जरा–वृध्धत्व अने मरण सुधी यावजजीव यज्ञक्रिया करवी जोईए अेम कर्यो छे, तेथी तमो भ्रममां पड्या के जो मरण सुधी यज्ञ कर्म करे तो तेना फळो भोगववा पुनर्भव करवो ज पडे तेथी मोक्ष (निर्वाण) न थाय. जो मोक्ष होय तो ते मोक्षसाधक क्रिया माटे जुदो काळ होवो जोईए पण ते शास्त्रमां कह्यो नथी. मरतां सुधी अग्निहोत्र ज करवानुं क्ह्युं छे माटे मोक्ष होय एम मनातुं नथी. ज्यारे बीजुं एवुं वेदवाक्य आव्युं छे के ''द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च, तत्र परं सत्य–ज्ञानं अनन्तरं अपरं बहमेति'' आ वेदवाक्य मोक्षनो सद्भाव

जणावे छे तेथी तमने संशय थयो छे.

(१) 'जरा मर्यं वा यदग्निहोत्रं' आ वाक्यमां 'वा' पद छे ते 'अपि' अर्थमां छे. तेथी तेनो खरो अर्थ एम थाय के कोई स्वर्गनो अर्थी होय तो जीवतां सुधी यज्ञ पण करे. अर्थापत्तिअे 'मोक्षनो अर्थी यज्ञकर्म त्यजी मोक्ष माटेनी पण क्रिया करे.' माटे मरतां सुधी यज्ञकर्म करवानो एकांते नियम न रह्यो.

प्रश्न - हे भगवंत ? अनादि संसारनो नाश केम थाय ?

उत्तर - हे सौम्य ! आ विचार पण बराबर नथी. केम के द्रव्य रुपे अनादिनो नाश न थाय. पण पर्याय रुपे अनादिनो नाश थई शके छे. जेम के प्रत्येक मनुष्यनो वंश अनादि छे. केम के पिता विना पुत्र होय नहीं. छतां दरेकने पुत्र थाय ज एवो नियम नथी. कोईनो वंश पुत्र न थतां के मरी जतां अटकी पण जाय छे तेम संसार पण प्रवाहथी अनादि छे. वळी 'अभव्यो' अने 'जातिभव्यो' वगेरेनो संसार कदी अकटवानो नथी. पण भव्योने काळ, स्वभाव, पुरुषार्थ, कर्म अने भवितव्यता रुप पांच कारणोनो परिपाक थतां

अटके छे. पूर्वे अनंता भव्यो मोक्ष पाम्या छे, अने भविष्यमां अनंता भव्य जीवो मोक्ष पामशे.

प्रश्न - हे भगवंत ? मुक्त आत्माओने परमज्ञान अने सर्व दु:खनो अभाव छे एम केम मनाय ?

उत्तर - हे सौम्य ! ज्ञाननो संबंध आत्मा साथे छे, ईन्द्रियो साथे नथी. कारण ज्ञान ए आत्मानो गुण छे. जेम परमाणु रुपादि रहित होय नहि. तेम आत्मा कदी ज्ञानरहित होई शके नहि. आत्मा चैतन्यवान-ज्ञानवान छे. संसारी आत्माना कर्मना तमाम आवरणो नष्ट थवाथी मुक्त आत्माओ परमज्ञान वाळा होय छे अने बाधा के पीडानुं कोई कारण न होवाथी सदा अव्याबाध अवस्था होय छे.

प्रश्न - हे भगवंत ? सर्वकर्मना नाश साथे पाप-पुण्यनो पण नाश थशे ? पछी सुख क्यांथी ? वळी सुखनी प्राप्तिनो आधार देह छे, मुक्तने देह के ईन्द्रिय नथी तो सुख केम घटे ?

उत्तर - हे सौम्य ! तुं पुण्यना फळने सुख कहे छे, त्यां ज तारो मोटो भ्रम छे, वस्तुतः पुण्यनुं फळ पण दुःख ज छे. ए पण कर्मनो उदय ज छे. जे जे कर्मजन्य होय ते ते दुःखरुप ज होय. संसारमां रच्या-पच्या रहेला जीवने क्यांय साचु सुख मळी शकतुं ज नथी. जेने दुनिया सुख कहे छे, ते एक जातनो व्याधिनो प्रतिकार छे. जेम कोई मानवीने खरजवुं थयुं होय, अने मीठी चळ आवती होय तो तेने खंजवाळतां जे सुखनो अनुभव थाय छे, ते वास्तविक रुपे सुख नथी पण सुखनो आभास छे... दुःख छे. अविवेकने कारणे जीव सुखाभासने पण सुख मानी ले छे. खंजवाळथी तो परिणामे खरजवुं वधे छे. एटले जेना परिणामे दुःख होय तेने सुख नहि पण दुःख ज कहेवुं जोईए. संसारना तमाम सुखो आ रीते मात्र सुखाभास ज छे. ज्यारे मोक्षमां जीव आत्मस्वरुपमां रहे छे. त्यां कोई पुद्गलनो संग रहेतो नथी. एटले मोक्षनुं सुख सहज, स्वाभाविक, अनंत अने संपूर्ण छे. माटे निर्वाण (मोक्ष) छे अने तेनो मार्ग उपादेय छे. प्रभुना आ वचनोथी संशय दूर थतां प्रभासपंडित पोताना ३०० शिष्यो सहित दीक्षा लई प्रभुना अगीयारमा

गणधर थया.

आम कुल ४४११ ब्राह्मणोने प्रभुए दीक्षा आपी अने त्रिपदी संभळावी. ए त्रिपदीना श्रवणथी अगियारे गणधरोए संपूर्ण द्वादशांगीनी रचना करी. ए द्वादशांगी शब्दोथी भिन्न भिन्न पण अर्थथी एक हती.

प्रभुए ते सर्वने गणधर पदे स्थाप्या. प्रभुए सिंहासनथी उतरीने इन्द्रे वज्र रत्नना थाळमां धरेला वासचूर्णमांथी मूठी भरीने चूर्ण लीधुं. पछी श्री ईन्द्रभूति वगेरे अगियारे गणधरो नतमस्तके क्रमशः उभा हता, तेओना मस्तके ते चूर्णवासने नांखता प्रभुए फरमाव्युं के 'प्रत्येकने हुं द्रव्यगुण अने पर्याय वडे तीर्थनी अनुज्ञा करुं छुं. तीर्थ व्यवस्था श्री ईन्द्रभूतिने सोंपुं छुं. देवो पण दैवी वाजिंत्र वगेरेनो अवाज बंध करावीने मौनपणे ते सांभळी रह्या. अने प्रभुनी पछी तेओए पण श्री ईन्द्रभूतिजी आदिना मस्तक उपर सुगंधी चूर्ण अने गंधनी वृष्टि करी.

श्री ईन्द्रभूतिजीने शासन नायक तरीके स्थाप्या, अने श्री सुधर्म गणधर दीर्घायुषी

होवाथी सर्व साधु समुदायनो गण तेमने सोंप्यो. एम बंनेने मुख्य बनावी तीर्थनी अने गणनी अनुज्ञा करी. आ गणधरवादमां जैन आगमोनुं विशिष्ट तत्त्वज्ञान छे.

हवे तेओनां चातुर्मास कहेवाय छे.

प्रभुए पहेलुं चातुर्मास अस्थिकग्राममां कर्युं. विशाला नगरीमां अने तेनी नजीकना वाणिज्य गाममां मळीने बार चोमासां कर्यां, राजगृही नगरी अने बहारना नालन्दा नामना परामां चौद चोमासां कर्या, चम्पानगरी अने पृष्टचम्पामां त्रण चोमासा कर्यां. प्रभुए मिथिला नगरीमां छ चोमासां कर्यां, भद्रिका नगरीमां बे चोमासां कर्यां, एक आलम्बिका नगरीमां, एक अनार्यभूमिमां अने एक श्रावस्ती नगरीमां चोमासुं कर्युं. एम ४१ चोमासा पूर्ण थया पछी बेतालीसमुं चातुर्मास करवा करुणासागर प्रभु अपापा नगरीमां पधार्या. प्रभुना निर्वाणथी ते नगरी पापापुरी प्रसिद्ध थई. त्यां हस्तिपाल राजानी (लेखकोनी) दानशाळामां प्रभु अन्तिम चोमासुं रह्या. ते चोमासामां वर्षाऋतुनो चोथो मास अने सातमुं पखवाडियुं, कार्तिक (गुजराती आसो) वदि, तेनी अमावासीनी रात्रिए चन्द्रनो योग ज्यारे स्वाति

नक्षत्रमां हतो, त्यारे प्रभुए ते पूर्वे सोळ प्रहर सुधी देशना दीधी अने कार्यप्रसंगे त्यां आवेला मल्लकी जातिना काशी देशना नव राजाओ अने लेच्छकी जातिना कोशल देशना नव राजाओ - एम अढार गणराजाओ, के जे चेडा महाराजना सामन्त राजाओ मनाय छे, तेओए आहारत्याग रुप पौषध एटले उपवास करीने ते देशना सांभळी. शेष लोको वगेरे बारेय पर्षदाओए पण ते सांभळी. ते पछी ज्यारे सर्वार्थसिध्ध नामनुं मुहूर्त शरु थयुं अने ते रात्रिनी छेल्ली बे घडीओ बाकी रही, त्यारे चोविहार छठ्ठना तपवाळा प्रभुए मन-वचन-कायारुप बादर अने सूक्ष्म योगनो पण निरोध कर्यो, मेरु पर्वतनी जेम आत्मप्रदेशोने सर्वथा निश्चल करवा रुप शैलेशी अवस्था धारण करी अने अन्त समये शेष सर्व कर्मोनो क्षय करीने पोते एकला ज निर्वाणने पाम्या. एम प्रभु अनादि संसारथी छूटा थईने एक ज समयमां सिद्धशिलानी उपर चौद राजलोकना छेडे रहेला सिद्धस्थाने पहोंच्या. त्यारथी प्रभुने जन्म, जरा अने मरणनां कारणरुप कर्मनां बंधन सर्वथा नष्ट थयां अने प्रभु सिद्ध थया, बुद्ध थया, सर्व कर्मोथी मुक्त थया तथा शरीर अने मननां सर्व दुःखो अने संताप

दूर थवाथी संपूर्ण शान्तिवाळा थया.

प्रभु (शिव-के०) मोक्षमां पहोंच्या- ए हकीकत श्री गौतम ईन्द्रभूतिजीए सांभळी अने आत्मस्वभावने भावतां प्रभाते तेओने केवलज्ञान-केवलदर्शन प्रगट थयां.

बन्युं एवुं के-पोताना निर्वाण समये प्रभुए श्री गौतमने देवशर्मा नामे एक ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा कोई ग्रामान्तरे मोकल्या. तेने प्रतिबोध करीने पाछा आवतां, रस्ते 'प्रभु निर्वाण पाम्या.' ए वात सांभळीने वज्रना प्रहारथी तेओ हणाया होय तेम क्षणवार तेओ अचेतन जेवा बनी गया. पछी तेओ विलाप करता प्रभुने उद्देशीने बोल्या के-

"हे प्रभु ! जेम सूर्यनो अस्त थवाथी अंधकार फेलाय, तेम तमारा अभावे हवे भरतमां मिथ्यात्वरुपी अंधकार फेलाशे; जेम घुवडो गर्जना करे, तेम अन्य दर्शनीओ मिथ्या गर्जना करशे अने राक्षसोनी जेम दुष्काळ, भय, वैर-विरोध आदि निरंकुशपणे लोकोने पीडा करशे. 'हे प्रभु ! तमारा विना हवे आ भरतक्षेत्र राहुग्रसित चन्द्रवाळा आकाशनी जेम अने दीपक विनाना भवननी जेम शोभारहित थई गयुं.' 'हे प्रभु ! हवे हुं पादपीठे प्रणाम

करतो वार वार विविध पदार्थोना प्रश्नो कोने करीश ? अथवा 'हे भगवंत' कहीने कोने बोलावीश ? अने मने पण 'हे गौतम !' कहीने पितानी जेम वात्सल्यभावे कोण बोलावशे?' 'हा...हा....हा....हा... वीर ! आ शुं कर्युं ? आवा अवसरे मने केम दूर कर्यो? शुं हुं बाळकनी जेम मांडलुं मांडीने तमारो छेडो पकडत ? तमारा केवळज्ञानमां शुं हुं भाग पडावत ? अने मने साथे लई जवाथी शुं मुक्तिमां संकडाश थई जात ?' अेम 'वी....र, वी....र' कहीने विलाप करता श्री गौतमना मुखे 'वी' रही गयो अने ख्याल आव्यो के- 'वीतराग भगवंतो सर्वथा स्नेहरहित होय छे' में ज आ भूल करी के-जती वेळाए श्रुतनो उपयोग न मूक्यो ! केवळ निःस्नेही प्रभु प्रत्ये में एकपाक्षिक स्नेह कर्यो. तेनुं आ परिणाम आव्यु के-हुं निराधार बन्यो, माटे एवा स्नेहथी अने आशाथी सर्युं.'' 'हुं एकलो छुं, मारुं कोई नथी, हुं पण कोईनो नथी.' वगेरे अनित्य, एकत्व, अन्यत्व, अशरणत्व वगेरे भावोने भावतां तेओनो मोह निर्बळ बनी गयो, तेओ क्षपकश्रेणी उपर आरुढ थया अने घातीकर्मोनो क्षय थवाथी तेओने ते ज वेळाए केवळज्ञान-केवळदर्शन प्रगट थयां.

'खरेखर ! मुक्तिमार्गना प्रवासीओने स्नेह वज्रनी सांकळ जेवो बंधनरुप छे अने एथी ज प्रभु श्री महावीरदेवना जीवतां श्री गौतम प्रभुने केवळज्ञान न थयुं.' पछी प्रभाते ईन्द्र वगेरे देवोए श्री गौतमस्वामिजीना केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो. कविओ कहे छे के- श्री गौतमस्वामिने अहंकार ज्ञानप्राप्तिनुं, प्रभु प्रत्येनो राग भक्तिनुं अने विषादभर्यो विलाप केवलज्ञाननुं कारण बन्यो-ए आश्चर्यभूत छे. अथवा तेओनुं अभिमान, राग अने विषाद त्रणेय प्रशस्त हतां, माटे तेओने हितकर थया. प्रभु श्री महावीरदेव पछी बार वर्ष श्री गौतमस्वामिजी केवळीपणे विचर्या अने दीर्घायुषी श्री सुधर्मा गणधरने पोतानो गण सोंपीने मुक्तिने पाम्या. पछी सुधर्मा गणधर केवली थया अने आठ वर्ष केवलीपणे विचरी भव्य जीवोने उपकार करता, एक सो वर्षनुं आयुष्य पूर्ण थये, श्रीसंघ अने गण श्री जंबूने सोंपीने तेओ पण मुक्तिने पाम्या.

ज्यारे प्रभु निर्वाण पाम्या, त्यारे 'स्थिर रहे तो चक्षुथी न देखाय, हलन-चलन करे तो ज देखाय.' ऐवी रक्षा न थई शके तेवी कुन्थु जातिना जीवोनी घणी उत्पत्ति थई.

आथी 'निरतिचार संयमनुं पालन हवे दुष्कर थशे.'-एम समजीने, प्राणांते पण व्रतोनुं पालन करवाना सत्त्ववाळा घणां साधु-साध्वीओए आहार-पाणीनो त्याग करीने अनशन स्वीकार्युं. प्रभुना निर्वाण पछी तरत अति ऋूर 'भस्मराशि' नामनो ग्रह प्रभुना जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीमां संक्रान्त थयो. आकाशमां अट्ठासी ग्रहो छे, तेमां ते त्रीसमो छे अने एक नक्षत्रमां ते बे हजार वर्ष रहे छे. 'आ ग्रह प्रभुना जन्मनक्षत्रमां ज्यारथी संक्रान्त थशे, त्यारथी साधु-साध्वीओना पूजा-सत्कार उत्तरोत्तर घटशे.'-एवुं भविष्यफल जाणीने, ईन्द्रे प्रभुने विनंति करी के-'हे प्रभु ! आप जो एक क्षण आयुः वधारो, तो आपना जीवतां आपना जन्मनक्षत्रमां संक्रान्त थयेलो 'भस्मराशि' ग्रह आपना शासनने पीडी न शके.' प्रभुए कह्युं के-'हे शक्रेन्द्र ! क्षीण आयुष्यने तीर्थंकरो पण वधारी शके-एवुं कदी बन्युं नथी अने बनशे पण नहि.' माटे शासनने अवश्य थनारी बाधा थशे ज. 'बे हजार वर्ष सुधी भस्मग्रहनो प्रभाव रहेशे अने तेथी उत्तरोत्तर साधु-साध्वीओनां पूजा-सत्कार घटशे.' एवो भाविभाव छे ते मिथ्या नहि थाय. परंतु 'छ्याशी वर्षना आयुष्यवाळा कल्की राजानो

पराभव करी, तेना पुत्र धर्मदत्तने तुं राज्य उपर स्थापीश अने ज्यारे बे हजार वर्षो पछी मारा जन्मनक्षत्रथी भस्मग्रह उतरशे, त्यारथी साधु-साध्वीओ वगेरेनो उत्तरोत्तर पूजा-सत्कार थशे.' श्री वीर प्रभुनुं शासन कुल अेकवीश हजार वर्षो सुधी चालशे.

प्रभु निर्वाण पाम्या ते वर्ष वगेरेनां शास्त्रीय नामो आ प्रमाणे जाणवां - एक युगनां पांच वर्षो पैकी 'चन्द्र' नामनुं बीजुं वर्ष, 'प्रीतिवर्धन' नामनो मास, 'नन्दिवर्धन', नामे पक्ष, 'अयिवेश्य' अथवा 'उपशम' नामनो दिवस, 'देवानन्दा' अथवा 'निरति' नामनी रात्रि, 'अर्च' नामे लव, 'मुहूर्त' नामनो प्राण. 'सिद्ध' नामे स्तोक, शकुनी वगेरे चार स्थिर करणो पैकी 'नाग' नामनुं करण (अमावासीना उत्तरार्धमां ए ज करण भोगवाय छे.) अने 'सर्वार्थसिद्ध' नामनुं मुहूर्त. उपर जणाव्या मुजब अने स्वाति नक्षत्रनो चन्द्र हतो, त्यारे प्रभु निर्वाण पाम्या.

ते प्रसंगे स्वर्गमांथी असंख्यात देव-देवीओ आव्यां अने शोकपूर्ण हृदये अग्निसंस्कार वगेरे विधि करीने नन्दिश्वरद्वीपे जई त्यां अठ्ठाई महोत्सव करीने स्वर्गमां गया. ते रात्रि देव-

देवीओना नीचे आववाथी अने उंचे जवाथी उद्योतवाळी तथा तेमना अव्यक्त शब्दोच्चारथी कोलाहलमय बनी गई, अर्थात् ते समये असंख्यात देव-देवीओ आव्यां.

प्रभुना शासननां मोक्षमार्गनी मर्यादा बे प्रकारनी छे - एक पर्यायथी अने बीजी पट्टपरंपराथी. तेमां प्रभुने केवळज्ञान थया पछी चार वर्षे कोई एक सामान्य केवळी मुक्तिमां गया, त्यारथी मोक्षमार्ग चालु थयो अने प्रभुनी त्रीजी पाटे थयेला छेल्ला केवळी श्री जंबूस्वामिजी मुक्तिमां गया, त्यां सुधी चालु रह्यो. ते पूर्वे अने पछी प्रभुशासनमां कोईनी मुक्ति थई नथी.

श्री वीर प्रभु जन्मथी त्रीश वर्ष घरमां रह्या, बार वर्ष अने साडा छ मास छद्मस्थ रह्या अने त्रीश वर्षमां साडा छ मास न्यून केवळीपणे विचर्या. एम बोत्तेर वर्षनुं आयुष्य पाळीने वेदनीय, आयुष्य, नाम अने गोत्र-ए चार कर्मोनो क्षय करी, आ अवसर्पिणीनो 'दु:षम-सुषमा' नामनो चोथो आरो त्रण वर्ष अने साडा आठ मास शेष हतो, त्यारे हस्तिपाल राजानी सभामां पद्मासने बिराजेला प्रभु पुण्यनां फळोने जणावनारां पंचावन,

पापनां फळोने जणावनारां पंचावन अने अण पूछ्या उत्तर रुपे छत्रीश अध्ययनोनी प्ररुपणा करीने, छेल्ला 'मरुदेवी' नामना अध्ययननी भावना भावता, ज्यारे स्वाति नक्षत्रमां चन्द्रनो योग हतो, त्यारे प्रभाते बे घडी शेष पाछली रात्रिए एकला निर्वाण पाम्या अने श्री वीर प्रभु एकला निर्वाण पाम्या, ते सूचवे छे के-भावि मुनिओ गुरुनी अपेक्षा ओछी राखशे.' कह्युं छे के-

प्रभुना निर्वाण समये त्यां आवेला अढार गणराजाओए 'हवे भाव उद्योतरुप प्रभुनो विरह थयो, माटे द्रव्य-उद्योत करीए.' एवुं विचारीने दीपको प्रगटाव्या. ते पछी लोको पण प्रतिवर्षे ते रात्रिए दीपक प्रगटाववा लाग्या, तेथी ते दिवस 'दीवाळी पर्व' तरीके प्रसिद्ध थयो, वगेरे अधिकार श्री कल्पसूत्रमां कहेलो छे, तेने गुरुमुखे सांभळवाथी भवोभवनां दुःखो नाश पामे छे. वर्तमानमां पण ते रात्रिए लोको मेरईयां प्रगटावे छे. कार्तिक सुदी पडवेना दिवसे देवोए श्री गौतस्वामिना केवळज्ञाननो महोत्सव कर्यो, तेथी ते दिवस पण लोकना प्रमोदनुं कारण बन्यो. बीजी बाजु क्षत्रियकुंडमां श्री नन्दिवर्धन राजा प्रभुनुं निर्वाण

जाणी शोकातुर थया हता, तेथी तेओने तेओनी बहेन सुदर्शनाए समजावीने बीजना दिवसे आदरपूवक पोताने घेर लावीने भोजन कराव्युं. ते कारणे ते दिवस 'भाईबीज' नामना पर्व तरीके प्रसिद्ध थयो.

ज्यारे प्रभु श्री महावीरदेवना निर्वाण पछी नव सो ऐंशी वर्षो गयां, त्यारे श्री देवर्ध्धिगणी क्षमाश्रमण वगेरे श्रमणसंघे मळीने वल्लभीपुर (वळा)मां आ श्री कल्पसूत्रने पुस्तकरुपे संग्रह कर्युं. ते पछी श्री ध्रुवसेन राजानी मागणीथी, तेओना पुत्रमरणना शोकने निवारवा श्री वीरनिर्वाण पछी नवसो ताणुं वर्षे आनंदपुर (वडनगर)मां प्रथमवार सभा समक्ष वांच्युं, त्यारथी आ श्री कल्पसूत्रने सांभळवा माटे चतुर्विध श्रीसंघ अधिकारी गणायो.

श्री वीर प्रभुना नव गणधरो प्रभुनी हयातिमां राजगृही नगरीमां एक एक मासनी संलेखना करीने श्री सिद्धिगतिने पाम्या. श्री गौतमस्वामिजी प्रभुना निर्वाण पछी बार वर्षे सिद्ध थया. तेओनो ए मोटो अतिशय हतो के-जेने जेने तेओ दीक्षा आपे, ते प्रत्येक

मुनि मुक्तिने पामे. वर्तमानमां जे मुनिवरो छे, ते श्री सुधर्मास्वामिनो परिवार छे, कारण के-छेल्ले दशेय गणधरोए पोताना शिष्यो श्री सुधर्मा गणधरने सोंप्या हता. अन्त समये कोईने शिष्य रह्या न हता. श्री सुधर्मास्वामिजी पण श्री वीरनिर्वाण पछी वीस वर्षे श्री सिद्धिपदने पाम्या. अहीं सुधी श्री वीर प्रभुना पांच कल्याणकोने विस्तारथी वर्णव्यां. श्री ज्ञानविमलसूरिए पोताना गुरु पासेथी आ अधिकार छठ्ठा व्याख्यानमां प्राप्त कर्यो छे, तेने सांभळनार, वांचनार अने सहाय करनारनुं मंगल तेमज कल्याण थाय छे.

॥ अहीं श्री पर्युषणानुं कल्पधरना दिवसनुं छठ्ठुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं ॥

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान ७ मुं

हवे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट वांचनाए करीने श्री पार्श्वनाथ प्रभुनुं चरित्र कहे छे.

हवे श्री पार्श्व प्रभुना पांच कल्याणकरुप तेओनुं चरित्र सांभळो, के जेथी समकितनी शुद्धि थाय अने सदा शुभ भाव वधे. आदेय नामकर्मना महिमाथी सर्व पुरुषोमां श्रेष्ठ एवा पुरुषादानीय श्री पार्श्व प्रभुनां ज्यारे च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवळज्ञान अने निर्वाण-ए पांचेय कल्याणको थयां, त्यारे चन्द्र विशाखा नक्षत्रनो हतो. तेमां पुरुषादानीय श्री पार्श्व प्रभु प्राणत नामना दशमा देवलोकथी च्यवीने चैत्र वदि चोथनी मध्य रात्रे ज्यारे चन्द्र विशाखा नक्षत्रमां हतो, त्यारे दैवी आहार, देवनुं वैक्रीय शरीर अने देवनो भव तजीने आ जंबूद्वीपना

भरतमां काशी देशनी शोभारुप श्री वाराणसी नगरीना राजा अश्वसेननी रति अने रम्भा सरखी रुपवती राणी श्री वामादेवीनी कुखमां उत्पन्न थया. ते वेळा तेओ त्रण ज्ञानथी श्रेष्ठ हता, तेथी 'हुं च्यवीश' वगेरे जाणता हता. प्रभु अवतर्या ते वेळा श्री वामादेवीए चौद स्वप्नो जोयां, जोईने जाग्यां, पोताना पति पासे गयां, तेमने स्वप्नो कही संभळाव्यां अने तेनो अर्थ पूछ्यो, वगेरे सघळुं प्रभु श्री महावीरदेवना चरित्रमां कह्युं तेम अहीं पण समजवुं. पछी अनुक्रमे गर्भकाळ पूर्ण थतां, पोष वदिमां दशमीनी मध्यरात्रिए विशाखानो चन्द्र हतो ते वेळा तेओनो जन्म थयो. ते रात्रि घणां देव-देवीओना आववा-जवाथी प्रकाशवाळी अने कोलाहलवाळी बनी गई. प्रभुना पुण्यना अतिशयथी दिक् कुमारीओनां सिंहासन चलीत थयां अने तेथी 'प्रभु जन्म्या छे.'-एम जाणी छप्पन दिक्कुमारीओ स्व-स्वस्थानेथी प्रभुना जन्म स्थाने आवीने प्रभुना जन्मनुं सूतिकर्म कर्युं. ते पछी सौधर्म वगेरे चोसठ ईन्द्रो घणा देव-देवीओ साथे आव्या अने प्रभुने मेरुपर्वत उपर लई जई त्यां मोटा महोत्सवपूर्वक प्रभुनो जन्माभिषेक कर्यो. पछी पाछा लावी प्रभुने मातानी पासे मूक्या. ते

पछी श्री अश्वसेन राजाए दश दिवसनो मोटो जन्म महोत्सव कर्यो. बाद 'गर्भकाळे श्री वामादेवीए पोताना पार्श्वथी एटले पडखेथी जता एक काळा सर्पने अंधारामां जोयो हतो,' तेथी सर्व स्वजन-संबंधीओ अने ज्ञातिजनोनी साक्षीए प्रभुनुं 'पार्श्वकुमार' नाम राख्युं. कह्युं छे के-

प्रभुना शरीरनो वर्ण लीलो हतो, शरीरनुं प्रमाण नव हाथनुं हतुं अने काया अत्यंत सुशोभित हती. ईन्द्रना आदेशथी धावमाताओ द्वारा पालन-पोषण कराता प्रभु अनुक्रमे यौवन वय पाम्या, त्यारे तेओना पिताए कुशस्थळ नगरना राजा प्रसेनजीतनी कुमारी प्रभावती साथे तेमने परणाव्या.

एक दिवस प्रभु सवारे ज्यारे नगरशोभा जोवा गोखे बेठा, त्यारे संसारी मानवसमूह हाथमां पुष्पो, पत्रो, फळ, नैवेद्य वगेरे लईने एक दिशा तरफ जवा मळेलो हतो, तेने जोईने प्रभुए कोईने पूछयुं के-'आ सघळो लोकसमूह केम मळ्यो छे ?' त्यारे तेणे कह्युं के- कोई गामडानो रहीश, दरिद्र ब्राह्मणनो पुत्र, माता-पिता मरी जवाथी नानी वयमां निराधार

बन्यो होई, तेने दयाळु लोकोए भरण-पोषण करी जीवाड्यो अने 'कमठ' एवा नामथी ते प्रसिद्ध थयो. एकदा लोकोने सुंदर वेषभूषणोथी अलंकृत जोईने, 'अहो ! पूर्वजन्मे करेला तपथी आवां सुख मळे छे, माटे हुं पण तप करुं.'-एम वीचारी ते 'पंचाग्नि तप' वगेरे महा कष्टकारी तप करवा लाग्यो अने तपना प्रभावे उत्तरोत्तर लोको तेने पूजवा लाग्या. ते कमठ आपणा नगरनी बहार आव्यो छे अने तेने पूजवा लोको जाय छे. आ कमठ पूर्वे कह्यो ते प्रभुनो जन्म-जन्मनो वैरी हतो, नारकीमांथी नीकळीने अहीं तपस्वी थयो हतो, तेनी वात सांभळीने कौतुक जोवानी बुद्धिए नहि, पण सहज स्वभावे प्रभु त्यां गया अने त्यां कमठे सळगावेला काष्टमां बळता एक सर्पने ज्ञानथी जाण्यो. आथी करुणानिधि प्रभुए कमठने कह्युं के-'हे मूढ तपस्वी ! तारा धर्ममां दया नथी, तुं निर्दयपणे निष्फळ कष्ट शा माटे करे छे ?'

जे कृपारुपी महा नदीना कांठे तृणना अंकुरानी जेम सर्व धर्मो जीवी शके छे, ते कुपानदी सूकाया पछी धर्मो क्यां सुधी टकी शके ? माटे दया विना धर्म होय नहि. त्यारे

क्रोध करीने कमठ बोल्यो के-'राजन् ! राजपुत्रोने धर्मनी समज न होय, ते तो हाथी-घोडानी रमतमां समजे. धर्मने तो अमे तपस्वीओ ज समजीए.' त्यारे प्रभुए तरत कुहाडो मंगावीने अग्निमां बळता काष्टने बहार काढी चीराव्युं अने तेना बे भाग करी अग्निना तापथी आकुळ-व्याकुळ थयेला सर्पने जीवतो बहार काढयो. एक सळगता सर्पने जोईने सौ लोकोए कमठने धिक्कार्यो. ते पछी प्रभुआज्ञाथी तेओना सेवके सर्पने श्री नमस्कार महामंत्र संभळाव्यो अने पच्चक्खाण कराव्युं. तेने श्रद्धापूर्वक सांभळतो सर्प तरत मरीने धरणेन्द्र नामे देव थयो. एम प्रभुए सर्पनो उद्धार कर्यो, तेथी सर्वत्र तेओनो यश विस्तार पाम्यो. पछी 'अहो ज्ञानी'-एम लोकोना मुखे स्तुति कराता प्रभु पोताना स्थाने पाछा गया. एम कमठ अपमानित थयो तो पण हठथी तप करीने प्रभुनी साथे वैर धरतो मरीने मेघकुमार निकायमां 'मेघमाली' देव थयो.

ते पछी योग्यताना भंडार, दक्ष, द्रढ प्रतिज्ञावाळा, रुपवंत, गुणवंत, भद्रक परिणामी अने विनीत एवा पुरुषादानीय श्री पार्श्व प्रभुने ज्यारे घरवासमां त्रीश वर्ष पूर्ण थयां त्यारे

श्री वीरचरित्रमां कह्युं तेम लोकान्तिक देवोए आवीने तेओने दीक्षा माटे विनंति करी. प्रभु पण त्रण ज्ञानवाळा होवाथी दीक्षानो अवसर जाणता हता. आथी कल्प प्रमाणे एक वर्ष सुधी सांवत्सरिक दान दईने, पछी प्रभु राज्य, संपत्ति वगेरे सघळुं यथायोग्य वहेंचीने, सर्व उचित कार्यो करीने दीक्षा लेवा तैयार थया. पछी शियाळाना पोष महिनानी वदि पक्षनी अेकादशीना दिवसे प्रथम प्रहरे श्री वीर प्रभुना प्रसंगे कह्युं तेम प्रभु पालखीमां बेसी देव-दानवो अने मानवोनी मोटी मेदनी साथे वाणारसी नगरीना राजमार्गे पसार थई नगरनी बहार ज्यां 'आश्रमपद' उद्यान हतुं त्यां आव्या. त्यां अशोक नामना श्रेष्ठ वृक्षनी नीचे पालखी मूकावी अने पोते पालखीमांथी उतर्या. पछी स्वयं वस्त्रालंकारादि उतारीने अने पंचमुष्ठि लोच करीने, चोविहार अट्ठमना तपवाळा प्रभुए ज्यारे चन्द्र वीशाखा नक्षत्रमां हतो, त्यारे त्रणसो पुरुषोनी साथे दीक्षा स्वीकारी.

पुरुषादानीय अर्हन् श्री पार्श्व प्रभुए त्र्याशी दिवस सुधी नित्य कायानो मोह अने सारसंभाळ तजोने, देव, मनुष्य अने तिर्यंचोए करेला अनुकूळ अने प्रतिकूळ सर्व उपसर्गोने

समताथी सह्या. तेमां मेघमाली देवे करेलो उपसर्ग आ प्रमाणे सह्यो.

दीक्षा पछी प्रथम पारणुं प्रभुए धन्य नामना ब्राह्मणने घेर कर्युं, तेथी त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां. पछी विहार करता प्रभु एकदा रात्रिए एक तापसना आश्रममां कुवानी पासे वडना झाड नीचे ज्यारे काउस्सग्गमां रह्या हता, त्यारे कमठ, के जे मरीने अधम मेघमाली देव थयो हतो, तेणे प्रभुने जोया अने वैरथी त्यां आव्यो. क्रोधान्ध बनेला तेणे प्रभुने स्थिर देखी उपद्रव करवा वाघो, विंछीओ वगेरेनां क्रूर रुपो विकुर्वीने घणा उपसर्गो कर्या, पण प्रभु ध्यानथी चलित न थया त्यारे तेणे भयंकर मेघ वरसाव्यो, प्रभु उपर कादवनी-धूळनी वृष्टि करी अने आकाशने रजथी ढांकी दीधुं. प्रभुने तेथी कंई न थयुं, पण रजनी वृष्टि करवाथी शठ एवो दुष्ट कमठ पोते ज कर्मरजथी भारे थयो. पछी तेणे कल्पांत काळना मेघना जेवो मूशळधार वरसाद वरसाव्यो, अति भयंकर विजळी प्रत्येक दिशामां झबकवा लागी, ब्रह्मांड तूटे तेवी वादळनी गर्जनाओ करी, पाणीथी मोटी नदी वहेती थई अने रात्रि घोर अंधकारवाळी बनी गई. ते वेळा प्रभुना महिमाथी धरणेन्द्रनुं आसन कम्प्युं अने

पोतानी देवीओ साथे ते त्यां आव्या. पछी पोतानी फणानुं छत्र करीने प्रभु उपर पडता पाणीना मारने रोक्यो. परंतु नीचे पडतुं पाणी वधीने ज्यारे प्रभुनी नासा सुधी चढ्युं, त्यारे वरसाद वरसावता कमठने धरणेन्द्रे अवधिज्ञानथी जोयो अने हाक मारीने तेने कह्युं के- 'हे उल्लंठ ! तें आ शुं कर्युं ? त्रण जगतना स्वामिनी आशातना करीने तुं हवे क्यां जईश? त्यारे कमठे प्रभुना चरणमां शरणे आवीने त्यां प्रभुने खमाव्या. पछी धरणेन्द्र प्रभुनी नाटक वगेरेथी पूजा करीने स्वस्थाने पाछा गया अने प्रभुए पण त्यांथी विहार कर्यो. एम विविध उपसर्गोने सहीने कर्मोने अपावता छद्मस्थ प्रभुए दीक्षा दिनथी त्र्याशी दिवस व्यतीत थया, ते दरम्यान नित्य समिति-गुप्तिनुं पालन वगेरे संयमनी साधन करतां पोताना आत्माने निर्मळ कर्यो.

पछी चैत्र मासनी वदिमां चतुर्थी तिथिए चन्द्रनो योग विशाखा नक्षत्रमां आवे छते, चउविहार छट्ठ तपवाळा प्रभुए धावडीना वृक्ष नीचे क्षपकश्रेणी मांडी अने शुकलध्याननना मध्यमां वर्ततां तेओने अनंत-अनुपम एवां केवळज्ञान अने केवळदर्शन प्रगट्यां. यावत्

त्यारथी प्रभु सर्व जीव अने अजीवादिना त्रणेय काळना सर्व भावोने जाणता-जोता थया.

अर्हन पुरुषादानीय श्री पार्श्व प्रभुने आठ गण अने आठ गणधरो हता. आर्यदिन्न प्रमुख मुनिओ सोळ हजार, पुष्पचूला प्रमुख साध्वीओ, आडत्रीस हजार, सुव्रत वगेरे भावुक श्रावको एक लाख चोसठ हजार अने नन्दा वगेरे श्राविकाओ त्रण लाख सत्तावीश हजार हती. तेमां एक हजार साधुओ केवळज्ञानी अने चौदसो साधुओ अवधिज्ञानी हती. (अगियारसो वैक्रीय लब्धिवंत हता.) छसो ऋजुमति अने आठसो विपुलमति मनःपर्यव ज्ञानवाळा हता. साडा त्रणसो चौदपूर्वी हता अने तेओ संपूर्ण श्रुतज्ञानी होवाथी केवळी नहि छतां केवळीनी जेम देशना आपता हता. प्रभुने देव-दानवो तथा मनुष्योनी सभामां पराभव न पामे तेवा छसो वादीओ हता श्री पार्श्व प्रभुना एक हजार साधुओ अने बे हजार साध्वीओ श्री सिद्धिगतिने तथा बारसो मुनिओ अनुत्तर विमानमां देवगतिने पाम्या छे.

श्री पार्श्व प्रभुना शासनमां प्रभुना केवळज्ञानथी त्रण वर्षे मोक्षमार्ग शरु थयो अने निर्वाण पछी चोथा पट्टधर सुधी चालु रह्यो.

पुरुषादानीय श्री पार्श्व प्रभु त्रीश वर्ष घरवासे रह्या, त्र्याशी दिवस छद्मस्थ रह्या अने त्र्याशी दिन न्यून सित्तेर वर्ष व्रतधारी रह्या एम तेओश्री एकसो वर्षनुं आयु भोगवीने वेदनीयादि अघाती कर्मो क्षीण थये छते, अंत समये योगनिरोध करी, एक मासनुं चोविहार अनशन करी, श्री संमेतशैल पर्वत उपर तेत्रीश मुनि साथे काउस्सग्ग मुद्राए उभा उभा आ अवसर्पिणीनो चोथो आरो बसो तेपन वर्ष अने साडा आठ मास बाकी रह्यो हतो त्यारे, प्रभु श्री महावीरदेवना निर्वाणथी अढी सो वरस पूर्वे श्रावण सुदि अष्टमीना दिवसे मध्यरात्रिना समये चन्द्र विशाखा नक्षत्रमां मळेलो हतो त्यारे निर्वाण पाम्या.

श्री पार्श्व प्रभुना निर्वाण पछी अढी सो वर्षे श्री वीरनुं निर्वाण थयुं अने ते पछी नव सो ऐंशी वर्षे अर्थात् श्री पार्श्व प्रभुना निर्वाणथी बारसो त्रीश वर्षे श्री कल्पसूत्र पुस्कारुढ थयुं अथवा पर्षदामां वंचायुं, वगेरे पूर्वे कह्युं तेम समजवुं.

एम श्री पार्श्व प्रभुनुं चरित्र जणाव्युं. श्री ज्ञानविमल नामना गुरुए कहेला आ व्याख्यानने सांभळीने कमठे करेला मरणान्त उपसर्गोमां पण श्री पार्श्व प्रभुए जेम चित्तने

समाधिमां राख्युं, तेम श्रोताए राग-द्वेषना प्रसंगे चित्तने समाधिमां राखवुं.

अहीं श्री पार्श्वचरित्र पूर्ण थयुं. हवे श्री नेमिनाथ प्रभुना चरित्रनो प्रारंभ करतां तेओना पूर्वभवो कहीए छीए.

पहेलो-बीजो-भव - जंबूद्वीपना भरतमां अचलपुर नामे नगर हतुं. तेमां न्यायी, सदाचारी, प्रजावत्सल अने धर्मी एवो धन नामे राजा हतो, तेने धनदत्त तथा धनदेव नामे बे नाना भाईओ हता अने धनवती नामे सुशील पतिभक्ता सती पट्टराणी हती. परस्पर गाढ प्रीतिवाळां राजा-राणी एकदा सरोवरमां जळक्रीडां करवा उद्यानमां गयां अने त्यां धनवतीए एक साधुने मूर्च्छित दशामां जोया. आथी तेणे राजाने कह्युं अने राजा भक्तिभावे तरत मुनि पासे दोडी आव्यो. पछी बंनेए शीतल उपचार करवाथी मुनि स्वस्थ थया. पोताना जीवनने कृतार्थ मानता राजा-राणीए मुनिने मूर्च्छानुं कारण पूछयुं. मुनिए कह्युं के-विहार करतो सार्थ विखुटो पडवाथी हुं मार्गे भूलो पड्यो अने अटवीमां भमतां अहीं आवी पहोंच्यो, पण भूख, तृषा, श्रम, ताप वगेरे परीषहोथी मूर्च्छा आवी. ते पछी शुं थयुं ? ते तमे जाणो

छो. मुनिना त्याग, वैराग्य, निःस्पृहता वगेरे गुणोनी अनुमोदना करता ते बंनेने मुनिए धर्मोपदेश आप्यो अने त्यां ते बंनेने समकित प्रगट थयुं. पछी समकित मूल बार व्रतोरुप गृहस्थधर्म उच्चरीने बंने शहेरमां गयां. अहीं समकित थवाथी तेओनो आ भव पहेलो समजवो. आ राजा-राणी ए ज प्रभु श्री नेमिनाथ अने राजिमतीनो जीव समजवा. समकित पाम्या पहेलांना अनंता भवो दरेकने थया होय छे, पण समकितना अभावे ते अेकडा विनानां मींडां जेवा होवाथी गणनामां आवता नथी. संकटमां करेली मुनिनी सेवा कल्पवेलडीनी जेम वांच्छित फळोने आपे छे. प्रभु श्री ऋषभदेवना अने प्रभु श्री महावीरदेवना जीवे पण पहेला भवमां मुनिओने संकटमां आहारनुं दान करवाथी समकित मेळव्युं हतुं. ए रीते धनराजा अने धनवती बन्ने संसार सुख भोगवतां राज्यनुं अने धर्मनुं पालन करीने प्रान्ते वैरागी बन्यां, सगुरुनो योग पामीने बन्ने भाईओ सहित राजा-राणीए दीक्षा लीधी अने उग्र तप साथे निर्मळ चारित्र पाळीने चारेय बीजा भवमां सौधर्म कल्पमां मित्र देवो थया.

त्रीजो-चोथो-भव-धनराजानो जीव स्वर्गथी च्यवीने त्रीजा भवमां वैताढ्य पर्वत उपर

सूर नामना विद्याधर चक्रवर्तीनी विद्युन्मती राणीनी कुखे पुत्रपणे उपन्यो. योग्य काळे जन्मेला पुत्रनुं जन्ममहोत्सवादि मानव जीवननुं मंगळ करीने स्वजन संबंधी ज्ञातिजनोनी साक्षीए माता-पिताए तेनुं 'चित्रगति' नाम राख्युं. धनदत्त अने धनदेवना जीव पण स्वर्गेथी च्यवीने ते ज राजाना पुत्रो अनुक्रमे मनोगति अने चपळगति नामे थया. धनवतीनो जीव स्वर्गनां सुखो भोगवीने त्यांथी च्यवी वैताढ्यनी दक्षिणश्रेणिमां अनंगसिंह राजानी शशिप्रभा राणीनी कुखे पुत्रीपणे उपन्यो. जन्म पछी माता-पिताए तेनुं 'रत्नवती' नाम राख्युं अने यौवनवये पूर्वजन्मना सम्बन्धथी चित्रगति प्रत्ये अनुराग थवाथी तेनी साथे परणावी. प्रीतिपात्र बन्ने भाईओ, सती अनुरागिणी स्त्री अने राज्यवैभवनां सुख भोगववा छतां उत्तरोत्तर वैरागी थयेला चित्रगतिए ज्ञानी गुरु पासे दीक्षा लीधी अने तेनी साथे राणी तथा बन्ने भाईओ पण दीक्षित थया. गुरु सेवा, त्याग, तप वगेरे गुणोथी निर्मळ चारित्र पाळीने काळधर्म पामी चारे जण चोथा भवमां माहेन्द्रकल्पमां मित्रदेवो थया.

पांचमो-छठ्ठो-भव - पश्चिम महाविदेहनी पद्म नामनी विजयमां सिंहपुरमां हरिनंदी

राजा अने तेनी प्रियदर्शना राणी हती. चित्रगतिनो जीव स्वर्गनुं आयुष्य पूर्ण थतां पांचमा भवमां प्रियदर्शनानी कुखे पुत्र पणे उपन्यो अने जन्म पछी माता पिताए तेनुं अपराजित नाम राख्युं. मनोगति अने चपळगतिना जीवो पण स्वर्गमांथी च्यवीने त्यां ज अपराजितना बे नाना भाई थया. तेओनां नाम अनुक्रमे सोम अने सूर राख्यां. अपराजितने बाल्यकाळथी ज पिताना मंत्रीना पुत्र विमळबोध साथे गाढ मैत्री थई अने बन्ने परस्पर विश्वासनुं पात्र बन्या. रत्नवतीनो जीव स्वर्गमांथी च्यवीने ते विजयमां ज कुंडपुर नगरना राजानी प्रीतिमती नामे पुत्री तरीके जन्मयो अने यौवनवये पूर्वजन्मना प्रेमथी तेनो लग्न संबंध अपराजितनी साथे थयो. पिताए राज्यनो भार उतारी अपराजितने राज्याभिषेक कर्यो. पछी न्याय, नीति, धर्म-कर्मनुं रक्षण करता अपराजिते लांबा काळ सुधी राज्यनुं अने प्रजानुं पालन कर्युं. उत्तरोत्तर राजाने सोम, सूर, विमळबोध, अने प्रीतिमती साथे निर्मळ प्रेम अने वात्सल्य वधतां गयां. ते चारेने पण अपराजित राजा प्रत्ये पूज्यभाव वधतो गयो. एम पांचेने परस्पर गाढ प्रीति थवाथी एक-बीजानो विरह सहवा अशक्त बन्या. धर्म-कर्मपूर्वक भोग भोगवतां

पांचे वैराग्य पामी प्रव्रजित थया अने निर्मळ चारित्र पाळी घणां कर्मो खपावी काळधर्म पामीने छठ्ठा भवमां पुण्यनुं फळ भोगववा पांचे आरण देवलोकमां ईन्द्रना सामानिक देव तरीके उत्पन्न थया.

सातमो-आठमो भव- स्वर्गनां सुख भोगवी देवनुं आयुष्य पूर्ण थये अपराजितनो जीव च्यवीने सातमा भवमां आ भरतक्षेत्रना हस्तिनागपुर नगरना श्रीषेण राजानी श्रीमती राणीनी कुखे पुत्रपणे उपज्यो. पिताए तेनुं शंखकुमार नाम राख्युं. सोम अने सूरनो जीव पण देवलोकथी च्यवीने ते ज राजा पुत्र तरीके शंखना नाना भाई थया. पिताए तेओनुं नाम अनुक्रमे यशोधर अने गुणधर राख्युं. विमळबोधनो जीव पण ते श्रीषेण राजाना मंत्रीनो मतिप्रभ नामे पुत्र थयो. ते चारेय पूर्वजन्मना संबंधथी गाढ प्रीतिवाळा बन्या. प्रीतिमतीनो जीव पण स्वर्गथी च्यवीने चंपानगरीना जितारी राजानी कीर्तिमती राणीनी कूखे पुत्रीपणे जन्म्यो, तेनुं नाम यशोमती राख्युं. ते यौवन पामी त्यारे अनेक राजपुत्रो योग्य छतां तेनुं चित्त कोईना प्रत्ये अनुरागी न थयुं. एकदा शंखकुमारनुं नाम, गुण वगेरे सांभळीने

पूर्वजन्मना संस्कारथी तेने कामराग प्रगट्यो अने तेने वरवा निश्चय कर्यो, पण तेना रुपमां मूढ बनेला एक विद्याधरे तेनुं हरण कर्युं. आ हकीकत तेनी धावमाताना मुखे प्रसंग पामीने शंख राजाए सांभळी अने अनेक स्थळे शोध करतां एक पर्वतनी गुफामां रहेली यशोमतीने विद्याधरनो पराभव करीने छोडावी त्यांथी चंपानगरीए पहोंचाडी. ते पछी जितारी राजाए महोत्सवपूर्वक तेने शंखराजा साथे परणावी. राज्यनुं पालन अने विविध भोगोनो वैभव छतां ते पांचेनो धर्मानुराग वधतो गयो. तेथी असार संसारने तजी पांचे दीक्षित थयां. तेमां शंखराजर्षिए विधिपूर्वक वीशस्थानक तपनी आराधना करीने तीर्थंकरनामकर्म निकाचित कर्युं. निर्मळ चारित्र पाळीने अनुक्रमे काळधर्म पामी आठमा भवे पांचे अपराजित वीमानमां देव थयां.

त्यांथी च्यवीने नवमा भवमां शंखनो जीव श्री नेमनाथ प्रभु थया, यशोमतीनो जीव राजीमती थई, अने यशोधर, गुणधर, तथा मतिप्रभना जीव भिन्न भिन्न देशमां राजपुत्रो थया, ते त्रणे श्री नेमप्रभुने केवळज्ञान थया पछी प्रभुना गणधरो थया, राजीमती पण

दीक्षित थयां अने केवळ पामीने चारे मुक्तिने वर्यां.

आर्यआचाररुप कौटुंबिक वगेरे संबंधो विषय कषायोथी आत्मानी रक्षा करी परस्पर प्रशस्त रागनी वृद्धि करे छे, एना परिणामे प्रत्येक भवमां ते संस्कारोथी ते जीवो भेगा मळे छे, परस्पर न्याय, नीति, सदाचार, त्याग, वेराग्य, वगेरे गुणोना विकासमां सहाय करे छे. अने स्व-पर विकास साधता अन्ते मुक्तिमां पण साथे जाय छे. एम कौटुंबिक संबंधो स्व-पर भेदनो नाश करी शाश्वत काळ सुधी शाश्वत सुखना साधक बने छे. ए सत्य प्रभुना भवोमांथी जाणवा मळे छे. माटे आत्मार्थीए कुंटुंब प्रेम निर्मळ अने अखंड रहे ते माटे प्रभुना द्रष्टांतथी विषय-कषायोनी वासना दूर करीने सदाचार केळववा जोईए. गृहस्थजीवन, राग-द्वेष के विषय कषायो करवा माटे नथी, पण आर्य आचारोथी विषय कषायादि अंतरंग शत्रुओनो नाश करवा माटे छे, तेथी ज धर्मसामग्रीमां मनुष्यजन्म करतां य आर्यदेशनुं महत्त्व अधिक कह्युं छे. वगेरे तत्त्वने समजवुं जोईए. हवे छेल्लो नवमो तीर्थंकर तरीकेनो भव विस्तारथी कहीए छीए.

हवे श्री नेमीश्वर प्रभुनां श्रेष्ठ पांच कल्याणक कहीशुं. ते आ प्रमाणे – चित्रा नक्षत्रमां ज्यारे चन्द्र हतो त्यारे ते स्वर्गथी च्यवीने मातानी कुक्षिए अवतर्या, ज्यारे चित्रा नक्षत्रमां चन्द्र हतो त्यारे जन्म्या, चित्रा नक्षत्रना चन्द्र वखते दीक्षा लीधी, चित्रा नक्षत्रमां ज्यारे चन्द्रयोग हतो त्यारे केवळी थया अने चित्रा नक्षत्रमां ज्यारे चन्द्र हतो त्यारे निर्वाण पाम्या. तेमां अर्हन अरिष्ठनेमि वर्षाकाळना कार्तिक वदि बारसनी मध्यरात्रे अनुत्तरना अपराजित देवलोकनुं बत्रीश सागरोपमनुं आयुष्य, गति अने भव पूर्ण थतां, दैवी आहार, दैवी शरीर वगेरे तजीने, त्यांथी च्यवीने चित्रा नक्षत्रमां ज्यारे चन्द्रयोग हतो त्यारे अहीं भरतक्षेत्रमां शौरीपुरीना राजा समुद्रविजयनी पट्टराणी शिवादेवी मातानी कुखे उपन्या. ते वारे माताए चौद सुपन जोयां, तेनो अर्थ विचार्यो, पति पासे जई ते कही संभळाव्यां, वगेरे सघळुं पूर्वनी जेम अहीं पण समजवुं.

अनुक्रमे गर्भकाळ पूर्ण थतां श्रावण सुदि पंचमीए ज्यारे चन्द्र चित्रा नक्षत्रमां हतो, त्यारे बाधा-पीडारहित माताए रोगादिथी रहित पुत्रने जन्म आप्यो. ते पछी सिंहासन चलित

थतां, अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म जाणीने दिक्कुमारीओ आवी अने सूतिकर्म कर्युं. ते पछी चोसठ इन्द्रो अने देव-देवीओए मेरुपर्वत उपर प्रभुनो जन्माभिषेक महोत्सव कर्यो. बाद राजाए पण दश दिवस सुधी पुत्रजन्मनो विशिष्ट महोत्सव कर्यो. वगेरे श्री वीरचरित्रनी जेम अहीं पण सघळुं जाणवुं.

ज्यारे प्रभु गर्भमां हता त्यारे माताए रिष्ठ रत्ननी चक्रधारा स्वप्नमां जोई हती, तेने अनुसारे माता-पिताए नामकरणनो महोत्सव करीने, 'रिष्ठ' शब्द अमंगळरुप होवाथी अकार वधारीने 'अरिष्ठनेमि' एवुं नाम राख्युं. पछी क्रमशः यौवनने पामेला प्रभु यादवकुळना शणगारतुल्य थया. माताए योग्य जाणी तेमने परणवा विनंति करतां कह्युं के-'हे पुत्र ! लग्न करीने अमारा मनोरथ पूर्ण करो.' त्यारे प्रभुए कह्युं के-'योग्य कन्या मळतां लग्न करीश.' ते पछी एकदा कौतुक रहित छतां प्रभु मित्रोनी प्रेरणाथी क्रिडा करता श्री कृष्णनी आयुधशाळामां गया अने त्यां वासुदेवनां शस्त्रो लईने क्रीडा करवा लाग्या. तेमां तेओए चक्रने कुंभारना चाकनी जेम भमाव्युं अने अति वजनदार कौमुदिकी गदाने लाकडीनी

जेम उपाडी.

पछी ज्यारे प्रभुए वासुदेवनो पंचजन्य शंख मुखे धरीने गवाड्यो, त्यारे ऐवो अवाज उछळ्यो के-त्रणेय भुवनो कम्प्यां, भय पामेला हाथीओ बन्धनो तोडीने अनेक घरोने तोडता-पाडता नाठा, घोडाओ पण भींतो उल्लंघीने नाठा अने शब्दना आकरा अवाजथी समग्र शहेर जाणे बहेरुं बनी गयुं. कह्युं छे के-

ते सांभळीने 'कोई वैरी जाग्यो.'- एम समजी, आकुळ-व्याकुळ थयेला कृष्णजी कोणे आ शंख वगाड्यो ते जोवा ज्यारे आयुधशाळामां आव्या, त्यारे श्री नेमिकुमारने जोईने आश्चर्य पाम्या अने 'पोतानाथी अधिक बळ होवाथी भविष्यमां ते राज्यने लई लेशे.' एवी वासुदेवना मनमां शंका थई अने मन क्यांय शांत न थयुं. पछी कोनुं बळ अधिक छे-ए जाणवा कृष्णजी प्रभुने साथे लई अखाडामां गया. त्यां प्रभुए कह्युं के-

आपणने 'भोंय आळोटवुं' वगेरे न शोभे, माटे भुजाओने वाळवाना प्रयोगथी बळपरीक्षा करीए, कृष्णजीए ते कबूल्युं अने प्रथम कृष्णजीनी भुजाने प्रभुए नेतरनी दांडीनी जेम

वाळीने विजय मेळव्यो. पछी वृक्षनी डाळी सरखी द्रढ प्रभुनी भुजाने कृष्णजी वाळी शक्या नहि, पण प्रभुए भुजा उंची करी त्यारे वांदरो जेम डाळीने वळगे तेम बे हाथे पकडेली भुजाए लटकता कृष्णजी पोते श्यामवर्णा तो हता ज अने आ चिंताथी तेमनुं मुख अधिक श्याम बन्युं, तेथी साचे ज ते हरि एटले वांदरा जेवा देखाया. जेम जुगारी दावमां हारे, तेम बळ परीक्षामां कृष्णजी हार्या. पछी 'बळवान होवाथी आ मारुं राज्य लीला मात्रथी लई लेशे.'-एवी चिंताथी कृष्णजीए बलभद्रने पूछ्युं के-'हवे शुं करवुं ?' ते ज वखते आकाशवाणी थई के-'पूर्वे श्री नमिनाथ प्रभुए कह्युं छे के-'मारी पछी बावीशमा तीर्थंकर नेमिनाथ परण्या विना दीक्षा लेशे.'- ए सांभळीने कृष्णजीने चिंता ओछी थई. पण सविशेष निश्चय करवा गोपीओथी परिवरेला कृष्णजी प्रभुने साथे लई जलक्रीडा करवा सरोवरमां उतर्या. 'जो आ लग्न करे, तो भोग भोगववाथी क्षीणबळी थाय अने मारो भय टळे.'-ए उद्देशथी कृष्णजीए गोपीओने कह्युं के-'मारो भय छोडी नेमिकुमारने विकार थाय अने परणवानुं कबूल करे, एवी क्रीडा करो. आथी स्त्रीस्वभाव अने पतिनी सम्मति पछी

पूछवुं ज शुं ? गोपीओए हांसी-ठठ्ठापूर्वक मर्यादा मूकीने प्रभु साथे जलक्रीडा करवा मांडी. कोई पाणी छांटे छे, कोई पुष्पना दडाओ तो कोई कटाक्ष फेंके छे, कोई मश्करी करे छे, तो कामकळामां कुशळ कोई आश्चर्य उपजावे छे. एम प्रभुने व्याकुळ करवा गोपीओ विविध प्रयत्नो करे छे ते वखते पण देववाणी थई के -

'हे मुग्ध गोपीओ ! चोसठ ईन्द्रोए जन्मदिवसे एक योजनना नाळचावाळा लाख्खो कळशोथी अभिषेक करवा छतां जे प्रभु व्याकुळ न थया, तेमनो तमे आ रीते शुं पराभव करी शकशो ? 'ऐ वाणी सौए सांभळी, औचित्यना जाण प्रभु पण जलक्रीडा करती गोपीओने अने कृष्णने विकार विना पाणी छांटवा लाग्या अने तेओना फेंकायेला पुष्पोना दडाओ तेओने मारवा लाग्या एम विस्तारथी जलक्रीडा करीने सरोवरना कांठे सोनाना आसने प्रभुने बेसाडीने गोपीओ तेमनी चारेय बाजु विंटाइने उभी रही. पछी प्रभुने तेओ विविध ओलम्भा देती अने भावि भय समजावती आजीजीपूर्वक परणवानी विनंती करवा लागी. तेओनां वचनोमां मूढतानुं प्रदर्शन हतुं. रुक्मिणीए कह्युं के-'तमारी स्त्रीनो निर्वाह

करवानी जो कायरता होय, तो तमारा भाई (कृष्णजी) पोतानी बत्रीश हजार स्त्रीओ साथे तमारी स्त्रीनुं पण भरणपोषण करशे.' सत्यभामा बोली के-'तमारी पूर्वे थयेला श्री ऋषभादि जिनेश्वरोए लग्न कर्युं, राज्य पाळ्युं, भोग भोगव्या, घणा पुत्रोना पिता थया अने मोक्षे पण गया, शुं तमे कोई नवा मोक्षमां जवाना छो ? माटे हे देवर ! विचारो अने गृहवासने सेवी सौनां मन प्रसन्न करो !' जंबूवतीए कह्युं के-'आपणा ज वंशमांथी पूर्वे श्री मुनिसुव्रतप्रभु गृहवास सेवीने अने पुत्रवान बनीने मुक्तिए गया छे.' पद्मावती बोली के-'स्त्री विना पुरुषनी कंई शोभा नथी, परण्या विनानो पुरुष धूर्त गणाय छे अने कोई तेनो विश्वास करतुं नथी.' गांधारीए कह्युं के-'पत्नी विना पुरुषने संबंधीओनां स्वागत, मेळावडा, पर्वना उत्सवो, घरनां अने लग्नादिनां कार्यो, उजाणी, पोंखणां के सभामां जवुं वगेरे शोभे ज नहि.' गौरी बोली के-'अज्ञान पक्षीओ पण सर्वत्र भमीने सांजे पोतानी पत्नी साथे सुखथी वसे छे. देवर ! शुं तमे पक्षीओथी पण विशेष मूढ छो ?' लक्ष्मणाए कह्युं के-'पत्नी विना पुरुषने स्नानादि अंगपरिष्कारमां विचक्षण, स्नेह-प्रेमनुं पात्र, विश्वासनुं ठाम

अने संकटमां सहायक कोण थई शके ?' सुसीमा बोली के-'स्त्री विना घेर आवेला प्राधूर्णको के मुनिओनी सेवा-भक्ति बीजुं कोण करशे अने पुरुष कोनाथी शोभशे ?' वगेरे मूढतायुक्त वचनो सांभळीने विवेकी प्रभुए मौन रही कंईक स्मित कर्युं. आथी 'अनिषिद्धं अनुमतं'- ए न्यायनो आश्रय लई सर्वत्र जाहेर कर्युं के-नेमिकुमार लग्न माटे संमत छे. आ सांभळीने कृष्णजी प्रसन्न थया अने तरत उग्रसेन राजानी कन्या राजिमतीनी मागणी करी तथा लग्न दिवस पूछ्यो. त्यारे जोषीए कह्युं के-

'वर्षाऋतुमां सामान्य पण शुभ कार्यो करी शकाय नहि, तो पछी गृहस्थना मुख्य कार्य विवाहनी वात केवी ?' ते वखते समुद्रविजय बोल्या के-'भाई ! कृष्णजीए नेमिने महा मुशीबते विवाह माटे मनाव्यो छे, तेथी विलंब करवो योग्य नथी; जे नजीकनो सारो दिवस होय ते जणाव !' त्यारे जोषीए श्रावण सुदि छठ्ठनो दिवस आप्यो. वर-कन्याना संबंधीओए विवाहनी तैयारी करी अने विवाहना दिवसे प्रभु मोटा समुह साथे रथमां बेसीने राजिमतीने परणवा चाल्या.

प्रभु ज्यारे राजीमतीने परणवा तोरणनी नजीक पधार्या, त्यारे आडंबरथी रथमां बेसीने आवता नेमिकुमारने जोईने महेलनी अगासीमां उभेली राजीमतीनी सखीओ राजीमतीना भाग्यनी भूरी भूरी प्रशंसा करती हती. ते ज अवसरे राजीमती पण पतिनां दर्शन करवा त्यां आवी. तेने खीजववा सखी मृगलोचना विनोदार्थे बोली के-'चन्द्रानना ! घणा गुणोवाळा पण आ वरमां एक मोटुं दूषण छे, पण राजीमतीना सांभळतां ते कहेवुं उचित नथी.' चंद्रानना पण बोली के-'हुं ए जाणुं छुं. पण हाल मौन रहेवुं सारुं छे.' ए बंनेनी वात सांभळी मध्यस्थभावे राजीमतीए कह्युं के-'भले, भाग्यवती कोई पण कन्यानो आ पति होय, पण समग्र गुणोथी भूषित आवा पुरुषमां दूषण जोवुं ते दूधमांथी पोरा शोधवा बराबर छे.' त्यारे बंने सखीओ विनोद माटे चीडाईने बोली के-'राजीमती ! वर प्रथम तो गौरवर्णो जोईए, बीजा गुणो तो परिचय थतां जणाय. ते वर्ण तो काजळ सरखो छे, तुं शुं जोईने हर्षथी फुलाय छे ?' त्यारे राजीमती इर्ष्यापूर्वक बोली के-'सखीओ ! आज सुधी हुं तमने चतुर जाणती हती. पण मारो ते भ्रम आजे भांग्यो, तमारी बुद्धिनुं माप

नीकळ्युं, कारण के-सघळा गुणोना आधारभूत अने शोभारुप ऐवा पण श्यामपणाने तमे दूषण समजो छो.' एम कहीने राजीमतीए श्यामपणाना गुणो अने तेना आश्रयथी थता लाभोने कहेवा मांड्या तथा तेनी साथे केवळ गौरपणाना दूषणो पण समजाववा मांड्या. ते ज वखते त्यां वाडामां पूरेलां पशुओनो करुण स्वर सांभळीने प्रभुनुं हृदय करुणाथी उभरायुं. पूछवाथी जाण्युं के-'आ पशुओने जानैयाओना भोजन माटे भेगां कर्यां छे, तेओना प्राणने भोगे विवाहनो आनंद अनुभववानो छे.' त्यारे प्रभुए विचार्युं के-'धिक्कार हो ! आ विवाहना ओच्छवने, के जेमां आ बिचारा अनाथ-मुंगां-अशरण प्राणीओना प्राणनो भोग लेवानो छे.'

ए ज समये महेलनी अगासीमां उभेली राजीमतीनुं जमणुं नेत्र फरक्युं अने तेणे भय पामीने ते सखीओने जणाव्युं. सखीओने पण अनिष्टनी शंका थई, तेथी 'अमंगळ नाश पामो.'-एम कहीने तेओ थुथुकार करवा लागी. परंतु तेमने क्यां खबर हती के-राजीमतीनुं नेत्र केम फरक्युं हतुं ? राजीमतीनुं मुक्तिनुं तेमां सूचन हतुं, त्यां, थुथुकार शुं करी शके?

पछी प्रभुए सारथिने रथ त्यांथी ज पाछो वाळवा कह्युं. ते वेळा एक हरिण एक हरिणीनी डोक उपर पोतानी डोक राखीने दीन वदने उभो हतो अने नेत्रोमांथी आंसुडां पाडती हरिणी हरिणनी सामे जोई रही हती. ते जाणे हरिणने मनथी कहेती हती के-

'आ अनाथना नाथ प्रभु पधार्या छे, तेमने विनंति करो के-तेओ आपणी रक्षा करे.' हरिण पण हरिणीनी डोक उपर डोक राखीने हृदयथी प्रार्थना करतो हतो के-

'आ मारी प्रिय हरिणीना प्राण लेशो नहि, कारण के-तेनो विरह मने मरणथी पण अति दु:खद बनशे.'

'हे प्रभु ! अमे जंगलनां तृण खाईए छीए, झरणांनां पाणी पीए छीए अने वनमां रहीए छीए, माटे निरपराधी-अशरण-अनाथ एवां अमारुं रक्षण करो.' दयाना सागर प्रभुए दीन-अनाथ पशुओने छोडी मूकवा कह्युं अने पशुपालकोए प्रभुआज्ञाथी सर्व पशुओने छोडी मूक्यां. खरेखर, हरिणीयाए रंगनो भंग कर्यो, एथी ज लोको तेने कुरंग कहे छे. तेणे चन्द्रने कलंकी कर्यो, राम-सीतानो वियोग कराव्यो अने अहीं राजीमतीना मनोरथोनो

पण चूरो करी नाख्यो.

पछी रथनी आडे उभा रहीने समुद्रविजय, शिवादेवी, वगेरे आंसु पाडतां प्रभुने विनंति करवा लाग्यां. शिवादेवीए कह्युं के-'पुत्र ! मारी आ पहेली ज प्रार्थना छे, विवाह करीने निज पुत्रवधुनुं मुख जोवानो मारो ल्हावो पूर्ण कर !' त्यारे प्रभु बोल्या के-'माताजी ! आ आग्रह छोडो, मानवस्त्रीमां मारुं मन लागतुं नथी अने मुक्तिरुपी कन्याने परणवाना मारा कोड छे. जे रागी प्रत्ये विराग धरे, ते स्त्रीने कयो डाह्यो पुरुष इच्छे ? माटे हुं वैरागी प्रत्ये राग करनारी मुक्तिने इच्छुं छुं.'

राजीमती पण ए जाणीने मूच्छित थई अने उपचार करतां ज्यारे भान आव्युं, त्यारे ते आंसु नाखती हृदय फाट स्वरे बोली के-

'हे यादवकुळना शणगार ! ज्ञानी, जगतना शरणभूत अने करुणानिधि स्वामिन् ! मने मूकीने पाछा केम जाओ छो ?' तथा 'हे निष्ठुर हैया ! आपणो स्वामी बीजा प्रत्ये रागी थयो, तो पण तुं हजी केम जीवे छे ? तारा टूकडा केम थता नथी ?' पछी निसासा

नाखती राजीमती प्रभुने ओलंभा देवा लागी के-

'वेश्या सरखी अनेक सिद्धोथी भोगवाती मुक्ति प्रत्ये जो तमने राग हतो, तो आ परणवानो ढोंग करीने मने केम दु:खी करी ?' त्यारे सखीओ रोषपूर्वक बोली के-'बहेन ! लोकप्रसिद्ध दंतकथा छे के -'जो विधाता भूले तो ज काळो पुरुष कोई सरळ नीवडे, अन्यथा काळो पुरुष कपटनुं घर ज होय, माटे छोड ए कपटीने ! कोई बीजा प्रेमपात्र उत्तम राजपुत्र साथे तारो विवाह करीशुं.' ए शब्दो सांभळतां राजीमतीए कान उपर बे हाथ दईने कह्युं के-

'आ न बोलवानुं शुं बोलो छो ? सूर्य पश्चिममां उगे, तो पण हुं नेमिनाथने छोडीने बीजा पुरुषने वरवानी नथी.'-एम कही प्रभुने उद्देशीने राजीमती बोली के-

'व्रतनी इच्छावाळा तमे आंगणे आवेला याचकोने इच्छाथी पण अधिक आपीने संतोषो छो, तो हे जगन्नाथ ! में शुं अपराध कर्यो छे के-एक मारा हाथ उपर आपनो हाथ पण हुं पामी न शकी ?' पछी वैराग्यथी तेणीए निर्णय कर्यो के-'भले, विवाहप्रसंगे

प्रभुनो हाथ हुं न पामी, तो पण दीक्षाप्रसंगे मारा मस्तके प्रभुनो हाथ मूकावीश.'

आ बाजु प्रभुने समुद्रविजय प्रमुख परिवारे घणो आग्रह कर्यो अने कह्युं के-

'आज पूर्वे ऋषभादि अनेक जिनेश्वरो घरवास सेवीने मुक्तिमां गया, तो हे नेमि ! ब्रह्मचारी रहीने तुं तेमनाथी कोई उंचुं स्थान मेळववा मागे छे ?' त्यारे विनयपूर्वक प्रभुए कह्युं के-'तेओने भोगावळी कर्मो बाकी हतां, ज्यारे मारे क्षीण थयां छे, माटे विवाहनो आग्रह छोडो !'

'एक स्त्रीना भोगथी पण अनंत जीवोना घात थाय, तेवा संसारनी परंपराने वधारनारा आ विवाहनो आग्रह आप जेवाने न शोभे !' वगेरे प्रभुए कहीने तेओना चित्तनुं समाधान कर्युं अने भोगथी विरक्त छतां जाणे परणवाना ब्हाने आवीने, पूर्वभवना प्रेमथी राजीमतीने मुक्तिमां जवानो संकेत करी गया होय तेम प्रभु त्यांथी पाछा फर्या.

अर्हन् श्री अरिष्ठनेमि त्रणसो वर्ष कुमारपणे घरमां रह्या. पछी लोकान्तिक देवो आव्या अने तेओए दीक्षा माटे प्रभुने प्रार्थना करी. प्रभुए वार्षिक दान दीधुं अने सर्व

समयोचित कार्यो पूर्ण कर्यां, वगेरे पूर्वनी जेम समजवुं. पछी दीक्षानो महोत्सव करवा आवेला देव-दानवो अने मनुष्योथी परिवरेला प्रभु श्रावण सुदि छठ्ठना दिवसे पालखीमां बेसीने द्वारिकाना राजमार्गेथी नीकळी गिरनार पर्वतना सहस्त्राम्र वनमां पधार्या, त्यां चोविहारा छठ्ठना तपवाळा प्रभुए चित्रा नक्षत्रमां चन्द्रनो योग वर्तते छते, स्वयं पंचमुष्ठि लोच करीने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी.

ते पछी समिति-गुप्तिना पालन वगेरेथी निरतिचार चारित्र पाळता अप्रमत्त प्रभु चोपन दिवस छद्मस्थपणे विचर्या. पछी तेओ विहार करता गिरनारना सहस्त्राम्र वनमां पधार्या अने त्यां आसो वदि अमासना दिवसे पाछला प्रहरे अट्ठमना तप पूर्वक वैतस वृक्ष नीचे क्षपकश्रेणी मांडीने, चित्राना चन्द्रयोगमां घातीकर्मोनो क्षय करीने, अनंत अव्याबाध ऐवां केवळज्ञान-केवळदर्शनने पाम्या. त्यारथी प्रभु जीवाजीवादि सर्व द्रव्योना त्रणेय काळना सर्व पर्यायोने जोता-जाणता थया.

पछी उद्यानपालके कृष्णजीने प्रभुना केवळज्ञाननी वधामणी आपी, तेथी ते घणा

आडंबरथी प्रभुने वांदवा आव्या. राजीमती पण त्यां आवी. देवोए समवसरण रच्युं अने प्रभुए देशना दीधी. ते सांभळीने वरदत्त राजाए बे हजार राजाओ सहित दीक्षा लीधी अने प्रभुए त्यां तीर्थ स्थाप्युं. पछी कृष्णवासुदेवे राजीमतीना प्रभु प्रत्येना स्नेहनुं कारण पूछ्युं, तेथी प्रभुए पूर्वना नव भवोनो तेनी साथेनो संबंध कही संभळाव्यो.

पछी प्रभु विहार करी अन्यत्र पधार्या. अेकदा पुनः प्रभु ज्यारे गिरनार उपर पधार्या, त्यारे अनेक राज-कन्याओ सहित राजीमतीए अने रथनेमिए पण प्रभुना हाथे दीक्षा लीधी. कोई एक दिवसे गिरनार उपर पधारेला प्रभुने वन्दन करवा जतां राजीमतीने वरसाद नड्यो, तेथी ते एक गुफामां पेठां. रथनेमि पण पूर्वे ए गुफामां आवेला हता, पणे ते नहि जाणवाथी राजीमतीए भींजायेला वस्त्रोने शरीर उपरथी उतारी अप्कायनी जयणा करवा मांडी, त्यारे देवांगनाने पण शरमावे तेवुं राजीमतीनुं रुप जोईने रथनेमिने राग प्रगट्यो अने जाणे भाईना वैरथी पीडतो होय तेम काम तेमने पीडवा लाग्यो. तेथी कुळनी मर्यादा अने लज्जाने तजीने दुःसाहस करी रथनेमि बोल्या के-

'हे सुंदरी ! सर्व प्रकारना भोगोने योग्य सुंदर कायाने तुं तपथी केम सूकवे छे ? चाल, आपणे पुण्ये मळेला भोग भोगवीने जन्म सफळ करीए. पछी छेल्ले तप करीशुं.' ते सांभळीने रथनेमिने जोईने महासती श्री राजीमती धैर्यथी बोल्यां के-

'महानुभाव रथनेमि ! तमने आ नरकना रस्ते जवानो मनोरथ केम थयो ? शुं प्रभुनी समक्ष सर्व पापोने तजीने पुनः तेनी इच्छा करतां लज्जा नथी आवती ?' वगेरे राजीमतीए जे जे कह्युं, तेना युक्तिपूर्वक जवाब आपी भोगनी इच्छानुं समर्थन करता रथनेमि विविध युक्तिओथी अने लालचथी राजीमतीने चलित करवा प्रयत्न कर्यो, परंतु राजीमतीए वैराग्यना बळे तेमनी दलीलोने तोडी अने अंते कह्युं के-

'जेम अगंधन कुळना सर्पो तिर्यंच छतां वमेलुं विष पाछुं चूसता नथी, तेम शुं तमे तेथीये नीच छो के कुतरानी जेम वमेला भोगने पुनः भोगववा इच्छो छो ?' ते सांभळीने रथनेमि निरुत्तर थया, राजीमतीना सत्त्वनो विजय थयो अने रथनेमिना मोहनो पराजय थयो. कुलिनताए रथनेमिने पडतां रोक्या अने पछी तेओए राजीमतीने नमी पडी क्षमा मागी अने

पडतां बचावी लेवा बदल उपकार मान्यो. बाद तेओए पुनः संयममां स्थिर थई. प्रभु पासे जई, रथनेमिए पोताना दुष्कृतनी आलोचना करी अने पछी दुष्कर तप तपीने, सर्व कर्मोने खपावी तेओ मुक्तिए गया. राजीमती पण चारित्रनी निर्मल आराधनाथी शिवसुखने पाम्यां अने त्यां चिरकालथी इच्छेलो प्रभुनो संयोग शाश्वत बनाव्यो. एम सती राजीमती चार सो वर्ष घरमां, एक वर्ष छद्मस्थ अने पांच सो वर्ष केवळी तरीके विचरीने मुक्तिमां गयां.

अरिहंत श्री नेमिनाथ प्रभुए अढार गण अने अढार गणधरो स्थाप्या. तेओने गुणरत्नो भंडार अेवा वरदत्त वगेरे अढार हजार साधुओ अने आर्या यक्षिणी वगेरे चालीस हजार साध्वीओ हती. सम्यक्त्वमूळ बार व्रतोना धारक एवा नन्द वगेरे श्रावको एक लाख ओगणसित्तेर हजार हता अने महासुव्रता वगेरे तेवी श्राविकाओ त्रण लाख छत्रीस हजार हती. जिन नहि छतां जिननी तुल्य देशना देवानी शक्तिवाळा चौद पूर्वना ज्ञाता श्रुतकेवळी मुनिओ चारसो हता अने अवधिज्ञानी मुनिओ पंदरसो हता, वैक्रीयलब्धिधर मुनिओ पंदरसो, केवळज्ञानी पंदरसो, विपुलमति मनःपर्यायज्ञानवाळा एक हजार अने वादी मुनिओ

आठसो हता. प्रभुना सोळसो साधुओ अनुत्तर विमानमां देव थयां अने पंदरसो साधुओ तथा त्रण हजार साध्वीओ सिद्धिगतिने पाम्यां. ए प्रमाणे श्री नेमिनाथ प्रभुनो परिवार जाणवो. पूर्वे कह्युं तेम राजीमती पण प्रभुना हाथे दीक्षा लई शिवपदने वर्यां.

अर्हन् श्री अरिष्ठनेमि त्रणसो वर्ष कुमारपणे घरमां रह्या, दीक्षा पछी चोपन दिवस छद्मस्थ रह्या अने चोपन दिवस न्यून सात सो वर्ष केवळी रह्या. एम पूर्ण सातसो वर्ष चारित्रपर्याय पाळीने एक हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण थतां, आ अवसर्पिणीनो चोथो आरो घणो व्यतीत थया पछी एक मासनुं अनशन करीने अषाढ सुदि आठमनी मध्यरात्रिए चित्रा नक्षत्रना चन्द्रयोगमां श्री गिरनार पर्वत उपर पर्यंकासने बेठां बेठां योगनिरोध पूर्वक सर्व कर्मोनो क्षय करीने निर्वाणने पाम्या.

श्री नेमिनाथ प्रभुना शासनमां प्रभुना केवळज्ञान थया पछी बे वर्षे कोई एक मुक्तिमां गया, त्यारथी मोक्षमार्ग चालु थयो अने प्रभुनी आठमी पाट सुधी ते चालु रह्यो. श्री नेमि प्रभुना निर्वाणथी श्री पार्श्व प्रभुनुं निर्वाण त्र्याशी हजार सातसो ने पचास वर्षो पछी थयुं.

पछी अढीसो वर्षे श्री वीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं अने ते पछी नवसो ऐंशी वर्ष., अर्थात् श्री नेमि प्रभुना निर्वाणथी चोराशी हजार नवसो ऐंशी वर्षे पुस्तकवाचना थई वगेरे पूर्वनी ज़ेम जाणवुं.

एम श्री कल्पसूत्रमां कह्या प्रमाणे श्री नेमिनाथनां पांच कल्याणको कह्यां. आ व्याख्याननो विस्तार श्री ज्ञानविमलसूरिए पोताना गुरुना मुखे सांभळीने अहीं कह्यो छे- एम जाणवुं. अहीं श्री नेमिनाथ चरित्र पूर्ण थयुं.

हवे सर्व जिननां चरित्रो कहेवाथी ग्रंथविस्तार वधी जाय, माटे शेष वीश जिननां निर्वाणनो अंतरकाळरुप अधिकार कहीशुं. ते हे व्हाला श्रोताजनो ! तमे आदरपूर्वक सांभळजो.

श्री नेमिनाथना निर्वाण पूर्वे पांच लाख वर्षे श्री नमिनाथनुं निर्वाण थयुं. तेमना निर्वाणथी छ लाख वर्ष पूर्वे श्री मुनिसुव्रत निर्वाण पाम्या. तेमनी पूर्वे चोपन लाख वर्ष पहेलां श्री मल्लिनाथनुं निर्वाण थयुं. तेनाथी एक हजार क्रोड वर्ष पूर्वे श्री अरनाथनुं निर्वाण

अने श्री अरनाथना निर्वाण पूर्वे एक क्रोड न्यून एवा पल्योपमना चोथा भाग पहेलां श्री कुन्थुनाथनुं निर्वाण थयुं. तेनाथी पूर्वे अडधा पल्योपम पहेलां श्री शान्तिनाथ निर्वाण पाम्या. अर्थात् श्री शान्तिनाथना निर्वाणथी पोणो पल्योपम, पांसठ लाख, चोराशी हजार, नवसो ऐंशी वर्ष पछी पुस्तक वाचनादि थयुं. एम प्रत्येक प्रभुना निर्वाण पछी केटला काळे पुस्तकवाचना थई, ते गणितना आधारे स्वबुद्धिथी समजी लेवुं. श्री शान्तिनाथना निर्वाणथी पोणा पल्योपमे न्यून त्रण सागरोपम पूर्वे श्री धर्मनाथनुं निर्वाण, तेनाथी चार सागरोपम पूर्वे श्री अनंतनाथनुं निर्वाण, तेनाथी नव सागरोपम पूर्वे श्री विमलनाथनुं निर्वाण, तेनी पूर्वे त्रीश सागरोपमे श्री वासुपूज्यनुं निर्वाण, तेमना निर्वाणथी चोपन सागरोपम पूर्वे श्री श्रेयांसनाथनुं निर्वाण, तेनी पूर्वे एकसो सागरोपम, छासठ लाख, छवीस हजार वर्ष न्यून एवा एक क्रोड सागरोपमे श्री शीतलनाथनुं निर्वाण, तेनाथी नव क्रोड सागरोपम पूर्वे श्री सुविधिनाथनुं निर्वाण, तेनाथी नेवुं क्रोड सागरोपम पूर्वे श्री चन्द्रप्रभस्वामिनुं निर्वाण, तेनाथी नवसो क्रोड सागरोपम पूर्वे श्री सुपार्श्वनाथनुं निर्वाण. तेमना निर्वाणथी नव

हजार क्रोड सागरोपम पूर्वे श्री पद्मप्रभस्वामिनुं निर्वाण, तेमनी पूर्वे नेवुं हजार क्रोड सागरोपमे श्री सुमतिनाथनुं निर्वाण, तेमना निर्वाण पूर्वे नव लाख क्रोड सागरोपमे श्रि अभिनन्दननुं निर्वाण, तेनी पूर्वे दश लाख क्रोड सागरोपमे श्री सम्भवनाथनुं निर्वाण, तेमना निर्वाण पूर्वे त्रीस लाख क्रोड सागरोपमे श्री अजितनाथनुं निर्वाण अने श्री अजितनाथना निर्वाण पूर्वे पचास लाख क्रोड सागरोपमे श्री ऋषभदेवनुं निर्वाण जाणवुं. अर्थात् श्री ऋषभदैवना निर्वाण पछी बेंतालीस हजार वर्ष न्यून एक क्रोडाक्रोड सागरोपमे श्री वीरनिर्वाण थयुं अने ते पछी नवसो ऐंशी वर्षे पुस्तकवाचना वगेरे थयुं. तेमां पण त्रीजो आरो त्रण वर्ष साडा आठ महिना शेष छते श्री ऋषभदेव निर्वाण पाम्या अने चोथो आरो त्रण वर्ष साडा आठ महिना शेष छते श्री वीर प्रभु निर्वाण पाम्या. एम पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना निर्वाणनुं अंतर चोथा आरा जेटलुं, अर्थात् बेंतालीस हजार वर्ष न्यून एक क्रोडाक्रोडी सागरोपमनुं जाणवुं, बेंतालीस हजार ने पंचोतेर वर्ष् उपर साडा आठ मास न्यून एक क्रोडाक्रोड सागरोपम जेटला काळमां त्रेवीश जिनना अधिकार छे. श्री ज्ञानविमल

गुरुना मुखे आ सातमा व्याख्यानमां शेष सर्व जिननां आंतरा सांभळतां दिन दिन क्रोड कल्याणने पामीए.

हवे आ अवसर्पिणीमां सौथी पहेलां धर्मप्रवर्तक श्री ऋषभ प्रभु होवाथी, ते अपेक्षाए तेओनो उपकार अधिक छे, तेथी तेओनुं चरित्र कंईक विस्तारथी कहीशुं. तेमां प्रथम तेमना पूर्वभवो कहीए छीए.

पहेलो-बीजो-त्रीजो भव-जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेशमां क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां प्रसन्नचंद्र राजा हतो. ते काळे त्यां धन्य नामे एक धनिक सार्थवाह रहेतो. आ सार्थवाह ते श्री ऋषभ प्रभुनो जीव जाणवो. एकदा तेणे व्यापारार्थे वसंतपुर जवा शहेरमां ढंढेरो पीटाव्यो. ते जाणीने श्री धर्मघोष जैनाचार्ये सपरिवार सार्थ साथे वसंतपुर आववा तेने जणाव्युं. धन्य तेथी अति प्रसन्न थयो अने तेणे पूज्यभावे साथे आववा सूरिजीने विनंति करी. पछी शुभ मुहूर्ते मोटा सार्थ साथे प्रयाण थयुं अने केटलाक दिवसो पछी वर्षाऋतुना कारणे आगळ प्रयाण अटकवाथी सार्थे एक अटवीमां पडाव नाख्यो. त्यां अन्नादि जीवनसामग्री खूटी

जतां सार्थनां लोको दुःखे निर्वाह करवा लाग्या. परार्थव्यसनी सार्थवाहने घणुं दुःख थयुं, छतां ते शक्य प्रयत्नोथी सार्थना लोकोनी रक्षा करतो रह्यो. एकदा पाछली रात्रे सार्थनी चिंता करतां, 'पोते श्री धर्मघोष आचार्यने साथे लाव्यो छे.'-तेनुं स्मरण थयुं अने आज सुधी तेओनी सारसंभाळ न करवाना कारणे हृदय पश्चात्तापथी भराई आव्युं. प्रभात थतां ज तेणे तेओनी पासे जई विनय-वंदन करीने गद्‌गद् स्वरे पोतानी भूल बदल क्षमा मागी. स्वाश्रयभावने वरेला आचार्यभगवंते, सार्थमांथी संयमने योग्य दरेक सगवड मळी रहे छे अने कोई कष्ट पड्युं नथी, वगेरे हकीकत कही तेना हृदयने शांत कर्युं, पछी सार्थवाहना आग्रहथी बे मुनिओने आहार लेवा मोकल्या, पण जैन साधुना आचारोथी अजाण सार्थवाहने त्यां साधुने कल्पे तेवी अन्य वस्तु न होवाथी ताजुं घी वहोरवा विनंति करी. साधुओए द्रव्य-भाव वगेरेथी निर्दोष-शुध्ध जाणीने ते लीधुं अने सार्थवाहे स्वयं घी वहोराव्युं. पछी गुणानुराग, सहज उत्तम प्रकृति, कर्तव्यनुं पालन वगेरेथी सार्थवाह अति प्रसन्न थयो अने अनुमोदना करतां ते समकित पाम्यो. पुनः गुरु पासे जई दानादि चार प्रकारना धर्मनुं

विस्तृत वर्णन सांभळीने जीवनने धन्य मानतो सार्थवाह धर्मनी अनुमोदना करवा लाग्यो. वर्षाकाळ पछी क्रमशः प्रयाण करी सार्थनी रक्षा करतो ते वसंतपुर पहोंच्यो अने साधुओए छूटा पडी त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो. सार्थवाहे त्यां करियाणांनो क्रय-विक्रय करी घणुं धन मेळव्युं अने धन तथा धर्मनो मोटो लाभ मेळवी ते पाछो स्वनगरे आव्यो. मानवतानी शोभारुप विविध गुणो अने ऋजु स्वभाव वगेरेथी सुखमां काळ निर्गमन करतां, ते मनुष्यनुं आयुष्य बांधी बीजा भवे उत्तर कुरुक्षेत्रमां युगलिक थयो. त्यां लांबो काळ युगलिक सुखोने भोगवी भवस्वभावे ते त्रीजा भवमां सौधर्म देवलोकमां देव थयो.

चोथो-पांचमो भव-देवलोकनां सुख भोगवतां देवनुं आयुष्य पूर्ण थये, ते त्यांथी च्यवीने चोथा भवे पश्चिम महाविदेहनी गन्धिलावती विजयमां वेताढ्य पर्वत उपर गांधार देशना विद्याधर राजा शतबलनी चन्द्रकान्ता राणीनी कुखे पुत्र तरीके अवतर्यो. योग्य काळे पुत्रजन्मथी राजा खूब प्रसन्न थयो अने जन्ममहोत्सव वगेरे आर्य कर्तव्योने करवा पूर्वक पुत्रनुं नाम 'महाबळ' राख्युं. बीजना चंद्रनी जेम क्रमशः वृद्धि पामतो महाबळ योग्यकाळे

सर्व कलाओनो अभ्यास करी ज्यारे यौवन पाम्यो, त्यारे माता-पिताए अनेक राजकन्याओ साथे तेने परणाव्यो. पछी योग्य जाणी, तेने राज्यनो भार सोंपी, पिताए वैराग्यभावे दीक्षा लीधी अने निरतिचार चारित्र पाळीने आयुष्य पूर्ण थतां ते देव थया. ईन्द्रनी जेम शासन करतो महाबळ राजा यौवनने अनुरुप भोगोमां आसक्त बन्यो तेथी राज्यनो भार स्वयंबुद्ध मंत्रीने सोंप्यो अने उत्तरोत्तर धर्मकार्योमां पण उदासीन बन्यो. मंत्री योग्य हतो, तेथी तेने राजाना जीवन अंगे चिंता थई. विविध युक्तिओ अने उपायोथी राजाने कर्तव्यनिष्ठ बनाववा तेणे प्रयत्नो कर्या अने परिणामे महाबळ राजा पोतानी भूलने समज्यो. पछी धर्मसन्मुख थईने गुरुने पूछतां, आयुष्य एक महिनो बाकी रहेलुं जाणी तेने घणुं दुःख थयुं अने जीवन प्रमादमां गाळ्यानो पस्तावो थयो. पछी गुरुमुखे 'एक दिवसनुं चारित्र पण जीवनने सफळ करे छे.'- ए सांभळी उत्साही बनेला महाबळे राज्यनो भार पुत्रने भळावी दीक्षा लीधी अने ते ज दिवसथी चारेय आहारनो त्याग करी अनशनपूर्वक समाधिथी काळधर्म पामीने पांचमा भवे बीजा देवलोकमां ललितांग नामे देव थयो. त्यां तेणे अवधिज्ञानथी पूर्वभव

जोयो, पछी तत्कालिन कर्तव्यो करीने क्रीडासदनमां गयो अने पूर्वभवना अभ्यासथी त्यां स्वयंप्रभा नामे देवी साथे दैवीभोगोने भोगवतां गाढ अनुराग थयो. रागपूर्वक करेली प्रवृत्तिना संस्कारो आ रीते बीजा भवोमां ज्ञानीने पण भ्रमित करी दे छे. पछी आयुष्यक्षये स्वयंप्रभानुं ज्यारे च्यवन थयुं, त्यारे तेना विरहथी ललितांगने घणुं आर्तध्यान थयुं. ते काळे तेनो पूर्वभवनो मंत्री स्वयंबुद्ध त्यां ज देव थयो हतो, तेणे ललितांगने आश्वासन आप्युं अने कह्युं के-'स्वयंप्रभा च्यवीने मनुष्यलोकमां एक दरिद्रनी छ उपर सातमी पुत्री तरीके जन्मी छे. दरिद्रता अने अधिक संतानोथी पीडातां तेना माता-पिताने अति अप्रिय थवाथी तेनुं नाम पण पाड्युं नथी, तेथी लोक तेने निर्नामिका कहे छे. दुःखथी पीडाती ते एकदा पर्वत उपर काष्ठो लेवा गई हती, त्यां तत्काळ केवळी थयेला युगंधर मुनिना मुखे धर्मदेशना सांभळीने ते समकित पामी छे. श्रावकधर्मनुं आराधन करतां तेणे हमणां ते पर्वत उपर ज अनशन स्वीकार्युं छे, माटे हे ललितांग ! त्यां जईने तुं तारुं रुप देखाड ! एम करवाथी ते नियाणुं करीने अहीं उत्पन्न थशे अने पुनः तने तेनो संयोग थशे.' ते सांभळीने

ललितांगे ते प्रमाणे कर्युं अने निर्नामिका नियाणापूर्वक मरीने पुनः स्वयंप्रभा देवी थई. तेनी साथे दैवीसुखोने भोगवतां घणो काळ व्यतीत थयो. पछी आयुष्य छ मास शेष रहेतां च्यवननां चिह्नो जोईने ललितांग चिंतातुर थयो. पण मित्रदेवोए प्रेरणा करवाथी उत्साही थईने ते स्वयंप्रभा साथे श्री नंदिश्वर द्वीपनी यात्राए गयो. त्यां तेणे उल्लासथी प्रभुभक्तिकरी, अन्य तीर्थोनी यात्रा करी अने एम प्रभुभक्ति आदि शुभ कार्योमां काळ पूर्ण थतां त्यांथी तेनुं च्यवन थयुं.

छठ्ठो-सातमो-आठमो भव - जंबूद्वीपना पूर्वविदेहमां पुष्कलावती विजय छे. त्यां लोहागल नगरमां सुवर्णजंघ राजाने लक्ष्मी नामे राणी हती. ललितांगनो जीव छठ्ठा भवमां तेनी कुखे पुत्रपणे अवतर्यो. माता-पिताए महोत्सव करी तेनुं 'वज्रजंघ' नाम राख्युं. स्वयंप्रभा देवी पण आयुष्य क्षय थवाथी देवलोकथी च्यवीने, ते विजयमां पुंडरिकिणी नगरीना चक्रवर्ती राजा वज्रसेननी राणीनी कुखे पुत्रीपणे अवतरी. एकदा एक मुनिना केवळज्ञाननो महिमा करवा आवेला देवोने जोईने ते जातिसमरण पामी अने पोतानो

पूर्वभव जोयो. पछी पूर्वभवना पति ललितांग सिवाय अन्यने नहि परणवानो तेणे द्रढ निश्चय कर्यो. ए वात माता-पिताए जाणी अने ललितांगने शोधवा श्रीमतीनो स्वयंवर मंडप रचावी देश देशथी राजाओने तेडाव्या, पछी श्रीमती पासे तेना पूर्वजन्मना प्रसंगोनुं चित्र करावी राजमार्गमां मूक्युं. ते जोईने लोको आश्चर्य पामवा लाग्या, पण कोई तेना भावने समजी शक्या नहि. एम करतां स्वयंवर प्रसंगे त्यां आवेला वज्रसंघे ते चित्रने जोयुं, उहापोह करतां तेने मूर्च्छा आवी अने जातिस्मरण थयुं. गुप्तचर द्वारा ए वात श्रीमतीए जाणी अने 'ए ज पोतानो पूर्वजन्मनो पति छे.'-एम समजी तेने घणा सत्कार-सन्मानपूर्वक पोतानी पासे बोलाव्यो. परस्पर मिलन थतां ज बंनेने अनुराग थयो अने परस्परनी वातोथी पूर्वसंबंधनो निश्चय थयो. राजाए श्रीमतीने महोत्सवपूर्वक वज्रजंघ साथे परणावी. अनुक्रमे वज्रजंघ पितानी गादीए राजा थयो. लांबो काळ पुण्यनां फळरुपे गृहस्थपणानां सुखो भोगव्यां अने एकदा केवळी भगवंतनी देशना सांभळीने बंने वैरागी थयां. पछी 'प्रातःकाळे पुत्रने राज्य सोंपीने दीक्षा लईशुं.'-एवी भावनाथी तेमणे शयन कर्युं. आ बाजु राज्यना

लोभी पुत्रे पिताना भावने न जाणवाथी, ते ज रात्रे झेरी धूमाडाना प्रयोगथी ते बंनेने मारी नाख्यां अने सातमा भवमां ते बंने उत्तर कुरुक्षेत्रमां युगलिक थयां. त्यां युगलिक सुखोने भोगवतां आयुष्य पूर्ण थयुं अने ते बंने मरीने भवस्वभावे आठमा भवमां सौधर्म देवलोकमां देव थया.

नवमो-दशमो भव - जंबूद्वीपना महाविदेहमां क्षितिप्रतिष्ठित नामे नगर छे. त्यां सुविधि नामे एक वैद्य हतो. वज्रजंघनो जीव स्वर्गथी च्यवीने नवमा भवे तेनो पुत्र थयो. पिताए तेनुं नाम जीवानंद राख्युं. ते ज नगरमां बीजा पण राजपुत्र महिधर, मंत्रीपुत्र सुबुद्धि, सार्थवाहनो पुत्र पूर्णभद्र अने श्रेष्ठिपुत्र गुणाकर-ए चार समान वय अने समान प्रकृतिवाळा मित्रो हता. श्रीमतीनो जीव पण ते नगरमां ज केशव नामे श्रेष्ठिपुत्र थयो हतो. ते पांचेयनी साथे जीवानंदने गाढ मैत्री थई. एकदा ते पांचेय ज्यारे जीवानंदने त्यां बेठा हता, त्यारे आहार माटे फरता एक तपस्वी मुनि त्यां आव्या. अरस-विरस आहारथी तेओना शरीरे तीव्र कोढ थयो हतो, छतां जीव मात्रना हितस्वी अने शरीर प्रत्ये पण निःस्पृह तेओ

औषधनी इच्छा पण करता नहि, परंतु समताथी रोगने सहता हता. ते मुनिने जोई ते पांचेयने भक्तिभाव प्रगट्यो अने जीवानंदने औषध करवा जणाव्युं. जीवानंदे ते माटे लक्षपाक तेल तैयार कर्युं अने बजारमांथी रत्नकम्बल तथा गौशिर्षचन्दन लाववा मित्रोने कह्युं. तेथी मित्रोए जिर्ण नामे एक धनिक व्यापारीने त्यां जई बे वस्तुओ मूल्यथी मागी. व्यापारीए कारण पूछतां, मुनिना औषध माटे लेवा आवेला जाणीने बंने वस्तुओ विनामूल्ये आपी अने आ निमित्ते वैराग्य थवाथी तेणे दीक्षा लीधी. पछी छ मित्रो उद्यानमां गया अने त्रणेय वस्तुओथी चिकित्सा करीने मुनिने नीरोगी कर्या. पछी वधेली वस्तु वेचतां जे धन मळ्युं, तेना वडे एक जिनमंदिर बंधाव्युं. एम छए मित्रोए अनेक सत्कार्यो करतां घणुं पुण्य उपार्जन कर्युं अने अनुक्रमे साथे दीक्षा लई, निर्मळ चारित्र पाळी आयुष्य क्षय थवाथी ते छए दशमा भवमां बारमा देवलोकमां ईन्द्रना सामानिक देव थया.

अगियारमो - बारमो भव - जंबूद्वीपना पूर्वविदेहनी पुष्कलावती विजयमां पुंडरिकिणी नगरीमां वज्रसेन नामे तीर्थंकर छद्मस्थपणे राज्यनुं पालन करता हता. तेमनी धारिणी नामनी

राणी हती. जीवानंदनो जीव स्वर्गथी च्यवीने अगियारमा भवे तेनी कुखे पुत्रपणे अवतर्यो. ते भावि चक्री थवानो होवाथी माताए चौद स्वप्नो जोयां अने योग्यकाळे पुत्रजन्म थया पछी महोत्सवपूर्वक तेनुं वज्रनाम राख्युं. पूर्वभवना मित्रो राजपुत्र, मंत्रीपुत्र, श्रेष्ठिपुत्र अने सार्थवाहपुत्र पण स्वर्गथी च्यवीने ते ज राजाना पुत्रो थया. तेओनां नाम अनुक्रमे बाहु, सुबाहु, पीठ अने महापीठ राख्यां. केशवनो जीव पण च्यवीने ते ज नगरमां सुयश नामे राजपुत्र थयो. पूवजन्मना संस्कारोथी दरेकने परस्पर गाढ प्रीति थई अने साथे विद्याभ्यास, क्रीडा वगेरे करता तेओ सुखपूर्वक काळ निर्गमन करवा लाग्या. ते पछी लोकान्तिक देवो आव्या, तेओए दीक्षा माटे विनंति करी अने वज्रसेन प्रभुए वज्रनाभने राज्य सोंपी वार्षिक दान दईने दीक्षा लीधी. पछी चक्र वगेरे चौद रत्नो उत्पन्न थवाथी वज्रनाभ राजा पण छ खंडोने साधी चक्रवर्ती थया अने सुयशने पोतानो सारथी बनाव्यो. अन्यदा वज्रसेन प्रभुने केवळज्ञान प्रगट्युं, पछी तीर्थनी स्थापना थई अने तेमनुं तीर्थ शरु थयुं. चक्रवर्तीपणानां सुखोने निरीहभावे भोगवतां वज्रनाभ पण द्रढ वैरागी थया एकदा ते नगरना उद्यानमां

वज्रसेन प्रभु पधार्या, देवोए समवसरण रच्युं अने तेओनी देशना सांभळी वज्रनाभ चक्री दीक्षा लेवा उत्साही थया. पछी पुत्रने राज्य भळावीने बाहु, सुबाहु, पीठ, महापीठ तथा सुयश साथे छए मित्रोए दीक्षा लीधी. जन्मोजन्मनी आराधना अने प्रीतिना संस्कारोथी ते छए त्याग -वैराग्यपूर्वक निरतिचार चारित्र पाळवा लाग्या. काळक्रमे श्री वज्रसेन प्रभुनुं निर्वाण थयुं अने वज्रनाभ वगेरे मासक्षमणादि विविध तप करतां अनेक लब्धिओवाळा थया. तेमां पण श्री वीशस्थानक तपनुं विशिष्ट आराधन करीने संपूण श्रुतधर थयेला श्री वज्रनाभे श्री तीर्थंकर-नामकर्म निकाचित कर्युं. तेथी तेओ श्री ऋषभदेव तीर्थंकर थशे. बाहु वगेरे पण अगियार अंग सुधी श्रुत भण्या. तेमां वैयावच्चना विशिष्ट गुणथी बाहु मुनिए चक्रवर्तीपणानुं पुण्य उपार्ज्युं, तेथी ते भरत नामे भावि चक्री थशे. मुनिओने विविध विश्रामणा करीने सुबाहु मुनिए वीर्यान्तराय कर्मनो घणो क्षयोपशम कर्यो, तेथी ते भावि बाहुबली थशे. पीठ अने महापीठ बन्ने पण ज्ञान-क्रियामां रक्त बनी गीतार्थ थया, पण बाहु-सुबाहुना प्रगट देखाता वैयावच्च-विश्रामणा गुणोनी गुरु प्रशंसा करता हता तेने ते

पीठ-महापीठ सही शक्या नहि अने इर्ष्या करवा लाग्या. खरेखर ! अहंकार आकरो दोष छे अने तेमांथी अनेक दोषो प्रगटे छे. पोतानी प्रशंसा न थवाथी बीजानी योग्य अने गुरुए करेली प्रशंसा पण न सही शक्या तेमां अहंभाव कारण हतो. तेथी गुरु प्रत्ये पण तेओने असद्भाव थयो अने आलोचना न करवाथी तेओए स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं. तेथी ते ब्राह्मी अने सुंदरी थशे. सुयश मुनि श्रेयांसकुमार थशे. ए रीते छए जणां चौद लाख पूर्व सुधी चारित्र पाळीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव थया. हवे तेरमो श्री ऋषभदेव प्रभुनो भव कहीए छीए.

हवे कल्याणकारी एवां श्री ऋषभ प्रभुनां पांच कल्याणक कहीए छीए. आ मनुष्यलोकमां त्रीस अकर्मभूमिओ एटले युगलिकनां क्षेत्रो अने पांच भरत, पांच एरवत अने पांच महाविदेह- ए पंदर कर्मभूमिओ एटले धर्म-कर्म करवानां क्षेत्रो छे. तेमां पण दरेक महाविदेहमां सदा सरखो काळ होय छे अने भरत-एरवत क्षेत्रोमां काळनी चढती-पडती थया करे छे. दश कोडाकोडी सागरोपम चढतो एटले उत्सर्पिणी अने दश कोडाकोडी

पडतो एटले अवसर्पिणी काळ होय छे. एम वीस कोडाकोडी सागरोपमनुं एक काळचक्र थाय छे. चढता काळमां दरेक वस्तुओना रस-कस, आयुष्य, शरीरमान वगेरे वधे छे अने पडता काळमां ते ते घटे छे. अति उत्कृष्ट के अति निकृष्ट काळमां धर्म-कर्म वगेरे होतुं नथी, पण मध्यम काळमां ज होय छे. उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना छ छ विभागने छ छ आरा कहेवाय छे. तेमां अवसर्पिणीना छ आरानां नाम अनुक्रमे १. सुषम-सुषमा, २. सुष्मा, ३. सुषम-दुषमा, ४. दुषम-सुषमा, ५. दुषमा अने ६. दुषम-दुषमा छे. तेनां नाम प्रमाणे ते ते काळमां सुख-दुःखनां निमितो शुभाशुभ होय छे अने ते ते काळे त्यां जीवो पण तेवा जन्मे छे. प्रथमना त्रण आरानुं प्रमाण अनुक्रमे चार, त्रण अने बे कोडाकोडी सागरोपम होय छे. चोथानुं प्रमाण बेंतालीस हजार वर्ष न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम अने पांचमा-छठ्ठानुं प्रमाण एकवीश एकवीश हजार वर्षनुं होय छे. एम छ आरा दश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण होय छे. उत्सर्पिणीमां छ आरानां नाम अने प्रमाण एनाथी उलटा क्रमे होय छे. ते काळे दरेक द्रव्यादि भावो शुभ थता जाय छे.

आ जंबूद्वीपना भरतमां चालु अवसर्पिणीनो त्रीजो सुषम-दुषमा आरो घणो व्यतीत थया पछी, ज्यारे चोराशी लाख पूर्व, त्रण वर्ष, आठ मास अने उपर एक पखवाडियुं शेष हतुं, त्यारे नाभि कुलकरना घेर प्रभुनो अवतार थयो. कुलकर एटले लोकमां नीतिनी व्यवस्था करी तेनुं पालन करावनार उत्तम पुरुषो जाणवा. युगलिक काळनी पडती थतां ज्यारे सामान्य अपराधो शरु थाय छे, त्यारे राज्य-धर्म स्थपाया पूर्वे कुलकरो नीतिनुं रक्षण करे-करावे छे. तेवा सात कुलकरो थया. तेमां पहेला विमलवाहन अने बीजा चक्षुष्माननना काळमां अपराध अल्प अने जीवो योग्य एटले अपराधीने मात्र 'हक्कार' एटले 'हत्' कहेतां मोटी शिक्षा गणाती अने अपराध करतां अटकी जता. ते पछी त्रीजा यशस्वी अने चोथा अभिचन्द्र थया. तेओना काळे हक्कार उपरांत 'मक्कार' एटले 'आवुं न करो.' एटलुं कहेवाथी अपराध अटकी जता. पछी पांचमा प्रसेनजित, छठ्ठा मरुदेव अने सातमा नाभिनामे कुलकर थया. तेओना काळमां हक्कार, मक्कार उपरांत 'धिक्कार' एटले 'धिक्' एटलुं कहेतां अपराध करनारा अटकी जता. आ सातमा नाभि कुलकरना पुत्र श्री ऋषभ

प्रभु थया.

श्री ऋषभ प्रभुनां चार कल्याणको उत्तराषाढामां अने निर्वाण अभिजित नक्षत्रमां थयुं, तेमां सर्वार्थसिद्ध विमाननुं तेत्रीश सागरोपमनुं पूर्ण आयुष्य भोगवीने देवगति, आयुष्य वगेरे पूर्ण थतां, अषाढ वदि चोथे त्यांथी च्यवीने प्रभु आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां, ते काळे गाम, नगरो वगेरे न होवाथी 'इक्ष्वाकु' भूमिमां नाभि कुलकरनी मरुदेवा नामनी भार्यानी कुक्षिमां मध्यरात्रिए उत्तराषाढामां चन्द्रनो योग वर्तते छते अवतर्या. नाभि राजाना कुळना शणगार समा प्रभु ज्यारे अवतर्या, त्यारे तेओ त्रण ज्ञानवाळा हता, तेथी 'हुं च्यवीश'–एम जाणता हता, वगेरे माताए चौद स्वप्नो जोयां त्यां सुधी पूर्वे कह्युं तेम समजवुं. मात्र मरुदेवा माताए सौथी प्रथम वृषभनुं स्वप्न जोयुं अने शेष प्रभुनी माताओए प्रथम हाथीनुं स्वप्न जोयुं, एटलो भेद समजवो. ते काळे स्वप्नपाठको न हता, तेथी स्वप्नोनो अर्थ श्री नाभि कुलकरे कह्यो. कौटुंबिक व्यवहार न होवाथी सघळां उचित कार्यो पण ईन्द्रे कर्यां.

गर्भकाळ पूर्ण थतां, चैत्र वदि आठमे उत्तराषाढामां चंद्रयोग वर्तते छते रोगरहित

माताए कोई पीडा विना नीरोगी पुत्रने जन्म आप्यो. ते समये सिंहासन कंपवाथी दिक्कुमारीओ, चोसठ ईन्द्रो, बीजा पण देव-देवीओ वगेरे आव्यां अने स्व-स्व कल्प प्रमाणे प्रभुनुं जन्मकृत्य, मेरु उपर अभिषेक, सोनैयानी वृष्टि वगेरे सघळुं कर्युं. नाभि राजाए पण दश दिवसनो जन्म महोत्सव कर्यो, ईत्यादि सघळुं पूर्वे कह्युं तेम जाणवुं. मात्र राज्यधर्म, क्रय-विक्रय, खेती, वाहनव्यवहार वगेरे न होवाथी केदीओने छोडवा, वस्तु सोंघी करवी, दाण माफ करवुं, खेती वगेरेनां कष्टोथी पशुओने छोडाववा वगेरे न थयुं.

अद्भुत रुपवाळा, देव-देवीओथी परिवरेला अने ते काळना युगलिको करतां अति उत्कृष्ट गुणवाळा प्रभु क्रमशः वृध्धि पामतां, ज्यारे आहारनी इच्छा थाय, त्यारे तेओ अन्य तीर्थंकरोनी बाल्य अवस्थानी जेम देवोए अंगुलिमां संचरेलां अमृतनुं पान करता. एटलुं विशेष के-बीजा तीर्थंकरो बाल्यवय पूर्ण थये अग्निथी पकावेलो आहार ले छे, ज्यारे श्री ऋषभ प्रभुए दीक्षा लेतां सुधी उत्तरकुरु क्षेत्रमांथी देवोए लावेलां कल्पवृक्षोनां फळोनुं भोजन कर्युं, कोई तीर्थंकरो मातानुं स्तनपान करता नथी.

श्री ऋषभ प्रभुनी माताए स्वप्नोमां प्रथम वृषभ जोवाथी अथवा प्रभुनी जंघामां वृषभनुं चिह्न होवाथी प्रभुनुं नाम 'वृषभ' राख्युं अने चंद्र, तेना सदृश निर्मळ एवो प्रभुनो वंश ईक्ष्वाकु कहेवायो. ते आ प्रमाणे-ते काळे कुळ-वंश वगेरे न हतुं. तेथी पोतानो कल्प समजी ईन्द्र प्रभु कंईक न्यून एक वर्षना ज्यारे थया, त्यारे वंश स्थापवा आव्या अने 'प्रभुनी पासे खाली हाथे केम जवाय ?'-एम विचारी तेओ एक मोटी 'ईक्षु' एटले शेरडी लाव्या. प्रभु तेने जोईने प्रसन्न थया अने पोते हाथ लांबो कर्यो. तेथी 'ईक्षु खाशो ?'-एम कहीने ईन्द्रे ते प्रभुने आपी. एम ईक्षुनी अभिलाषाथी प्रभुनो वंश 'ईक्ष्वाकु' स्थाप्यो अने प्रभुना पूर्वजोने पण ईक्षुनी अभिलाषा होवाथी गोत्र पण 'काश्यप' ठराव्युं. श्री ऋषभ प्रभुना पांच नाम हतां. १. वृषभ (ऋषभ), २. प्रथम राजा, ३. प्रथम भिक्षुक (साधु), ४. प्रथम जिन अने ५. प्रथम तीर्थंकर. तेमां प्रथम राजा ए रीते थया के-ज्यारे काळबळे कषायनी वृत्ति थवा लागी, त्यारे मनुष्यो विवाद करता थया. कोई एक वार तेओ न्याय मेळववा प्रभुनी पासे गया. प्रभुए कह्युं के-'न्याय राजा आपी शके, माटे तमे पिताजी

पासे जाओ.' तेओ त्यां गया अने राजानी मागणी करी. पछी नाभि कुलकरे 'वृषभने तमारा राजा बनावो.'-एम कहेवाथी राज्याभिषेक माटे जळ लेवा तेओ सरोवरमां गया. ते ज वखते आसन कंपवाथी अवधिज्ञानथी ते प्रसंगने जाणीने, पोतानो कल्प होवाथी ईन्द्र मुगट, कुंडल, आभरणो वगेरे लईने त्यां आव्या अने विधिपूर्वक मुगट वगेरे पहेरावीने तेमणे प्रभुनो राज्याभिषेक कर्यो. पछी युगलिको नलिनीकमळनां पत्रोनां पात्र बनावी तेमां जळ भरीने ज्यारे अभिषेक करवा आव्या, त्यारे प्रभुने वस्त्रालंकारथी भूषित जोईने प्रभुना मस्तके नहि पण चरणोमां अभिषेक कर्यो. आथी ईन्द्र प्रसन्न थया अने सर्व गुणोना स्थानभूत विनयगुणने जोईने कुबेर द्वारा बार योजन लांबी, नव योजन पहोळी, सुवर्ण रत्नमय प्रासादवाळी, कोट, परिखा, दरवाजा, बाग-बगीचा, हाट-हवेलीओ अने राजमार्गोथी शोभती 'विनीता' नामे राजधानी वसावरावी. एम ईन्द्रे विवेक देखाड्यो.

प्रभुनी बाल्यवये कोई एक पुत्र-पुत्रीनुं युगल तेनां माता-पिताए ताडना वृक्ष नीचे मूक्युं. तेमां ताडनुं फळ मस्तक उपर पडवाथी पुत्र मरी गयो. अवसर्पिणी काळमां आ

पहेलुं अकाळ मरण जाणवुं. पछी ते पुत्री-माता-पिता स्वर्गमां जवाथी वनमां एकाकी फरवा लागी. तेनुं रुप वगेरे सुंदर जोईने युगलिकोए ते वात ज्यारे नाभि राजाने जणावी, त्यारे, तेमणे पण लोकनी अनुमति-साक्षीपूर्वक 'आ कन्याने पण ऋषभनी साथे परणावशुं.'-एम जणावी, तेनुं सुनन्दा नाम राखीने तेनो स्वीकार कर्यो. युगलिक धर्मने कारणे प्रभुनी साथे जन्मेली सुमंगला अने आ सुनन्दा बंने साथे प्रभु पण यौवनने पाम्या. पछी 'प्रथम विवाह करवानो मारो कल्प छे.'-एम समजी अनेक देव-देवीओ साथे ईन्द्र त्यां आव्या अने बंने कन्याओने प्रभु साथे परणावी. तेमां वरपक्षनुं सघळुं कार्य देवो सहित ईन्द्रे स्वयं कर्युं अने कन्यापक्षनुं कार्य देवीओ सहित ईन्द्राणीओए कर्युं. एम राज्य प्राप्ति पूर्वे प्रभुनुं लग्न थयुं.

ते बंनेनी साथे भोग भोगवतां साठ लाख पूर्व पछी, सुमंगलाथी 'भरत अने बाह्मी'-एम साथे युगल जन्म्युं अने सुनन्दाथी सारी बुद्धिवाळुं 'बाहुबली अने सुन्दरी'-ए युगल जन्म्युं. पछी सुमंगलाए बीजां पण ओगणपचास पुत्रयुगलोने जन्म आप्यो. एम प्रभुने सो

प्रकारना विज्ञानना प्रकाश सरखा सो पुत्रो अने बे पुत्रीओ थई.

दक्ष, द्रढ प्रतिज्ञावाळा, रुपथी शोभता, सर्व गुणोथी भूषित, सरळ अने विनीत प्रभु वीश लाख पूर्व कुमार रह्या. ते पछी तेसठ लाख पूर्व अनासक्त भावे तेओए राज्यधर्मने पाळ्यो. तेमां लेखन वगेरे बहोंतेर पुरुषनी कळाओ अने नृत्य वगेरे चोसठ स्त्रीनी कळाओनो तेओए उपदेश कर्यो. तेमां प्रभुए 'हंसलिपि' वगेरे अढार प्रकारनी लिपि जमणा हाथे ब्राह्मीने शिखवी अने एक, दश, सो, हजार वगेरे परार्ध सुधीनुं क्रमशः दशगुण गणित डाबा हाथथी सुन्दरीने शिखव्युं. वळी तेओए काष्टकर्म वगेरे शिल्पकळाओ भरतने शीखवी अने पुरुष, स्त्री वगेरेनां लक्षणोनुं ज्ञान बाहुबलीने आप्युं. वळी तेओए राज्यनीतिने अनुसरीने राज्यमां हाथी, घोडा, अन्य पशुओ वगेरेनो संग्रह कर्यो अने उत्कृष्ट चार कुळो स्थाप्यां, तेमज तेमां उग्र दंड करनारा कोटवाळ वगेरेनुं उग्रकुळ, भोगने योग्य जे गुरुतुल्य हता तेओनुं भोगकुळ, समान वयने कारणे जे मित्रतुल्य हता तेओनुं राजन्यकुळ अने शेष प्रधान प्रजा तरीके रह्या तेनुं क्षत्रियकुळ स्थाप्युं.

शिल्पकळामां प्रथम कुंभारनुं, पछी लुहार, चित्रकार, वणकर अने नापितनुं-एम पांच मूळ शिल्पो अने ते प्रत्येकमांथी वीस वीस उत्तरशिल्पो-एम आचार्यना उपदेशथी एक सो शिल्प प्रगट थयां. कुंभारनुं शिल्प ए प्रसंगे शरु थयुं के-ज्यारे काळना प्रभावे कल्पवृक्षो निष्फळ थयां, त्यारे प्रभुना कुलकर काळमां जे 'इक्ष्वाकु' कुळना हता ते ईक्षुनुं भोजन करवा लाग्या. शेष लोक वृक्षनां पांदडां, फळ अने अग्निना अभावे काचुं अनाज खावा लाग्या, पण उत्तरोत्तर अजीर्ण थतां ते अल्पभोजी थया. अल्प आहार पण नहि पचवाथी, प्रभुना कहेवाथी तेनां फोतरां काढीने अने गरमी आपवा बे हथेळीओथी घसीने तेओ खावा लाग्या, छतां पण अजीर्ण थतां पछी पाणीमां भींजावीने तेओ खावा लाग्या. एम करतां एकदा वृक्षोना घर्षणथी अग्नि प्रगट्यो अने तृण घास वगेरेने बाळवा लाग्यो. त्यारे 'कोई रत्न प्रगट्युं'-एम समजीने तेओए प्रभुने जणाव्युं. प्रभुए तेमां अनाज पकावीने खावानी सलाह आपी, पण तेओ अज्ञ होवाथी अनाज अग्निमां नाखी पाछुं मागवा लाग्या अने कंई न मळवाथी प्रभु पासे फरियाद करवा चाल्या. त्यां प्रभु हाथी उपर बेसीने आवता

रस्ते मळ्या अने तेओने तेओए हकीकत कही, त्यारे प्रभुए माटीनो पिंड मंगावी हाथीना गंडस्थळना आश्रयथी मावत द्वारा पात्र घडवानुं शिखव्युं अने एवां पात्र अग्नि उपर मूकीने पाक करवानुं समजाव्युं. पछी सौ ते प्रमाणे करवा लाग्या. ए रीते सौथी प्रथम कुंभकारनुं शिल्प शरु थयुं.

आचार्यना उपदेशथी शरु थाय ते शिल्प कहेवाय. ए कारणे कुंभार वगेरेनी सो कळाओ प्रभुए शिखवाड्याथी ते शिल्प कहेवायां अने खेती, व्यापार वगेरे बीजां जे स्वयं शरु थयां ते कर्म कहेवायां. एम प्रभुए पुरुषनी ७२ कळाओ, स्त्रीनी ६४ कळाओ अने सो शिल्पो-ए त्रण प्रजाना हितार्थे उपदेश्यां.

प्रभु वीश लाख पूर्व सुधी कुमार रह्या अने तेसठ लाख पूर्व राज्य पाळ्युं. पछी समग्र देशो सर्व पुत्रोने वहेंची आप्या. तेमां भरतने विनीतानुं राज्य आप्युं. प्रभुना पुत्रो भरत, बाहुबली, शंख, विश्वकर्मा वगेरे मुक्तिने पाम्या छे. ते सो पुत्रोनां नाम तथा अंग, बंग, कलिंग, गौड, चौड वगेरे बावीश देशोनां नाम अन्य ग्रंथोथी जाणवां.

पछी दीक्षाकाळ जाणीने लोकान्तिक देवो आव्या अने तेओए प्रभुने दीक्षा लेवा प्रार्थना करी. प्रभुए पण अवधिज्ञानथी पोतानो दीक्षाकाळ जाणी वरसीदान दीधुं, करवा योग्य सर्व उचित कार्यो कर्यां अने ईन्द्रादि देव-देवीओ पण दीक्षाकल्याणक माटे आव्यां. पछी विशिष्ट अलंकाराभूषण पहेरीने प्रभु 'सुदर्शना' नामनी पालखीमां बेसीने देव-दानव-मानवना मोटा परिवार साथे विनीताना मध्य मार्गे थई नगर बहार सिद्धार्थ वनमां पधार्या. त्यां उत्तराषाढाना चन्द्रयोगमां चैत्र वदि आठमे चोविहारा छठ्ठ तपथी प्रभुए चार मुष्ठि लोच करीने, 'प्रभु जे करशे ते अमे पण करीशुं.'-एवा निर्णयवाळा कच्छ, महाकच्छ वगेरे चार हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, वगेरे वर्णननो विस्तार पूर्वे कह्यो तेम अहीं पण जाणवो. एटलुं विशेष के-चार मुष्ठि लोच कर्या पछी प्रभुना बंने खभा उपर शेष रहेला केशनी वेणी जेम सुवर्णना कळश पर नीलकमलनी माळा शोभे, तेम शोभती जोईने ईन्द्र प्रसन्न थया अने ऐनो लोच नहि करवा तेमणे प्रभुने विनंति करी. आथी प्रभुए पांचमी मुष्ठिए लोच न कर्यो. हवे दीक्षानुं पालन करतां जे आकरा परीषहो प्रभुए सह्या ते कहीए छीए.

प्रभु दीक्षा पछी घोर अभिग्रह धारीने गामोगाम विचरवा लाग्या. ते काळे लोको अति समृद्धिवाळा होवाथी कोई भिक्षाने लेवा-देवामां समजतुं न हतुं. आथी प्रभुनी साथे दीक्षित थयेला चार हजार साधुओ प्रभुने 'आहार केवी रीते मेळववो' ते पूछवा लाग्या, पण मौन रहेला प्रभुए कंई जवाब न आप्यो. पछी तेओए कच्छ-महाकच्छने पूछयुं, तो तेमणे कह्युं के-'अमे कंई जाणता नथी, पहेलां प्रभुने कंई पूछयुं नहि, हवे आहार विना रही शकातु नथी अने भरत राजानी लज्जाए घेर जवुं पण शक्य नथी, माटे विचार करतां वनवास सेववो ते ज हितकर छे.'-एम विचारी भगवाननुं ज ध्यान धरता तेओ गंगाना किनारे पडेला वृक्षोनां पत्रो वगेरेनो आहार करता अने केशनो संस्कार न करवाथी जटाधारी तापसो थया.

आ बाजु भगवाने पुत्र तरीके स्वीकारेला कच्छ-महाकच्छना 'नमि अने विनमि' नामे पुत्रो प्रभुनी दीक्षा वखते देशांतर गयेला पाछा आव्या, त्यारे भरते तेओने राज्यनो भाग आपवा मांड्यो, पण ते नहि लेतां तेओ प्रभु पासे आव्या. प्रभु कायोत्सर्गमां होवाथी

दररोज तेओनी चारेय बाजु भूमि उपर जळ छंटकाव अने ढींचण प्रमाण पुष्पोना ढगला करीने पंचांग प्रणाम पूर्वक राज्यनो भाग मागता तेओ प्रभुने सेववा लाग्या. एकदा धरणेन्द्र प्रभुने वंदन करवा आव्या अने तेओए नमि-विनमिनी भक्ति अने विनयथी प्रसन्न थईने कह्युं के-'प्रभु तो निःसंग-निर्मम छे, जेथी तेओनी पासे राज्यनी मागणी न कराय. तमारी प्रभुभक्ति जोईने हुं प्रसन्न थयो छुं, माटे हुं तमोने राज्य आपीश.' एम कही तेओए अडतालीस हजार सामान्य विद्याओ अने गौरी, गान्धारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति- ए चार महा विद्याओ आपी. पछी कह्युं के-'आ विद्याओना बळे विद्याधरनी ऋद्धि मेळवीने स्वजनो अने प्रजाजनोने लई वैताढय उपर जाओ; त्यां दक्षिण श्रेणिमां गौरेय, गान्धार प्रमुख आठ निकाय अने 'रथनुपुरचक्रवाल' वगेरे पचास नगरो वसावो; तथा उत्तर श्रेणिमां पण्डक, वंशाल प्रमुख आठ निकाय अने 'गगनवल्लभ' वगेरे साईठ नगरो वसावीने त्यां राज्य करो.' आथी कृत कृत्य थयेला नमि-विनमि पोताना पिताने तथा भरतने ते हकीकत जणावीने वैताढय उपर गया. त्यां दक्षित श्रेणिमां नमि अने उत्तर श्रेणिमां विनमि राजा थया. एम

आ अवसर्पिणीमां वैताढय उपर त्यारथी विद्याधरो अने राजधर्म वगेरेनो प्रारंभ थयो.

ते काळे लोको समृद्धिवंत होवाथी अने अन्न-पाननुं दान समजता न होवाथी, ज्यारे प्रभु भिक्षार्थे आवे, त्यारे वस्त्रो, आभरणो, कन्याओ वगेरे लेवा लोको प्रभुने प्रार्थना करवा लाग्या. एम आहार-पाणी न मळवा छतां तेर महिना उपरांत लेश पण दीनता कर्या विना प्रभु विचर्या, एकदा प्रभु हस्तिनागपुर पधार्या. त्यां बाहुबलिजीना पौत्र 'श्रेयांस' नामे युवराज छे. तेणे ते रात्रिए स्वप्न जोयुं के-'में श्यामवर्णा मेरुने अमृत कळशथी अभिषेक कर्यो, तेथी मेरु अति शोभाने पाम्यो.' बीजा सुबुद्धि नामे नगरशेठे स्वप्न जोयुं के-'सूर्यना मंडलमांथी खसी पडतां हजार किरणोने श्रेयांसकुमारे पुनः सूर्यमंडलमां जोड्यां, तेथी सूर्य अतिशय शोभाने पाम्यो.' राजाए पण ते ज रात्रे स्वप्न जोयुं के-'एक महापुरुष शत्रुना बळ साथे युद्ध करतां श्रेयांसनी सहायथी जय पाम्यो.' बाद सवारे ते त्रणेय मळ्या अने पोते जोयेलां स्वप्नोनुं परस्पर वर्णन कर्युं. ते सांभळीने ते राजाए निर्णय कर्यो के-'आजे श्रेयांसने कोई मोटो लाभ थशे.' पछी श्रेयांस पोताना भुवनमां जई गोखे बेसी नगरचर्या

जोवा लाग्यो. ते वेळा त्यां प्रभु आहार लेवा फरता हता, छतां कांई न लेवाथी, 'प्रभु कंई लेता नथी.'-ऐवो लोकनो कोलाहल श्रेयांसे सांभळीने अने प्रभु सामे आवता जोईने, में क्यांय क्यारे पण आवो वेष जोयो छे.'-एम उहापोह करतां तेमने जातिस्मरणज्ञान थयुं, पोतनो पूर्वभव जोयो अने 'अहो ! आ तो भगवान् छे. पूर्वभवे हुं तेओनो सारथि हतो. तेओनी साथे में दीक्षा लीधी हती त्यारे श्री वज्रसेन प्रभुए कह्युं हतुं के-'आ वज्रनाभ भरतमां प्रथम तीर्थंकर थशे.' ते आ प्रभु पधार्या छे.' ए रीते श्रेयांसे प्रभुने ओळख्या. ते ज वखते कोई एक पुरुष श्रेयांसने शेरडीना ताजा रसनुं भेटणुं करवा आव्यो. ते रस लईने श्रेयांसे प्रभुने वहोरवा विनंति करी अने प्रभुए पण अंजलि करीने बे हाथ धर्या. तेमां श्रेयांसकुमारे बधो रस भरी दीधो, पण एक बिंदु नीचे न पड्युं, उलटी उपर शिखा वधी. आ लब्धि प्रभुनी हती. कह्युं छे के-

'अंजलिमां हजारो घडा अथवा सर्व समुद्रो पण समाई जाय, एवी लब्धिवाळो महापुरुष पाणिपात्री थई (हाथमां भोजन लई) शके.'

कवि कहे छे के-आज सुधी प्रभुना बंने हाथोए छूटथी वार्षिक दान आप्युं होवाथी ते दान लेवा ना पाडता हता. प्रभुए जमणा हाथने ज्यारे कह्युं, त्यारे ते बोल्यो के-

'पूजा, भोजन, दान, शान्तिकर्म, शुद्धता, कला, पाणिग्रहण, शुद्धता, स्थापना, रेखादर्शन, वचन आपवुं वगेरे मारुं कर्तव्य छे, माटे डाबा हाथने कहो, ते दान लेशे.' प्रभुए ज्यारे डाबा हाथने कह्युं, त्यारे ते बोल्यो के-

'बाण फेंकवुं, गणित करवुं, डाबे पडखे शयन करतां सहाय करवी वगेरे मारुं कर्तव्य छे, माटे जमणो हाथ जुगारी छे तेने कहो.' त्यारे जमणो हाथ रोषथी बोल्यो के-'तुं पवित्र नथी, हुं पवित्र छुं.'-एम बंने हाथ विवादे चढी दान लेवा तैयार न थया. पछी तेओने प्रभुए मुशीबते समजाव्या के-'तमे जेम राज्यलक्ष्मी मेळवी अने याचकोने पुष्कळ दान आप्यां, तेम हवे दातारनी दया करीने तेओनो पण उद्धार करो !' वगेरे समजावीने श्रेयांस पासेथी दान लेवराव्युं, ते प्रभु तमारुं रक्षण करो.

एम प्रभुए दीक्षा पछी बीजा वर्षे वैशाख सुदि ३ ना रोज प्रथम पारणुं शेरडीना

रसथी कर्युं. त्यारे देवोए प्रसन्न थई पंच दिव्यो प्रगटाव्यां अने सर्व लोक तथा तापसो पण त्यां आव्यां. ते सर्वने श्रेयांसकुमारे समजाव्युं के-'सद्गतिनी इच्छावाळाए आ रीते निर्दोष अन्न, पाणी वगेरेनुं दान साधुओने आपवुं जोईए.' आथी लोको ए रीते साधुओने दान आपवा लाग्या. एम आ अवसर्पिणीमां दान श्रेयांसथी शरु थयुं. लोकोए तेमने पूछ्युं के-'तमे आ दानधर्म क्यांथी जाण्यो ?' त्यारे श्रेयांसकुमारे प्रभु साथेनो पोतानो आठ भवनो पूर्वे कह्यो ते संबध कही जणाव्यो. ते सांभळीने सर्व लोकोए तेमनी प्रशंसा करी के-

'श्री ऋषभ प्रभु समान पात्र, निर्दोष शेरडीना रस जेवुं दान अने श्रेयांसना जेवो दाननो भाव, ए पूर्वजन्ममां तेवुं नियाणुं जो कर्युं होय तो मळे. अर्थात् चित्त, वित्त अने पात्रनो आवो योग घणो दुर्लभ छे.' एम बीजा पण अनेक परीषहो अने उपसर्गोने सहवा छतां निर्दोष चारित्र पाळता प्रभु एक हजार वर्ष अप्रमत्तपणे विचर्या. एटला दीर्घ छद्मस्थकाळमां पण प्रभुनो प्रमादकाळ मात्र एक अहोरात जेटलो हतो, ज्यारे प्रभु श्री

महावीरदेवनो प्रमादकाळ साडा बार वर्षमां एक मुहूर्त मात्र हतो.

ए प्रमाणे उग्र आराधना करता चोविहार अट्ठमना तपवाळा प्रभुने, एक हजार वर्ष पछी, फागण वदि एकादशीए, विनीताना पुरिमताल नामना परानी बहार शकट नामना उद्यानमां, वडवृक्ष नीचे, उत्तराषाढाना चन्द्र योगमां, शुकलध्याननना मध्यमां वर्ततां केवळज्ञान अने केवळदर्शन प्रगट थयुं. त्यारथी प्रभु सर्वज्ञ थया.

प्रभुनो केवळज्ञान महोत्सव करवा सघळा सुर-असुर अने ईन्द्रो आव्या. आ बाजु प्रभुना केवळज्ञान वखते ज भरतने चक्ररत्न प्रगट थयुं. त्यारे अनादि विषयवासनानी विषमताथी भरतने विचार आव्यो के-'पहेलां प्रभुनो महोत्सव करुं के चक्रनो ?' परंतु बीजी ज क्षणे तेओए निर्णय कर्यो के-'आलोक-परलोकमां सुख देनारा प्रभुनी पूजाथी मात्र आलोकनुं ज सुख आपनारा चक्रनी पूजा ज थई जाय, माटे प्रभुनो महोत्सव करुं.'-एम वीचारीने, आज सुधी पुत्रना विरहथी अने दर्शन, वन्दन वगेरे नहि थवाथी, जेओने रडतां रडतां नेत्रोमां पडल आवी गयां हतां, तेथी प्रतिदिन भरतने ओलंभा देतां हतां, ते

मरुदेवा दादीमाने हाथी उपर बेसाडीने भरत राजा मोटी ऋद्धिथी, हाथी, घोडा वगेरेने शणगारीने मोटा जनसमूह साथे प्रभुने वांदवा चाल्या. समवसरण नजीक पहोंचतां भरत राजाए मरुदेवा माताने कह्युं के-'माताजी ! आपना पुत्रनी ऋद्धि तो जुओ ! देवो, दानवो अने ईन्द्रोथी पुजाता प्रभुनो वैभव अद्‌भुत छे.' ते सांभळीने रोमांचित थयेलां मरुदेवीने हर्षनां आंसु आववाथी नेत्रो निर्मळ थई गयां अने तेओ छत्र, चामरादि, आठ प्रातिहार्यो तथा चोत्रीश अतिशयो वगेरे ऋद्धि जोईने विचारवा लाग्यां के-'मोहमूढ जीवोने धिक्कार थाओ. सर्व जीवो पोताना स्वार्थमां रमे छे. में आज सुधी पुत्रनी चिंताथी रडी रडीने नेत्रोनुं तेज गुमाव्युं. आम छतां आटली संपत्तिने पामेला अने सुर-असुरोथी पूजाता ऋषभे सुखशातानो संदेशो पण मने न मोकल्यो, माटे मारा एकपाक्षिक स्नेहने धिक्कार हो !'- अनित्य भावना भावतां मरुदेवा माताने केवळज्ञान प्रगटयुं अने ते ज क्षणे आयुष्य पूर्ण थतां तेओ मुक्तिमां गयां.

खरेखर ! श्री ऋषभ प्रभु जेवा पुत्र जगतमां क्यांय थयेल नथी, के जेओए एक

हजार वर्ष पृथ्वी उपर भ्रमण करीने महा कष्टे मेळवेलुं केवळज्ञानरुपी रत्न तरत ज स्नेहथी प्रथम माताने आपी दीधुं. एम मरुदेवा जेवी माता पण कोई थई नथी, के जे माता खरेखर पोताना पुत्र माटे मुक्तिरुपी कन्याने अने स्फुटपणे शिवमार्गने जोवा पहेलां मोक्षमां गयां.

प्रभुए समवसरणमां धर्मदेशना आपी. ते सांभळीने ऋषभसेन वगेरे भरतना पांच सो पुत्रो अने सात सो पौत्रो दीक्षित थया. तेमांथी 'ऋषभसेन' वगेरे चोराशीने प्रभुए गणधरपदे स्थाप्या. ब्राह्मी पण दीक्षित थयां, भरत श्रावक थया अने भरते पोतानुं स्त्रीरत्न बनाववा रोकेली सुन्दरी दीक्षा न लई शकवाथी श्राविका थई. एम श्री चतुर्विध संघनी स्थापना करवामां आवी. कच्छ, महाकच्छ सिवायना सर्व तापसो पण प्रभु पासे दीक्षित थया. पछी मरुदेवा माताना विरहथी भरतने थयेला शोकनुं ईन्द्रे निवारण कर्युं अने भरत पाछा शहेरमां गया.

त्यां जई भरते चक्रनी पूजा करीने शुभ मुहूर्ते छ खंडना देशोने साधवा प्रयाण कर्युं. साईठ हजार वर्षे छ खंड पृथ्वीने जीतीने ते घेर आव्या, पण चक्र आयुधशाळामां न पेसतां

बहार अटक्युं. तेनुं कारण पूछतां अधिकारी वर्गे कह्युं के –'सर्वने वश कर्या, पण तमारा भाईओ वश थया नथी तेथी चक्र आयुधशाळामां पेसतुं नथी, माटे तेओने आज्ञा मनावो.' एथी भरते दूत मोकली अठ्ठाणुं भाईओने आज्ञा मानवा जणाव्युं. आथी तेओ एकत्र मळीने 'आज्ञा मानवी के युद्ध करवुं ?' ते पूछवा प्रभुनी पासे गया. प्रभुए तेओने वैतालीय नामना अध्ययननी प्ररुपणा वडे प्रतिबोध पमाडीने दीक्षा आपी. पछी भरते बाहुबली उपर दूत मोकल्यो, पण बळना अहंकारथी आज्ञा नहि मानतां ते सैन्य सजी सामे आव्या. भरते तेमनी साथे बार वर्ष युद्ध कर्युं, पण बाहुबली हार्या नहि. आथी घणा मनुष्योनो संहार जोईने ईन्द्रे, मात्र भरत अने बाहुबलीने परस्पर द्रष्टियुद्ध, वाग्युद्ध, मुष्ठियुद्ध अने दंडयुद्ध करवा कह्युं. तेम करतां ते चारेयमां पण भरतनो पराजय थयो. पछी क्रोधान्ध थईने भरते बाहुबली उपर चक्र छोडयुं, पण एकगोत्रीय होवाथी ते बाहुबलीने प्रदक्षिणा दईने पाछुं फर्युं. बाहुबली पण चक्र छोडवाथी रोष करीने भरतने मारवा मुठ्ठी उपाडीने सामे दोडया, पण विवेके तेमने थंभावी दीधा. बाहुबलीने विचार आव्यो के–'पितातुल्य मोटा भाईने

मारवा ते मारे माटे अनुचित छे.' त्यारे पोतानी मुठ्ठि निष्फळ केम जाय ?'-ए अभिमानथी ए ज मुठ्ठिथी पोताना मस्तकना केशनो लोच कर्यो अने सर्व बाह्य परिग्रहने तजीने साधु बनी काउस्सग्गमां रह्या. आथी भरत बाहुबलीने नमी पडया अने पोतानो अपराध खमावी स्वस्थाने गया. बाहुबलीए बाह्य परिग्रह छोड्यो पण ते मानने छोडी न शक्या. आथी विचारवा लाग्या के-'प्रभु पासे जवाथी मारा पहेलां प्रभु पासे दीक्षित थयेला अट्ठाणुं भाईओ दीक्षामां मोटा छतां माराथी वयमां नाना छे, जेथी तेओने मारे वन्दन करवुं पडे, माटे केवळज्ञान प्रगटया पछी जईश.'-एम विचारीने एक वर्ष सुधी चारेय आहारनो त्याग करीने ते कायोत्सर्गमां रह्या. निश्चल उभा रहेवाथी वर्षाऋतुमां वेलडीओ शरीरे विंटाई वळी, पण तेओए कायोत्सर्ग न छोडयो. वर्षाऋतु पछी प्रभुए मोकलेलां ब्राह्मी अने सुन्दरी आव्यां अने तेओए बाहुबलीने कह्युं के-'हे भाई ! गज थकी हेठा उतरो, गजे केवळ न होय.' ते सांभळीने बाहुबली विचारे चढ्या अने 'पोते मानरुपी हाथी उपर चढेला छे' तेनुं तेमने भान थयुं. पछी तो आत्मा उत्तम हता, तरत मान मूकीने तेओए प्रभु पासे जवा

पग उपाड्यो अने तेओने तरत केवळज्ञान प्रगटयुं. पछी पोते प्रभु पासे जई अने लांबो काळ केवळीपणे विचरी प्रभुनी साथे ज मोक्षमां पधार्या.

आ बाजु भरत चक्रवर्ती थया अने तेओ दीर्घकाळ चक्रवर्तीपद भोगवीने, एकदा आरिसाभुवनमां वस्त्रालंकार धारण करतां विंटी नीकळी जवाथी, शोभारहित बनेली अंगुलिने जोईने पदार्थनी अनित्यताने विचारवा लाग्या. अनित्य भावनाने भावतां तेओने केवळज्ञान प्रगट थयुं अने देवे आपेलो साधुवेष पहेरीने दश हजार राजाओनी साथे पोते साधु थया. दीर्घकाळ केवळीपणे विचरीने तेओ मुक्तिने पाम्या.

श्री ऋषभ प्रभुने चोराशी गण; ऋषभसेन आदि चोराशी गणधरो; ऋषभसेनादि चोराशी हजार मुनिवरो; ब्राह्मी, सुंदरी वगेरे त्रण लाख साध्वीओ; श्रेयांस वगेरे त्रण लाख ने पांच हजार श्रावको; सुभद्रा वगेरे पांच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओ; केवळी नहि छतां केवळीतुल्य देशना दई शके तेवा सुडतालीस सो पचास चौदपूर्वीओ; नव हजार अवधिज्ञानी अने वीश हजार केवळज्ञानीओ; वीश हजार ने छसो वैक्रीय लब्धिवाळा

मुनिओ; तेमज बार हजार साडा छसो विपुलमति मनःपर्यव ज्ञानवाळा मुनिओ हता तथा वादीओ पण तेटला हता. प्रभुना वीश हजार साधुओ अने चालीश हजार साध्वीओ मुक्तिपदने वरी मनोवांछित फळने पाम्या तथा बावीश हजार नवसो मुनिवरो अनुत्तर विमानमां देव थया. प्रभु एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे अने तेटलां वर्ष न्यून एक लाख पूर्व केवळीपणे विचर्या. एम कुल एक लाख पूर्व वर्ष व्रतपर्यायमां रह्या. श्री ऋषभ प्रभुना शासनमां प्रभुने केवळज्ञान प्रगटया पछी अंतर्मुहूर्ते मरुदेवा माता मुक्तिने पाम्यां, त्यारथी मोक्षमार्ग शरु थयो अने प्रभुनी पछी असंख्यात पाट सुधी मोक्षमार्ग चालु रह्यो.

प्रभु वीश लाख पूर्व कुमारपणे, त्रेसठ लाख पूर्व राजापणे अने एक लाख पूर्व साधुपणे, एम चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूण करी, छेल्ले दश हजार मुनिवरोनी साथे श्री अष्टापदगिरि उपर पधार्या. त्यां वेदनीय वगेरे शेष चार कर्मोनो क्षय थतां, छेल्ला छ उपवास चोविहारा पूर्ण करीने, महा वदि तेरसे अभिजित नक्षत्रना चन्द्रयोगमां पद्मासने बेठा बेठा तेओ निर्वाणने पाम्या, सर्व कर्मोथी मुक्त थई शिवपुरीमां पहोंच्या अने अजरामर पदने

वर्या.

प्रभुना निर्वाणथी ईन्द्रनुं आसन कम्प्युं अने ईन्द्र अवधिज्ञानथी प्रभुनुं निर्वाण जाणी देवांगनाओ, लोकपालो वगेरे सर्व परिवारने लईने प्रभुनुं शरीर हतुं त्यां आव्या. प्रभुना देहने प्रदक्षिणा दई, जलभर्या नेत्रे, शोकातुर हदये, बे हाथ जोडीने तेओ प्रभुथी थोडे दूर उभा रह्या. ए रीते ईशान ईन्द्र वगेरे सर्वेनां आसन कम्प्यां अने चोसठे ईन्द्रो पोतपोताना परिवार साथे त्यां आवी शोकातुर हृदये रडता प्रभुना देहने वन्दन, प्रदक्षिणादि करी उभा रह्या. पछी सौधर्म ईन्द्रे चारेय निकायना देवो द्वारा नन्दन वनमांथी गोशीर्ष चंदननां काष्ट मंगावी एक प्रभुना, बीजी गणधरोना अने त्रीजी अन्य मुनिओना अग्निसंस्कार माटे-एम त्रण चिताओ करावी. पछी नोकर देवो द्वारा क्षिरोदधिनुं जळ मंगावी ते जळथी प्रभुना देहनुं स्नान कर्युं, चंदननुं विलेपन करी उज्जवल महामूल्य रेशमी वस्त्र प्रभुने पहेराव्युं अने सर्व अलंकारोथी प्रभुना देहने भूषित कर्यो. ए प्रमाणे अन्य देवोए गणधरोनां अने मुनिवरोनां शरीरोने स्नानादि करी भूषित कर्यां. पछी विविध चित्रोथी शोभती त्रण पालखीओ बनावरावी

अने दीनतापूर्वक, अश्रुभर्या नेत्रे प्रभुना देहने सौधर्म ईन्द्रे पालखीमां पधराव्यो. ए रीते शेष बे पालखीओमां अन्य देवोए गणधरोनां अने मुनिवरोनां शरीरोने पधराव्यां. पालखीओने चिताओ पासे लावीने, त्यां त्रणेय पालखीओमांथी मृतकोने उतारी यथाक्रम त्रण चिताओमां पधराव्यां. पछी ईन्द्रनी आज्ञाथी अग्निकुमार देवोए दीन वदने निरुत्साहथी अग्नि प्रगटाव्यो, वायुकुमार देवोए वायु विकुर्व्यो अने शेष देवोए उत्तम कालागुरु, चन्दन वगेरेनां श्रेष्ठ काष्ठो चितामां नाखवा मांड्या तथा घी वगेरेथी अग्ननुं सिंचन कर्युं, पछी ज्यारे मात्र हाडकां शेष रह्यां, त्यारे ईन्द्रना आदेशथी मेघकुमार देवोए जळ वरसावी त्रणेय चिताओ शान्त करी. ते पछी सौधर्म ईन्द्रे प्रभुनी उपरनी जमणी तथा ईशान ईन्द्रे डाबी दाढाने ग्रहण करी तथा नीचेनी जमणी दाढा चमरेन्द्रे लीधी अने डाबी दाढा बलीन्द्रे लीधी. बीजा पण देवोए कोईए भक्तिथी, कोईए कल्प समजीने तो कोईए धर्म मानीने शेष अंगोपांगना हाडकां ग्रहण कर्यां. पछी सौधर्म ईन्द्रे ते चिताओना स्थाने एक श्री जिनेश्वर भगवंतनो, एक श्री गणधरोनो अने एक बाकीना मुनिओनो - एम त्रण स्तुपो बनावराव्या अने ए

रीते अग्निसंस्कारनुं सर्व कार्य पूर्ण करीने सर्वे नन्दीश्वर द्वीपे गया. पछी त्यां शाश्वता चैत्योमां अठ्ठाई महोत्सव करीने स्वस्व विमानोमां पाछा गया. त्यां जईने पोतपोतानी सभामां वज्ररत्नना डबाओमां प्रभुनी दाढाओ वगेरे पधरावीने प्रतिदिन पुष्प, चूर्ण वगेरेथी तेनुं पूजन करे छे. ए प्रमाणे प्रत्येक प्रभुना निर्वाणने अंगे देवोनुं आ कर्तव्य जाणवुं. एम श्री जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति नामे आगममां कहेलुं छे.

त्रीजा आरामां नेव्यासी पखवाडियां शेष रह्यां त्यारे श्री ऋषभ प्रभु शिवसुंदरीने वर्यां- निर्वाणने पाम्या. ए भवस्थितिनो प्रवाह सतत चालु छे अने रहेवानो. श्री ऋषभ प्रभुना निर्वाण पछी बेंतालीस हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ मास न्यून एक क्रोडाक्रोड सागरोपम पछी प्रभु श्री महावीरदेव निर्वाण पाम्या अने पछी नव सो ऐंशी वर्षे पुस्तक वाचना थई.

आ अवसर्पिणीमां श्री ऋषभ प्रभुए लौकिक-लोकोत्तर उभय प्रकारना धर्मनी शरुआत करी छे. तेओ प्रथम राजा थया छे, प्रथम साधु अने साधुओना गुरु थया छे, प्रथम

तीर्थंकर थया छे तथा प्रथम केवळज्ञानी थया छे. तेथी तेओना प्रत्ये हे भव्य जीवो ! धर्मस्नेह करो !- एम श्री ज्ञानविमलसूरिजीए आ सातमुं व्याख्यान कर्युं छे. तेने वांचवा-सांभळवाथी कल्याण अने मंगलमाळा थाय छे.

॥ अहीं श्री पर्युषणानुं कल्पधरना दिवसनुं सातमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं ॥

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान ८ मुं

सात व्याख्यानोमां चोवीश प्रभुना चरित्रोरुप पहेलो अधिकार कह्यो. हवे श्री वीर प्रभुनी पछी थयेला स्थविरोनो अनुक्रम जेमां छे, ते स्थविरावली नामनो श्री कल्पसूत्रनो बीजो अधिकार कहीशुं.

साधुगणना नायक एवा स्थविरोने नमस्कार थाओ. ते वीर प्रभुना १. ईन्द्रभूति, २. अग्निभूति, ३. वायुभूति, ४. व्यक्त, प. सुधर्मा, ६. मंडित, ७. मौर्यपुत्र, ८. अकंपित, ९. अचलभ्राता, १०. मेतार्य अने ११. प्रभास. ए अगियार गणधरो प्रसिद्ध हता. तेमांथी नव, प्रभु जीवते छते राजगृहीमां एक एक मासनुं अनशन करीने अनेकनी साथे मुक्तिपदने

वर्या, श्री वीरनिर्वाण पछी बार वर्षे ईन्द्रभूतिजी अने वीश वर्ष पछी श्री सुधर्मास्वामी राजगृहीमां एक एक मासनुं अनशन करीने मुक्तिमां गया.

दरेक तीर्थंकरने गणधरो अने गण तुल्यसंख्यमां होय, पण प्रभु श्री महावीरदेवने गण नव अने गणधरो अगियार हता, कारण के आठमा, नवमा अने दशमा-अगियारमा बे बे गणधरोना साधुओनी वाचना एक एक हती. शास्त्रीय नियम प्रमाणे एक वाचना जेटला साधुओनी होय ते बधानो एक गण गणाय, माटे गण नव हता.

आजे जे साधुओ विचरे छे, ते सर्व श्री सुधर्मा गणधरना शिष्योनी परंपरा जाणवी, कारण के-दश गणधरो स्व-स्व निर्वाणकाळे पोतानो गण श्री सुधर्मास्वामिने सोंपीने मुक्तिमां गया छे. कह्युं छे के-

अगियारेय गणधरो सर्व लब्धिथी संपन्न, वज्रऋषभनाराच संघयणवाळा तथा समचतुरस्त्र संस्थानवाळा हता. दरेक छेल्ले राजगृहीमां एक एक मासनुं पादपोगमन अनशन करीने मुक्तिए गया हता. ते दरेक चौद पूर्वो अने बार अंगरुप समस्त श्रुतज्ञानना संपूर्ण ज्ञाता हता, ते पण स्थूलथी नहि, परंतु सर्व अक्षरोना सर्व पर्यायोना संपूर्ण ज्ञानवाळा हता.

गणधरोनां नाम, माता, पिता वगेरेनुं कोष्टक

क्रम	नाम	गाम	पिता	माता	गोत्र	घरवास	छद्मस्थ	केवली	साधुपणुं	सर्वायुः
१	ईन्द्रभूति	गोबर	वसुभूति	पृथिवी	गौतम	५० वर्ष	३०	१२	४२	९२
२	अग्निभूति	"	"	"	"	४६ वर्ष	१२	१६	२८	७४
३	वायुभूति	"	"	"	"	४२ वर्ष	१०	१८	२८	७०
४	व्यक्त	कुल्लाग	धर्ममित्र	वारुणी	भारद्वाज	५० वर्ष	१२	१८	३०	८०
५	सुधर्मा	"	धम्मिल	भद्दिला	अग्निवैश्य	५० वर्ष	४२	८	५०	१००
६	मण्डित	मौर्य	धनदेव	विज्यादेवी	वासिष्ठ	५३ वर्ष	१४	१६	३०	८३
७	मौर्यपुत्र	"	मौर्य	"	काश्यप	६५ वर्ष	१४	१६	३०	९५
८	अकम्पित	मिथिला	देव	जयन्ती	गौतम	४८ वर्ष	९	२१	३०	७८
९	अचलभ्राता	कोशल	वसु	नन्दा	हार्य	४६ वर्ष	१२	१४	२६	७२
१०	मेतार्य	वच्छपुर	दत्त	वरुणदेवी	कौडिन्य	३६ वर्ष	१०	१६	२६	६२
११	प्रभास	राजगृही	बल	अतिभद्रा	"	१६ वर्ष	८	१६	२४	४०

श्री चरमकेवलि जंबूस्वामीजीए पोताना छेल्ला पांच भवोमां एवी आराधना करी के जेना प्रतापे तेओ केवली थया. तेमां बे भव मनुष्यना एक भव देवनो बीजो देवलोकनो त्रीजो शिवकुमारनो, चोथो देवलोकनो अने पांचमो जंबूकुमार रुपे.

ज्यारे भवदेवनो जीव चोथा भवे देवलोकमां हता. त्यारे श्रमण भगवान महावीर भगवाननी देशना सांभळवा समवसरणमां आवेल हता श्रेणिक महाराजाए देशना पूर्ण थतां पूछयुं के भगवान आपना शासनमां छेल्ला केवली कोण थशे ? त्यारे भगवाने कह्युं के आ बेठेलो देव सातमा दिवसे च्यवन पामी तारा देशमां एटले राजगृही नगरीमां ऋषभदासने त्यां धारिणीनी कुक्षिथी जंबूनामे पुत्र थशे ते मारा शासनमां छेल्ला केवली थशे.

आ सांभळीने श्रेणीक महाराजाए पूछयुं के आ देव तो हमणां ज उत्पन्न थयेलो देखाय छे तेना शरीरनी क्रांति वधारे ते ज मारी रही छे. भगवाने कह्युं के आ देव पूर्वभवमां सुंदर आराधना करीने आवेलो छे अने चरम शरीरी थवानो छे माटे तेनी फुलनी माळा करमाती नथी ए देव त्यांथी च्यवीने धारणीनी कुक्षिमां सिंह स्वप्न सुचितथी उत्पन्न

थयो अने गर्भकाळ पूर्ण थये जन्म पाम्यो. माता-पिताने त्यां नव्वाणुं करोड नगद सोनैया होवाथी जन्मोत्सव सारी रीते करेल छे. ज्यारे जुवान वय पाम्यो त्यारे माता-पिताए पोताना नगरमां रहेल आठ प्रतिष्ठित शेठीयाओनी आठ कनयाओना मागा करी लग्ननी तैयारी करी रहेला छे ते ज वखते राजगृही नगरीना बहारना उद्यानमां श्री सुधर्मा स्वामीजी पधार्या छे तेमनी देशना सांभळवा तथा दर्शन वंदन करवा गामना लोकोने जतां जोयां छे अने सुधर्मा स्वामी भगवान पधार्या छे एम सांभळ्युं माटे माता-पितानी आज्ञा लई जंबूकुमार पण रथमां बेसीने दर्शन वंदने गया छे त्यां अंदर पेसवानी जग्या न मळवाथी बहारना भागमां उभा रहेला छे अने देशना सांभळी रह्या छे. जेम जेम सांभळता जाय छे तेम तेम परिणाम पामती जाय छे देशना पूर्ण थया बाद बधाना गया पछी श्री सुधर्मास्वामी भगवान पासे जई विनंती करे छे के हे भगवान हाल आप अहीं ज विचरजो. हुं माता-पितानी आज्ञा लई संयम लेवा आवुं छुं ! विचार जो नव्वाणुं करोड सोनैया घरमां छे. जुवान वय छे, निरोगी शरीर छे, आठ कन्याओनी साथे माता-पिताए मागु करी नक्की करेल छे. नजीकमां

लग्न लेवाना छे छतां य एक देशना सांभळता वैराग्य द्रढ थतां संयम लेवानी भावना थाय छे ! एनी अपेक्षाए आजे तमारी शुं स्थिति छे. हवे आटलुं कही पोताना घर तरफ आववा नीकळे छे. दरवाजामां पेसता गीरदी जुए छे त्यां विचार आवे छे के जो कदाच पेसता पेसता कोई शस्त्र पडे अने मरी जाउं तो अविरतिमां जाउं ! माटे ब्रह्मचर्य व्रत लई आवुं के जेथी मरण थाय तो विरतिमां थाय. एम विचारी पाछो फरी सुधर्मा स्वामी पासे आवी जिंदगी भरनो ब्रह्मचर्य व्रतनो नियम लीधो. पछी घरे आवी माता-पिताने वात करे छे ! मोहना वशे माता-पिता समजावे छे अने वैराग्य द्रढ जोवाथी कहे छे के एक वार लग्न करी अमोने आठे पत्नीओनां मोढा बताव पछी तुं संयमनी वात करशे तो तारी साथे अमो पण संयमनो स्वीकार करशुं. माता-पिताना उपकार खातर जंबूकुमारे हा कही लग्न करी आठ पत्नीओने घरे लाव्यो. रातना आठेयने समजावी वैराग्य पमाडी संयम लेवा तैयार करी ते वखते प्रभवादि पांचसो चोरो चोरी करवा आव्या छे तेओने पण वैराग्य पमाडी संयम लेवानी भावनावाळा कर्या. सवारे माता-पिताने वात करतां जंबूकुमारे सोळ वरसनी उंमरे

पांचसो सत्तावीशनी साथे श्री सुधर्मा स्वामी भगवान पासे संयमनो स्वीकार कर्यो.

भगवानना निर्वाण पछी चोसठ वर्षे मुक्तिमां गया. जंबुस्वामी मोक्षे गया पछी मोक्ष द्वार बंध थई गयो अने ते साथे दश वस्तुओ विच्छेद पामी. १. मनःपर्यवज्ञान, २. परमावधिज्ञान, ३. पुलाकलब्धि, ४. आहारकलब्धि, ५. क्षपकश्रेणि, ६. उपशमश्रेणि, ७. जिनकल्प, ८. त्रण चारित्र, (परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात चारित्र) ९. केवलज्ञान-केवलदर्शन अने १०. मुक्ति (मोक्ष)

कवि कहे छे के जंबू जेवो कोटवाळ थयो नथी अने थशे नहि, के जेणे चोरोने पण मुक्तिमार्गना पथिक साधुओ बनाव्या. ए रीते प्रभव जेवो चोर पण कोई थयो नथी, के जेणे कोई चोरी न शके, तेवी अमूल्य रत्नत्रयीनी चोरी करी. श्री जंबूस्वामीनुं सौभाग्य एवुं अद्‌भुत छे के-मुक्तिरुपी स्त्री तेओने वर्या पछी आज सुधी भरतमांथी बीजा कोई पतिनी इच्छा करती नथी.'

श्री जंबूस्वामी पछी त्रीजी पाटे उपर कह्या ते श्री प्रभवस्वामी थया. एकदा तेओए

भाविकाळे संघनी अने शासननी रक्षा माटे कोण योग्य छे ?- ते जाणवा श्रुतनो उपयोग मूक्यो. सर्व साधुओमां अने श्रावक संघमां पण ज्यारे तेवो योग्य आत्मा जोवामां न आव्यो तेथी तेओए अन्य धर्मीओमां उपयोग मूक्यो. त्यारे राजगृहीमां चुस्त वेदान्ती शय्यंभव नामे ब्राह्मण जे पोताने त्यां मोटो यज्ञ करावता हता, ते तेओने योग्य जणाया. तेथी सपरिवार विहार करी श्री प्रभवस्वामी राजगृही गया अने त्यां उद्यानमां रह्या. बाद तेओए बे साधुओने वस्तुस्थिति समजावीने भिक्षार्थे मोकल्या. साधुओ शय्यंभवना यज्ञमंडप पासे गया अने त्यां धर्मलाभ कह्यो, त्यारे शौचवादी याज्ञिकोए तेओने मंडपमां प्रवेश करतां अटकाव्या, तेथी 'अहो कष्टं अहो कष्टं, तत्त्वं न ज्ञायते परम्' - एम कहीने साधुओ चाल्या गया. शय्यंभव ए सांभळी विचारमां पड्या के-'जैन मुनिओ असत्य बोले नहि, छतां आ यज्ञने तेओए तत्त्व विनानो मात्र कष्टरुपे कह्यो, तो मारे तत्त्व समजवुं जोईए.' एथी तेमणे शस्त्र उगामीने याज्ञिकने कह्युं के-'तत्त्व शुं छे ? ते सत्य कहो.' मरणना भये याज्ञिके तेमने यज्ञस्तंभ नीचे स्थापेली श्री शान्तिनाथ प्रभुनी प्रतिमा बतावी अने कह्युं के-

'आ प्रतिमाना प्रभावे यज्ञनां विघ्नो टळे छे, यज्ञनो महिमा नथी.' तेथी सत्यना पक्षपाती शय्यंभव तरत उद्यानमां पहोंच्या, श्री प्रभवस्वामिने तेमणे विनयपूर्वक तत्त्व समजाववा प्रार्थना करी अने जीवाजीवादि तत्त्वोने समजीने त्यां ज ते दीक्षा लईने श्री प्रभवस्वामिना शिष्य थया. पछी तेओ त्याग, वैराग्य अने ज्ञान-क्रियाथी अल्पकाळमां चौद पूर्वो भणी गीतार्थ थया अने तेओने आचार्यपदे स्थापी श्री प्रभवस्वामी स्वर्गे गया.

आ बाजु दीक्षा वखते शय्यंभवनी स्त्री गर्भवती हती, तेथी तेनी कुखे मनक नामे पुत्र जन्म्यो. बाल्यकाळ वित्या पछी मनके माताना शरीरे सधवानो वेष जोई, 'पोताना पिता क्यां छे ?'-एम पूछ्युं, माताए कह्युं के-'धूर्त जैन साधुओए तेमने भोळवीने साधु बनाव्या छे, तेथी ते साधु थई गामोगाम फरे छे.' माताए असद्भाव प्रगटाववा एवां वचनो कहेवा छतां कुलिन पुत्र पिताने मळवा उत्सुक बन्यो अने माताने पूछ्या विना पितानी शोध माटे चाली नीकळ्यो. अनुक्रमे तेने श्री शय्यंभवसूरि चंपाना पादरमां मळ्या, पण अजाण होवाथी मनके पूछ्युं के-'शय्यंभव साधु क्यां छे ? तमे जो जाणता हो तो कहो, मारे

तेमनी पासे दीक्षा लेवी छे.' ए सांभळीने पोताने अंतरमां प्रीति थवाथी तेओए मनकने 'तुं कोण छे ?' वगेरे पूछ्युं अने 'पोतानो पुत्र छे.'-एम समज्या. पुत्रना भावि हित माटे पोतानी स्पष्ट ओळख न आपतां, 'तारा पिताने हुं जाणुं छुं. ते मारा मित्र छे, मारामां-तेमनामां कोई भेद नथी, माटे तुं अहीं ज दीक्षा ले.' वगेरे कह्युं. ते सांभळीने पिताना संबंधथी आंतरिक प्रसन्नता पामेला मनके तेओनी पासे दीक्षा लीधी. 'पोतानो आ पुत्र छे.'-एम गुरुए कोईने कह्युं नहि. पछी श्रुतना बळे तेओए जाण्युं के-'मनकनुं आयुष्य मात्र छ मास बाकी छे', त्यारे अल्पकाळमां तेने आराधना करावबा पूर्वोमांथी उद्धरीने सिद्धांतना सार रुपे 'दशवैकालिक' सूत्र रच्युं. पछी स्वयं मनकने भणाववा लाग्या अने अल्पकाळमां संयममां रंगायेला मनक मुनिने अंते आराधना पण स्वयं करावी एम छ मास दीक्षा पाळी मनक मुनि स्वर्गे गया. पुत्रना स्नेहथी ते वेळा गुरुना नेत्रो अश्रुभीनां थयां, ते जोईने श्री यशोभद्रसूरि वगेरे साधुओए तेनुं कारण पूछवाथी पिता-पुत्रनो संबंध जणाव्यो. ते जाणीने गुरुपुत्रनी गुरुतुल्य भक्ति करवाथी वंचित रह्या, तेनो तेओ पश्चात्ताप करवा

लाग्या. गुरुए मनकनी आराधना माटे संबंध जणाववो योग्य न हतो, वगेरे कहीने तेओनुं समाधान कर्युं. पछी तुंगिकायन गोत्रवाळा श्री यशोभद्रसूरिने पोतानी पाटे स्थापीने श्री शय्यंभवसूरि आयुष्य पूर्ण थतां श्री वीरनिर्वाणथी अट्ठाणुं वर्षे स्वर्गे गया.

श्री यशोभद्रसूरि पण प्राचीनगोत्रीय श्री भद्रबाहु अने माढरगोत्रीय श्री संभूतिविजय नामना पोताना बे शिष्योने स्वपदे स्थापी स्वर्गे गया. तेमां श्री भद्रबाहुसूरिए आ श्री कल्पसूत्रने पूर्वोमांथी उद्धर्युं, दश सूत्रो उपर निर्युक्ति रची अने 'उवसग्गहरं' स्तोत्र बनाव्युं. तेओनो जन्म प्रतिष्ठानपुरमां ब्राह्मणकुळमां थयो हतो. वराहमिहिर तेमना मोटा भाई हता अने बंने भाईओए दीक्षा लीधी. ते पछी योग्य जाणी गुरुए श्री भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं, तेथी वराहमिहिर रीसाया अने ब्राह्मणनो वेष पहेरी 'वराहसंहिता' नामे ज्योतिषनो ग्रंथ बनावी तेना बळे लोकोने भूत-भावि निमित्तो कहीने आजीविका मेळववा लाग्या. लोकोने कहेवा लाग्या के-एक जंगलमां शिला उपर में एकदा सिंहलग्न लख्युं, पण तेने भांगवुं हुं विसरी गयो. शयन समये स्मरण थवाथी हुं त्यां गयो, त्यारे लयनो स्वामी सिंह आवीने

ते लग्न उपर उभो हतो, छतां में सत्त्वथी तेनी नीचे हाथ नाखी लग्न मांग्युं. आथी मारा सत्त्वथी लग्ननो अधिपति सूर्य प्रसन्न थयो, त्यां आवीने मने ते सूर्यमंडलमां लई गयो अने सर्व ग्रहोनो चार मने प्रत्यक्ष तेणे बताव्यो, तेथी मने ज्योतिष प्रत्यक्ष छे. पछी अभिमानथी एकदा तेणे राजानी सामे कुंडाळुं आलेखीने कह्युं के-'आना मध्यमां बावन पलनो मच्छ पडशे.' त्यारे श्री भद्रबाहुसूरिए 'मार्गे अडधो पल शोषावाथी मच्छ साडा एकावन पलनो हशे अने कुंडाळाना छेडे पडशे.'-एम कह्युं. ते प्रमाणे बनवाथी श्री भद्रबाहुसूरिनी प्रशंसा थई, पण ते वराहमिहिर सही शक्यो नहि. एकदा राजाने त्यां पुत्र जन्म्यो त्यारे अन्य धर्मना साधुओ राजपुत्रने आशीर्वाद आपवा गया, पण श्री भद्रबाहुस्वामी न गया. ते प्रसंगनो लाभ लई श्री भद्रबाहुसूरिनुं महत्त्व घटाडवा वराहमिहिर लोकमां बोलवा लाग्या के-'व्यवहारने नहि समजता जैन साधुओ राजाना पुत्रने पण जोवा माटे न आव्या.' लोकमां एथी जैनोनी निंदा थवा लागी. ते जाणीने श्री भद्रबाहुसूरिए कह्युं के-'सातमे दिवसे बिलाडीथी राजपुत्रनुं मरण थवानुं छे, तेथी अमे गया नथी.' ए वात

राजाए जाणी अने नगरमांथी सर्व बिलाडांने बहार कढाव्यां. तो पण सातमे दिवसे स्तनपान करता राजपुत्र उपर बिलाडानो आकार कोतरेलो आंगळीओ पडवाथी ते मरी गयो. एथी गुरुनी सर्वत्र प्रशंसा थई अने वराहमिहिरनी निंदा थई. दुर्जन पोताना स्वभावे दुःखी थाय छे पण दोष बीजानो माने छे. आम पोतानी निंदा थवाथी वराहमिहिरने क्रोध थयो, पछी क्रोधथी मरीने ते व्यन्तर थयो अने नगरमां मारीनो रोग प्रगटावीने लोकने उपसर्ग करवा लाग्यो. त्यारे श्री भद्रबाहुसूरिजीए 'उवसग्गहर' स्तोत्र रचीने उपसर्गनुं निवारण कर्युं. कह्युं छे के –

माढर गोत्रिय स्थविर आर्य संभूति विजयना शिष्य श्री स्थुलभद्रजी थया. तेओ नवमा नंद राजाना परमार्हत् शकडाल मंत्रीना पुत्र हता. श्रीयक नामनो तेमने नानो भाई हतो. श्री स्थुलभद्रजी मोटो भाई गाममां रहेली कोशा वेश्याने त्यां रहेतो हतो अने घरे पाछो आवतो नहोतो.

आ बाजु ते नगरमां वररुचि नामे एक विद्वान ब्राह्मण पंडित हतो. नन्द राजा जे

नवां काव्यो बनावीने सभामां संभळावे तेने सारुं धन आपतो, तेथी वररुचि दररोज नवां काव्यो बनावीने संभळावतो, पण मिथ्यात्वनुं पोषण थवाना भये शकडाल मंत्री तेनी प्रशंसा करता नहि, तेथी राजा वररुचिने दान आपतो नहि. आखरे वररुचिए मंत्रीनी पत्नीने प्रसन्न करी काव्योनी प्रशंसा करावववा प्रबंध कर्यो. ते प्रमाणे पत्नीए आग्रह करवाथी मंत्रीए प्रशंसा करी अने वररुचिने दररोज सारुं दान मळवा लाग्युं. केटलाक समय पछी ए दान बंध करावववा मंत्रीए राजाने कह्युं के-'वररुचि संभळावे छे तेमां नवुं कंई नथी, मारी सातेय पुत्रीओ एना काव्योने जाणे छे.' तेथी राजाए बीजा दिवसे मंत्रीनी पुत्रीओने सभामां तेडावी. तेमां मोटी यक्षा एक वार सांभळेलुं, बीजी बे वार, त्रीजी त्रण वार, एम सातमी सात वार सांभळेलुं बोली शकती हती. तेथी वररुचि बोल्यो ते सांभळीने यक्षाए ते बोली बताव्युं. बे वार सांभळीने बीजीए, एम सात वार सांभळवाथी सातमीए पण कही संभळाव्युं. तेथी राजाए दान बंध कर्युं अने वररुचिने मंत्री प्रत्ये द्वेष थयो. पछी पोतानी विद्यानुं महत्त्व वधारवा तेणे गुप्त रीते एक काष्टनुं यंत्र गंगा नदीना जळमां गोठव्युं अने

तेमां प्रतिदिन एक सो आठ सोनैयानी पोटली ते मूकवा लाग्यो. ते सवारे स्नान करी गंगादेवीनी प्रार्थना करे अने पगथी यंत्रने दाबे एटले सोनैयानी पोटली उछळीने बहार आवे ते पोते लई ले. एम दररोज ते करवा लाग्यो, पण लोको तेना कपटने समजी शक्या नहि, उलटुं 'गंगादेवी दान आपे छे.'-एम मानीने तेओ प्रशंसा करवा लाग्या. आ वात राजाए जाणी, एटले आश्चर्य पामीने स्वयं जोवा जवानी इच्छा करी अने मंत्रीने जणाव्युं. मंत्रीए राजा-प्रजा वगेरे मिथ्याधर्ममां फसाई न जाय, ए उद्देशथी पोताना गुप्तचर द्वारा वररुचिनुं कपट जाणी लीधुं अने तेणे मूकेली पोटली मोडी रात्रिए गुप्तचर द्वारा मंगावी लीधी. सवारे घणा मनुष्यो साथे राजा नदीकांठे आव्यो अने वररुचि पण पोतानी प्रसिद्धि वधती जोई हर्षघेलो थयो. तेणे नदीमां स्नान कर्युं अने गंगानुं ध्यान करीने प्रार्थना करी. पछी वारंवार तेणे पग दाबवा छतां पोटली बहार न आवी, त्यारे हाथ वडे ते पाणीमां शोधवा लाग्यो. आखरे न मळवाथी ते विलखो थयो. त्यारे मंत्रीए कह्युं के-'शुं तारी थापण पण गंगादेवी तने पाछी नथी आपतां ? ले. जो, आ सोनैया तारा छे ?'-एम कहीने तेने पोटली आपी.

ते जोईने वररुचिने जे दुःख थयुं ते ते ज समजे. खरेखर ! कपट बहार आवतां कपटीने मरण जेवुं दुःख थाय छे लोको पण तेनी निंदा करवा लाग्या. तेथी वररुचिने मंत्री प्रत्ये वैर थयुं अने तेनो बदलो लेवा ते मंत्रीनी दासीने वश करी तेना द्वारा मंत्रीनां छिद्रो जोवा लाग्यो. एकदा नाना पुत्र श्रीयकनो लग्न प्रसंग आव्यो, त्यारे राजाने आमंत्रण करी भेट आपवा माटे मंत्रीए मुगट, कुंडल, छत्र, खड्ग वगेरे अनेक राजचिह्नो घडाववां शरु कर्यां, दासीमुखे ए जाणीने वररुचिए बाळकोने शिखव्युं के-'राजा जाणतो नथी, एवुं शकडाल करशे.' ए शिखीने बाळको ज्यां-त्यां ए बोलवा लाग्यां. ते सांभळी राजाने संशय थयो अने गुप्तचर मोकलीने तपास करावी. पछी राजचिन्हो घडाय छे-ए जाणीने, राजाने मंत्री प्रत्ये अनिष्टनी शंका थई अने तेथी सवारे मंत्री राजसभामां आव्या त्यारे राजा क्रोध करीने अवळा मुखे बेठा. मंत्री राजाना कोपनुं कारण समजी गया, पण सत्य समजाववुं शक्य न होवाथी राजा कंई अनिष्ट करे ते पहेलां घेर जईने पोताना पुत्र श्रीयकने कह्युं के- 'राजा कोपथी समग्र कुटुंबने हणे, ते पहेलां तुं मने राजानी समक्ष हणी नाख ! एथी

राजाने तारा प्रत्ये विश्वास वधशे अने कुटुंब बची जशे. मारी वृद्धावस्था होवाथी मारे हवे मरवानुं नजीक छे.' ते सांभळी श्रीयकनुं हृदय भराई आव्युं अने स्वहस्ते पितानी हत्या करवा ते संमत न थयो. तेथी मंत्रीए कह्युं के-'हुं स्वयं तालपुट विषनुं भक्षण करीश, एथी पितृहत्या नहि थाय, मात्र राजानी समक्ष मरता एवा मारो शिरच्छेद करीने कुटुंबनी रक्षा कर !' निरुपाये श्रीयके ते मान्युं अने सवारे विषभक्षण करी मंत्री सभामां गया, त्यारे श्रीयके शस्त्रथी तेमनुं मस्तक छेदी नाख्युं. एम निर्दोष मंत्रीनुं मरण थयुं. राजाए श्रीयकने पूछ्युं के-'तें पिताने घा केम कर्यो ?' तेणे कह्युं के-'हुं आपनो नोकर छुं, आपनो द्रोही पिता होय तो पण हणवानुं मारुं कर्तव्य छे.' राजा तेनी वफादारी समजीने प्रसन्न थयो अने तेने मंत्रीमुद्रा लेवा कह्युं. श्रीयके कह्युं के-'मारा मोटा भाई स्थूलभद्र बार वर्षथी कोशा वेश्याने त्यां रहे छे. मंत्रीमुद्रानो अधिकार तेओनो छे, माटे तेओने मंत्री बनावो. राजाए स्थूलभद्रने तेडवा राजपुरुषोने मोकल्या. कोशाए समजाववाथी स्थूलभद्र राजसभामां आव्या अने राजाए मंत्रीमुद्रा लेवा कह्युं, त्यारे तेमणे 'विचारीने कहीश.'-एम जणाव्युं.

राजाए त्यां ज जवाब मागवाथी, अशोकवनिकामां जई ते विचारवा लाग्या के-'पराधीन नोकर पण शयन, भोजन, स्नान के बीजां कोई सुखोने भोगवी शकतो नथी, त्यां स्व-पर-राज्यनी चिंतावाळा मंत्रीने स्त्रीनां सुख-भोगनी तो आशा ज केवी ? वळी सर्व स्वार्थ छोडीने राज्य चिंता करवा छतां दुर्जनोना उपद्रवो तो जीवनपर्यंत सहवा ज पडे. जो मंत्रीपणामां आटलुं सहन करुं, तो आत्मा माटे कष्टो सहवां शुं खोटां ?'-एम विचारीने स्वयं लोच करी, रत्नकंबलनी दशीओथी रजोहरण बनावी तरत राजसभामां जई तेमणे कह्युं के-'आ विचार्युं, तमने धर्मलाभ थाओ.' पछी ते तरत चाली नीकळ्या. राजाने प्रथम तो लाग्युं के-'कोशाना रागथी मंत्रीपदमांथी छूटवा आ मार्ग लीधो छे.' परंतु ज्यारे अति दुर्गंधवाळा नगरखाळनी पासेथी पसार थवा छतां स्थूलभद्र मुनिए लेश पण नासिकाने न संकोची, त्यारे राजाने तेमना द्रढ वैराग्यनो निर्णय थयो. पछी स्थूलभद्र मुनिए श्री सम्भूतिविजय गुरु पासे जई विधिपूर्वक दीक्षा लीधी अने उग्र आराधना साथे तेओ शास्त्राभ्यास करवा लाग्या. राजाए श्रीयकने मंत्रीपद आप्युं अने पितानी जेम ते न्याय-

धर्मपूर्वक राज्यनी, प्रजानी अने आत्मानी रक्षा करवा लाग्यो. पछी श्रीयके पिताना प्राण लेनार वररुचिने राजरमतथी वेश्यागामी बनाव्यो अने पोताना पापे आखरे वररुचि कुमरणथी मर्यो.

एक वार वर्षाकाळे श्री संभूतिविजय गुरु पासे मुनिओए विशिष्ट आराधना करवा विविध अभिग्रहो कर्या. तेमां एक मुनिए चार मासना उपवास करी सिंहनी गुफाना द्वारमां कायोत्सर्ग मुद्राए उभा रही चोमासी पूर्ण करवा आज्ञा मागी, बीजाए ए रीते द्रष्टिविष सर्पना बील उपर अने त्रीजाए कुवाना भारवट उपर उभा रही ए रीते उपवास अने कायोत्सर्गथी चोमासी करवा आज्ञा मागी. गुरुए त्रणेयनुं सत्त्व जोईने अनुमति आपी. पछी स्थूलभद्र मुनिए कोशा वेश्याना घरमां नित्य षड्रस भोजन करीने विविध कामक्रीडानां चित्रोवाळी चित्रशाळामां वेश्यानी हाजरीमां चोमासुं रहेवानी आज्ञा मागी. श्रुतज्ञानथी योग्यता जाणीने गुरुए तेमने पण तेम अनुमति आपी. एम चारेय मुनिओ त्यां त्यां गया. मुनिओनी तपनिष्ठाना प्रभावे ते ते सिंह अने सर्प शांत थई गया, पण स्थूलभद्रने आवता जोई कोशाए

विचार्युं के-'मारा विरहथी अने महाव्रतोना कष्टोथी पीडाता स्थूलभद्र आवे छे.' पछी कोशाए तेमनुं स्वागत करीने कह्युं के-'आ शरीर, धन अने परिवार सघळुं तमारुं ज छे, तमे सुखेथी भोगवो.' ते सांभळी स्थूलभद्रजीए रहेवानी माागणी करी अने कोशाए चित्रशाळामां तेमने उतारो आप्यो. पछी कोशाए चार महिना विविध प्रयत्नो अने हावभाव करी भोग माटे प्रार्थना करी, पण स्थूलभद्र मुनि मन-वचन-कायाथी ब्रह्मचर्यमां स्थिर रह्या अने एक रोममां पण विकार न थयो. अंते कोशा तेमना सत्त्व सामे हारी अने तेमने नमी पडी. पछी तेमनी पासे सम्यक्त्व मूळ बार व्रतो उच्चरीने कोशा श्राविका बनी. तेणीए चोथा व्रतमां मात्र राजाना आदेशथी आवेला पुरुष सिवाय अन्य सर्व पुरुषोनो त्याग कर्यो.

आ बाजु चोमासुं पूर्ण थये सिंहगुफावासी वगेरे मुनिओ गुरु पासे आव्या अने तेओनी उग्र तपनिष्ठाथी प्रसन्न थयेला गुरुए 'दुष्करकारक' कहीने तेओनुं स्वागत कर्युं. छेल्ले स्थूलभद्रजी पण आव्या अने तेमना पवित्र सत्त्व तथा ब्रह्मचर्यथी अति प्रसन्न थई गुरुए तेमने 'दुष्कर-दुष्करकारक' कहीने बोलाव्या. आथी पूर्वे आवेला त्रणेय मुनिओ ते

सही शक्या नहि अने असूयाथी विचारवा लाग्या के-'स्थूलभद्रजी मंत्रीपुत्र होवाथी गुरुए तेने विशेष मान आप्युं. अन्यथा, नित्य षड्रस भोजन करीने चित्रशाळानां सुख भोगवनारने दुष्कर-दुष्करकारक केम कहे ?' जीवने अनादि अहंकार क्यां सुधी नडे छे ? पोतानाथी बीजाने गुरुए आपेलुं मान पण आवा तपस्वी छतां ते सही न शक्या. उलटी पोतानी लघुता थई- एम समजीने तेओ गुरुना पण दोष जोवा लाग्या. खरेखर ! उग्र आराधना करवा छतां जो अहंकार न घटे तो सर्व कायक्लेश मात्र छे, अहंकारथी संयम नाश पामे छे. पछी तो ते त्रणमांना एक मुनिए निश्चय कर्यो के-'आगामी चातुर्मास कोशाने त्यां करवुं.' एथी आठ मास पछी सिंहगुफावासी मुनिए कोशाने त्यां चातुर्मास रहेवानी मागणी करी. तेने गुरुए घणी रीते समजाव्या, छतां अवज्ञा करीने ते त्यां गया. कोशा तेमना आगमननुं कारण समजी गई अने 'स्थूलभद्रनी स्पर्द्धाथी आवेला मुनिना संयमनुं श्राविका तरीके मारे युक्तिथी रक्षण करवुं जोईए.'-एम विचारी उभी थई, तेणीए तेमने वन्दन कर्युं अने चित्रशाळामां उतार्या. पछी तेमने षड्रस भोजन वहोराव्युं अने परीक्षा करवा कोशा

मध्याह्न पछी मुनि पासे आवी. तेने जोतां ज मुनिने विकार थयो अने ते भोगनी प्रार्थना करवा लाग्या. कोशाए मुनि पासे द्रव्यनी मागणी करी, त्यारे द्रव्य न होवाथी मुनि करगरवा लाग्या. कोशाए 'नेपालनो राजा प्रथम वार आवेला साधुने रत्नकम्बलनुं दान करे छे, माटे त्यां जई ते लई आवो.'-एम कह्युं. वर्षाकाळमां पण मुनि त्यां गया अने विहारादिनां आकरां दुःखो वेठीने रत्नकम्बल लई पाछा आव्या. पछी ते रत्नकम्बल कोशाने आपी अने कोशाए स्नान करी तेनाथी शरीर साफ करी तेने गटरमां फेंकी दीधी. ते जोई आश्चर्य पामेला मुनिए कह्युं के -'आवी किंमती रत्नकम्बल गटरमां केमा नांखी दीधी ?' कोशाए कह्युं के-'तमे अमूल्य संयमरत्नने विषयनी गटरमां फेंकी रह्या छो, तो में रत्नकम्बल नांखी दीधी तेमां शुं पूछो छो ?' ते सांभळी मुनिने भान आव्युं. मुनिए कोशानो उपकार मानी तेनी क्षमा मागी अने गुरु पासे आवी स्वमुखे कह्युं के-

'स्थूलभद्रजी ए सर्व साधुओमां एक ज महात्मा छे, गुरुए तेओने दुष्कर-दुष्करकारक कह्या ते योग्य ज छे. फूलोना, फळोना, सुरापानना, मांसाहारना अने स्त्रीसंभोगना स्वादने

अनुभववा छतां तेमां जे फसाता नथी, ते साचा दुष्कर-दुष्करकारक छे, तेवा महात्माओने वन्दन हो !' पछी प्रायश्चित्त करीने ते संयममां द्रढ-स्थिर थया. एकदा राजाए प्रसन्न थईने एक रथकारनी मागणीथी कोशाने तेनी साथे भोग भोगववा आज्ञा करी. राजानी आज्ञाथी कोशाए रथकारने राख्यो, पण तेनुं हृदयथी सन्मान न कर्युं. रथकारनी सामे तेणी प्रतिदिन स्थूलभद्रजीना गुण गावा लागी. त्यारे रथकारे पोतानी बाणकळाथी तेणीने प्रसन्न करवा दूरथी आम्रफळनी लुंब उपर बाण फेंकी तेने विंधी, पछी बीजुं बाण फेंकी ते बाणनी साथे जोड्युं-एक अनेक बाणोनुं अनुसंधान करीने दूरथी ते आम्रफळनी लुंब ग्रहण करी. ते वखते कोशाए तेनो मद उतारवा सर्षवना ढगला उपर सोय अने सोय उपर फूल मूकी तेनी उपर नृत्य कर्युं अने स्थूलभद्रनी प्रशंसा करती तेणी बोली के-

'आंबानी लुंब तोडवी दुष्कर नथी अने सर्षव उपर नाचवुं ते पण दुष्कर नथी. दुष्कर तो ते छे के-योगी महात्मा स्थूलभद्र स्त्रीरुपी वनमां वस्या छतां लेपाया नहि. पर्वत उपर, गुफामां, निर्जन प्रदेशमां के वनमां रहीने मोहने वश करनारा हजारो थया छे, परंतु

अति रम्य चित्रशाळामां अने वेश्याना सहवासमां रहीने कामने जीतनारा तो एक ज स्थूलभद्र छे, के जे अग्निमां प्रवेश करवा छतां दाझया नहि, काजळनी कोटडीमां रहेवा छतां डाघ लाग्यो नहि, खड्गनी धार उपर चालवा छतां भेदाया नहि अने काळा सर्पना बीलमां रहेवा छतां डसाया नहि, अर्थात् तेओए एवुं दुष्कर-दुष्कर कार्य कर्युं.

'रागी वेश्या, ते पण सदा आज्ञाधीन, षड्रस भोजन, मनोहर चित्रशाळा, रुपवंत मोहक शरीर, यौवन वय, वर्षाऋतुनो समय, वगेरे कामने उद्दीपन करनार सर्व निमित्तोमां रहीने जेणे कामने जीत्यो, ते युवती कोशाने प्रतिबोध करवामां कुशळ श्री स्थूलभद्र मुनिने हुं वंदन करुं छुं.' कामने उद्देशीने कविओ श्री स्थूलभद्रना सत्त्वनी प्रशंसा करतां कहे छे के-

'हे काम ! स्त्री तारुं मुख्य शस्त्र, वसंतऋतु, कोयलनो टहुकार, पंचम राग, चन्द्र वगेरे तारा सुभटो, समर्थ महादेव, ब्रह्मा अने विष्णु तारा सेवको, छता एक मुनिए तने केम हराव्यो ? शुं नन्दिषेण, आर्द्रकुमार अने रथनेमि जेवा तने स्थूलभद्र जणाया ? एटलुं

तुं न समज्यो के-श्री नेमि प्रभु, जंबूकुमार अने सुदर्शननी जेम आ चोथो मने हरावशे? खरेखर ! श्री नेमिनाथ करतां पण श्री स्थूलभद्रनुं पराक्रम अपेक्षाए विचारणीय छे. श्री स्थूलभद्र एक ज कामविजेता महा सुभट छे, कारण के-श्री नेमिनाथे गिरनार उपर जईने कामने जीत्यो, त्यारे श्री स्थूलभद्रे तेना घरमां पेसीने जीत्यो-एम अमो मानीए छीए.' ईत्यादि कोशा पासेथी सांभळीने रथकार आश्चर्य पाम्यो अने कोशाना उपदेशथी वैरागी बनी भोगने तजीने ते साधु थयो. जगतमां मोटुं बळ वैराग्यनुं छे. जेना रागमां आज सुधी अनेकनां सत्त्व अने शियळ नाश पाम्यां हतां ते कोशाए वैराग्यना बळे कामीपुरुषोने पण वैरागी अने त्यागी बनाव्या.

अन्यदा बार वर्षनो दुष्काळ आव्यो, तेथी साधुओने पण भिक्षा दुर्लभ बनवाथी भिन्न भिन्न प्रदेशोमां विचरवुं पड्युं अने पठन-पाठननो योग तथा आहार न मळवाथी श्रुत घणुं विस्मृत थयुं. दुष्काळ पूर्ण थया पछी पाटलीपुत्रमां श्रमणसंघ अेकत्रित थयो अने ते काळे श्री भद्रबाहुस्वामी चौदपूर्वी होवाथी पांच सो साधुओने तेओनी पासे भणाववानी गोठवण

करी. श्री भद्रबाहुस्वामी त्यारे महाप्राणायाम ध्याननी साधना करता हता, तो पण दररोज सात वाचनाथी तेओने भणाववा लाग्या. साधुओने तेटलो पाठ ओछो पडवाथी उद्विग्न थई धीमे धीमे भणता बंध थया, मात्र एक ज श्री स्थूलभद्रजी बे वस्तु न्यून दश पूर्व सुधी भण्या. पछी एकदा यक्षा वगेरे तेओनी सात बेनो जे दीक्षित थयां हतां, ते साध्वीओ वंदन करवा आव्यां. ज्ञानथी तेओने आवतां जाणीने, पोतानी ज्ञानशक्ति जणाववा श्री स्थूलभद्रजीए सिंहनुं रुप धर्युं. साध्वीओ श्री भद्रबाहुसूरिने वन्दन करीने बीजे बेसीने भणता श्री स्थूलभद्रजीने वन्दन करवा त्यां गयां, त्यारे सिंहने जोईने दुभायां अने तेओए श्री भद्रबाहुस्वामिने ते जणाव्युं. आथी तेओए श्रुतना उपयोगथी तेनुं स्वरुप जाणी लीधुं अने 'स्थूलभद्र त्यां ज छे.'-एम कही पुनः साध्वीओने त्यां पाछां मोकल्यां. ते वेळा श्री स्थूलभद्रजीए मूळ रुप कर्युं हतुं, तेथी तेओने वांदीने साध्वीओ स्वस्थाने गयां. पछी श्री स्थूलभद्रजीने ज्ञाननुं अजीर्ण-मद थवाथी, 'तुं अयोग्य छे.'-एम कही गुरुए वाचना न आपी. श्री स्थूलभद्रजीए क्षमा मागी, छतां गुरुए न मान्युं. त्यारे श्रीसंघने तेओए विनंति

करी अने श्रीसंघे श्री भद्रबाहुस्वामिने कह्युं के-'हवे श्रीसंघमां वाचना आपो.' त्यारे श्री भद्रबाहुसूरिए 'हवे ज्ञाननो पचावनार योग्य आत्मानो अभाव थशे, माटे तारे बीजाने आ ज्ञान आपवुं नहि.'-एम कहीने श्री स्थूलभद्रजीने शेष चार पूर्वो मूलसूत्रथी भणाव्यां, पण अर्थ न भणाव्या. कह्युं छे के-

एम छेल्ला श्री जंबूस्वामी केवली पछी आ. श्री प्रभवस्वामी, श्री शय्यंभव, श्री यशोभद्र, श्री संभूतिविजय, श्री भद्रबाहुजी अने श्री स्थूलभद्रजी - ए छ श्रुतकेवली एटले संपूर्ण चौदपूर्वी थया.

गौतमगोत्री श्री स्थूलभद्रजीना बे पट्टधर एक एलापत्यगोत्री आर्य महागिरिजी, बीजा वासिट्ठगोत्रीय आर्य सुहस्तिसूरिजी थया. तेओनुं स्वरुप आ प्रमाणे छे. श्री महागिरिजी ते काळे श्री जिनकल्पनो विच्छेद थवा छतां विशिष्ट कर्मनिर्जरा करवा श्री जिनकल्पनो अभ्यास करता हता. तेथी श्री जिनकल्पना नियम प्रमाणे भोजननो काळ वीत्या पछी वधेला निरस-विरस आहार माटे तेओ फरता. एकदा श्री सुहस्तिसूरिजीनी देशनाथी

वसभूति नामे एक धनिक प्रतिबोध पाम्यो. तेणे स्वजनोने प्रतिबोध करवा आर्य सुहस्तिसूरिजीने पोताने घेर आमंत्र्या, तेथी तेओ तेने घेर आवी देशना आपता हता. ते वेळा श्री महागिरिजी भिक्षार्थे फरता त्यां आवी तरत पाछा फर्या. श्री महागिरिजीने जोईने श्री सुहस्तिगिरिजी आसनथी उभा थई गया अने तेओने प्रणाम कर्यो. तेथी वसुभूतिए 'ते कोण छे ?'-एम पूछवाथी आर्य सुहस्तिसूरिजीए श्री महागिरिजीना उत्कट त्याग-वैराग्य वगेरेनी प्रशंसा करी, तेओने ओळखाव्या अने उच्छिष्ट वगेरे आहार केवी रीते ले छे ? ते समजाव्युं. तेथी वसुभूतिए तेओने दान देवानी इच्छाथी स्वजनोने समजाव्युं के-'आ महात्मा पधारे त्यारे, आ आहार मारे नथी वापरवो, वगेरे परस्पर बोलीने भोजन आपणे त्यां निरुपयोगी छे-एम तेओना सांभळतां कहेवुं. एथी तेओ ते लेशे अने आपणने मोटो लाभ थशे.' बीजे दिवसे आर्य महागिरिजी पधार्या त्यारे घरना माणसोए ते प्रमाणे कर्युं. परंतु 'इरादापूर्वक आम बोले छे.'-एम समजी आर्य महागिरिजी पाछा फर्या अने उपाश्रये जई 'पोतानी प्रशंसा करीने भिक्षा दोषित करावव बदल आर्य सुहस्तिसूरिजीने ठपको

आप्यो. एथी आर्य सुहस्तिसूरिजी नमी पड्या अने 'पुनः एवुं नहि करुं.'-एम कही खमाव्या. लेश मात्र दोष विनाना शुद्ध आहारथी निर्वाह करनारा आवा महापुरुषोने क्रोड क्रोड वार वन्दन करीए, के जेओए प्राणना भोगे पण श्री जिनकथित आचारोनुं पालन करी वारसामां श्रीसंघने ते आचाररुपी धन आप्युं छे.

एकदा बार वर्षीय दुष्काळ प्रसंगे श्री सुहस्तिसूरिजी कौशाम्बिमां पधार्या. त्यां तेओना साधु भिक्षार्थे गया, त्यारे एक रंक भूखे टळवळतो तेमनी पाछळ गयो. साधुओने गृहस्थोए उत्तम भिक्षा आपी, ते जोईने रंके साधुओ पासे भोजन माग्युं. साधुओए कह्युं के-'भोजनना मालिक अमारा गुरु छे.' तेथी ते पाछळ पाछळ गुरु पासे गयो अने श्री सुहस्तिसूरिजी पासे भोजन माग्युं. तेओए श्रुतज्ञानथी भाविमां थनार उपकार जाणीने कह्युं के-'तुं दीक्षा ले तो भोजन आपी शकाय, गृहस्थने भोजन आपवानो अमारो कल्प नथी.' ते सांभळीने 'भिक्षा विना भूखे मरवुं ए करतां दीक्षानां कष्टोथी पण भोजनादि मळे तो शुं खोटुं ?'-एम वीचारीने ते रंके दीक्षा आपवा कह्युं अने गुरुए तेने तरत दीक्षा आपी.

पछी स्वादिष्ट आहार अने अति भूख, एथी गळा सुधी तेणे आहार लीधो. गुरुए पण तेने संतोष थाय ते प्रमाणे आहार आप्यो. पछी तेने अजीर्ण थवाथी साधुओए वैयावच्च करी निर्यामणा करावी अने ते ज रात्रे मध्यम परिणामथी मनुष्यनुं आयु बांधीने तेणे काळ कर्यो.

मगधनी गादीए श्रेणिक राजाना पुत्र कोणिकना पुत्र उदायन पछी नव नन्द राजाओ थया. नवमा नन्द पछी मौर्यवंशीय चंद्रगुप्त थयो. पछी तेनो पुत्र बिंदुसार, तेनो पुत्र अशोकश्री अने तेनो पुत्र कुणाल थयो. अशोकश्रीए बाल्यवयथी ज तेने उज्जयिनीमां राखवा छतां शावकी माताना कपटथी ते अंध थयो हतो.

रंकनो जीव तेना पुत्र तरीके जन्म्यो अने अशोकश्रीए तेनुं संप्रति नाम राखी बाल्यवये ज तेने राज्य आप्युं. क्रमशः संप्रति यौवन पाम्यो, तयारे एकदा श्री सुहस्तिसूरिजी उज्जयिनी पधार्या अने तेओनी निश्रामां रथयात्रा नीकळी. तेमां श्रीसंघनी आगळ चालता अनेक साधुओथी परिवरेला श्री सुहस्तिसूरिजीने गोखे बेठेला संप्रतिए जोया. पछी 'पूर्वे

आवा साधुओने क्यांय में जोया छे.'-एम विचारतां तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं अने 'पोताना पूर्वजन्मना गुरु छे.'-एम जाणी शीघ्र आवीने गुरुने ते नमी पड्यो. पछी गुरुने पूछ्युं के-'आप मने ओळखो छो ?' गुरुए पण श्रुतज्ञानथी तेनो पूर्वभव जोईने कही संभळाव्यो. संप्रतिए तेथी प्रसन्न थई, तज्ञभावे गुरुने विनंति करी के-'आप मारा पूर्वजन्मना उद्धारक छो, आ राज्य अने संपत्ति सघळुं आपनी कृपाथी ज मळ्युं छे, माटे हुं आपनो ऋणी छुं. पूर्वनी जेम आ जन्ममां पण योग्य धर्म आपी मारो उद्धार करो !' पछी गुरुना उपदेशथी संप्रति सम्यक्त्व सहित बार व्रतोने उच्चरी गुरुनो परम भक्त महा श्रावक थयो. गुरुने ते वस्त्र, पात्र अने भोजन लेवा प्रार्थना करतो, पण राजपिंड अकल्प्य होवाथी गुरु तेनो निषेध करता. आथी संप्रतिए वस्त्र, पात्र, अन्न, दहीं, दूध, मिठाई वगेरेना वहेपारीओने गुप्त रीते जणाव्युं के-'आ साधुओने जे जे वस्तु उपयोगी होय, ते ते वस्तु विनामूल्ये आपवी अने तेनुं मुखमांग्युं मूल्य अमारो भंडारी आपशे.' तेथी ए रीते वेपारीओ साधुओने आपवा लाग्या अने साधुओ निर्दोष समजीने लेवा लाग्या. ए सघळुं जाणवा छतां गुरुए

शिष्योना रागथी तेनो निषेध वधार्यो, त्यारे आर्य महागिरिजीए आर्य सुहस्तिसूरिजीने कह्युं के-'दोषित आहारादि लेतां साधुओने केम तमे वारता नथी ? तेओए कह्युं के-'यथा राजा तथा प्रजा.' राजानी जेम लोक भक्त छे, तेथी दान आपे छे.' मायायुक्त ऐ वचन सांभळीने कोपथी श्री महागिरिजीए क्ह्युं के-'एक सामाचारीवाळाओने सहभोजन थई शके. तमारो-अमारो मार्ग भिन्न छे. माटे आजथी भोजन वगेरे व्यवहार तमारी साथे नहि थाय.' ए सांभळीने श्री सुहस्तिसूरिजी नमी पड्या, तेओनी क्षमा मागी अने कह्युं के-'आजथी आवुं नहिं करुं.' त्यारे आर्य महगिरिजीए कह्युं के-'तारो दोष नथी. पूर्वे श्री वीर प्रभुए कह्युं छे के-'मारी परंपरामां श्री स्थूलभद्र पछी साधुओ सामाचारीना पालनमां मंद उत्साहवाळा थशे.'

संप्रति राजाए अनार्य देशोनो पण कर छोडी दीधो; पोताना माणसोने साधुवेष आपी, कृत्रिम साधु बनावी, त्यां मोकली, अनार्य प्रजाने पण साधुना आचार शिखव्या अने ते देशोने साधुना विहारयोग्य बनाव्या; सेवक राजाओने पण जैनधर्मी बनाव्या; गुरुना उपदेशथी

सवा लाख जिनमंदिरो, सवा क्रोड नूतन जिनबिंबो, छत्रीस हजार जीर्णोद्धार अने पंचाणुं हजार धातुनां बिंबो भराव्यां; सेकंडो, हजारो दानशाळाओ बंधावी; एम त्रण खंड पृथ्वीने धर्म तथा धर्मस्थानो वडे भूषित करी. आजे पण संप्रति महाराजनी भरावेली मूर्तिओनो महिमा श्रीसंघमां सर्वश्रेष्ठ छे.

आर्य सुहस्तिसूरिजीना वाघ्रापत्यगोत्रीय सुस्थित अने सुप्रतिबद्ध नामे बे पट्टधर थया. ते क्रोड सूरिमंत्रनो जाण करवाथी कोटि अने काकंदीमां जन्म थवाथी काकंदी तरीके प्रसिद्ध थया. अन्य आचार्यो कहे छे के-'कोटि अने काकंदी तेमनां मूळ नाम हतां अने तेओ क्रियानिष्ठ होवाथी सुस्थित तथा तत्त्वज्ञानी होवाथी सुप्रतिबद्ध कहेवाया.' ते बंनेना पट्टधर कौशिकगोत्रीय आर्य ईन्द्रदिन्न थया. ते श्री ईन्द्रदिन्ननी पाटे आर्य दिन्न थया. तेओना पट्टधर जातिस्मरण ज्ञानवाळा कौशिकगोत्रीय आ. श्री सिंहगिरिजी थया अने श्री सिंहगिरिजीनी पाटे गौतमगोत्रीय आर्य वज्र थया. तेओना पट्टधर उत्कौशिकगोत्रीय आर्य वज्रसेन थया अने तेमना आर्य नागिल, आर्य पौमिल, आर्य जयन्त अने आर्य तापस-एम चार पट्टधर थया.

ते प्रत्येकथी स्व-स्व नामनी शाखाओ चालु थई. एक आचार्यना भिन्न भिन्न शिष्योनी शिष्य-प्रशिष्यादि परंपराने शाखा कहेवाय, एक आचार्यना सघळा शिष्योनुं एक कुल कहेवाय अने एवा अनेक कुलोना समुदायने गण कहेवाय. आवा कुलो अने शाखाओ घणां थयां छे, पण वर्तमानमां ते जणातां नथी. तेमां लहिआओनो दोष होय, नामांतर थई गयां होय अथवा परंपरा तूटी गई होय, ते ज्ञानी जाणे.

हवे श्री कल्पसूत्रमां स्थविरालिनो विस्तार कह्यो छे ते कहीशुं. उपर श्री शय्यंभवसूरिना पट्टधर आ. यशोभद्र अने तेओना बे पट्टधर आ. भद्रबाहु तथा आ. संभूतिविजय कह्या. तेमां श्री भद्रबाहु चार शिष्यो स्थविर गोदास, स्थविर अग्निदत्त, स्थविर यज्ञदत्त अने स्थविर सोमदत्त काश्यपगोत्रीय थया. तेमां स्थविर गोदासथी गोदास नामे गण अने तेनी १. तामलित्ति, २. कोटिवर्षिका, ३. पुण्ड्रवर्द्धनिका अने ४. दासीखर्बटिका- ए चार शाखाओ नीकळी. बीजा आर्य सम्भूतिविजयना १. नन्दनभद्र, २. उपनन्दन, ३. तिष्यभद्र, ४. यशोभद्र, ५. सुमनोभद्र, ६. मणिभद्र, ७. पूर्णभद्र, ८. स्थूलभद्र, ९. ऋजुमति, १०.

जंबू, ११. दीर्घभद्र अने १२. पाण्डुभद्र - ए बार शिष्यो थया; तेम ज १. यक्षा, २. यक्षदिन्ना, ३. भूता, ४. भूतदिन्ना, ५. सेना, ६. वेणा अने ७. रेणा - ए स्थूलभद्रनी सातेय बहेनो तेओनी शिष्याओ थई.

तेमां श्री स्थूलभद्रजीना पट्टधर १. श्री महागिरिजी अने २. श्री सुहस्तिसूरिजी थया. श्री महागिरिजीना १. स्थविर उत्तम, २. स्थविर बलिस्सह, ३. स्थविर धनाढ्य, ४. स्थविर श्रीभद्र, ५. स्थविर कौडिन्य, ६. स्थविर नाग, ७. स्थविर नागमित्र अने ८. स्थविर रोहगुप्त कौशिकगोत्री षडुलूक थया. तेओए द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय - ए छ पदार्थोनी प्ररुपणा करवाथी 'षड्' अने गोत्र उलूक होवाथी षडुलूक कहेवाया. वळी उलूक अने कौशिक शब्दो अेकार्थिक होवाथी 'कौशिकगोत्री' पण कहेवाया.

तेओए जीव, अजीव अने नोजीव-एम त्रण राशिनी प्ररुपणा करवाथी, तेओना शिष्य-प्रशिष्याओनी त्रैराशिकी शाखा नीकळी. एम बन्युं के-वीर निर्वाणथी ५४४ मां वर्षे अन्य ग्रामथी अन्तरंजिकापुरीमां व्यन्तरना चैत्यमां रहेला पोताना गुरु श्री गुप्ताचार्यने वन्दन

करवा आवतां, वच्चे पोट्टाल नामना परिव्राजक साथे वाद करवा पडह वागतो सांभळी, श्री रोहगुप्त वाद करवानो स्वीकार करीने गुरु पासे आव्या अने तेमणे वादनी हकीकत गुरुने कही. गुरुए आ वाद करवो अनुचित मानवा छतां तेनो स्वीकार थई गयेलो होवाथी, प्रतिवादी परिव्राजक पासे विंछी, सर्प, उंदर, मृग, भुंड, कागडो अने शकुनिका विकुर्वी शके तेवी सात विद्याओ हती. आथी तेना प्रतिकार माटे अनुक्रमे मोर, नोळियो, बिलाडो, वाघ, सिंह, घुवड अने श्येन विकुर्वी शकाय तेवी सात विद्याओ रोहगुप्तने गुरुए आपी, तेमज ते उपरांत सर्व उपद्रवोने हरनारो रजोहरण पण आप्यो. ते लईने रोहगुप्त बलश्रि राजानी सभामां आव्यो. त्यां परिव्राजक साथे वाद शरु थयो अने परिव्राजके 'जीव-अजीव, सुख-दुःख' वगेरे बे बे वस्तु छे-एम पोतानो मत स्थाप्यो. तेना प्रतिकार माटे रोहगुप्ते 'देवो त्रण, अग्नि त्रण, शक्ति त्रण, स्वर त्रण, लोक त्रण, पदो त्रण, वगेरे त्रण त्रण पदार्थोनी सिद्धि करी. ते उपरांत तेमणे जीव, अजीव अने नोजीव - एम पण त्रण प्रकारो स्थाप्या. पछी परिव्राजकनी विद्याओनो गुरुए आपेली विद्याओथी तेमणे पराभव

कर्यो, त्यारे परिव्राजके रासभी विद्यानो प्रयोग कर्यो अने तेनो पण रजोहरणथी पराभव करीने तेमणे जय मेळव्यो. पछी राजाए आपेला म्यानामां बेसी श्री जैनशासननी प्रभावना करता ते महोत्सवपूर्वक गुरु पासे आव्या अने गुरुने तेमणे सघळुं कह्युं. त्यारे गुरुए कह्युं के-'वत्स - बधुं सारुं कर्युं, पण जीव, अजीव अने नोजीवनी प्ररुपणा सूत्रविरुद्ध करी, माटे त्यां जईने 'मिच्छामि दुक्कडं' दई आव. ऐ सांभळी रोहगुप्तने अहंकारथी विचार आव्यो के-'तेवी सभामां में स्वमुखे कहेलुं उत्सूत्र छे-एम केम कही शकुं ?' खरेखर ! अहंकार ज्यां सुधी न टळे त्यां सुधी ज्ञान उपकार करवाने बदले अपकार करे छे, माटे ज विनीतने ज्ञान आपवानुं शास्त्रविधान छे. रोहगुप्ते भूल न कबूलवाथी गुरुए राजसभामां तेनी साथे छ महिना वाद कर्यो. आखरे राजाए वादनो अंत लाववा कह्युं, त्यारे गुरुए 'कृत्रिक' नामनुं देवाधिष्टित दुकान, के ज्यां जगतना सर्व सत् पदार्थो देवो लावी हाजर करे छे, त्यां जईने नोजीवनी तेओए याचना करी, पण ते न मळवाथी जुठ्ठा ठरेला रोहगुप्तने गुरुए एक सो चुंमालीस प्रश्नो करीने निरुत्तर कर्यो. छतां आग्रह न छोडवाथी गुरुए कोपथी तेनुं मस्तक

मुंडीने संघबहार कर्यो. आथी ते छठ्ठो निह्नव थयो अने तेनाथी वैशेशिक दर्शन प्रगट थयुं. श्री कल्पसूत्रमां रोहगुप्तने आ. महागिरिजीना शिष्य कह्या छे अने श्री उत्तराध्ययन तथा श्री ठाणांगनी टीका वगेरेमां श्री गुप्ताचार्यना शिष्य कह्या छे, तेथी अमे अहीं ते प्रमाणे कह्युं छे. तत्त्व बहुश्रुतो जाणे. स्थविर उत्तर अने बलिस्सहथी उत्तर-बलिस्सह नामे गण अने तेनी १. कौशाम्बिका, २. सुप्तवार्तिका, ३. कौटुम्बायनी अने ४. चन्द्रनागरी - एम चार शाखाओ नीकळी.

आ. श्री सुहस्तिसूरिना १. आ रोहण, २. आ. भद्रयशाः, ३. आ. मेघगणी, ४. आ. कामर्द्धि, ५. आ. सुस्थित, ६. आ. सुप्रतिबद्ध, ७. आ. रक्षित, ८. आ रोहगुप्त, ९. आ. ऋषिगुप्त, १०. आ. गुप्त, ११. आ ब्रह्मगणी अने १२. आ. सोमगणी- ए बार मुख्य शिष्यो थया. प्रसिद्ध श्री अवन्तीसुकुमाल मुनिने पण आ. सुहस्तिसूरिए दीक्षा आपी हती. तेओना पहेला शिष्य आ. रोहणथी उद्देह गण नीकळ्यो. तेनी १. उदुम्बरार्जिका, २. मासपूरिका, ४. मतिप्राप्तिका, ४. पूर्णप्राप्तिका - ए चार शाखाओ नीकळी; तेमज १. नागभूत, २.

सोमभूत, ३. आर्द्रगच्छ, ४. हस्तलेप्य, ५. नन्दिक अने ६. पारिहासिकं – ए छ कुळो नीकळ्यां. बीजा शिष्य आ. भद्रयशाथी उडुपालित गण नीकळ्यो अने तेनी चम्पार्जिका, भद्रार्जिका, काकन्दिका अने मेखलार्जिका – ए चार शाखाओ नीकळी. तथा भद्रयशस्क, भद्रगुप्तक, अने यशोभद्रक, ए त्रण कुळ नीकळ्यां. चोथा शिष्य आ. कामर्द्धिथी वेशपालित गण नीकळ्यो. तेनी श्रावस्तिका, राज्यपालिता, अन्तर्राजिका अने क्षेमलार्जिका, ए चार शाखाओ तथा गणिक, मेखलिक, कामर्द्धिक अने ईन्द्रपूरक, ए चार कुळो नीकळ्यां. नवमा शिष्य आ. ऋषिगुप्तथी मानव गण नीकळ्यो, तेनी पण काश्यपार्जिका, गौतमार्जिका, वाशिष्ठिका अने सौराष्टिका, ए चार शाखाओ तथा ऋषिगुप्तिक , ऋषिदत्तिक अने अभिजयंत, ए त्रण कुळो नीकळ्यां. दशमा शिष्य आ. श्रीगुप्तथी चारण गण नीकळ्यो. तेनी हारितमालाकारी, सांकाशिकी, गवेधूका अने विद्यानगारी, ए चार शाखाओ नीकळी तथा वस्त्रलेप्य, प्रीतिधार्मिक, हारित्य, पौष्यमैत्रेय, मालिद्य, आर्यवेटक अने कृष्णसख, ए सात कुळो नीकळ्यां.

आ. श्री महागिरिजी अने आ. सुहस्तिना बे पट्टधर शिष्यो सुस्थित अने सुप्रतिबद्धथी कोटिक गण नीकळ्यो. तेनी उच्चनागरी, विद्याधरी, वज्री अने माध्यमिका, ए चार शाखाओ नीकळी तथा ब्रह्मलिप्यं, वस्त्रलिप्यं वाणिज्यं अने प्रश्नवाहकं, ए चार कुळो नीकळ्यां.

आ सुस्थित-सुप्रतिबद्धने स्थ. ईन्द्रदत्त (दिन्न), स्थ. प्रियग्रन्थ, स्थ. विद्याधरगोपाल, स्थ. ऋषिदत्त अने स्थ. अर्हदत्त, ए पांच शिष्यो थया. तेमां स्थ. प्रियग्रन्थ एकदा अजमेरनी नजीक सुभटपाल राजानी राजधानी हर्षपुरमां गया, त्या त्रणसो जिनमंदिरो, चारसो लौकिक मंदिरो, अढारसो ब्राह्मणोनां घरो, छत्रीसो वणिकनां घरो, नवसो आराम, सातसो वावडीओ, बसो कूवा अने सातसो दानशाळाओ हती. एकदा ब्राह्मणोए त्यां यज्ञमां बोकडानुं बलिदान आपवा मांड्युं, त्यारे श्री प्रियग्रंथकारसूरिए श्रावको द्वारा बोकडा उपर वासनिक्षेप कराव्यो. आथी अंबिकादेवीनो बोकडाना शरीरमां प्रवेश थयो अने बोकडो आकाशमां उडीने बोल्यो के-'हे ब्राह्मणो ! शुं तमे मने होममां नाखी हणशो ? आवो,

बांधो अने हणो. हुं जो तमारा जेवो निर्दय थाउं तो तमने क्षणमां हणी नाखुं, पण मारामां दया छे. अन्यथा, कोपथी हनुमाने राक्षसोना युद्धमां जे कर्युं ते हुं करुं !' तमारा शास्त्रमां भरतने उद्देशीने कह्युं छे के-'पशुना गात्रोमां जेटलां रोमछिद्रो होय छे, तेटला हजार वर्षो सुधी पशुघात करनारो दुःखी थाय छे.' युधिष्ठिरने पण कह्युं छे के-'जो कोई सुवर्णनो मेरु अथवा समग्र पृथ्वी दानमां आपे, तो पण एक जीवने अभयदान दे तेनी तुल्य न आवे.' मोटां पण दानोनुं फळ काळे क्षीण थाय छे, ज्यारे भयभीत जीवने आपेला अभयदाननुं फळ क्षय पामतुं ज नथी.' वगेरे सांभळीने ब्राह्मणोए पूछयुं के-'तुं कोण छे?' तेणे कह्युं के-'हुं अग्नि छुं अने बोकडो मारुं वाहन छे, तो तेने विना कारणे शा माटे हणो छो ? अहीं श्री प्रियग्रन्थसूरि पधार्या छे, तो तेओने शुद्ध धर्म पुछी तेने तमो स्वीकारो. जेम राजाओमां चक्री अने धनुर्धारीओमां धनंजय मुख्य छे, तेम सर्व सत्यवादीओमां श्री प्रियग्रन्थसूरि मुख्य छे. ते सांभळीने ब्राह्मणो त्यां गया अने तेमना मुखे शुद्ध धर्म समजीने तेओए स्वीकार्यो. स्थ. प्रियग्रन्थसूरिथी मध्यमा शाखा अने स्थ. विद्याधरगोपालथी

विद्याधरी शाखा नीकळी.

आ. ईन्द्रदिन्ननी पाटे स्थ. आ. दिन्न थया. तेमना बे शिष्यो आ. शान्तिश्रेणिक अने जातिस्मरणज्ञानवाळा आ. सिंहगिरि थया. तेमां आ. शान्तिश्रेणिकनी उच्चनागरी शाखा नीकळी. तेओना आ. श्रेणिक, आ. तापस, आ. कुबेर अने आ. ऋषिपालित - ए चार शिष्यो थया अने ते दरेकना नामे अनुक्रमे आ. श्रेणिया, आ. तापसी, आ. कौबेरी अने आ. ऋषिपालिका - एम एक एक शाखा नीकळी.

बीजा शिष्य आर्य सिंहगिरिना १. स्थविर आर्य समित, २. आर्य धनगिरि ३. स्थविर वज्रस्वामी अने ४. स्थविर आर्य अर्हदत्त ए चार शिष्यो थया. तेमां आर्य समित श्री वज्रस्वामीना गृहस्थ संबंधी मामा थता हता.

आर्य धनगिरिनो वृत्तांत :

अवंती देशना तुम्बवन गाममां एक धनाढ्यना पुत्र हता. ते बाल्यकालथी वैराग्यवाळा हता. ज्यारे युवान अवस्था पाम्या त्यारे तेमना माता-पिता गाममां जे सारी कन्या लागे

तेनी साथे मागुं करी आवता हता अने पछी धनगिरिने जणावता हता. एटले धनगिरि मा बापने खबर न पडे तेम ते कन्याना घरे जई खानगी वात करी आवता के तुं मारी साथे लग्न करवानी छो ? हुं तो दीक्षा लेवानुं छुं, आ सांभळीने तेमना गया पछी कन्या पोताना मातापिताने वात करे एटले माता-पिता तेमनी साथेनो विवाह फोक करे. आ रीते धनगिरि पोताना मा-बापने खबर न पडे ते रीते गामनी अनेक कन्याओनी साथे विवाह फोक करावता हता. तेमां एक वार माता-पिताए सुनंदा नामनी कन्या साथे सगपण नक्की करी धनगिरिने जणाव्युं तो ए रीते खानगी जई सुनंदाने मळी कह्युं के हं दीक्षा लेवानो छुं माटे मारी साथे लग्न करतां विचार करजे. आ सांभळी सुनंदाए कह्युं के तमारे जे करवुं होय ते करजो, हुं तो तमारी साथे ज लग्न करीश. आ सांभळी धनगिरि विचारे छे के मारुं भोगावली कर्म बाकी छे माटे मारे लग्न करवा पडशे एम विचारी लग्न कर्या छे. आमां विचारो के वैराग्य केवा प्रकारनो छे, संयम लेवानी भावना छतां माता-पिताने लग्ननी ना कही शकाती नथी अने माता-पिताना वचन खातर लग्न करवा पडे छे ज्यारे

आजे शुं स्थिति छे ?

आ रीते लग्न करी ज्यारे गर्भ रह्यो एटले विचारे छे के थोडा काळे दिकरो जन्मशे एटले एनी साथे रहेशे अने जिंदगी जीवशे माटे हवे हुं संयम लई मारुं साधी लउं. एम विचारी बे जीववाळी सुनंदाने मूकीने धनगिरिए संयमनो स्वीकार कर्यो.

ज्यारे गर्भकाळ पूर्ण थतां सुनंदाए पुत्रने जन्म आप्यो. ए पुत्रनुं मुख जोईने आजुबाजु रहेनार पाडोशीओ वातो करतां बोली के आ बाळक केवो रुप संपन्न छे, जो एना बापे दीक्षा न लीधी होत तो आजे केटलो सारो जन्मोत्सव करत. आ शब्दो ते बाळके ध्यानपूर्वक सांभळ्या अने विचार करवा लाग्यो के मारा पिताए दीक्षा लीधी छे एम ध्यानमां मग्न थतां जातिस्मरणज्ञान पेदा थयुं. शास्त्रे कह्युं छे के वैरागी जीवोनां संतान पण प्राय:वैरागी जन्मे छे. आ विरागना कारणे पुत्रे पण दीक्षा लेवानो निर्णय कर्यो. पछी जाण्युं के मारा उपर मारी मातानो राग घणो विशेष छे तो ते तुटे नहि तो मने दीक्षा मळे नहि माटे ते राग तोडवा शुं करवुं ? एम विचारे छे. विचारीने निर्णय कर्यो के जो मानो

राग तोडवो होय तो भुख लागे त्यारे स्तनपान करी लेवुं अने बाकीना समयमां आखो दिवस रोवानुं चालु राखवुं. मा उंघे ते पहेला उंघी जवुं अने उठे ते पहेलां उठी जवुं आवो निर्णय करीने रोवानुं शरु कर्युं. मा तेने छानो राखवा माटे बधी जातना उपायो करे छे. पण दीकरो छानो रहेतो नथी. आ रीते रोज रोता रोता छ महिना पसार थया अने मा कंटाळी गई. अने नक्की कर्युं के ज्यारे एना बाप साधु आवे एटले दीकराने आपी दउं मारे राखवो नथी. आ निर्णय आजुबाजु पाडोसणने जणाव्यो. छ महिना बाद धनगिरि महात्मा पोताना गुरुनी साथे ए गाममां गीतार्थ थईने पधार्या. भीक्षा माटे गुरुनी आज्ञा लई नीकळे छे त्यारे गुरुए कह्युं के आजे सचित्त भिक्षा के अचित्त भिक्षा जे मळे ते लावजो. आजे तमने मोटो लाभ थशे माटे जे कल्पे एवुं होय ते लावजो. एम गुरुना आशीर्वाद लई बे महात्मा सुनंदाना घरे गया त्यारे पडोशमां रहेती स्त्रीओ पण त्यां आवी. पछी सुनंदाए पुत्रने आर्य धनगिरिनी सामे धर्यो. अने कह्युं के तमारा पुत्रने आज सुधी में संभाळ्यो, हवे हुं कंटाळी छुं माटे तमे तेने लई जाओ. आर्य धनगिरिए कह्युं के तने

पाछळथी पश्चात्ताप थशे माटे विचार कर. आपेलो पुत्र पाछो नहि मळे एम समजीने आपवो होय तो साक्षीपूर्वक आप ! तो पण कंटाळेली सुनंदाए पडोसणनी साक्षीए पुत्रने धनगिरिने आप्यो त्यारे धनगिरिए पुत्रने झोळीमां नांख्यो, जेवो झोळीमां पुत्र पड्यो के तरत ज रोतो शांत थई गयो अने ते लईने मुनिओ गुरु पासे आव्या. बाळकने हाथमां लेतां वजन लागवाथी तेनुं वज्र एवुं नाम पाड्युं. गुरुए कह्युं के वज्र जेवो भारे आ बाळक भविष्यमां संघनो आधार बनशे.

वज्र बालक होवाथी साध्वीओने सोंप्यो अने साध्वीओए श्राविकाओ द्वारा तेनुं पालन कराव्युं. पूर्वजन्मना क्षयोपशमथी एटले जातिस्मरण ज्ञान तथा ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशम भावथी बाळक छतां पदानुसारीणी लब्धिना क्षयोपशमथी साध्वीओना मुखे सूत्र पाठ सांभळीने त्रण वरसनी उंमरे अग्यार अंग भण्यो. श्राविकाओ तेना गुणोने जोईने पोताना पुत्रथी अधिक प्रीति वडे तेने संभाळती अने बाळक पण ऋजुभावे एटले सरळ भावे क्रीडा करी आनंद आपतो. आ जोईने तेनी माताए पुत्रनी मागणी करी. साध्वीजीओए

कह्युं के आ तो गुरुभगवंतनी थापण छे. अमाराथी कई रीते अपाय ? थोडा वर्षो पछी आचार्य भगवंत विहार करतां करतां त्यां पधार्या. अने तेमनी पासे पुत्रनी मांगणी करी आचार्य भगवंते कह्युं के तें पाडोशणनी साक्षीए आपेल छे माटे पाछो न अपाय ! आथी लोक संमतिथी पुत्रने पाछो अपाववा सुनंदाए राजाने विनंती करी. राजा पण सुनंदाना पक्षमां छे. आखुं गाम पण सुनंदाना पक्षमां छे, मात्र एक भगवानना संघमां गणातां श्रावक अने श्राविकाओ साधुओना पक्षमां रहेला छे. आवा वखते संघ क्यां उभो रहे ? ए वीचारो! राजाना बोलवाथी आचार्य भगवंत साधुभगवंतो अने संघना अग्रेसरो राजसभामां वज्रकुमारने लईने गया अने सुनंदा पण राजसभामां पोतानी पासे जेटली सामग्री हती ते लईने आवेली छे. तेना पक्षमां गामना बधाय लोको छे अने आचार्यना पक्षमां मात्र संघ छे. राजाए एक बाजु आचार्योंने अने संघने बेसाडयो. अने एक बाजु सुनंदा अने गामनुं लोक छे. वचमां वज्रकुमारने बेसाड्यो छे. राजाए कह्युं के जन्म आपनार मा पहेली छे, तेनो उपकार छे, माटे पहेला मा वज्रकुमारने बोलावे, जो ते आवे तो खुशीथी लई जाय. संघे संमति

आपेल छे. आ रीते नक्की थतां मा दीकराने बोलाववा घणो प्रयत्न करे छे. जेटला रमकडां लावेल, खावानी चीजो लावेल ते बधी बतावीने ललचाववा प्रयत्नो करे छे छतां वज्रकुमार जराय उंचुं जोतो नथी. एटले मानी पासे छेल्लामां छेल्लुं शस्त्र रोवानुं हतुं तो त्यां एवी रीते कल्पांत करे छे के जेना प्रतापे राजानी आंखमां अने गामना लोकोनी आंखमां आंसु वही जाय छे तो पण वज्रकुमार नीचुं जोईने बेठो छे. अने आंखनुं पोपचुं पण उंचुं करतो नथी विचार करे छे के जो अत्यारे माना रागे जो मा पासे जाउं तो भविष्यमां माने संयम अपावीने तेनो उद्धार करवो छे ते थई शकशे नहि. माटे रागना कारणे भले मा दुःखी थाय, भविष्यमां जरुर सुखी थशे एम विचारी बेसी रह्यो छे. ज्यारे वज्रकुमार कांई बोलतो नथी एटले राजा माने कहे छे के बोलो हवे आचार्य भगवंतने विनंती करवा कहुं ? आ दीकरो साधु थवा जन्मेलो छे एम लागे छे. ज्यारे मा ऐ विनंती करवा कह्युं एटले राजाए आचार्य भगवंतने बोलवानुं कह्युं एटले आचार्य भगवंते कह्युं के वज्रकुमार तारी माए जे बताव्युं तेमांनुं अमारी पासे कांई नथी उभा करीने कष्ट वेठवानी भावना होय तो अमारी

पासे आ ओघो छे ते लई ले. त्यारे वज्रकुमार ते ओघो लई भर सभामां नाच्यो छे.

ज्यारे आठ वर्षनी उंमर थई त्यार पछी संयम आपेल छे ते वखते हर्षित थयेला मुनिओ वज्र मुनिने उपाश्रये लाव्या. एकदा उज्जयिनी जतां मार्गे आकरी वृष्टि थई अने गुरुए सर्व साधुओ साथे कोई सुरक्षित स्थाननो आश्रय लीधो. त्यारे वज्रमुनिना पूर्व देवभवना मित्र देवोए तेमनी परीक्षार्थे एक आवास विकुर्व्यो अने वणिकनां रुप विकुर्वी भिक्षार्थे गुरुने निमंत्रणा करी. गुरुए एक मुनि साथे वज्रस्वामीने मोकल्या, पण फूसारतुल्य झीणी वृष्टि चालु होवाथी ते पाछा फर्या. पछी देवोए वृष्टि अटकावीने विनंति करवाथी ते पुनः गया, पण त्यां कोळापाकनुं दान देता जोईने, तेमणे द्रव्य, क्षेत्र काळ अने भावथी विचार कर्यो के-'आ क्षेत्रमां आ काळे आ आहार संभवे नहि, माटे आ देवर्पिंड छे.' ते साधुने न कल्पे एम समजी ते पाछा फर्या. तेथी देवोए वज्रस्वामी प्रत्ये प्रसन्न थईने तेमने वैक्रियलब्धि' नामनी विद्या आपी. पुनः एकदा जयेष्ठ मासमां पूर्वेनी जेम माया करीने देवोए तेमने धेबर लेवा विनंति करी, त्यारे पण देवर्पिंड समजीने ते न लेवाथी

प्रसन्न थईने देवोए तेमने बीजी आकाशगामिनी विद्या आपी.

एकदा आर्य सिंहगिरिजीए वज्रस्वामिने पदानुसारिणी लब्धि वगेरे विशेष क्षयोपशमवाळा जाणीने, अगियार अंगो उपरांत पोताने ज्ञान हतुं तेटलो दृष्टिवाद पण भणाव्यो अने पछी श्री भद्रगुप्ताचार्य पासे दश पूर्व भणवा मोकल्या. ते काळे बीजा दशपूर्वी न हता अने वज्रस्वामी विना अन्य दश पूर्वने भणी शके तेवा साधु पण न हता, गुरुआज्ञा रुप आशीर्वाद लईने श्री वज्रस्वामी उज्जयिनी गया. ते वखते श्री भद्रगुप्ताचार्यने स्वप्न आव्युं के-'आजे मारा हाथमांथी एक मुनिए भरेलुं क्षीरनुं पात्र लईने पूर्ण पान कर्युं.' तेथी अति प्रसन्न थईने ते स्वप्न शिष्योने जणाव्युं अने आ बाजु वज्रस्वामी आव्या. आथी अनुमान कर्युं के-'आ मुनि मारी पासेथी कोई मोटो लाभ मेळवशे.' पछी तेमने आववानुं कारण जाण्युं अने तेमने तेओ दश पूर्वो भणाववा लाग्या. थोडा काळमां ज श्री वज्रस्वामीए संपूर्ण दश पूर्वनुं ज्ञान मेळवी लीधुं अने ते भणीने गुरु पासे आव्या. गुरुए पण योग्य जाणी तेओने गण सोंप्यो अने अनशन करी गुरु स्वर्गे गया.

ते काळे पाटलीपुत्रमां धनशेठ हता अने ते पोतानी शाळामां साध्वीओने उतारो आपता. गुरुना गुणोनी स्तुति करवी ए मोटो स्वाध्याय कह्यो छे, तेथी साध्वीओ श्री वज्रस्वामीना गुणोनी स्तुति करतां, ते सांभळीने धनशेठनी पुत्री रुक्मिणीए श्री वज्रस्वामी सिवाय बीजाने नहि परणवानी प्रतिज्ञा करी अने पोताना पिताने श्री वज्रमुनि साथे परणावववा जणाव्युं. ते पछी एकदा विहार करता श्री वज्रस्वामी पाटलीपुत्र पधार्या. राजा, प्रजा वगेरे तेओने वन्दन करी, देशना सांभळीने कृतार्थ थया. पछी रुक्मिणीनी प्रेरणाथी धनशेठे वज्रस्वामीने क्रोडो सोनैया सहित पुत्रीने स्वीकारवा विनंती करी, पण युक्तिपूर्वक श्री वज्रस्वामीए विरागी बनावी दीक्षा आपी. ते वज्रस्वामी तद्दन बाल्यवये मोहसमुद्रने चोगळा पाणीनी जेम तरी गया. ते एक स्त्रीना रागरुपी नदीमां केम डूबे ? कह्युं छे के-

अन्यदा मोटो दुष्काळ पड्यो, त्यारे समयना जाण श्री वज्रस्वामीए संघनी रक्षानो विचार करी विद्याना बळे एक मोटो वस्त्रपट विकुर्व्यो अने पोतानी साथे श्रावकसंघने तेमां बेसाडी विमाननी जेम आकाशमार्गे ज्यां सुकाळ हतो, ते महापूरी नगरीमां लई गया. त्यां

प्रभुभक्तिना रागी श्रावकोए माग्युं मूल्य आपीने पुष्प-फळादि खरीदीने महोत्सवादि करी श्री जैनशासननी प्रभावना करी. बौद्धो एटलुं द्रव्य खर्ची शक्या नहि, तेथी तेओनी अपभ्राजना थई. पछी श्री पर्युषणा पर्व आव्युं, त्यारे राजा बौद्ध होवाथी तेणे माळीओने श्री जिनमंदिरोमां पुष्पो आपवा निषेध कर्यो. एम फूलो न मळवाथी श्रावकोने घणुं दुःख थयुं. तेथी तेओए विनंति करवाथी शासनप्रभावना माटे श्री वज्रस्वामी आकाशमार्गे माहेश्वरी नगरीए गया. त्यां तेओए पोताना मित्र माळीने फूलो एकत्र करवानुं कही पोते हिमवान पर्वत उपर श्रीदेवीना भुवनमां गया. त्यांथी तेओने श्रीदेवीए पोताना हाथमां राखवानुं एक मोटुं दैवीकमळ आप्युं. ते अने हुताशन वनमांथी बीजां वीश लाख फूलो लईने तिर्यग्जृंभक देवे विकुर्वेला विमानमां बेसी तेओ महोत्सवपूर्वक पाछा आव्या. श्रावकोने फूलो आपीने तेओए श्री जैनशासननी प्रभावना करी अने पछी आश्चर्य पामेला राजाने पण प्रतिबोध करी श्रावक बनाव्यो, वगेरे तेओना चारित्रनो महिमा घणो ज छे.

एकदा तेओ कफनो उपद्रव थवाथी, भोजन पछी औषधरुपे लेवा माटे कान उपर

राखेली सुंठने लेवी भूली गया अने प्रतिक्रमण अवसरे ते नीचे पडी. तेथी 'पोतानी स्मृतिओथी थई छे, माटे मृत्यु नजीक छे.'-एम तेओ समज्या अने बार वर्षना दुष्काळनो प्रारंभ थयो हतो, तेथी पोताना मुख्य शिष्य श्री वज्रसेनाचार्यने कह्युं के-

'जे दिवसे लाखना मूल्यवाळा आहारनी भिक्षा मळे, ते पछी बीजा दिवसे सुकाळ थशे.' एम कही शिष्य-प्रशिष्यादि साथे तेओने अन्य देशमां मोकल्या. थोडा साधुओने पोतानी साथे राख्या, पण दुष्काळने लीधे भिक्षा दुर्लभ थवावी, विद्याना बळे स्वयं आहार लावी साधुओने आपवा लाग्या अने तेओए कह्युं के-'बार वर्ष आ रीते दोषवाळो विद्यापिंड लेवो पडशे, तेनाथी संयमनी रक्षा थाय तो तेवो पिंड लईने पण जीवीए. अन्यथा जो संयमना परिणाम मलिन थाय, तो आहार साथे शरीरनो पण हमणां ज त्याग करवो जोईए.' साधुओ दोषित पिंडथी जीववा करतां अनशनने स्वीकारवा तैयार थया. त्यारे श्री वज्रस्वामी तेओने लई पर्वत प्रत्ये चाल्या. एक नाना मुनिने अनशन नहि पाळी शके-एम समजी साथे आववा निषेध कर्यो, छतां ते न रोकाया. त्यारे तेमने एक गामडामां

मार्ग भूलवीने साधुओ पर्वत उपर पहोंच्या. पछी बाळमुनिए 'इच्छा विरुद्ध पाछळ जवाथी गुरुने अप्रीति थशे.'-एम समजी पर्वतनी नीचे ज अनशन स्वीकार्युं अने मध्यान्हना तापथी तपेली शिला उपर तीव्र तापने शुभ ध्यानथी सहतां मीणनी जेम देह गळवाथी ते काळधर्म पामीने स्वर्गे गया. देवो तेमना मृतक कलेवरनो ओच्छव करवा आव्या, ते जाणीने 'बाळसाधु पण आत्महित साधी गया, तो अमे वृद्ध केम न साधीए ?'-एम विचारीने पर्वत उपर गयेला साधुओए पण उत्साहथी अनशन स्वीकार्युं. एम श्री वज्रस्वामी वगेरे सर्व अनशन करी आराधक भावने पामी स्वर्गे गया. ए जाणीने इन्द्र त्यां आव्या, मुनिओना अनशनथी पूज्य बनेला ते पर्वतने तेमणे रथमां बेसी प्रदक्षिणा करी अने भक्तिथी स्वदेहनी जेम वृक्षो वगेरेने पण नमाव्यां. त्यारथी ते पर्वत 'रथावर्तगिरि'-ए नामथी प्रसिद्ध थयो. आजे पण त्यां वृक्षो नमेलां ज होय छे.

श्री वज्रसेनसूरि पण ग्रामानुग्राम विहार करता एकदा सोपारकपुरे पधार्या. त्यां जिनदत्त नामे श्रावक अने तेनी शीलवती ईश्वरी नामे पत्नी महा श्राविका हती. तेओने

नागेन्द्र, चन्द्र, निवृत्ति अने विद्याधर नामे चार पुत्रो हता. बार वर्ष दुष्काळमां पण दानादि धर्मने करतां तेओनुं धन खुटी गयुं, त्यारे ईश्वरीए कह्युं के-'आज सुधी सुखपूर्वक जीव्यां, हवे दुःख क्यां सुधी सहीशुं ?' माटे झेर मिश्रित भोजन करीने समाधिथी अनशन करी श्री नमस्कार महामंत्रनुं ध्यान करवापूर्वक देहनो त्याग करीए. पति, पुत्रो वगेरे ए रीते आराधनापूर्वक देह छोडवा संमत थया. त्यारे ईश्वरीए लक्षमूल्यथी अन्न मेळवीने पकाव्युं अने तेमां नांखवा झेर तैयार कर्युं, परंतु ते ज अवसरे श्री वज्रसेनसूरि पधार्या. तेओने जोईने छेल्ले दान दईने जन्म सफळ करवा सर्वनी भावना जागी अने 'चित्त, वित्त पात्रनो आवो योग पुनः मळवो दुर्लभ छे.'-एम मानी सर्वनी संमतिथी तेओने आहारनुं दान कर्युं. पछी तेमणे सघळी हकीकत कही, त्यारे गुरुए कह्युं के-'अनशन करवानी जरुर नथी, सवारे सुकाळ थशे.' ते सांभळी सर्वे प्रसन्न थया. बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो आवी पहोंच्यां अने समग्र लोको प्रसन्न थया. पछी संघना आग्रहथी गुरु केटलाक दिवस त्यां रोकाया, ईश्वरीय श्री जिनमहोत्सवादि करी धर्मनी प्रभावना करी अने माता, पिता तथा

पुत्रो सर्व दीक्षित थया. पुत्रो ज्ञान-क्रियापूर्वक आराधना करी गीतार्थ थया अने ते प्रत्येकना नामनी एक एक शाखा चाली.

आर्य श्री वज्रस्वामी छेल्ला दशपूर्वी थया. तेमना स्वर्गवास पछी चार मध्यम संघयणो अने दशमुं पूर्व विच्छेद थयुं तथा तेमना शिष्योनी आ. वज्री नामे शाखा नीकळी.

आर्य सिंहगिरिजीना पट्टधर आ. समितथी आ प्रमाणे ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा नीकळी. आभीर देशमां अचलपुरनी पासे कन्ना अने बेन्ना बे नदीओनी वच्चे ब्रह्मद्वीप नामे द्वीप छे. त्यां पांच सो तापसो रहेता. तेमां एक तापस पादलेपनी शक्तिथी पगना तळिये चूर्णलेप करीने स्थळनी जेम जळमां चालतो अने दररोज ए रीते नदीमां चालीने अचलपुरमां भिक्षार्थे आवतो. तेने जोई लोको बोलत के-'अहो ! तापसोनी तपशक्ति केवी छे ? जैनोमां आवी तपशक्ति नथी.'-एम श्री जैनशासननी लघुता थवाथी श्रावकोए आ. समितसूरिजीने अलचपुर पधारवा आमंत्रण कर्युं, तेओ आव्या अने तापसनी वात कही. त्यारे गुरुए कह्युं के-'आ कोई विशिष्ट लब्धि नथी, मात्र पादलेपननी शक्ति छे.' पछी

गुरुना कहेवा प्रमाणे श्रावकोए ते तापसने पोताने घेर भोजन माटे निमंत्रण करी अमे भक्तिना बहाने तेना पग सारी रीते धोया. तेथी लेप धोवाई गयो अने तापसने चिंता तो थई, पण कैपट जाहेर थवाना भये तेणे मौन सेव्युं. पछी बाह्य आदरपूर्वक भोजन करावी तेनी साथे श्रावको पण नदीए गया. त्यां तापस घीट्ठाईथी नदीमां उतर्यो, पण बूडवा लाग्यो, एथी तेनी लघुता थई. ते वेळा आ. समित नदीकांठे आव्या अने लोकोने बोध करवा तेओए योगचूर्ण नदीमां नाखीने कह्युं के-'हे बेन्ना ! सामे पार जवा इच्छीए छीए.' एथी नदीना बे कांठा मळी गया अने पाणीना बे भाग थया, ते जोईने लोको आश्चर्य पाम्या. पछी आ. समितसूरि नदी वच्चे चालीने तापसोना आश्रमे गया अने तेओने प्रतिबोध करीने जैन साधु बनाव्या. आ तापसोथी ब्रह्मदीपिका शाखा नीकळी. छेल्ला चौदपूर्वी आ. श्री स्थूलभद्रजी पछी आ. महागिरि, आ. सुहस्तिगिरि, श्री गुणसुन्दरसूरि, श्री श्यामाचार्य, श्री स्कंदिलाचार्य, श्री धर्मसूरि, श्री रेवतिमित्रसूरि, श्री भद्रगुप्तसूरि, श्री गुप्तसूरि अने श्री वज्रसूरि - ए दश दशपूर्वधर युगप्रधानो थया.

श्री वज्रस्वामी पछी शिष्य-प्रशिष्यादिनी अनेक पाटो थई. तेमां एक आर्य तोसलीपुत्र थया. तेओनी पासे दीक्षा लईने जे श्री वज्रस्वामी पासे साडा नव पूर्व सुधी भण्या, ते आ. रक्षितसूरि थया. एम मनकने (?)· आ. समित पण थया. ईत्यादि श्री देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण सुधी स्थविरावली जाणवी. ते सर्व स्थविरो विशिष्ट गुणरत्नो रुपी धनवाळा हता. तेओनी शाखाओ तथा कुळो श्री नन्दिसूत्रमां, श्री आवश्यकमां अने श्री कल्पसूत्रनी स्थविरावलिमां कह्यां छे. ते सर्वना गुणो सांभळीने हर्षथी गद्‌गदित थई जवाय तेवा ते महापुरुषो थया छे.

अहीं आ. वज्रस्वामी पछी श्री कल्पसूत्रमां कह्या प्रमाणे स्थविरोनो क्रम कहीए छीए. आ. वज्रस्वामिना आ. वज्रसेन, आ. पद्म अने आ. रथ-एम त्रण पट्टधर थया. तेमां आ. वज्रसेनथी आ. नागिला, आ. पद्मथी आ. पद्मा अने आ. रथथी आ. जयन्ती नामे शाखा नीकळी. आ रथनी पाटे वत्सगोत्री आ. पुष्यगिरिजी, तेओनी पासे गौतमगोत्री आ. फल्गुमित्र, तेओनी पाटे वासिष्ठगोत्री आ. धनगिरि, तेओनी पाटे कुत्स्यगोत्री आ. शिवभूति,

आ. शिवभूतिनी पाटे काश्यपगोत्री आ. भद्र, तेओनी पाटे काश्यपगोत्री आ. नक्षत्र, तेओनी पाटे काश्यपगोत्री आ. रक्ष, आ. रक्षनी पाटे गौतमगोत्री आ. नाग, तेओनी पाटे वासिष्ठगोत्री आ. जेहिल अने तेओनी पाटे माढरगोत्री आ. विष्णु थया. आ. विष्णुनी पाटे गौतमगोत्री आ. कालक तथा तेओनी पाटे आ. सम्पलित अने आ. भद्र-ए बे गौतमगोत्री थया. ते बंनेनी पाटे गौतमगोत्री आ. वृद्ध थया अने तेओनी पाटे गौतमगोत्री आ. संघपालित थया. तेओनी पाटे काश्यपगोत्री आ. हस्ति, तेओनी पाटे सुव्रतगोत्री आ. धर्म, तेओनी पाटे काश्यपगोत्री आ. सिंह, तेओनी पाटे काश्यपगोत्री आ. धर्म अने तेओनी पाटे आ. शाण्डिल अंतेवासी थया. मतान्तरे आ. जंबू थया. आ. जंबू पछी आ. नन्दित, ते पछी आ. देशीगणी क्षमाश्रमण अने ते पछी अनुयोगधारक स्थिरगुप्त क्षमाश्रमण थया. ते पछी श्रमण कुमारधर्म अने ते पछी सूत्र अने अर्थरुपी रत्नोना समुद्र एवा श्री देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण थया; ते सर्व आचार्य भगवंतोने हुं त्रिविधे त्रिविधे प्रणाम करुं छुं.

एम आठमे वखाणे आदिचरित्र अने स्थविरावली कही. ए स्थविरोना गुणनो पार

पामी शकाय तेम नथी. निर्मळ केवळज्ञानी भगवंत ते गुणोने जाणे, अथवा श्री ज्ञानविमल नामना गुरु, के जेमणे आ ढाळ रची छे, ते तेओना गुणोनो पार पामी शके तेम नथी. (ढाळमां आठमा व्याख्यानमां आदिचरित्र लीधुं छे, तो पण भाषांतरमां अमे सुबोधिका टीकाना क्रम प्रमाणे आदिचरित्रने सातमा व्याख्यानमां अने स्थविरावलिने आठमा व्याख्यानमां लीधी छे.)

॥ अहीं श्री पर्युषणानुं कल्पधरना दिवसनुं आठमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं ॥

श्री कल्पसूत्र व्याख्यान ९ मुं

आ व्याख्यान श्री संवत्सरी महापर्वना दिवसे सवारमां सविशेष धूप, दीप वगेरे सामग्रीपूर्वक मोटा महोत्सवथी सांभळवुं, मूळ बारसांसूत्रना श्रवण जेटलुं बहुमान करवुं अने अमंगळ वर्जवुं. वांचनारे पण गावानी कळापूर्वक मधुर स्वरे वांचवुं.

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धांणं, नमो आगरियाणं, नमो उवझायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं ॥

एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाचं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं ॥

"अज्ञानतिमिरान्धानां, ज्ञानां जन शलाकया । नेत्रमुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ॥"

"नमः श्री वर्धमानाय, श्रीमते च सुधर्मणे । सर्वानुयोगवृद्धेभ्यो, वाण्या सर्वविदस्तथा ॥"

"वंदामि भद्रबाहु, पाईणं चरमसयलसुयनाणिं । सुत्तत्थकारमिसिं, दसाण कप्पे अ ववहारे ॥"

पीठिकानी ढाळ पहेली

पुण्यनी पोषणा, पर्व पर्युषणा, आवियां ईणि परे जाणीये ए ।
हियलडे हर्ष धरी, छट्ठ अट्ठम करी, ओच्छवे कल्प घेर आपीये ए ॥१॥
गुरु करे वाचना, सुणे सहु भविजना, कर्मनिकाचना पाचना ए ।
प्रथम जिनशासनने, ऋजु-जड प्राणीया, वीरना वक्क्र-जड बहुजना ए ॥२॥

त्रूटक- शुभमना सरळ ने दक्ष प्राणी, मध्यजिनना जाणीये,
तेह भणी बिहुंपरे नियत अनियत, कल्प चउ खट आणीये ।
कल्प दशविध कह्या मुनिनो, धर्मपूरव मानथी,
भद्रबाहुस्वामिभाषित सूत्र सुणो बहुमानथी ॥३॥

ढाळ- कल्पधर्म महातम, तृतीय रसायण परे, बहुगुण होय एहने सुणतां ए ।
नागकेतु परे, नाण लही उजलुं, पामीए शिवपद शाश्वतां ए ॥४॥

ईणि परे पीठिका कही कल्प मांडीए, पंचकल्याणक वीरनां ए ।
दशम देवलोकथी, आवीय उपना, त्रण नाणी जंबूना भरतमां ए ॥५॥

त्रूटक- तुरत माहणकुण्ठग्रामे, ऋषभदत्तद्विजनार ए, देवानंदा मध्य रयणी पेखे, सुपन दश ने चार ए ।
उत्तराफाल्गुनी चंद्रयोगे, शुकल छठ्ठ शुचिमासनी, सुपन वीतक कंत आगळ, कहे आवी आसनी ॥६॥

ढाळ- कहे तिहां ऋषभदत्त, आपणे घर होशे, सुत सवि शास्त्रनो पारगामी ।
लक्षण व्यंजन मान उनमानशुं, सुजश सौभाग्य गुण सयलधामी ॥७॥
वेदना भेद सवी जूजूआ दाखशे, गणित प्रमुखे जस नहि अ खामी ।
ते सुणी तहत्ति कही, गई य निज थानके, देवानंदा तस शिष नामी ॥८॥
ईण समे अवधिज्ञाने करी जोयतां, सोहमईन्द्र जिन देखीया ए ।
कार्तिक शेठनो जीव ए जाणीये, पूरवभव तेहनो भांखीये ए ॥९॥

त्रूटक- भाखियो प्रभुने रही सन्मुख, सिंहासनथी उतरी, शक्रस्तव कहे भाव आणी, सात आठ पग ओसरी ।
धर्मसारथी पदे सुणीए, कथा मेघकुमारनी, ज्ञानविमल प्रभुगुणनी व्याख्यान प्रथम ए अधिकारनी ॥१०॥

ढाळ बीजी - (पृथ्वी-पाणी-तेउ-वाउ-वनस्पति-ए पांच थावर कह्यां ऐ-ऐ देशी.)

शक्रस्तव कहे पूरण रोमांचित थई, भावि अतीत जिन मनधरी ए ।
पंचकल्याणके एम शक्र थुणे सदा, शक्रस्तव नाम तेह भणी ए ॥१॥
हवे चिंते मन ईन्द्र एह शुं नीपन्युं, एह, अच्छेरुं जाणीये ए ।
कोईक कालने अंते नीपजे एहवां, अचरिजकारी लोकने ए ॥२॥
तोए महारी भक्ति उत्तम ठाममां, गर्भपालटी मूकवो ए ।
तेडयो हरिणगमेषी सुर पायकधणी वात अच्छेरां दश कह्यां ए ॥३॥
जिनपद लहे उपसर्ग-स्त्री तिर्थंकरी, गर्भ पटलटो जाणीए ए ।
निष्फळ जिनउपदेश हरि धातकी गया, युगल नरक गति पामीयां ए ॥४॥
चमरो सोहम्मे जाय उत्कृष्ट तनुधणी, शत आठ एक समे सिझीया ए ।
रवि-ससी मूलविमाने वंदण आवीया, असंयत यति परे पूजीया ए ॥५॥

नीच कुले नवि होय जिन चक्री हरियुग, उच्च कुले सवि उपजे ए ।
कोईक कर्मप्रभाव आवी उपना, जनम नवि संभवे ए ॥६॥
भव सत्तावीश मांहे मरीचि त्रीजे भवे, गोत्रमदे ए बांधीयो ए ।
तेणे हेते थयुं एह, पण ए मूकवा खतियकुळ नरपति जिहां ए ॥७॥
क्षत्रियकुंड ग्रामे भूप सिद्धारथ, त्रिशला राणी तेहनी ए ।
थापो ए तस कूखे, तस बेटी तणो, गर्भ अछे ते तिहां ठगो ए ॥८॥
शीघ्र करो आदेश महारा वाहला, तहत्ति, करीने चालीयो ए ।
वैक्रिय निर्मळ रुप करी निज शक्तिथी, निराबाधशुं ते लहीए ॥९॥
थाप्यो त्रिशला कूखे ब्याशी दिन पछे, मानुं शुभ लग्न जोवा रह्या ए ।
त्रण ज्ञानी भगवंत आवी तिहां वस्या, आसो ज वदि तेरसी दिने ए ॥१०॥
सुंदर घर सुख सेजे सूती सुंदरी, सुपन चौद लहे मज्झिम निशि ए ।
गज वृषभ सिंह श्री दाम शशी रवि ध्वज घट, सरोदधि विमान रयण शिखी ए ॥११॥

सिंह प्रथम मुख मांहे पेखे पेसतो, अवर सवे ईम जाणीये ए ।
निरखी हरखे ताम कंत कहे सुणो, शूर-वीर सुत होयशे ए ॥१२॥
देवानंदा ताम देखे एहवुं, मुज सुहणां त्रिशला हरे ए ।
रुषभदत्त कहे एम न रहे रंक धरे, रयणनिधि परे एहवो ए ॥१३॥
वासघर सुखसेज अने वळी सुपनडां, सूत्रमांहे सवि वरणव्यां ए ।
उज्वल गज चउदंत रे एरावण समो, आवीने उभो रह्यो ए ॥१४॥
वृषभ लष्टपुष्ट देह रे तीखां शृंग छे, भ्रमरोपम सम लोयणां ए ।
सिंह उज्वल तीखी दाढ अने शुभ लक्षणो, उन्नत सौम्य सोहामणो ए ॥१५॥
लखमी कमळे वसंती हिमवंत पर्वते, पद्मद्रह छे अभिनवो ए ।
एक कोडी वीश लाख खट वलये मळी, चोथे लखमी देवता ए ॥१६॥
चार सुपनना अर्थ भांखी राशीए, सूत्र वखाण बीजुं थयुं ए ।
वडोकल्प दिन एम ओच्छवशुं करो, ज्ञानविमल गुरुमुख सुणी ए ॥१७॥

ढाळ त्रीजी - (देशी - चोपाईनी)

हवे दश सुपन वर्णना, सूत्रपाठ सुणीए एक मना । राजा मज्जन कौतुक करे, अंगे वस्त्रवि भूषण धरे ॥१॥
कल्पवृक्ष जिम फल्यो फूल्यो, बादलथी रवि नीकल्यो । तिम आवी बेठो आस्थान, तेडे कौटुंबिक पुरुष प्रधान ॥२॥
कहे बाहिर जे आस्थानशाल, लिंपी शुद्ध करो धूपाल । सिंहासन तिहां मांडो सार, जिहां बेसीजे लई परिवार ॥३॥
राणी सिंहासन अंतरे, परियची (पविरची) विच अंतर धरे । पूरवदिशि भद्रासन आठ, मंडावो सवि मेली ठाठ ॥४॥
तेणे तिम कीधुं धसमसी, ते निसुणी राजा थयो खुशी । कहे सुपनपाठक घेर जई, तेडी लावो तेने गहगही ॥५॥
जे अष्टांग निमित्तना जाण, डाह्या वृद्ध आचारप्रमाण । तेहवाने ते तेडण गया, नृप तेड्रयें रळिआयत थया ॥६॥
नाही पूजी घरना देव, कीधां तिलक तिणे सयमेव । उत्तरासंग जनोई धरे, नृपमिलण सवि संचरे ॥७॥
आव्या गढने सिंहदुवार, मिली एकठा करे विचार । जिम(जो) अणमिल्यां पांचसें सुभट, न लह्यां मान थया गहगट्ट ॥८॥
ते माटे सवि संपे थई, वृद्ध एकनी आणा लेई । बोलीजे तो लहीजे मान, जिहां संप त्यां श्रेय निदान ॥९॥
चिरंजीव जय जय भूपाळ, आशीर्वाद बोले गुणमाळ । आसन बेसण राजा दीए, फूल-फळादिक करमां लीए ॥१०॥
सुपन तणो भांख्यो वृत्तान्त, लब्ध अर्थ भांख्यो ईम तंत । मांहोमांहे विचारी कहे, निगमशास्त्रमां जेहवुं लहे ॥११॥

बहोंतेर सुपनां शास्त्रे लह्यां, तेमां बेंतालीस मध्यम कह्यां । त्रीश तेहमां उत्तम अछे, चौद विशेषे विस्तर रुचे ॥१२॥
जिन वा चक्री माता लहे, हरिमाता सग चउ बळ ग्रहे । मण्डिलिक एक लहे ए मांहे, शुभशूचक ए सुपन अथाहे ॥१३॥
दीठो सांभळ्यो ने अनुभव्यो, आधि व्याधि चिंताशुं मव्यो । मळमूत्रादि प्रकृतिविकार, दीठां सुपन फळे न लगार ॥१४॥
धर्मकर्मथी सुर सानिध्ये, अति पापोद्रेके अनविधे । एहथी सुपनां दीठां होय, प्राये तेह फळे सहु कोय ॥१५॥
थिरचित जीतेन्द्रिय शान्त, धर्मरुचि ने श्रद्धावंत । ईत्यादिक गुणनो जे धणी, फळे शुभाशुभ सुपनह त(भ)णी ॥१६॥
कुलदीपक ने वंशआधार, कीर्तिलाभ बळ भंडागार । होशे सुत जिनयनो राय, कहे चक्री के जिनवर थाय ॥१७॥
इस्यां वयणे हरख्यो राय, आपे धन बहु करी सुपसाय । चौद सुपनारथ ए समुदाय, चौदराज उपर शिव ठाय ॥१८॥
चउदंतो गज चउविध धम्म, जगपति सुरपति सेवित कम्म । भरतक्षेत्रे बोधबीज लावशे, वृषथी धर्मधुरा ठावशे ॥१९॥
कुदृष्टि श्वापदे भविवन भांजतुं, राखशे सिंहबळे ए छतुं । वरसीदान दे जिनपद लच्छी, भोगवशे लच्छी फल अच्छी ॥२०॥
शिर धरशे सवि एहनी आण, कुसुमदाम फलएह मंडाण । भविकुवलय बोधने शशी, भामण्डलभूषित रवि जिसी ॥२१॥
धर्मप्रसाद शिखर बेसशे, पूर्णकलश फल एह पामशे । ध्वजफल शोभा होयशे, धर्मध्वज चउदिशि सोहशे ॥२२॥
सुरनिर्मितकज पद ठावशे, सरोवर फळ इणिपरे भावशे । रत्नाकरदर्शन फल मान, केवलज्ञान रयण अहिठाण ॥२३॥

चउ सुर वैमानिक पर्यन्त, सेवित थाशे विमान फल कंत । रत्नराशि फल ए थायशे, रत्नादिक गढ त्रय वासशे ॥२४॥
शुद्ध स्वभाव कंचन शुद्धिकार, निर्धूम अग्निनो एह विचार । एहवां फल प्रगट भांखीयां, सुपनशास्त्र कीधां साखीयां ॥२५॥
निसुणी राजा रंज्यो घणुं, प्रीतिदान ते केतुं भणुं । निजघर पोहता सुपनपाठवी, भूपे वात स्त्रीने दाखवी ॥२६॥
सुपनपाठक आव्या जेटले, त्रीजुं वखाण थयुं तेटले । पण सुपनारथ आगळथी कह्यो, ज्ञानविमल गुरुथी जे लह्यो ॥२७॥

ढाळ चोथी - (देशी - 'शत्रुंजय मंडण.' - ए स्तुतिनी)

हवे ईन्द्र आदेशे धनद तणा जे देव; तिर्यम्भक नामे, नृपधर भरे नित्यमेव ।
धन-कणनी कोडी, होडी करे कुण तास; सप्तांग नृपतिबल, वाधे अति उल्लास ॥१॥
मनचिंते एहवुं, मात-पिता तेणी वार; ए जनमे देशुं, नाम वर्धमानकुमार ।
एम मनोरथ वधते, गर्भ वधे गुणवंत; तव एकदिन चिंते, मायभक्ति भगवंत ॥२॥
नवि हाले फरके, मानुं साधे कोई ध्यान; माह जीवन हेते रदसी करे कोई ताप ।
तव माताने मन प्रसर्यो शोक समुद्र; नवि खावे पीवे, चिंतातुर गतनिद्र ॥३॥
कंई वनदव दीधां, के भांज्यां बहुमाल; के सरोवर शोष्यां, के दीधां ऋषिआल ।

के तावडे नाख्या, जू मांकड ने लीख; पशु पंखी पंझर, के केई भांजी भीख ॥४॥
ज्ञान देव साधारण-गुरुकल्पित जे द्रव्य; ते भख्यां भखाव्यां, कीधी करणी अभव्य ।
वळी अविधि आशातना, कीधी अने करावी; वळी अशुद्ध प्रवृत्ति, शक्ति तें न वरावी ॥५॥
कर्यां शातन कामण, कपट करीने वंच्यां; माया-बकवृत्ति, पापकरम बहु संच्यां ।
वळी शियळ विलुप्यां, के केई गर्भ हराव्या; इत्यादिक बहुलां, पाप तणां फळ आव्यां ॥६॥
इहां दोष न कोईनो, शोच करे शुं थाय; जिम जलधि मूक्यो छिद्रे घडो न भराय ।
मधुमासे न फूले, जो करीर तरु एक; तिहां जलधि वसंतनो, वांक किश्यो कहो छेक ? ॥७॥
तरु फळियो फळ नवी, वामन पामे धूक; देखे नवी उग्यो, सूरज तस शुं चूक ।
निर्भाग्यशिरोमणि, मेरु चढावी पाडी; लोचन दई लीधां, धिग् धिग् कर्म अजाडी ॥८॥
भोजन शुभ पीरसी, काढी लीए जिम थाल; तिम हुं दुःखणीने, राज्यसुख सवि आल।
किहां गई कुळदेवी, आज करी न संभाल; ए जीवित धन शुं ? कीजे सुख सुकुमाल ॥९॥
पूछे जिम सहियर, तिम तिम दुःख बहु साले; मूर्छा लही जाणी, शीतळ जळशुं वाळो

उपरत सवि नाटक; देखी नृपनुं गेह; तव ज्ञान प्रयुंजे, त्रिभुवनकरुणा गेह ॥१०॥
सुख काजे कीधुं, दुःख काजे थयुं तेह; भावि कलि लक्षण, गुण ते दोष अछेह ।
इम जाणी फरक्या, एक दिशि प्रभु जाम; तव हरखी त्रिशला, फूल्युं मुख कज ताम ॥१॥
हुं त्रिभुवनधन्या, भाग्यदशा वळी आज; जिनपदसेवादि, सिद्धयां सघळां काज ।
मनोरंथ कल्पद्रुम फळियो सदल सछाय; जिनघर जिनपूजा, धवलमंगल गवराय ॥१२॥
कुंकुमना हाथा, बांधी तोरण माळ; नाटक प्रारंभे, उछाळे वर शाळ ।
मोतीचोक पूरे, चूरे सवि दारिद्र; सवि अर्थी जनने, देई दान अमुद्र ॥१३॥
शणगारे तस जन, राजभुवन देवलोक सरिखुं ते वेळा, मंगल थोकाथोक ।
तिहां सातमे मासे, अभिग्रह लीए गर्भमांहि; हुं श्रमण न थाउ, मातपिता होय ज्यांहि ॥१४॥
(हवे त्रिशलादेवी, स्नान तिलक प्रसिद्ध; सवि अलंकार पहेरी, गर्भपालना कीध.)
शुभ दोहद पूरे, सिद्धारथ नृप तास; परिजन जिम कहे तिम, विचरे निज आवास ।
बिहुं महिलागर्भे, वसिया प्रभु नव मास; साडासात दिन उपर, पूरण पूरी आश ॥१५॥

तिणे काळे समये, चैत्र तेरसी अजुआली; दिसि निर्मल पवनह, अनुकूळे रज टाळी ।
सवि शकुन प्रदक्षिणाघ भेदिनी सवि निष्पन्न, जनपद सवि सुखियो, मुदित लोक सुप्रसन्न ॥१६॥
उत्तराफाल्गुनी योगे, चन्द्र थयो शुभ लग्न; उच्चथानिक ग्रह सग, मज्झरयणी सुखमग्न ।
जनम्या निराबाध, त्रणनाणी गुणखाण; ज्ञानविमलगुरुए, भांख्युं चोथुं वखाण ॥१७॥

ढाळ पांचमी - (देशी एकवीशानी - जिन जन्म्याजी, जिण वेळा जननी घरे.)

ढाळ- जिन जन्म्याजी, सुखिया नारकी थावरा; तेज त्रिभुवनेजी, प्रगटे समीर सुहंकरा ।
दिशिकुमरीजी, छप्पननां आसन चळे; अवधिए जाणीजी, सपरिवार आवी मळे ॥

त्रूटक- मिले चउदिशि, उर्ध्व-अधोदिशि, आठ आठ तिम विदिशिनी ।
रुचकनिवासिनी चउ चउ, इम छप्पन सुहासिनी ।
जिन-मात लेई त्रण केळ घर करी, शुचिमज्जन ते करे ।
वरवस्त्रभूषण करीय शोभा, आवीयां तिम संचरे ॥१॥

ढाळ- सवि सुरपतिजी, जन्ममहोत्सव जिनतणा; मेरु आवेजी, मेली समुदाय अति घणो ।
ईन्द्र सोहमजी, आवी जिनमाता नमे; लई जावेजी, करी अभिषेक पातक गमे ॥

त्रूटक- रमे नाटिक भक्ति पूजा, करी आणंद अति घणो;
आठ मंगल भरी एकशत-आठ काव्य रचना भणे ।
बत्रीश कोडी सुवर्ण वरसी, भूपधर जिन म्हेलीआ;
अठ्ठाईमहोत्सव नंदिसर करी, सकल सुर ठामे गया ॥२॥

ढाळ- हवे राजाजीघ परभाते महोत्सव करे; दश दिननोजी, नगर सवि उरण करे ।
नाम थापेजी, वर्धमान गुणथी भलुं; सग कर तनुजी, कंचनवाने निर्मलुं ॥

त्रूटक- अति भलुं बळ धैर्य जिननुं, हरि कहे ते न सही शक्यो;
अन्नाणी सुर एक आवी, रमत रमवाने धक्यो ।
अहि आमलीवृक्ष विंटी, रह्यो नाखे करें ग्रही;
वली डिम्भरुपे वृद्धि पाम्यो, ताडियो प्रभुए ग्रही ॥३॥

ढाळ- पायलागीजी, नाम महावीर देई गयो; लेखशाळेजी, उणां आठ वरसे थयो ।
जाणी अवधेंजी, सुरपति तव तिहां आवीया; द्विजरुपेजी, अध्यारु बोलावीया ॥

त्रूटक- बोलावीया सवि जन्मसंशय, हरि पूछे ते जिन कहे;
जैनेन्द्र व्याकरण प्रगट कीधुं, पाय लागी ते रहे ।
सहु लोक विस्मय देखी हरखे, ज्ञान परखे प्रभु तणुं;
ए भुवनभूषण प्रभुतणा गुण, इन्द्र कहे केता भणुं ॥४॥

ढाळ- प्रभु परण्याजी, नरवर्मनृप यशोदा सुता; भोगवतांजी, विषयसुख थई एक सुता ।
अनुक्रमेजी, माता-पिता स्वर्गे गयां; वर्ष अडवीशजी, घरवासे पूरण थयां ॥

त्रूटक- थयो अभिग्रह पूर्ण जाणी, नन्दिवर्धन विनव्यां;
अनुमति न आपे नेहथी वळी, वरस दोय घरे रह्या ।
तिहां ब्रह्मचारी अचित्तआहारी, बन्धु प्रतिकरुणा करी;
लोकान्तिक सुखयण निसुणी, दिए दान संवत्सरी ॥५॥

ढाळ- एक कोडीजी, अडलख, उपर नितु दिए; वर वरजोजी, इस्युं भाखे सवि भवि लीए ।
हरि चउसठजी, आव्या संयम ओच्छवे; चंद्रप्रभाजी, पालखी जिन आगळ ठवे ॥

त्रूटक- स्तवे बहुपरे सकल सुखर, नन्दिवर्धन नृप नरा;
ध्वज कळश मंगल आठ आगळ, वहे हय गय रथ वरा ।
क्षत्रियकुण्ड ग्राम मध्ये, दिक्ख लेवा संचरे;
नर-नारी नीरखे नयण हरखे, मुखे जय जय उच्चरे ॥६॥

ढाळ- मृगशिर वदिजी, दशमी दिन पहर पाछले; ज्ञातखण्ड वनेजी, अशोकतरु तळे एकले ।
छट्ठभक्तेजी, चउविहार दूजे दिने; वस्त्र देवदुष्यजी, खंध धरे हरि शुभ मने ॥

त्रूटक- शुभ मने लोचे केश सघळा, पंचमुष्ठि मुख भणे;
'करेमि सामाइयं' सामी तव, नाण मणपज्जव मुणे ।
हवे वीर वंदी नन्दिवर्धन-नृपप्रमुख वळे सुखरा;
अवशेष मुहूर्त दिवस हुंते, कुमारग्रामे संचर्या ॥७॥

ढाळ- तिणि रातेजी, गोपे परीसह मांडिय, शुद्धि वृषभनीजी, न कहे रोषे ताडिया ।
तव इन्द्राजी, वारी कहे सेवा करुं; प्रभु भांखेजी आपबळे केवळ करुं ॥

त्रूटक- धरुं सहाय न केहनु हुं, सुणी हरि सरगे गया;
सिद्धार्थ व्यंतर पासे थापे, प्रभु संयमधर थया ।
बहुल ब्राह्मण धरे पारणुं, परमान्ने पंचदिव्यशुं;
पांचमुं वखाण इणि परे सुणो, ज्ञानविमल कहे इश्युं ॥८॥

ढाळ छठ्ठी - (देशी - झांझरिया मुनिनी.)

पिता मित्र तापस मिल्योजी, बांह्य पसारी आय; कहे चोमासुं पधारजोजी, माने प्रभु इम थाय ।
चउनाणी वीरजी भूतल करे रे विहार ॥ ए आंकणी ॥१॥
दिव्य चूर्णवासे करीजी, भमरा पण विलंगत; कामीजन अनुकूलथीजी, आलिंगन देयंत ॥ चउ० २ ॥
मित्रद्विज आवी मिंल्योजी, चीवर दीधुं आध; आव्या तापस उडवलेजी, चोमासे निराबाध ॥ चउ० ३ ॥
अप्रीति लही पण अभिग्रह धरीजी, एक पख करी विचरंत, शूलपाणी सुर बोधीओजी, उपसर्ग सही अत्यंत ॥ चउ० ४ ॥

मुहूर्त मात्र निद्रा लहीजी, सुहणां दश देखंत; उत्पल नाम निमित्तओजी, अर्थ कहे ईम तंत ॥ चउ० ५ ॥
तालपिशाच हण्यो जे पहेले, ते हणशो तुमे मोह; सितपंखी फळ ध्यायश्योजी, शुकलध्यान अखोह ॥ चउ० ६ ॥
विचित्र पंखी पेखीओजी, कहेशो दुवालस अंग; गोवर्गसेवित थापशोजी, अनुपम चउविह संघ ॥ चउ० ७ ॥
चउविध सुर-वित हशोजी, पद्मसरोवर दिट्ठ; मेरु आरोहणे होयशेजी, सुवर्ण सिंहासन ईट्ठ ॥ चउ० ८ ॥
सूरजमंडल देखीयुंजी, ते होशे केवलनाण; मानुषो अंतरे विंटियोजी, ते जग कीर्ति मडाण ॥ चउ० ९ ॥
जलधितरण फळ ए होशेजी, तरशो तुमे संसार; दामयुगल फळ नवि लहुंजी, ते कहो करी उपकार ॥ चउ० १० ॥
कहे प्रभु तव फळ तेहनुंजी, धर्म दुविध कहुं संत; प्रथम चोमासुं तिहां करीजी, विचरे समतावंत ॥ चउ० ११ ॥
उतरतां गंगा नदीजी, सुरकृत सहे उपसर्ग; सम्बल कम्बले वारियोजी, पूर्वभवे गोवर्ग ॥ चउ०१२ ॥
चण्डकोशीओ सुर कीयोजी, पूर्वे भग्नचरित्र; सिंचे नयन सुधारसेजी, हवे मिल्यो मंखलीपुत्र ॥ चउ० १३ ॥
नदीतीरे प्रतिबिम्बीयाजी, जिनपद लक्खण दिट्ठ; सामुद्रिक जोई कहेजी, इन्द्र थयो मने इट्ठ ॥ चउ० १४ ॥
सुर संगम अधमे कर्याजी, बहु उपसर्ग सहंत; देव अनारज संचर्याजी, जाणी कर्म महंत ॥ चउ० १५ ॥
व्यन्तरीकृत सही शीतथीजी, लोकावधि लहे नाण; पूर्वकृत कर्मे नड्याजी, जेहना नहि परमाण ॥ चउ० १६ ॥

चमरो शरणे राखीयोजी, सुसुमारपुरि धरी ध्यान; अनुक्रमे चन्दनबालिकाजी, प्रतिलाभे भगवान ॥ चउ० १७ ॥
काने खीला घातीआंजी, गोप करे घोर कर्म; वैद्ये ते वली उद्धर्याजी, सही वेदन अति मर्म ॥ चउ० १८ ॥
साडाबार वरस लगेजी, कर्म कर्यां सवि जेर; चउविहार तप जाणवुंजी, नितु काउसग्ग जिम मेर ॥ चउ० १९ ॥
हवे तप संकलना कहुंजी, जे कीधो जिनराय; भूमि बेठा कदीए नहिजी, गोदुहिका आसन ठाय ॥ चउ० २० ॥

ढाळ सातमी - (प्रभु पासनुं मुखडुं जोवा - ए देशी)

नव चउमास दो छ मास, अढीमासी, दोढमासी; दुग दुग दुग त्रणमासी, कीधो एक छमासी ॥१॥
मासखमण बार जाणो, बहोंतेर पख दिल आणो; पण दिन उणा छमास, बिसय गुणतीस छट्ठ खास ॥२॥
भद्र-महाभद्र पडिमा, तेम सर्वतोभद्र महिमा; दुग चउ दश दिनमान, बार अट्ठम गुणखाण ॥३॥
दिक्खादिन एक लहीए, पारणदिन सवि कहीए; त्रणसें ओगणपचासे, चउविहार उल्लासे ॥४॥
बार वरस खट मास, उपर पख एक खास; एम छद्मस्थ पर्याय, प्रभु जृंभक गामे जाय ॥५॥
ऋजुवालिका तीरे, जीरणचैत्य अदूरे; सामा कोडंबीने खेटे, शालिद्रुम तणे हेठे ॥६॥
छट्ठभक्तने अंत, गोदुहिकासने वेसंत; माधव सुदि दशमी संगे, शुकलध्यान धरे मनरंगे ॥७॥

उत्तराफाल्गुनी योगे, पाछले प्रहर प्रसंगे; सूर्य पश्चिमे जावे, विजयमुहूर्त तिहां आवे ॥८॥
केवलज्ञान ए पावे, सकल सुरासुर आवे; दिये तिहां उपदेश, कोई न लह्यो धर्मलेश ॥९॥
तिहांथी अपापाए आव्या, समवसरण करी ठाया; तिहां प्रभुदेशना दीधी, कर्म कचोले ए पीधी ॥१०॥

ढाळ आठमी - (में भेट्यो रे गिरिराज - ए देशी)

तिहां अपापामां वसे रे, माहण सोमिल नाम तो । यज्ञ मंडाव्यो छे तिहां, तेड्या माहण रे, यज्ञना जाणे के-
धन धन वीर वाणी, धन प्राणी रे, जेणे हृदये आणी के । धन धन वीर वाणी - ए आंकणी ॥१॥
मगधदेश गोबर गामथी, आवीया धरी अहंकारतो ।
ईन्द्रभूति आदे दई, अधिकारी रे, माहण अगीआर तो ॥धन० ॥२॥
ईन्द्रभूति अग्निभूति, वायु सगा त्रिबुन्धु तो ।
व्यक्त सोहम मण्डित मोरिय, अकम्पिताचलभ्राता रे, मेतार्य प्रभास तो ॥धन० ॥३॥
चउसहस चारसें अछे, तेहनो सवि परिवार तो ।
एकेको संदेह छे, मनमांहि रे, वहे गिरि जिम भार तो ॥धन० ॥४॥

जीव कर्म जीव ते शरीर, भूत तेहवो थाय बंध तो ।
देव नारक पुण्य परलोकनो, मोक्ष न माने रे, ए संशय देख तो ॥धन० ॥५॥
सुणी वीर सर्वज्ञने, आवीया धरी अभिमान तो ।
निःसंशय करी तेहने, देई दीक्षा रे, कर्यो जन्मप्रमाण तो ॥धन० ॥६॥
गणधर ईग्यार थापिया, तीरथ थापे सार तो ।
सोहमने आदे करी, हस्तदीक्षित रे, मुनि चौद हजार तो ॥धन० ॥७॥
आर्या चन्दना आदे दई, साधवी सहस छत्तीस तो ।
एक लाख गुणसट्ठि व्रतधरा, शंख प्रमुखा रे, श्रावक लहेस तो ॥धन० ॥८॥
सुलसा रेवति आदे दई, श्राविका त्रण लाख सार तो ।
सहस अढारह उपरे, ओहिनाणी रे, वळी तेरसें सार तो ॥धन० ॥९॥
चौदपूरवी त्रणसें सातसें केवळनाणी तो ।
तिम वैक्रिय-मणपज्जवी, सग पांचसें रे, वादी चउसय मान तो ॥धन० ॥१०॥

ईत्यादिक परिवारशुं, करे भविकने उपकार तो ।
मध्य अपापापुरि जिहां, तिहां आव्या रे, श्री वीर उदार तो ॥धन० ॥११॥
प्रथम चोमासुं अस्थिग्रामे, विशालाये बार तो ।
चौद राजग्रही जाणीए, पृष्टचम्पा रे, निश्राए त्रण सार तो ॥धन० ॥१२॥
षट् मिथिला दोय भद्रिका, आलम्भिकाए एक तो ।
एक अनारज भूमिका, सावत्थी रे, निश्राए एक तो ॥धन० ॥१३॥
बेतालीशमुं अपापाईं, कर्युं करुणा आगार तो ।
हस्तिपालराजा तणी दानशाला रे, अंतिम चोमासुं सार तो ॥धन० ॥१४॥
अमावासी कार्तिक तणी, नक्षत्रे स्वाति संयोगो तो ।
सोळ प्रहर देशना देयतां, करी पोसह रे, सुणे सवि नृप लोक तो ॥धन० ॥१५॥
सर्वार्थ मुहूर्ते पाछली, घडी होय रयणी जाम तो ।
योगनिरोध करी तिहां, छट्ठ भक्त रे, एकाकी स्वाम तो ॥धन० ॥१६॥

शिव पहोता श्री वीरजी, ते सुणी गौतमस्वाम तो ।
आपस्वभावे भावतां, परभाते रे, लहे केवल ताम तो ॥धन० ॥१७॥
तिणे समे कुंथु अणुद्धरी, उपनी जाणी विशेष तो ।
भस्मग्रह पण संक्रम्यो, जन्मरिक्षे रे, आयति फळ पेख तो ॥धन० ॥१८॥
दोय सहस वरिसां लगे, होशे भस्मग्रह प्रभाव तो ।
उदितोदित पूजा नहि, प्रवर्त्तै रे, एहवो कह्यो भाव तो ॥धन० ॥१९॥
भस्मग्रह पीडा टळ्ये, पछी होशे अधिक मंडाण तो ।
एकवीश सहस वरसां लगे, वीरशासननुं रे, कह्युं प्रमाण तो ॥धन० ॥२०॥
त्रीश वरस घरमां वस्या, बेंतालीश व्रतमांहि तो ।
सवि बहोंतेर वर्षनुं, आयु जाणो रे, जिननुं उछांहि तो ॥धन० ॥२१॥
पर्व दीवाली ते थयुं, जिहां लह्या जिन शिवसुख तो ।
सूत्रमांहे अधिकार छे, ते सुणतां रे, जाये भवदुःख तो ॥धन० ॥२२॥

श्री वीरना निर्वाणथी, नवसें ने ऐंशी वर्ष तो ।
ए सूत्र पुस्तके संग्रह्यो, देवड्ढी रे, खमासमणे देख तो ॥धन० ॥२३॥
ध्रुवसेननृप उपरोधथी, आनंदपुरमां एह तो ।
सभा समक्षे वांचीयो, नवसें त्राणुं रे, वरसे ससनेह तो ॥धन० ॥२४॥
नव गणधर श्री वीरना, जिन छते हुआ सिद्ध तो ।
राजग्रही मास संलेखना, करी पहोता रे, परिवार प्रसिद्ध तो ॥धन० ॥२५॥
वरस बारे शिव लह्या, वीरथी गौतमस्वाम तो ।
ए अतिशय मोटे कह्यो, जे दिक्खे रे, ते लहे शिवठाम तो ॥धन० ॥२६॥
संप्रति वरते मुनिवरा, सोहमस्वामी परिवार तो ।
वीशे वरसे सिझीया, श्री वीरथी रे, सोहम गणधर तो ॥धन० ॥२७॥
पंचकल्याणक ए कह्यां, श्री वीर तणां विस्तार तो ।
ज्ञानविमल गुरुथी लह्यो, व्याख्याने रे, छट्ठे ए अधिकार तो ॥धन० ॥२८॥

ढाळ नवमी - (देखी कामिनी दोय, के कामे व्यापिओ-ए देशी.)

हवे सुणो पंच कल्याणक, श्री जिनपासनां, मारा लाल के श्री जिनपासनां ।
जिम होय समकित शुद्ध; सदा शुभ वासना, मारा लाल सदा शुभ वासना ॥
काशीदेश विभूषण, नयरी वणास्सी ॥मारा० ॥ नयरी ॥
अश्वसेननृप वामा, रति रम्भा जिसी ॥मारा० ॥ रति० ॥१॥
प्राणतकल्पथी चविया, चैत वदि चोथमां ॥मारा० ॥ चैत० ॥
विशाखा विधुयोगे, समय मज्झरयणीमां ॥मारा० ॥समय० ॥
वामाकुखे उपन्या, चौद सुपन लहे ॥मारा० ॥ चौद० ॥
वीरतणी परे सर्व, कंत आगे कहे ॥मारा० ॥कंत० ॥२॥
अनुक्रमे पोष बहुल, दसमी दिन जाईआ ॥मारा० ॥ दसमी० ॥
विशाखा मज्झरयणी, त्रिनाण सहाईआ ॥मारा० ॥ त्रिनाण० ॥

दिशिकुमरी मह ईन्द्र, नृपति आदे करे ॥ मारा० ॥ नृपति० ॥
सज्जन कुटुम्बने साखे, पास नाम ते धरे ॥ मारा० ॥ पास० ॥३॥
कृष्णसर्प निज शय्या, पासे दीठा भणी ॥ मारा० ॥ पासे० ॥
नीलवरण नव हाथ, काया सोहामणी ॥ मारा० ॥ काया० ॥
नयर कुशस्थल स्वामी, प्रसेनजित कुंअरी ॥ मारा० ॥ प्रसेन० ॥
प्रभावतीने परण्या, अनुक्रमे वयधरी ॥ मारा० ॥ अनु० ॥४॥
एक दिन बेठा जोखे (?) गाखे पुर जोवाय ॥ मारा० ॥ गोखे० ॥
एक दिशि लोक खलक, मिल्यो बली ढोयवा ॥ मारा० ॥ मिल्यो० ॥
पूछे पासकुमार, किश्यु ए जन मले ॥ मारा० ॥ किश्यु० ॥
कमठ तापसनी वात, कही ते सांभळे ॥ मारा० ॥ कही० ॥५॥
कौतुके नहि पण सहज-स्वभावे तिहां गया ॥ मारा० ॥ स्वभावे० ॥
बळतो पन्नग देखी, कहे तुज नहि दया ॥ मारा० ॥ कहे० ॥

तुरत कुठार मंगावी, काष्ट विदारिओ ॥ मारा० ॥ काष्ट० ॥
जलतो पन्नग देखी, सहुए धिक्कारीओ ॥ मारा० ॥ सहुए० ॥६॥
सेवक मुख नवकार, सुणावी उद्धर्यो ॥मारा० ॥ सुणावी० ॥
मरी थयो धरणेन्द्र, प्रभु जश विस्तर्यो ॥ मारा० ॥ प्रभु० ॥
अपमान्यो तिहां कमठ, हठें बहु तप करी ॥ मारा० ॥ हठें० ॥
मेघमाली थयो देव, अज्ञानपणे मरी ॥ मारा० ॥ अज्ञान० ॥७॥
त्रिश वरस गृहवासे, दे दान संवत्सरी ॥ मारा० ॥ दे० ॥
पोषबहुल अगियारसी-दिन व्रत आचरी ॥ मारा० ॥ दिन० ॥
त्रणसें पुरुष संघात, विशाखा अठ्ठम तपे ॥ मारा० ॥ विशाखा० ॥
आश्रमपद उद्यान, अशोक तणें द्रुमे ॥ मारा० ॥ अशोक० ॥८॥
धन्य विप्र घरे पारणुं, परमान्ने करे ॥ मारा० ॥ पर० ॥
एक दिन वड तले, रयणिए काउस्सग्ग धरे ॥ मारा० ॥ रय० ॥

तिहां मेघमाली नाम, अधम सुर आवीयो ॥ मारा० ॥ अधम० ॥
देखी करे उपसर्ग, जलद वरसावीयो ॥ मारा० ॥ जलद० ॥९॥
जल मळी धूळीनी वृष्टि, करी नभ छाहियो ॥ मारा० ॥ करी० ॥
तिणे रजे तेहि ज दुष्ट, कमठ शठ वाहियो ॥ मारा० ॥ कमठ० ॥
मूशल परे जलधार, झबूके विजळी ॥ मार० ॥ झबूके० ॥
वहे तिहां नदी असराल, के रति तमे मळी ॥ मारा० ॥ रति० ॥१०॥
आसन कंपे ताम, धरण सुर आवीयो ॥ मारा० ॥ धरण० ॥
करी निज फणनो छत्र, धनौध रखावीयो ॥ मारा० ॥ धनौध० ॥
पण नासा लगे नीर, चढ्यो तव जोईओ ॥ मारा० ॥ चढ्यो० ॥
हांक्यो कमठ उल्लंठ, भणे ए शुं कीयो ॥ मारा० ॥ भणे० ॥११॥
स्वामी आशातना कीध, हवे जाईश किहां ? ॥ मारा० ॥ हवे० ॥
चरणे शरणे पेसी, खमावे ते तिहां ॥ मारा० ॥ खमावे ॥

करी नाटिक धरणेन्द्र स्वकीय पंद गया ॥ मारा० ॥ स्वकीय० ॥
प्रभु पण करे विहार, त्र्याशी दिन थया ॥ मारा० ॥ त्र्याशी० ॥१२॥
चैत्र बहुल तिथि चोथ, विशाखा विधु मळे ॥ मारा० ॥ विशाखा० ॥
छठ्ठभक्त धावडी हेठे, केवळ झळहळे ॥ मारा० ॥ केवळ० ॥
गणी गण आठ उदार, मुनि आर्यदिन मुखा ॥ मारा० ॥ मुनि० ॥
सोल सहस तिम साहूणी, पुप्फचूला मुखा ॥ मारा० ॥पुप्फ० ॥१३॥
अडत्रीस सहस सुणो हवे, श्रावक श्राविका ॥ मारा० ॥ श्रावक० ॥
एक लख चौसठ सहस, सुव्रत मुख भाविका ॥ मारा० ॥ सुव्रत० ॥
त्रण लख सहस्स सत्तावीश, नन्दा आदि छे ॥ मारा० ॥ नन्दा० ॥
केवली सहस्स ज एक, अवधि मुनि चौदसें ॥ मारा० ॥ अवधि० ॥१४॥
छसय ऋजु मणपज्ज, विपुलमति आठसें ॥ मारा० ॥ विपुल० ॥
चौदपूर्वी सय उठ, वादी मुनि छे छसें ॥ मारा० ॥ वादी० ॥

दश सय सिद्धया साधु, वीश सय साधवी ॥ मारा० ॥ वीश० ॥
बार सयां मुनिराज, अनुत्तर गति मवी ॥ मारा० ॥ अनु० ॥१५॥
सत्तरि वर्ष व्रतमांहि, रही संमेतगिरि ॥ मारा० ॥ रही० ॥
आयु वरस शत एक, अंते योग संवरी ॥ मारा० ॥ अंते० ॥
मासभक्ते तेत्रीश, मुनिशुं परिवर्या ॥ मारा० ॥ मुनिशुं० ॥
काउस्सग्गमां मध्यरयणी-समय प्रभु शिव वर्या ॥ मारा० ॥ समय० ॥१६॥
श्रावण सुदि दिन आठम, विशाखा रिख मिले ॥ मारा० ॥ विशाखा० ॥
वीरनिर्वाणथी वर्ष, अढीसय पाछले ॥ मारा० ॥ अढी० ॥
पुरिसादाणी एह, बिरुद एम दाखीए ॥ मारा० ॥ बिरुद० ॥
ज्ञानविमल गुरुवयणे, थिरचित्त राखीए ॥ मारा० ॥ थिर० ॥१७॥

ढाळ दशमी - (देशी-झुमखडानी)

नेमिसर तणां दाखीए रे, पोढां पंच कल्याण ॥ सोभागी सांभळो ॥
अपराजित अनुत्तर थकी रे, चविया श्री जिनभाण ॥ सोभागी सांभळो ॥ ए टेक ॥१॥
बत्रीश सागर भोगवी रे, सोरीपुरे, अभिराम ॥ सो० ॥
समुद्रविजय नृपनी प्रिया रे, माता शिवादे नाम ॥ सो० ॥२॥
कार्तिक वदि बारसी दिने रे, चित्रा रिख विधु योग ॥ सो० ॥
सुपनपेखण गर्भपोषणा रे, पाछल परे सवि भोग ॥ सो० ॥३॥
श्रावण सुदि पंचमी दिने रे, जन्म्या श्री जिनराज ॥ सो० ॥
जन्ममहोत्सव सुर करे रे, पूरव परे नृपराज ॥ सो० ॥४॥
अरिष्टनेमि नाम थापीयो रे, यदुकुळनो शिणगार ॥ सो० ॥
एक दिन आयुधधर गया रे, शस्त्र ग्रह्यां, तेणी वार ॥ सो० ॥५॥

शंख पूर्यो जब शामळे रे, तव थया त्रिभुवन कम्प ॥सो० ॥
शंकित मन हरिनुं थयुं रे, न लहे किहां हि जम्प ॥सो० ॥६॥
बल परिखण पण हारिओ रे, जिम जुआरी दाय ॥ सो० ॥
अनुक्रमे गोपी मळी सवि रे, कीधा बहुला उपाय ॥ सो० ॥७॥
राजिमतीने परणवा रे, तोरण आव्या जाम ॥सो० ॥
पशुपोकर सुणी करी रे, पाछा वळीया ताम ॥ सो० ॥८॥
कुमारपणे वर्ष त्रणसयां रे, वार्षिकां देई दान ॥ सो० ॥
श्रावण सुदि छट्ठी दिने रे, सहस पुरुषशुं मान ॥ सो० ॥९॥
छट्ठभक्ते चित्ता रिखे रे, सहसावन लीये जोग ॥ सो० ॥
छद्मस्थ चौपन दिना रे, लहे केवळ संजोग ॥ सो० ॥१०॥
आसो ज वदि अमावसी रे, अट्ठम करी चउविहार ॥ सो० ॥
पच्छिम याम चित्रारिखे रे, सहसावन गिरनार ॥ सो० ॥११॥

गणी अढरह थापीया रे, मुनिवर सहस अढार ॥ सो० ॥
सहस चालीश जस साधवी रे, गुणमणी रयण भंडार ॥ सो० ॥१२॥
एक लाख गुणसत्तरी सहस्स रे, श्रावक सम व्रतधार ॥ सो० ॥
त्रण लाख सहस छत्तीस कह्यो रे, श्राविकानो परिवार ॥ सो० ॥१३॥
चारसें चौद पूरवधरा रे, ओहिनाथी, दोढ हजार ॥ सो० ॥
वैक्रियलब्धि केवली रे, पन्नरसय वळी सार ॥ सो० ॥१४॥
सहस विपुलमति जाणीयें रे, आठसें वादि विचार ॥ सो० ॥
सोलशत साधु अनुत्तर गया रे, सिद्धया दोढ हजार ॥ सो० ॥१५॥
त्रण सहस सिद्धि आर्यिका रे, ईम जिननो परिवार ॥ सो० ॥
राजिमती संयम ग्रही रे, जिनहाथे लई शिव सार ॥ सो० ॥१६॥
त्रणसें वरस घरे रह्या रे, सातसें व्रतपर्याय ॥ सो० ॥
सहस वरसनुं आउखुं रे, रैवतगिरि जिनराय ॥ सो० ॥१७॥

अषाढ सुदि आठम दिने रे, चित्रा रिख मध्य रात ॥ सो० ॥
पांचसें छत्रीस साधुशुं रे, मासभक्ते विख्यात ॥ सो० ॥१८॥
पर्यंकासन शिव लह्या रे, पासथी, अंतर मान ॥ सो० ॥
त्र्याशी सहस ने सातसें रे, वर्ष पचासनुं मान ॥ सो० ॥१९॥
पांच कल्याणक नेमिनां रे, भाख्यां कल्पप्रमाण ॥ सो० ॥
ज्ञानविमल गुरुमुखथी रे, विस्तरा सुण्यो जाण ॥ सो० ॥२०॥

ढाळ अगियरमी - (नमो रे नमो श्री शेत्रुंजा गिरि - ए देशी.)

सवि जिननां अवदात भणंतां, वाधे ग्रन्थविस्तार रे । तेह भणी शेष जिनना कहीये, अंतरनो अधिकार रे ॥
सांभळजो श्रोताजन वारु० - ए आंकणी ॥१॥
नेमथकी पांच लाखे वरसे, श्री नमिजिनवर जाण रे ।
षट्लाखे मुनिसुव्रत मल्ली, चोपन लाख वर्ष प्रमाण रे ॥ सांभळजो० ॥२॥

कोटि सहस वर्षे अर जिनवर, कुन्थुने अंतर जाणो रे ।
एक पल्योपमनो भाग चोथो, कोटि सहस वर्ष उणो रे ॥ सांभळजो० ॥३॥
अर्द्ध पल्योपमे शान्ति जिनेश्वर, त्रण सागर पहेलां धर्म रे ।
पोण पल्योपम उणे कहीये, चार सागरे, अनंतजिन मर्म रे ॥ सांभळजो० ॥४॥
नव सागर श्री विमल जिनेश्वर, त्रीश सागरे वासुपूज्य रे ।
चौपन सागरे श्री श्रेयांसः, जिनवर थया, जगपूज्य रे ॥ सांभळजो० ॥५॥
एक कोडी सागर प्राग शीतळ, तेहमां एटलुं न्यून रे ।
एक शत सागर ने छासठ लख, छव्वीश सहस वर्ष न्यून रे ॥ सांभळजो० ॥६॥
सुविधिना नव कोटि सागर, नेवुं क्रोड सागरे ।
चंद्र रे श्री सुपासनवशत क्रडोसागर अंतर एह अमंद रे ॥ सांभळजो० ॥७॥
नव हजार क्रोड सागरे जाणो, पद्मप्रभ जिनचंद रे ।
नेवुं हजार क्रोड सागर सुमति, नव लख क्रोड अभिनंदन रे ॥ सांभळजो० ॥८॥

दश लख क्रोड अयरे श्री संभव, त्रीश लख सागर क्रोड रे ।
अजित थया तेहथी लख पंचाश, सागरे ऋषभजिन क्रोड रे ॥ सांभळजो० ॥९॥
ए निरवाणथी पश्चानुपूर्वी अंतर केरुं मान रे ।
चोवीश जिननां त्रेवीश अंतर ईम, चोथा आर प्रमाण रे ॥ सांभळजो० ॥१०॥
सहस बेंतालीश वर्ष पंचोतेर, मास वळी साडा आठ रे ।
एटले उणो चोथो आरो, त्रेवीश जिनना पाठ रे ॥ सांभळजो० ॥११॥
ज्ञानविमल गुरुमुखथी लहीये, सातमे एह वखाण रे ।
सवि जिननां चरित्र सुणतां, दिन दिन क्रोड कल्याण रे ॥ सांभळजो० ॥१२॥

ढाळ बारमी - (जी हो जाण्युं अवधि प्रयुंजीने - ए देशी.)

जीहो पंचकल्याणक भाखीये, जीहो ऋषभ तणां सुखदाय ।
जीहो त्रीजा आरना छेडे, जीहो सुषम-दुषम कहेवाय ॥ चतुर नर सुणीये सूत्र सुजाण॥ सांभळजो० ॥-ए आंकणी ॥१॥

जीहो चुलसी लख पूरव वली, जीहो वर्ष त्रण ने अडमास ।
जीहो एक पख उपरी थाकते, जीहो कुलघर घर थयो वास ॥ चतुर० ॥२॥
जीहो वदि चोथे आषाढनी, जीहो जंबू भरत मझार ।
जीहो सरवारथथी आवीया, जीहो नाभिनृपति शणगार ॥ चतुर० ॥३॥
जीहो मरुदेवी कूखे उपन्या, जीहो उत्तराषाढे चंद ।
जीहो मज्झरयणी तिहुं नाणशुं, जीहो देखे चौद सुपन ॥ चतुर० ॥४॥
जीहो नाभि अर्थ आपे कहे, जीहो अथवा भांखे ईंद ।
जीहो सुपन पठक नथी ते समे, जीहो उचित करे सवि ईंद ॥ चतुर० ॥५॥
जीहो चैत्र बहुल आठम दिने, जीहो उत्तराषाढे चंद्रयोग ।
जीहो जिन जन्म्या तव आवीया, जीहो सकल सुरासुर लोग ॥ चतुर० ॥६॥
जीहो प्रथम वृषभ दीठा भणी, जीहो अथवा वृषभनुं अंक ।
जीहो वृषभ नाम तिणे थापीयुं, जीहो वंश ईक्खाग मयंक ॥ चतुर० ॥७॥

जीहो राजा प्रथम ए जाणीये, जीहो जुगलिक नर अभिषेक ।
जीहो करवाने तिहां आवीया, जीहो हरि दाखे सुविवेक ॥ चतुर० ॥८॥
जीहो नयर विनीता वासीओ, जीहो देखी विनयगुण ठाय ।
जीहो विवाहादिक सवि करे, जीहो ईन्द्र ईन्द्राणी आय ॥ चतुर० ॥९॥
जीहो ब्राह्मी-भरत सुमंगला, जीहो प्रसवे युगल समेत ।
जीहो सुंदरी-बाहुवली जणे, जीहो सुनन्दा शुभचेत ॥ चतुर० ॥१०॥
जीहो वळी सुमंगलाने थया, जीहो युगल ओगणपचास ।
जीहो शत बेटा दोय बेटडी, जीहो शतविज्ञान प्रकाश ॥ चतुर० ॥११॥
जीहो बहुत्तेर पुरुष तणी कला, जीहो नारी कला चौसट्ठ ।
जीहो लीपी अढारे सोहामणी, जीहो कुल चउ थापे उक्किट्ठ ॥ चतुर० ॥१२॥
जीहो वीश लख पूरव कुमारमां, जीहो त्रेसठ पूरव राज ।
जीहो देश दियं सवि पुत्रने, जीहो भरत विनीता राज ॥ चतुर० ॥१३॥

जीहो लोकान्तिक सुर वयणथी, जीहो देई वरसीदान ।
जीहो बेसी सुदंसणा पालखी, जीहो चार सहस नर मान ॥ चतुर० ॥१४॥
जीहो चैत्र बहुल आठम दिने, जीहो छट्ठ तप उत्तराषाढ ।
जीहो चउमुट्ठी लुंचन करे, जीहो परीषह सहे अगाढ ॥ चतुर० ॥१५॥
जीहो वरसाधिक गये पारणुं, जीहो ईक्खुरस दीए श्रेयांस ।
जीहो वरस सहस छद्मस्थमां, जीहो विहार करे निराशंस ॥ चतुर० ॥१६॥
जीहो फाल्गुण वदि अगियारशे, जीहो पुरिमताल उद्यान ।
जीहो अट्ठम उत्तराषाढशुं, जीहो पामे केवलज्ञान ॥ चतुर० ॥१७॥
जीहो सकल सुरासुर आवीया, जीहो चक्री भरत नरिंद ।
जीहो मरुदेवी सिद्धया तणो, जीहो उत्सव करे आणंद ॥ चतुर० ॥१८॥
जीहो ऋषभसेन आदे करी, जीहो चोराशी गणधार ।
जीहो सहस चोराशी मुनिवरा, जीहो साधवी त्रण लख सार ॥ चतुर० ॥१९॥

जीहो त्रण लख श्रावक जेहने, जीहो उपर पांच हजार ।
जीहो पण लाख चोपन सहस छे, जीहो श्राविका परिवार ॥ चतुर० ॥२०॥
जीहो चार सहस साढा सातसें, जीहो चौद पूरवधर जाण ।
जीहो नव सहस ओहि केवली, जीहो वीश सहस परिमाण ॥ चतुर० ॥२१॥
जीहो वीश हजार छ सय उपरे, जीहो वैक्रियलब्धि मुणिंद ।
जीहो बार सहस छय विपुलमति, जीहो पंचाश अधिक अमंद ॥ चतुर० ॥२२॥
जीहो तेता वादी जाणीये, जीहो वीश सहस मुनि सिद्ध ।
जीहो चालीश सहस सिद्ध साहूणी, जीहो तेणे मनवंछित लीध ॥ चतुर० ॥२३॥
जीहो सहस बावीश नव शत मुनि, जीहो अनुत्तर पहोत्यां तेह ।
जीहो एक लख पूरव ईणी परे, जीहो व्रतपर्याये एह ॥ चतुर० ॥२४॥
जीहो लख चोराशी पूर्वनुं, जीहो पाळी पूरण आय ।
जीहो दश सहस मुनिशुं परिवर्या, जीहो अष्टापदगिरि जाय ॥ चतुर० ॥२५॥

जीहो माघबहुल तेरशी दिने, जीहो अभिजित नक्षत्रे चंद ।
जीहो चौदभक्त पद्मासने, जीहो शिव पहोता जिनचंद ॥ चतुर० ॥२६॥
जीहो आसन चले सवि ईन्द्रनां, जीहो आवे लई परिवार ।
जीहो करे उत्सव निरवाणनो, जीहो जंबूपन्नति अधिकार ॥ चतुर० ॥२७॥
जीहो पख नेव्याशी थाकते, जीहो त्रीजा आरा मांह ।
जीहो ऋ॰भजी शिवसुंदरी वर्या, जीहो ए थितिनो प्रवाह ॥ चतुर० ॥२८॥
जीहो आदिकरण ए धर्मनो, जीहो एहशुं धर्मस्नेह
जीहो प्रथम ती॰कर मुनिपति, जीहो ज्ञानविमल गुणगेह ॥ चतुर० ॥२९॥

ढाळ तेरमी - (नमो नमो मनक महा मुनि-ए देशी.)

नमो नमो गणधर स्थविरोने, वीर तणा अगियार रे ।
ईन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सोहम, गणधार रे ॥ नमो० ॥१॥

मंडित, मोरियपुत्रजी, अकंपित, अचलभ्राता रे ।
मेतार्य प्रभास जाणीये, एकादश गणी ख्यात रे ॥ नमो० ॥२॥
वीर छते नव शिव लह्या, सपरिवार मासभक्ते रे ।
राजगृहे वळी गोयमो, बार वरस वीर अंते रे ॥ नमो० ॥३॥
सोहमगणी श्री वीरथी, वीश वरसे शिव लहिया रे ।
तेहना जंबू केवली, पछी शिव केवळ रहिया रे ॥ नमो० ॥४॥
प्रभव सिज्जंभव जाणीये, जशोभद्र संभूति विजया रे ।
भद्रबाहु थूलिभद्रजी, श्रुतकेवली, षट् कहिया रे ॥ नमो० ॥५॥
आर्यसुहस्ति महागिरि, सुस्थित सुपडिबद्धा रे ।
ईन्द्रदिन्न सिंहगिरि जाणीये, दिन्न धनगिरि सुप्रसिद्धा रे ॥ नमो० ॥६॥
वयरसेन वज्रसेनजी, ए दश पूरवधारी रे ।
गुणसुंदर श्यामाचार्यजी, शाण्डिलाचार्य गुणधारी रे ॥ नमो० ॥७॥

श्रीधर्म रेवतिमित्रजी, भद्रगुप्त ने श्रीगुप्त रे ।
वज्रसूरि दश पूरवी, युगप्रधान पवित्र रे ॥ नमो० ॥८॥
तोसलीपुत्र आर्यरक्षित मनकने (?) आर्यसमिता रे ।
यवत देवर्द्धिगणी, थविर सवे गुणवित्ता रे ॥ नमो० ॥९॥
शाखा-कुळ वळी एहनां, नंदि आवश्यके कहीए रे ।
कल्पसूत्र थविरावली, तस गुण सुणी गहगहीए रे ॥ नमो० ॥१०॥
आदि चरित्र थविरावली, कही ए आठमे वखाणे रे ।
पार न एहना गुणनो, ज्ञानविमल गुरु जाणे रे ॥ नमो० ॥११॥

ढाळ चौदमी (देशी-अलबेलानी)

हवे संवत्सरीने दिने रे लाल, करे ओच्छवमंडाण-सवि साहमी रे ।
पुस्तक पूजो प्रेमशुं रे लाल, निसुणो सूत्र वखाण-सुखकारी रे ॥सूत्र सुणो विधिशुं सदा रे लाल ॥१॥
जिम लहो निर्मळ नाण-सु० । योगवाही गुरु जे हुवे रे लाल, आचारी अर्थना जाण-सुखकारी रे ।

अनभिनिवेशी अमत्सरी रे लाल, सुविहितं मुनिगुणखाण - सुखकारी रे ॥ सूत्र० ॥२॥
गीत-गान वाजित्रशुं रे लाल, पुरो मंगल आठ-सु० ॥
सावधान बहुभावशुं रे लाल, सुणो कल्पसूत्रनो पाठ-सु० ॥ सूत्र० ॥३॥
पूजा ने परभवना रे लाल, चैत्यप्रवाडी सार-सु०
पोसह आराधना करो के लाल, अट्ठम धरे नर-नार-सु० ॥ सूत्र० ॥४॥
लाहो लीए निज वित्तनो रे लाल, करी अति परिघल चित्त-सु० ॥
सूत्र संपूरण सांभळे रे लाल, पर्व ए सर्वपवित्त-सु० ॥ सूत्र० ॥५॥
आगम अक्षर सांभळे रे लाल, जावे पूरव पाप-सु० ॥
विधिजोगे जो सांभळे रे लाल, नासे तिमिर संताप-सु० ॥ सूत्र० ॥६॥
संपूरण तेह सांभळी रे लाल, भावे आपस्वभाव-सु० ॥
करे वधाई न्यूछणां रे लाल, जिम होय धर्म जमाव-सु० ॥ सूत्र० ॥७॥

ज्ञानविमलगुरु उपदिशे रे लाल, सामाचारी मुनिधर्म-सु० ॥

आलावा चोसठे करी रे लाल, अडवीश भेदे मर्म-सु० ॥ सूत्र० ॥८॥

ढाळ पंदरमी - (टोडरमल जीत्योजी-ए देशी)

इम ओच्छव आडम्बरे रे, सुणी सुणी सूत्र वखाण-जिणंदराय जीत्यो रे ।

जीत्या जीत्या कर्मना मर्म-जिणंदराय० - भाग्या भाग्या मिथ्यात मर्म-जिणंद० ॥ ए अंकणी ॥ विषय-विषय शमाविया रे, प्रसरी समतावेली-जिणंद० ॥ जिनशासन वर मंडपे रे, साधर्मिक करे केली-जिणंद० ॥ गाय गाय गोरी गेली-जिणंद० ॥ कूड-कपट सवि मेली-जिणंद० ॥ काढ्या काढया दुश्मन ठेली-जिणंद० जागी जागी अनुभव वेली-जिणंद० ॥१॥

सतीय सोहागण सुंदरी रे, गावे गावे मधुरी गीति-जिणंद० ॥ दर्शन-ज्ञान-चारित्रनी रे, बांधी बांधी सबली नीति-जिणंद० ॥ थई थई जगमां जीत-जिणंद० ॥ पामी पामी पुरुषप्रतीत-जिणंद० ॥ मल्या मल्या मनना मित्त-जिणंद० ॥ गई गई भवनी भीत-जिणंद० ॥२॥

अनुभवलवे जे गुण होय रे, ते भांगे भवनी कोडी-जिणंद० ॥ दूरित उपद्रव उपशमे रे, न करे को

अनुभव होडी-जिणंद० ॥ नहि जिनशासन जोडी-जिणंद० ॥ हर्षित होडा-होडी जिणंद० ॥ मळी मळी मोडा मोडी-जिणंद० ॥ चूरे चूरे कर्म कठोरी-जिणंद० ॥३॥

एम श्रीपर्व सोहामणो रे, करे जिनमतना जाण-जिणंद० ॥ ज्ञानविमल गुरुयोगथी रे, प्रगटे पुण्यप्रमाण-जिणंद० ॥ आज भलुं सुविहाण-जिणंद० ॥ प्रगट्यो समकित भाण-जिणंद० ॥ नाठां नाठां दूरित अन्नाण-जिणंद० आगम मोज महिराण-जिणंद० ॥४॥

वाग्यां वाग्यां जयंत निशान-जिणंद० ॥ नमता राणोराण-जिणंद० ॥ गाळ्यां गाळ्यां कुमतिनां मान-जिणंद० ॥ पोष्यां पोष्यां पुण्यनां ठाण-जिणंद० ॥ उत्सव अधिक मंडाण-जिणंद० ॥ सज्जननां मेलाण-जिणंद० ॥ बोले बोले जय जय वाण-जिणंद० ॥ दिन दिन कोडी कल्याण-जिणंद० ॥५॥

पट्टावली

दोहा- हवे सुविहित पट्टावली, जिनशासन शिणगार । आचारज अनुक्रमे थया, नम थकी कहुं सार ॥१॥
एकं एकना गुण घणा, कहेतां नावे पार । परंपराए आवीया, धर्म तणा दातार ॥२॥

ढाळ सोळमी - (तपगच्छनन्दन सुरतरु प्रगट्या - ए देशी.)

वीरतणी पाटे हवे पहेला, सोहमगणी गुण खाणीजी । बीजा जम्बूस्वामी कहीये, छेल्ला केवलनाणीजी ॥
त्रीजा प्रभवगणी वळी चोथा, सिज्जंभव गणधारजी । मनकपुत्र हेतु जेणे कीधुं, दशवैकालिक सारजी ॥१॥
यशोभद्रगणी पंचम जाणो, छट्ठा संभूतिविजयजी । भद्रबाहु ए चौद पूरवी, कल्पसूत्र जेणे रचियांजी ॥
दश निर्युक्ति ने उवसग्गहर, स्तोत्र रच्युं संघ हेतजी । थूलिभद्रगणी सत्तम पाटे, जेह थया शुभ चितजी ॥२॥
नागरकुल आगर सवि गुणना कोश्या जेणे प्रतिबोधीजी । शीलवंत सिरदार त्रिभुवने, विजयपताका लीधीजी ॥
आर्यमहागिरि आर्यसुहस्ति, पाट आठमे कहीएजी । द्रम्मक दिक्खी संप्रति कीधो जिनकल्प तुलना लहीएजी ॥३॥
नवमा सुस्थित-सुप्रतिबद्धा, दोय आचारज जाणोजी । क्रोड वार सूरिमंत्र जापथी, कोटिक बिरुद धराणोजी ॥
आठ पाट लगे बिरुद निर्ग्रन्थनुं, हवे दशमा ईन्द्रदिन्नाजी । एकादशमा दश पूरवधर, सूरि श्री वळी दिन्नाजी ॥४॥
बारमा श्री सिंहगिरिसूरीसर, तेरसमा वयरसामिजी । अंतिम ए दश पूरवधारी, लब्धि अनेक जिणे पामीजी ॥
नभोगामी वैक्रिय खिरासव, शासन भासनकारीजी । प्रवचन रचना जेणे समारी, अतिशय गुणना धारीजी ॥५॥

वज्रसेन तस पाटे चौदमा, जेणे सोपारानयरेजी । कही सुगाल चउ सुत व्यवहारी, विषभक्षणथी वारेजी ॥
दिक्द दईने भवजल तार्या, चार आचारज थाप्याजी । एकेकाना एकवीश एकवीश, चोराशी गण थापयाजी ॥६॥
चंद्रसूरि पन्नरमे पाटे, चंदगच्छ बिरुद बीजुंजी । समंतभद्र सोळमा वनवासी, बिरुद थयुं ए त्रीजुंजी ॥
वृद्धदेवसूरि सत्तरमा, अढारमा प्रद्योतनसूरिजी । मानदेव ओगणीशमा जाणो, शान्ति करी जेणे भूरिजी ॥७॥
मानतुंगसूरि वळी वीशमा, भक्तामर जेणे कीधुंजी । वीरसूरि एकवीशमा जाणो, अभिग्रहव्रत जेणे लीधुंजी ॥
जयानन्दसूरि बावीशमा, देवानन्द तेवीशाजी । चोवीशमा श्री विक्रमसूरि, श्री नरसिंह पणवीशाजी ॥८॥
समुद्रसूरि छव्वीश सगवीसा, वळी सूरि श्री मानदेवजी । विबुधप्रभसूरि अडवीशा, जयानन्द गुणत्रीशाजी ॥
रविप्रभसूरि थया वळी त्रीशा, जशोदेव एकत्रीशाजी । श्री प्रद्योतनसूरि बत्रीशमा, मानदेव तेत्रीशाजी ॥९॥
विमलचंद्रसूरि चउतीसा, उद्योतन पांत्रीशाजी । सर्वदेवसूरि छत्रीशमा, देवसूरि सडत्रीशाजी ॥
वळी सर्वदेवसूरि अडत्रीशा, वडगच्छ बिरुद धराव्युंजी । गुणचालीसा जशोभद्रसूरि, रैवततीर्थ शोभाव्युंजी ॥१०॥
नेमिचन्द्र मुनिचन्द्र मुनीसर, चालीशमे दो भायाजी । अजितदेवसूरि ईगचालीशमा, जिनवरचरित रचायाजी ॥
विजयसिंह बेतालीश पाटे, सोमप्रभ मणिरयणाजी । दोय आचारज तेताशीलमा, रचित सिंदुरप्रकरणाजी ॥११॥

जगत्चन्द्रसूरि चुंमालीशमा, महातपा बिरुद उपायुंजी । जावजीव आंबील तप साधी, जिनमत सबल सोहायुंजी ॥
कर्मग्रन्थ-भाष्यादिक कीधां, देविंदसूरि पणवालेजी । धर्मघोषसूरि षट्चलीशा, कोरिंट तीर्थने वालेजी ॥१२॥
आराधना प्रकरणना कर्ता, सोमप्रभ सगचालीशाजी । सोमतिलक अडतालीश गुणवन्न, देवसुन्दरसूरिशाजी ॥
पाटे श्री सोमसुन्दरसूरि, ते पंचाश प्रसिद्धाजी । उपदेशरत्नाकर अध्यातम-कल्पद्रुमादि बहु कीधांजी ॥१३॥
कर्ता संतिकरंना जाणो, मुनिसुन्दर अेगवन्नाजी । कीधा श्राद्धविध्यादिक ग्रन्था, रत्नशेखर बावन्नाजी ॥
लक्ष्मीसागरसूरि त्रेपनमा, सुमतिसाधु चोपनमाजी । हेमविमलसूरीसर जाणो, प्रगटपुण्य पणपन्नाजी ॥१४॥
श्री आनंदविमलसूरीसर, थया छप्पनमी पाटजी । क्रिया उद्धार करीने कीधी, उजली प्रवचनवाटजी ॥
विजयदानसूरि सत्तावन पाटे, जस गुण पूराजी । अडवन्न पाटे हीरविजयसूरि, जस गुण नहि अधुराजी ॥१५॥
साही अक्कवरने प्रतिबोधी, शासनसोह चढावेजी । विजयसेनसूरि गुणसट्ठ पाटे, निजमति वादी हरावेजी ॥
पाट साठमे पुण्ये प्रगटया, विजयदेव गणधारजी । आचारज विजयसिंहने दिख्या, भेदिनीपुर शिणगारजी ॥१६॥
सुरप्रतिबोधन काजे पहोत्या, जाणी निज पट थापेजी । श्री विजयप्रभसूरि एकसठ पाटे, विजयदेवसूरि आपेजी ॥
संवेगी शुद्ध पंथप्ररुपक, विमलशाखा शिणगारीजी । ज्ञानविमलसूरि बासठ पाटे, विजयवंत सुखकारीजी ॥१७॥

पूर्वाचार्य थया गुणवंता, ज्ञान-क्रियागुण भरीयाजी । श्रद्धा ज्ञान कथन ने करणी, ए चउगुणना दरियाजी ॥
ते सुविहित मुनिवन्दन करतां, निर्मल समकित थावेजी । अहोनिश आतमभाव अनुपम, ज्ञान अनंतु पावेजी ॥१८॥

॥ मूल भास संपूर्णः ॥

हवे पूर्वे चौदमी ढाळमां छेल्ली गाथामां सूचवेली सामाचारी आगळ टूंकमां कहीए छींए, ते साधु-साध्वीने सविशेष उपयोगी छे. समय अने अनुकूळता मुजब श्रावक-श्राविकाओने पण ते सांभळी शकाय छे.

॥ सामाचारी ॥

प्रथम पर्युषण क्यारे करवां ते संबंधी गुरु कहे छे के-श्रमण भगवान महावीर आषाढ चोमासीथी पचासमी तिथिए पर्युषणा एटले चोमासुं रहेवानो निर्णय जणावता हता, कारण के-त्यां सुधी गृहस्थो वर्षाना उपद्रवोथी रक्षण करवा अने वाछट, वायरा वगेरेथी बचाववा घर वगेरेने सादडी वगेरे बांधे; धोळे; लींपे; छापरुं सज्ज करे; नीक, नाळ, खाळ,

परनाळादि समारे; उंची-नीची जमीनने समी करे; ईत्यादि गृहस्थो पोताना उद्देशथी करे. ते पछी चोमासुं रहेवानो निर्णय जणाववाथी साधुने ते आरंभजन्य दोष न लागे. पहेलां जणाववाथी साधुने उद्देशीने ते आरंभ थाय. प्रभुनी जेम गणधरो, ते पछी तेओना शिष्यो, ते पछी स्थविरो अने आज सुधीना श्रमण निर्ग्रंथो पण ए ज प्रमाणे करता आव्या छे. ते रीते अमारा आचार्य, उपाध्याय पण करे छे अने अमे पण एम करीए छीए.

आ पर्युषणा बे प्रकारे थाय. एक गृहस्थ जाणे ते रीते अने बीजी न जाणे ए रीते. तेमां शास्त्रमां कह्या प्रमाणे वर्षाकाळने योग्य पाट, पाटला वगेरे प्राप्त थये छते जे द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावनी स्थापना करवारुप पर्युषणा गृहस्थ न जाणे ते रीते अषाढ पूर्णिमाए, योग्य क्षेत्रना अभावे तेम न बने, तो पांच पांच दिवसनी वृद्धि करतां छेल्ले श्रावण वद अमावासीए कराय. बीजी पर्युषणा श्री सांवत्सरिक पर्वने करवारुप अथवा गृहस्थ पूछे त्यारे चोमासुं रहेवानो निर्णय जणाववा रुप छे. आ बन्ने गृहस्थनी जाणपूर्वक थाय छे. तेमां पर्युषणामां १-वार्षिक प्रतिक्रमण, २- लोच, ३-अट्ठमनो तप, ४-सर्व जिनमंदिरोनी

भक्ति-पूजा, अने ५-परस्पर क्षमापना-ए पांच कर्तव्यो करवां जोईऐ.

श्री पर्युषणापर्व प्रथम भादरवा सुद पंचमीए थतुं हतुं, ते श्री कालिकाचार्ये भादरवा सुद चतुर्थीए कर्युं, त्यारथी चतुर्विध श्रीसंघ ते प्रमाणे करे छे. ज्यारे मासवृद्धि आवे, त्यारे पण चोमासीपर्व मासप्रतिबद्ध होवाथी अषाढ, कार्तिक अने फागणमां ज थाय. श्री संत्सरीपर्व पण भादरवा प्रतिबद्ध होवाथी भादरवामां ज थाय. ज्यारे भादरवो अधिक मास होय, त्यारे पण चतुर्दशीनी वृद्धिए जेम प्रथम चतुर्दशी छोडीने बीजानो स्वीकार थाय छे, तेम प्रथम भादरवो छोडीने बीजामां ज संवत्सरी थाय. संवत्सरी पछी ७०मी तिथिए कार्तिक चोमासी थाय-एवो वृद्धवाद छे. कोई कारणे संवत्सरी वहेली थाय पण ते दिवसने उल्लंघीने तो न ज करी शकाय.

उपर कही ते द्रव्य, क्षेत्र वगेरेनी स्थापना आ प्रमाणे थाय. १. द्रव्यस्थापना-चातुर्मास अंगे साधु-साध्वीए संयममां उपयोगी तृण, डगल, भस्म, कुंडी, पाट-पाटला वगेरे अचित द्रव्यो गृहस्थ पासेथी लेवां-वापरवां. सचित्तादि द्रव्यमां आ प्रमाणे विवेक

करवो. अति श्रद्धाळु राजा अने राजना अमात्यनी दीक्षा सिवाय सचित्त वस्त्र-पात्रादि न लेवुं. मिश्रद्रव्य तरीके उपधि सहित शिष्य पण न लेवो. २. क्षेत्रस्थापना-सर्व दिशा अने विदिशामां सवा योजन (ते ते प्रदेशमां प्रसिद्ध पांच गाउ) अने बिमारी, वैद्य के औषधादि आगाढ कारणे चार अथवा पांच योजननी मर्यादा करवी, अर्थात् अढी गाउ जवाय-अवाय. अल्पकाळ माटे पण तेथी आगळ जवुं-आववुं कल्पे नहि. बिमारी वगेरेमां तो बे अथवा अढी योजन सुधी पण जवुं-आववुं कल्पे. ३. कालस्थापनामां चार मासनी मर्यादा करवी अने ४. भावस्थापना-क्रोधादि दुष्ट भावोनो त्याग करवो अने अष्टप्रवचनमाताना पालनमां उपयोग राखवो, वगेरे संयमसाधनाना परिणाम वधारवा.

जे दिशामां घणा पाणीवाळी नदी सतत वहेती होय, ते दिशा-विदिशामां मर्यादित क्षेत्रमां पण नदी उल्लंघीने जवुं-आववुं न कल्पे. जो पाणीमां एक पग मूकीने बीजो पग पाणीनी उपर-बहार रही शके तेटलुं ओछुं पाणी होय, तो विशेष कारणे भिक्षादि लेवा जवाय. ज्यां पाणी घणुं होवाथी पग जळथी उंचो उपाडी शकाय नहि अने डहोळीने

चालवुं पडे, त्यां जवुं-आववुं न कल्पे. तेमां पण जो नदीमां अर्द्धजंघा जेटलुं पाणी होय, तेवी नदीमां शेषकाळे प्रतिमासे त्रण वार अने वर्षाकाळे सात वार उतराय, पण तेथी अधिक वार जवुं-आववुं न कल्पे. ज्यां नाभि सुधी के ते उपरनुं पाणी होय, त्यां तो शेषकाळे पण पगे चालीने उतरवुं न कल्पे.

चातुर्मास रहेला साधुने गुरुए ग्लान माटे अमुक वस्तु अमुक प्रमाणमां लावीने आपवानुं जो कह्युं होय, तो तेटली ते वस्तु लावीने ग्लानने आपवी, पण पोते ते वापरवी नहि. जो मात्र लाववा कह्युं होय, तो लावी शकाय पण अपाय नहि. ग्लान माटे आवेली वस्तु जो वधी पडे, तो पण लावनारने वापरवा कह्युं होय तो ज तेणे वापरवी. चातुर्मास रहेला साधु-साध्वीमां जे तरुण, सशक्त अने रोगरहित शरीरबळवाळा होय, तेमने आगाढ कारण विना विगईओ वार वार वापरवी न कल्पे. कदाचित् पकवान्न कल्पे. तेमां पण दूध, दहीं अने पकवान्न जे बहु काळ रही शके नहि, तेवी विगईओ ग्लान, बाळ वगेरेने माटे जरुर पडे त्यारे तेटली ज लावी शकाय. संग्रह करी शकाय तेवी घी, तेल अने गोळ-

ए त्रण विगईओ श्रावकने त्यां घणी होय अने ते भावथी आपे, तो पण कहेवुं-के'हजु घणो समय छे, माटे ग्लानादि माटे ते जरुर पडशे त्यारे लईशुं.' छतां गृहस्थ कहे के-'चातुर्मास पर्यन्त चाले तेटली ते घणा प्रमाणमां छे, माटे ग्रहण करो !' तो ते लावीने बाळ वगेरेने आपवी, पण तरुणने न आपवी. ग्लानने माटे गुरुआज्ञा मेळवीने लेवा जनार साधु पण ग्लानने जरुर जेटली ज वस्तु लई शके. गृहस्थ जो वधारे लेवा कहे, तो 'ग्लानने वधारे जरुर नथी.'-एम कहे. छतां गुहस्थ कहे के-'वधे ते तमे अथवा अन्य साधुओ वापरजो !' तो ज वधारे लावेली वस्तु पोते वापरे अथवा बीजा साधुओ वापरी शके. अर्थात् ग्लानना नामे लावेली वस्तु बीजा साधुओने वपराय नहि.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने दानरुचिवाळा, श्रद्धाळु अने भक्तिवंत एवा गृहस्थने घेर पोताने जरुरी वस्तु जोवामां न आवे, तो 'अमुक वस्तु छे ?'-एम पूछी शकाय नहि; कारण के दानरुचि होवाथी ते वेचाण लावे के अति श्रद्धाने कारणे चोरीने पण लावी आपे. कृपणने त्यां ते मागवामां एवो दोष लागवानो संभव नथी.

वैयावच्चकारने छोडीने नित्य एकभक्त करनार साधु-साध्वीने प्रतिदिन एक ज वार भिक्षार्थे जवुं कल्पे. वैयावच्च करनार जो एकाशन करीने वैयावच्च न करी शके, तो वैयावच्च विशिष्ट तप होवाथी ते बे वार पण भिक्षार्थे जई शके. अर्थात् आचार्य, उपाध्याय,तपस्वी ग्लान के तेओनी वैयावच्च करनार तथा दाढी-मूछ-कक्षा न उगी होय तेवा बाळ साधु-साध्वीने बे वार भोजन करवामां पण दोष नथी.

नित्य चोथभक्त (एकांतर) उपवास करनार माटे एटलुं विशेष छे के-ते सवारे भिक्षार्थे जाय अने जे मळे तेमां निर्वाह करे. जो निर्वाह न थाय, तो बीजी वार पण भिक्षार्थे जई शके. छठ्ठ छठ्ठ करनारने पारणाना दिवसे बे वार, अट्ठम अट्ठम करनारने त्रण वार अने अट्ठम उपरांत तप करनारने सर्व वेळाए भिक्षार्थे जवुं कल्पे.

हवे पाणीनो विधि कहे छे. चोमासुं रहेला साधु-साध्वीमां नित्य एकभक्त करनारने श्री आचारांगमां कहेलं एकवीश प्रकारनां, अथवा नीचे कहेवाशे ते नव प्रकरनां पाणी वापरी शकाय. नित्य चौथभक्त करनारने १. लोट वगेरेथी खरडायेला हाथ वगेरेनुं धोवण.

२. पत्रादि उकाळीने तेने नाखवा सिंचेलुं जळ अने ३. चोखानुं धोवण-ए त्रण पाणी कल्पे. नित्य छट्ठभक्त करनारने १. तलनुं, २. फोतरांनुं अने ३. जवनुं-एम त्रण धोवण कल्पे. नित्य अष्टमभक्त करनारने १. ओसामणनुं, २. कांजीनुं अने ३. शुद्ध उकाळेलुं - ए त्रण पाणी कल्पे अने नित्य अट्ठमथी अधिक तप करनारना शरीरमां प्रायः देवनुं अधिष्ठान संभवित होवाथी कणरहित, पूर्ण उकाळेलुं एक ज शुद्ध पाणी कल्पे. सर्वथा अनशनीने पण एक ज उकाळेलुं शुद्ध अने ते पण कणरहित, गाळेलुं पाणी तृषा शमे तेटलुं प्रमाणोपेत लेवुं कल्पे.

दत्तिनी संख्या करनारने पांच दत्ति आहारनी अने पांच दत्ति पाणीनी लेवाय. अथवा चार आहारनी अने पांच पाणीनी के पांच आहरनी अने चार पाणीनी लेवाय, अथवा बे-त्रण-चार वगेरे अभिग्रह कर्यो होय तेटली लेवाय. अर्थात् पाणीनी दत्ति आहारमां के आहारनी दत्ति पाणीमां वधारी शकाय नहि. जे जेटली धारी होय, ते तेटली के तेथी न्यून लेवाय, पण अधिक न लेवाय.

चोमासुं रहेला श्री जिनाज्ञाना पालक अने संयमना रागी-साधु-साध्वीने उपाश्रय अने तेनी बाजुनां छ घरोमांथी भिक्षा लेवी न कल्पे, कारण के-निकटमां रहेनार दातारना साधु प्रत्ये गुणानुरागना कारणे उद्गमादि दोषोनो संभव रहे. आने अंगे घणा आचार्योनो मत एवो छे के-ए सात घरोमां जो जमणवार होय तो भिक्षार्थे जवुं नहि. जो के सामान्य दिवसे भिक्षार्थे जवानो निषेध नथी. तेमां पण कोई उपाश्रय सिवायनां सात घर सुधी, कोई उपाश्रय सहित सात घर सुधी अने कोई उपाश्रयनी पासेना घर पछी सात घर सुधी जमणवार प्रसंगे भिक्षार्थे जवानो निषेध करे छे.

जिनकल्पिक वगेरे पाणीपात्री (हाथमां भोजन करवानी लब्धिवाळा) साधुने अल्प फूसार मात्र पण वृष्टिमां भिक्षार्थे जई शकाय नहि. पात्रभोजी स्थविरकल्पिकने पण धाराबद्ध वृष्टिमां भिक्षार्थे जवाय नहि. कारण जो अल्प बिन्दुओ वरसतां होय तो पण भिक्षार्थे जवाय. ग्लानादि आगाढ कारणे अप्कायनी वीराधना न थाय ते रीते कामळी वगेरे विशेष साधनोनो उपयोग करीने भिक्षार्थे जवाय. भिक्षार्थे गृहस्थने घेर गया पछी जो वृष्टि

पडे, अथवा पहेलां रही रहीने थती वृष्टि पाछळथी वधी जाय, तो संयमनी रक्षा थाय तेवा बगीचामां, समान अथवा भिन्न सामाचारीवाळा साधुना उपाश्रयमा, तेना अभावे गामलोकने बेसवाना स्थळ रुप मांडवी-चोरामां, वृक्ष नीचे के एवा कोई जाहेर स्थळे उभा रहेवुं. कदाच कोई गृहस्थ जो त्यां भिक्षा लेवा विनंति करे, तो त्यां गया पूर्वे गृहस्थे पोताने माटे जे पकाववा मांड्युं होय ते लई शकाय, पण पोते त्यां गया पछी जे पकाव्युं होय ते लेवुं न कल्पे. कदाच एवुं पण बने के-वृष्टि जो न रोकाय, तो मळेली भिक्षा त्यां योग्य स्थळे बेसीने वापरे अने पात्रादि शुद्ध करीने वृष्टि अटके त्यारे उपाश्रये आवे. जो वृष्टि सतत चालु रहे, तो सूर्यास्त पहेलां चालु वृष्टिमां पण उपाश्रये आवे, पण रात्रे उपाश्रयनी बहार के गृहस्थने घेर रही शकाय नहि, कारण के-एकाकी बहार रहेवानी संयमघातक विविध दोषो लागवानो संभव रहे अने उपाश्रयमां रहेला साधुओने पण चिंता थाय.

वरसादादि कारणे उभा रहेवुं पडे त्यां पण एक साधु-एक साध्वी, एक साधु-बे

साध्वी, बे साधु-एक साध्वी के बे साधु-बे साध्वी एक स्थळे रही शके नहि. जो पांचमो कोई होय तो ज रही शके. जो पांचमो कोई न होय, तो कोई लुहार वगेरेनी कोढ सामे के पोळ-शेरीना दरवाजे, ज्यां जता-आवता लोकनी द्रष्टि पडे त्यां उभा रही शकाय. ए रीते गृहस्थने घेर भिक्षार्थे गयेला एक साधु-एक स्त्री एक साधु-बे स्त्रीओ, बे साधुओ-एक स्त्री अने बे साधुओ-बे स्त्रीओ एक स्थळे रही शके नहि. जो पांचमो कोई होय तो ज रही शके. ए प्रमाणे साध्वी अंगे पण चारेय भांगा निषिद्ध समजवा. पांचमानी हाजरीमां ज रही शके. जो के उत्सर्गथी ओछामां ओछा साधु बे अने साध्वी त्रण बहार जाय-एवो कल्प छे, तो पण साथे आवनार उपवासी के असुखी होवाथी कोई वार एकलाने पण जवानो प्रसंग आवे.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वी अनुमति-संमति विना बीजाने माटे आहार-पाणी लावी शके नहि, कारण के-लाव्या पछी कदाच ते कहे के-कोना कहेवाथी लाव्या ? वळी रुचिना अभावे जो ते न वापरे, तो परठववाथी संयमविराधना थाय अने अरुचि छतां तो

दाक्षिण्यताथी वापरे, तो तेने अजीर्ण थाय. लावनार पोते जो अधिक वापरे, तो तेने अजीर्ण थाय-एम अनेकधा बाधा थाय, माटे बीजाने माटे तेने पूछीने ज लाववुं.

साधु-साध्वीए भोजन लईने आव्या पछी पण जो वृष्टि आदि कारणे शरीर भिंजायेलुं होय, तो तरत भोजन करवुं नहि, कारण के-हथेळीओ, हथेळीओमांनी रेखाओ, नख, नखनो अग्रभाग, भ्रकूटी, दाढी अने मूछ-ए सात स्थाने पाणी लांबा काळे अचित थाय छे. ज्यारे जणाय के-'हवे मारी काया सर्वथा जलरहित थई छे.' तो ते पछी भोजन करवुं कल्पे. भिंजायेला शरीरे हलन-चलन करवाथी अप्कायनी विराधना थाय.

चोमासामां छद्मस्थ साधु-साध्वीए नीचे कहेलां आठ सूक्ष्म जीवस्थानोने वार वार जोवां, जाणवां अने यतना करवी जोईए. १. कुन्थुआ वगेरे सूक्ष्म जीवो, २. सूक्ष्म लील-फूग, ३. सूक्ष्म बीज, ४. सूक्ष्म वनस्पति, ५. सूक्ष्म पुष्पो, ६. सूक्ष्म ईंडा, ७. सूक्ष्म बीलो अने ८. सूक्ष्म अप्काय. तेमां-

१-सूक्ष्म जीवो- हजारो वर्णना संभवित छे, तो पण काळा, लीला, राता, पीळा अने

सफेद-ए पांच वर्णमां सर्वनो अंतर्भाव थतो होवाथी मूळ वर्णभेदे ते पांच प्रकारना कह्या छे. तेमां ज्यारे सूक्ष्म मांकड, कुन्थुआ वगेरे अति नाना होवाथी सारी नजरे पण ते हलन-चलन करे, त्यारे ज 'आ जीव छे.'-एम समजी शकाय, अन्यथा न समजी शकाय. माटे तेवा सूक्ष्म जीवोनी हिंसा न थई जाय, ए उद्देशथी छद्मस्थ साधु-साध्वीए तेने वारंवार जोवा, जाणवा अने प्रमार्जना-प्रतिलेखन करवुं जोईए. २. सूक्ष्म लील-फूल्ली- ते अनेक प्रकारे छतां वर्णभेदे काळी, लीली, राती, पीळी अने सफेद-ए पांच प्रकारे कही छे. ते जे पदार्थमां उपजे तेना वर्ण जेवी होय छे, तेथी 'आ लील-फूग छे.'-एम समजवुं मुश्केल छे, माटे तेने पण वारंवार जोवी, जाणवी अने तेनी प्रतिलेखनादि यतना करवी जोईए. ३. सूक्ष्म बीजो-ते पण अनेक प्रकारनां होय छे, छतां मूळ वर्णभेदे तेना पण उपर प्रमाणे पांच प्रकारो कह्या छे. दरेक अनाजना कणमां तेना समान वर्णवाळुं अति सूक्ष्म 'नखीयुं' होय छे ते बीज कहेवाय छे. वळी वगदा वगेरे विविध वृक्षोमां बीज अति सूक्ष्म होय छे अने ते ते वृक्षोनी नीचे संख्याबंध पडेला होय छे. वळी सारी नजरे ज ते देखाय

छे, माटे तेने वारंवार जोवां, जाणवां, अने प्रतिलेखवां जोईए. ४. सूक्ष्म वनस्पति-ते पण अनेक प्रकारनी छतां वर्णभेदे कृष्णथी शुकल सुधी पांच प्रकारनी कही छे. नवा उगेलां अंकुरा प्रथम उगतां प्राय: अनंतकाय होय छे अने ते अति कोमळ होवाथी अल्प संघट्टथी पण तेनी विराधना थाय छे. पृथ्वीना समान वर्णवाळा होवाथी तेने जाणवा दुष्कर छे, माटे तेने पण वारंवार जोवा, जाणवा अने तेनी जयणा करवी जोईए. ५. सूक्ष्म पुष्पो-ते पण अनेकविध छतां मूळ वर्णभेदे कृष्णथी शुकल सुधी पांच प्रकारनां जाणवां. वड, उदुम्बर वगेरेनां पुष्पो एवां कोमळ होय छे के-मात्र श्वासोच्छ्वासथी पण तेनी विराधना थाय. वृक्षना समान वर्णवाळां होवाथी तेने जाणवां दुष्कर होय छे, माटे वारंवार जोवां, जाणवां अने तेनी जयणा करवी. ६. सूक्ष्म इंडा- ते पण अनेकविध छतां अहीं मुख्य पांच प्रकारे कह्यां छे. १. मधमाखी-मंकोडा वगेरेनां, २. जाळ बनावनारा 'कुलातरा' (करोळिया) जातिना जीवोनां, ३. विविध जातिनी कीडीओनां, ४. विविध जातिना 'कार्किडा' नामना जीवोनां, अने ५. गिरोली अथवा ब्राह्मणी जातिना जीवोमां. आ इंडां पण अति सूक्ष्म

होवाथी तेने वारंवार जोवां, जाणवां अने रक्षा करवी. ७. सूक्ष्म बिल-ते पण विविध जातिना जीवो भींतोना सांधामां, भूमिमां वगेरे अनेक स्थळे पोताना रक्षण माटे विविध प्रकारनां बनावे छे, छतां अहीं तेना पांच प्रकारो कह्या छे. १. गर्दभना आकारना जीवो पृथ्वीमां कोतरीने बनावे छे ते, २. पाणी सूकाया पछी पृथ्वीमां पडती फाटो, ३. सरळ-सीधुं दरविशेष, ४. तालमूळना आकारनी जेम उपर-मुखद्वारे सांकडुं, अने नीचे-अंदर पहोळुं अने ५. विविध भमरा-भमरीओनां घर. आ पांचेय प्रकारोमां ते ते जीवो रहे छे, तेथी तेने वारंवार जोवां. जाणवां अने रक्षा करवी. ८. सूक्ष्म जळ-अप्काय-ते पण पांच प्रकारे छे. १. आकाशमांथी पडता फूसारना सूक्ष्म जलबिंदुओ, २. हिम-ठार, ३. घूमरी-धूम्मस, ४. पाणीना करा, अने ५. जवना छोडवा वगेरे उपर देखाय छे ते पृथ्वीमांथी नीकळेला तृणना छेडे लागेला जलबिंदुओ. ऐने पण छद्मस्थ साधु-साध्वीए वारंवार जोवां, जाणवां अने रक्षा करवी.

अहीं सुधी कहेली सामाचारी शेषकाळमां पण ए रीते ज पाळवी. हवे वर्षाकाळ

अंगे विशेष कहीशुं.

वर्षाकाळे चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने गृहस्थने घेर जो आहार-पाणी वगेरे लेवा जवुं होय, तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, प्रवर्तक, गणी, गणधर, गणावच्छेदक अथवा जेनी निश्रामां पोते होय तेने पूछीने, ते अनुमति आपे तो जवाय, पण अनुमति विना न जवाय; कारण के-ते आचार्य वगेरे गीतार्थ होवाथी, तेना संयम अने शरीरनी रक्षा माटे शुं करवुं-न करवुं ? तेने समजनारा द्रव्य-क्षेत्र-काळ-भावना जाण होय. तेथी तेओ जो जरुर होय तो अनुमति आपे, पण जो जरुर न होय तो निषेध पण करे. तेवा गीतार्थनी आज्ञानुसार वर्तवाथी ज आरोग्य अने संयम उभय सचवाय. ए प्रमाणे श्री जिनमंदिरे के स्थंडिलभूमिए जवुं, के औषध, वस्त्र-पात्रनुं सीवण-सांधण, लेखन, वाचन वगेरे श्वासोच्छ्वास लेवा-मूकवा सिवायनुं कंई पण करवुं होय, के ग्लानादि कारणे अथवा भिक्षा माटे ग्रामान्तर जवुं होय, तो पण ते सघळुं तेओनी अनुमति मेळवीने ज करवुं.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने जो कोई दूध, दहीं वगेरे विगई वापरवानी इच्छा थाय,

तो अमुक विगई अमुक प्रमाणमां वापरवा माटे, ते ते आचार्य वगेरे जेओनी निश्रामा पोते होय, तेओनी अनुमति मेळवीने ज तेओ वापरी शके. ए रीते जो कोई रोगादि कारणे औषध-उपचार करवा होय, उत्तम मंगळस्वरुप कल्याणकारक तप करवो होय, संलेखना करवी होय के अंतिम अनशन स्वीकारवुं होय, तो पण आचार्यादिनी अनुमतिथी ज ते ते थई शके. कारण के-तप करनारनी वैयावच्च, पारणानी सगवड वगेरे थाय तेवा संजोगो अनुकूळ छे के नहि ? वगेरे गुरु जाणी शके. एम जो भोजन करवुं होय के स्थंडिल-मात्रुं वगेरे कंई परठववुं होय; स्वाध्याय, धर्मध्यान के मौन करवुं होय; अथवा एवुं कर्मनिर्जरानुं पण कार्य करवुं होय, तो ते सर्व आचार्य वगेरे जेओनी निश्रामां पोते होय, तेओनी अनुमतिपूर्वक ज करवुं कल्पे.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने वस्त्र, पात्र वगेरे कोई उपधि के उपकरण सूर्यना तापमां तपाववा मूक्या पछी बीजा साधुने भळाव्या विना सूनां मूकीने भिक्षादि माटे वसति बहार जवुं-आववुं न कल्पे. तेमज ए रीते भळाव्या विना श्री जिनमंदिरे के स्थंडिलभूमिए

जवुं, भोजन, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग करवो वगेरे न कल्पे. जो कोई अन्य साधु तपाववा मूकेली वस्तुने संभाळवा कबूल करे, तो तेने सोंपीने ज बीजुं कार्य करी शकाय; अन्यथा चोरी, जीव-हिंसादि दोषोनो संभव रहे.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने चोमासामां भूमितळ जो मणि-रत्नजडित होय के पत्थर-चूनावाळुं होय, तो पण गृहस्थना पाट-पाटलादि याचीने तेनो उपयोग करवो जोईए; अन्यथा कुन्थु आदि जीवोनी विराधना, शरदी, अजीर्ण वगेरे थवानो संभव रहे. पाट पण एक हाथ के तेथी अधिक उंची जोईए, अन्यथा कीडी वगेरेनी हिंसा के सर्पादिनो दंश थवानो संभव रहे. पूर्वकाळे पाटियांना ककडा अने आडां-उभा काष्टो याचीने साधुओ स्वयं बांधता, बाद ते दर पखवाडिये छोडता अने तेमां जीवोत्पत्ति न थाय ते माटे प्रमार्जना-प्रतिलेखना करता. वर्तमानमां तो तैयार पाटो वपराय छे, जेथी तेने पण वारंवार जोवी अने प्रमार्जवी जोईए; अन्यथा मांकड वगेरेनी उत्पत्ति संभवित छे. ए रीते कारण विना ज्यां-त्यां फरवुं नहि, पण स्थिरासनवाळा थवुं. वारंवार स्थाने स्थाने फरवाथी

जीवविराधना थाय. संथारो, पात्र वगेरेने सूर्यनो ताप आपवो अने ईर्यासमिति वगेरे अष्टप्रवचनमाताना पालनमां अप्रमत्त बनवुं. जे आ विषयमां प्रमाद करे छे, तेने संयम दुराराध्य बने छे अने जे अप्रमत्त रहे छे, तेने संयम सुखेथी आराधी शकाय छे.

चोमासामां साधु-साध्वीए स्थंडिल-मात्रु परठववानी त्रण भूमिओनुं प्रतिलेखन करवुं, कारण के-प्रायः वर्षाकाळमां भूमिमां संमूर्च्छिम जीवोनी अने वनस्पतिना अंकुरानी उत्पत्तिनो संभव छे, तेथी तेवा प्रसंगे एक नहि तो बीजी के त्रीजी भूमिनो उपयोग करी शकाय, के जेथी हाजत रोकवानो प्रसंग न आवे. वळी स्थंडिल माटे, प्रश्रवण माटे अने थूंक-श्लेष्म वगेरे माटे, एम त्रण मात्रक पण राखवां जोईए. अन्यथा साधनना अभावे स्थंडिल वगेरेना वेगने रोकवाथी रोगादि थाय अने जो वृष्टिमां बहार जवुं थाय तो संयमविराधना थाय.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीए उत्सर्गमार्गे अषाढ चोमासी पछी प्रतिदिन लोच करवो, गायना रुंवाटाथी मोटा केश राखवा नहि, कारण के-वृष्टिथी केश भिंजाय, तेथी तेमां जुओ

उपजे, खणवाथी ते हणाय अने मस्तकमां नखना क्षत थाय, वगेरे घणा दोषो थाय. अपवादे जो ते प्रतिदिन न करी शकाय, तो श्री सांवत्सरिक प्रतिक्रमण पूर्वे तो लोच अवश्य करवो ज जोईए. लोच कर्या विना वार्षिक प्रतिक्रमण करवुं न कल्पे. मुंडन करवाथी के केशने कतरावथी शस्त्रनी बाधा, जिनाज्ञानो भंग, संयममां दूषण अने जुओनो वध थाय; हजाम 'हस्त धोवा' वगेरे पश्चात्कर्म करे, शासननी अपभ्राजना थाय, वगेरे घणा दोषो लागे, माटे लोच करवो ज ए श्रेयस्कर छे. छतां जो कोई असहिष्णु होय, ज्वर वगेरे थवानो संभव होय, बाळक होवाथी रडे के कोई चारित्र छोडी दे तेम होय, तो तेवा साधु-साध्वीने अपवादे मुंडन करावबुं. तेमां पण मस्तक धोवुं, हजामना हाथ धोवरावबा, वगेरे अचित जळने वापरबुं. जे क्षुरमुण्डन करावी शके तेम पण न होय, अथवा गड-गुमडवाळुं मस्तक होय, तो केश कातरथी कापवा. एवी शास्त्रमर्यादा छे के- पाट, पाटला वगेरेनां बधां बंधन छोडीने प्रति पक्षे तेनी प्रमार्जना-प्रतिलेखना करवी, अथवा सर्वदा मोडामां मोडुं प्रति पक्षे आरोवणा प्रायश्चित्त लेवुं. अस्त्राथी मुंडन करावनारे

मुंडन महिने महिने करावववुं अने कतरावनारे केश पक्षे पक्षे कतरावववा. क्षुरमुण्डन करावनारने 'लघुमास' अने केश कतरावनारने 'गुरु मास' प्रायश्चित्त श्री निशिथसूत्रमां कह्युं छे. तरुणने चार चार मासे, प्रौढने छ छ मासे अने वृद्धावस्थाथी अशक्त बनेलाने नेत्रोनी रक्षा माटे वर्षमां एक वार पण वार्षिक प्रतिक्रमण पूर्वे अवश्य लोच करवो जोईए.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीने श्री सांवत्सरिक प्रतिक्रमण पछी क्लेशकारक वचन बोलवुं न कल्पे अने क्लेश-कषायने उदीरवा नहि. छतां जो कोई अज्ञानथी कलेशकारी वचन बोले, तो कहेवुं के-'पर्युषणा पहेलां थयेला कषायोने पर्युष्णामां तें खमाव्या, छतां पुनः तुं कषायने उदीरे छे ते आचारविरुद्ध करे छे.' वगेरे हितशिक्षा आपवा छतां जो ते कलेशने उदीरे, तो तेने पानना करंडियामांथी सडेलुं पान दूर करवाना न्याये संघ बहार करवो जोईए. पाछळथी जो ते शांत थाय अने आवे, तो तेने मूळथी महाव्रतो पुनः आपवां. पूर्वदिवसोमां के पर्युषणाना दिवसे थयेला कलेशने पण खमाववां जोईए अने तेमां जो मोटानो अपराध थयो होय, तो पण प्रथम नाना साधुए मोटाने खमाववा ए

व्यवहार छे. आम छतां जो अपरिणत होवाथी नानो न खमावे, तो मोटाए नानाने खमाववो पण कलेश राखवो नहि. स्वयं खमवुं अने बीजाने खमाववा, तेमज स्वयं उपशम करवो अने बीजाने उपशम करावो-ए धर्मनो सार छे. माटे शुभ वृत्तिथी राग-द्वेष छोडीने सुखशातादि पूछवुं, सूत्र के अर्थ पूछवा, एम जेनी साथे कलह थयो होय, तेनी साथे निर्मळ मनथी बोलवुं पण अबोला करवा नहि. कदाच बंने परस्पर न खमावे अने एक खमावे, तो पण जे खमावे तेने आराधना थाय अने न खमावे ते विराधक थाय. माटे स्वयं उपशांत थवुं, कारण के-साधुतानो प्राण उपशम छे. तेना अभावे साधुधर्म रही शकतो नथी. जेम चंदप्रद्योतनने उदयन राजाए खमाव्या, पण उदयनने चंडप्रद्योतने न खमाव्या, तो पण उदयन आराधक बन्या. कोई वार क्षमापना करवाथी मृगावती अने चन्दनबालानी जेम बन्ने पण आराधक थाय छे. वळी क्षमापना शद्ध भावथी करवी. कुम्धकारना पुत्रनी जेम निष्फळ 'मिच्छामि दुक्कडं' देवाथी उपशमभाव प्रगटे नहि.

चोमासुं रहेला साधु-साध्वीए त्रण उपाश्रय याचवा कल्पे. तेमां तेओ ज्यां रह्या होय,

तेने जीवोत्पत्तिना भयथी प्रातः मध्यान्हे अने त्रीजा प्रहरने अंते - एम वर्षाकाळे त्रण वार अने शेषकाळमां बे वार अवश्य प्रमार्जवो; जो जीवोत्पत्ति थाय, तो अनेक वार पण प्रमार्जवो. शेष बे उपाश्रयोने पण कोई ममता न करे ए माटे प्रतिदिन जोवा अने त्रीजा दिवसे प्रमार्जवा.

वर्षाकाळमां साधु-साध्वीए भिक्षार्थे, स्थंडिलभूमिए के बीजा कारणे उपाश्रयनी बहार जतां अन्य साधुओने 'अमुक दिशा-विदिशमां जाउं छुं.'-एम कहीने जवुं, कारण के- चातुर्मासमां कामने जीतवा, प्रायश्चित्त करवा के कर्मनिर्जरा करवा साधु-साध्वी प्रायः विशेष तप करे, तेथी तेओ दुर्बळ-अशक्त बनेलां होय, माटे कदाचित् जो मूर्च्छित थाय, पडी जाय के समयसर पाछा न आवी शके, तो अन्य साधुओने शोधवानी अनुकूळता रहे.

वर्षाकाळमां मांदगी, औषध, वैद्य वगेरे कारणे चार के पांच जोजन जईने पण पाछुं

फरवुं जोईए, पण त्यां रहेवाय नहि. कदाच जो स्वस्थाने पहोंची न शकाय, तो पाछा फरी वच्चे रहेवुं, पण ज्यां गया होय त्यां रहेवाय नहि. पाछा फरवाथी वीर्याचारनी आराधना थाय. तात्पर्य के-जे कार्य माटे गया होय, ते कार्य पत्या पछी त्यांथी शीघ्र पाछा फरवुं जोईए.

आ वार्षिक कर्तव्यरुप स्थविरकल्प सूत्रमां कह्या प्रमाणे सम्यग्ज्ञानादिरुप मोक्षमार्गने अनुसरीने यथार्थ कह्यो छे. तेनुं सम्यग् मन-वचन-कायाथी आराधन करीने केटलाक उत्तम आत्माओ ते ज भवमां मुक्तिने वरे छे. कोई बीजा भवे, कोई त्रीजा भवे, तो कोई चार वगेरे भवोमां अवश्य मुक्तिने पामे छे, पण सात के आठ भवथी अधिक संसारमां रहेता नथी.

आ श्री पर्युषणाकल्पने प्रभु श्री महावीरदेवे स्वमुखे राजगृहीना गुणशैल चैत्यमां घणा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओ तथा घणा देव-देवीओनी समक्ष सूत्रथी-

अर्थथी कह्यो छे अने श्रोताओने परिणाम पमाड्यो छे. आथी आ कल्पसूत्र सकारण छे अने तेमां सूत्र, अर्थ अने तदुभयथी व्याकरणयुक्त वारंवार उपदेश करेलो छे.

॥ अहीं श्री पर्युषणानुं कल्पधरना दिवसनुं नवमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं ॥

॥ श्री पर्युषणा महापर्वनां व्याख्यानो समाप्त ॥